कानूने तरक्की





तनवीर पब्लिकेशन
www.freeeducation.co.in

कानूने तरक्की

डॉ. विमला मल्होत्रा

प्रकाशक
तनवीर पब्लिकेशन
हाइड्रो इलेक्ट्रिक मशीनरी प्रिमाइसेस,
ए-१३, राम-रहीम उद्योग नगर, बस स्टॉप लेन,
एल.बी.एस.मार्ग, सोनापूर, भांडुप (पश्चिम), मुंबई ४०००७८

कानूने तरक्की

ISBN. 978-93-80778-03-7



लेखकः- क्यू.एस.खान

अनुवादः- डॉ.विमला मल्होत्रा

प्रकाशक

तनवीर पब्लिकेशन

हायड्रो इलेक्ट्रिक मशीनरी प्रिमाइसेस

ए-13, राम-रहीम उद्योग नगर, बस स्टॉप लेन,

एल.बी.एस. मार्ग, सोनापूर, भांडुप (पश्चिम), मुंबई 400078

फोनः 022-2596 5930

मोबाइलः 932006 4026

ई-मेलः hydelect@vsnl.com, hydelect@mtnl.net.in

वेब-साइटः www.freeeducation.co.in,

www.tanveerpublication.com

कीमतः 100/- रु.

अनुक्रमणिका

अनुक्रमणिका

भाग-६ ईश्वर कौन है?

भाग-७ विश्व कि समृद्धि

अंतिम वाक्य

प्रस्तावना

मनुष्य भौतिक वस्तूएं (Matter) और शक्ति (Energy) इनका संगम हैं, यानी शरीर और आत्मा. इसप्रकार समृद्धि भी वस्तू और सकारात्मक शक्ति का संगम है। समृद्धि में वस्तू (Matter) यानी प्रत्यक्ष रुप में संप्पती का मालिक होना और सकारात्मक शक्ति (Energy) यानी ईश्वर का आशीर्वाद प्राप्त होना।

बहुत से लोग सफलता कि प्राप्ती के लिए बौद्धिक और आध्यात्मिक स्तर पर कोशिश नही करते क्योंकि वह इस बारे में अनजान और अनभिज्ञ होते हैं। इसीलिए वह अपने कार्यकाल में हमेशा कोशिश ही करते रहते हैं, परंतू सफलता के रास्ते का उचीत ज्ञान न होने के कारण जिंदगी के आखरी क्षण तक वह असफल ही रहते हैं।

'कानूने तरक्की' यह पुस्तक आप सभी को सफलता के दोनों पहलू कि पहचान कराने के हेतू लिखी गई हैं। यानी ईश्वर के आशिर्वाद के साथ संपत्ती कमाना। यह पुस्तक बहुत ही सरल भाषा में लिखी है। इस पुस्तक में लेखक के नज़रिये के साथ विश्व के प्रसिद्ध और स्वंयप्रेरणा देनेवाली (Self-Motivational) पुस्तकों का भी संदर्भ (Summary) दिया है। अगर आप जवान उद्योजक हो और आपके पास अगर बहुत सारी पुस्तके पढ़ने के लिए समय उपलब्ध नहीं है, तो यह पुस्तक आपको कम से कम समय में ज़्यादा से ज़्यादा विषयों के बारे में मार्गदर्शन करेगी।

क्यू. एस. खान
hydelect@vsnl.com

अध्याय - १

भाग्य के द्वारा समृद्धी

Prosperity through Luck

(गुमराह करने वाले उदाहरण)

उदाहरण १

श्रीमान सुनील यादव बारहवीं कक्षा पास करने के बाद २० वर्ष की आयु में (१९८० में) उत्तर प्रदेश से मुंबई आए। मुंबई में वह अपने ससुराल वालों के साथ तांबा, पीतल और सीसा इन धातुओ के भंगार का व्यापार करने लगे। उन्होंने शुद्ध सीसे को पिघलाने की कला सीख ली। वह शुद्ध सीसे की ईंटों के रुप में ढलाई करके नया माल कह कर इंजिनियरिंग उद्योग में सप्लाई करने लगे। उन्होंने धातुओं की ढलाई का एक कारखाना भी स्थापित कर लिया। तत्पश्चात दस वर्ष की अवधि में उन्होंने दो करोड रुपयों से अधिक धन कमा लिया।

उदाहरण २

श्रीमान आर. डी. सिंह एक बुद्धिमान और जोशीले नौजवान थे। विभिन्न आवश्यक परिक्षाऐं और इंटरव्यू पास करने के साथ साथ राजनीतिक प्रभाव तथा रिश्वत देकर उन्होंने (१९७५ में) कस्टम ऑफिसर की नौकरी प्राप्त की। अपनी नौकरी के दौरान वह एअ्र पोर्ट पर आने-जाने वाले सामान की जांच-परख करके अनुमति (Clearence) देते समय काफी धन और माल रिश्वत के रुप में लिया करते थे। इस प्रकार बहुत ही कम समय में उन्होंने बंगला, कार, भारी बैंक-बॅलेन्स और भौतिक सुख-सुविधाओं के सभी साधन जुटा लिए।

उदाहरण ३

श्रीमान फर्नांडीज़ ने मुंबई के पास, एक नए बसे उपनगर में (१९७० में) एक दुकान खरीदी। वह अपनी दुकान में ना केवल नामी ब्रांड की साइकिलें ही बेचते थे, बल्कि दुकान के साथ उनका अपना एक छोटी-सा वर्कशॉप भी था, जिस में वह कुछ थोड़े-से असली पुर्ज़े और शेष दुसरे नकली पुर्ज़े लगा कर साइकिलें बनाते थे। थोड़े-से असली पुर्ज़े वह इस हुशियारी और चालाकी से लगाते कि उनका ब्रांड असली दिखाई देता था। इन साइकिलों को वह सस्ते दामों पर ग्राहकों को यह कहकर बेचते थे कि यह असली साइकिलें हैं और उन्हें इस व्यापार में कोई लाभ नहीं हो रहा है। ग्राहक उनकी मुल्य-सूची (Price List) तथा साइकिल के ब्रांड का नाम देखते और उनके वायदों पर विश्वास करके बिना किसी झिझक के साइकिलें खरीद लेते थे। इस प्रकार दस वर्ष की अवधि में उन्हों ने सात करोड़ की जायदाद बना ली।

उदाहरण ४

श्रीमान खन्ना का अपना वर्कशॉप था। वह एक ईमानदार आदमी थे और उनका नाम जाने-माने व्यापारियों में लिया जाता था। दलाल उनके पास आते और तस्करी किए गए विदेशी औज़ारों को मिट्टी के भाव खरीदने के लिए उनसे विनंती करते। (यह सन १९७०-८० के बीच का समय था।) जिसे

खरीद कर श्रीमान खन्ना इन्हें विशेष संस्थानों में बहुत अधिक लाभ के साथ बेचा करते थे। श्री खन्ना खुद अपने वर्कशॉप में विशेष मशीनें भी बनाते और उन्हें ऊँचे दामों पर बेचते थे। इस तरह थोड़ी कोशिश और सरल जीवनशैली जीते हुए भी उन्होंने भारी धन-दौलत इकठ्ठा कर ली।

उदाहरण ५

श्रीमान किरीट शाह उन्नीस वर्ष की आयु में अपनी कॉलेज की शिक्षा अधूरी छोड़ कर (१ ९ ६ ५ में) मुंबई आए। उन्होंने स्टेनलेस स्टील के स्क्रॅप खरीदने का काम शुरु किया। उनके मन में स्टेनलेस स्टील के पत्रों को, ग्राहकों की आवश्यकता के अनुसार सही माप में काटकर सप्लाई करने का विचार आया; जिन्हें वह स्टील स्क्रॅप के पतरों से काटकर अलग किया करते थे। इस कारोबार से इन्हें नए स्टील के बिना कटे और बड़े पतरों से भी अधिक दाम मिलता था। इसके साथ-साथ किरीट शाह ने चमड़े की वस्तुओं को आयात करने का काम भी शुरु कर दिया और चमड़े की वस्तुएँ स्वयं भी बनाने लगे। इस तरह ६ ५ वर्ष की आयु में उनके पास दस करोड़ से अधिक की संपत्ती हो गई। वह जीवन भर एक ईमानदार और सज्जन पुरुष रहे। उन्होंने सभी भौतिक सुख-सुविधाओं के साथ बड़ा आरामदायक जीवन व्यतीत किया।

इस प्रकार के आसानी से सफलता प्राप्त करने के उदाहरणों ने हज़ारों व्यक्तियों को गुमराह किया है। ऐसे उदाहरण उन्हें कठिन परिश्रम करने से रोकते और बेईमानी छल-कपट और गैर-कानूनी कार्य करके शीघ्र धनवान बनने की राह दिखाते हैं।

इस प्रकार से सफलता प्राप्त करने की कहानियाँ आम नहीं हैं। इक्के-दुक्के ही ऐसे अनोखे उदाहरण मिलते हैं।

ऐसे ही कुछ उदाहरणों के दुःखद अंत के बारे में हम अगले अध्याय ''सफलता के पश्चात दुखद अंत'' "After the Success the Sorrowful ending" तथा ''महान कार्य का महत्व'' "Importance of Noble deeds" नामक पाठों में अध्ययन करेंगे।



अध्याय - २

सफलता के पश्चात दुखद अंत

After the Success The Sorrowful Endings

उदाहरण १

कस्टम अधिकारी आर. डी. सिंह (अध्याय १ का उदाहरण २) को हृदय-रोग हो गया (१९७० में)। जब उन्हें पहली बार हल्का सा दिल का दौरा पड़ा तो वह अस्पताल में दाखिल किए गए। डॉक्टरों ने बाइपास सर्जरी करके उन्हें धोखा दिया और उन्हें खूब लूटा। "फाइव स्टार" अस्पताल के कमरे में रहने, दवाई और ऑपरेशन का कुल मिलाकर पांच लाख रुपये का बिल बना। ऑपरेशन के दौरान डॉक्टरों की लापरवाही के कारण उनकी किडनियों (Kidney) में लंबे समय तक रक्त संचार बंद रहा, जिस के कारण उनके किडनियों में (Infection) हो गया। और उन की किडनियों ने काम करना बंद कर दिया। उसके बाद श्री आर. डी. सिंह को लंबे समय तक नियमित रुप से रक्त साफ करने के लिए 'डायलायसिस' (Dialysis) की तकलीफें झेलनी पड़ी। आखिरकार वह इलाज के लिए विदेश गए और वहाँ दो महीने तक अस्पताल में रहे। इस इलाज में १५ लाख से अधिक रुपये खर्च हो गए। इन सब प्रयासों के बावजूद अंततः उनकी मृत्यू हो गई।

वह अपने पीछे उच्च जीवन स्तर जीने वाला परीवार छोड़ गए। उनके किसी भी बच्चे ने ग्रेजुएशन नहीं किया था ओर ना ही उनकी आमदनी का कोई अन्य स्रोत था। रिश्वत से कमाई हुइ धन दौलत और खुशहाली का इस प्रकार दुखद अंत हुआ।

उदाहरण २

श्री किरीट शाह (अध्याय १, उदाहरण ५) एक भाग्यशाली, समृद्ध, ईमानदार एवं सज्जन व्यक्ति थे। उन्हों ने ६५ वर्ष की आयु में व्यापार से 'रिटायरमेंट' (निवृत्ती) ली। उन के पुत्र चिराग ने अपने पिता का व्यापार पूरी तरह से संभाल लिया। वह भी एक बुद्धिमान व्यापारी सिद्ध हुआ। वह अपना व्यापार बहुत अच्छी तरह से कर रहा था।

श्री हिरेन नाम के उनके एक रिश्तेदार उनसे चमड़ा खरीदा करते थे और तुरंत उनके दाम भी चुका देते थे। उन्हों ने चिराग से गहरी दास्ती कर ली और उन्हें कई हफ्तों तक माल उधार देने के लिए राज़ी कर लिया। हिरेन हमेशा चिराग से भारी मात्रा में माल खरीदते और नियमित समय पर पैसे चुका देते।

एक बार श्री हिरेन को चमड़े की जैकिटों को निर्यात करने का बड़ा आर्डर मिला। उन्हों ने श्री चिराग से ५ करोड़ का माल (चमड़े) उधार खरीदा। उन्हों ने उन चमड़ो से जॅकिट्स बनाईं और उन्हें निर्यात कर दिया। परंतु दुर्भाग्यवश उस का भेजा हुआ माल कुछ तकनीकी समस्या के कारण विदेश में अस्वीकृत (Reject) हो गया।

यूरोपीय देशों ने चमड़े रंगने के कई प्रकार के डाई (Chemicals) पर प्रतिबंध लगाया है। विदेश में कस्टम अधिकारियों ने पाया कि हिरेन ने चमड़े की जॅकिट्स को रंगने के लिए उन प्रतिबंधित (Chemicals) का प्रयोग किया था और इस कारण उन का पूरा माल अस्वीकृत (Reject) कर दिया गया। श्री हिरेन का न

सिर्फ अस्वीकृत माल पर नुकसान हुआ बल्कि जॅकिट्स से भरे हुए तीन लंबे-चौड़े बक्सों (Containers) को ठिकाने लगाने पर भी भारी रकम खर्च करनी पड़ी। श्री हिरेन ने अपने आप को दिवालिया घोषित कर दिया और अपने माल की सप्लाई करने वालों का रुपया भुगतान नहीं कर सके। अंततः उधार माल देने के कारण श्री चिराग भी दिवालिया हो गए। श्री चिराग को अपने सप्लायर्स का रुपया चुकाने के लिए अपना ऑफिस बेचना पड़ा। उन्होंने भी अपनी साख (Reputation) और व्यापार दोनों खो दिया।

ऊपर दी गई दोनों उदाहरणों में एक बेईमान (आर. डी. सिंह) और एक सज्जन (श्रीमान किरीट शाह) दोनों बरबाद हो गए। सब सावधानियाँ और अपने प्रयासों के बावजूद दोनों ही अपने ऊपर आने वाली आपत्ती और विनाश को नहीं टाल सके।

कठिन परिश्रम करके कोई समृद्धि और सफलता प्राप्त तो कर सकता है, परंतु उसे स्थिर रखना बहुत मुश्किल होता है।

इस पुस्तक में आप को समृद्धि और सफलता प्राप्त करने और साथ साथ उन्हें लम्बे समय तक स्थिर रखने के कुछ रहस्य मिलेंगे।



अध्याय - ३

सफलता के सूत्र

Laws of Success

सफलता के सूत्रों को मुख्य रुप से तीन वर्गों में बाँटा जा सकता है।

१. मन की सकारात्मक अवस्था से संबंधित सूत्र
Laws related to positive state of mind.

२. प्रशासन एवं व्यापारिक-कौशल से संबंधित सूत्र
Laws related to administration and business skills.

३. सत्कर्म, मानवता और ईश्वर की प्रार्थना से संबंधित सूत्र
Laws related to noble deeds and worship of God.

वर्ग- १

मन की सकारात्मक अवस्था से संबंधित सूत्र

Laws related to
positive state of mind.

अध्याय -४

शरीर पर मन का श्रेष्ठत्व

Importance of mind over body

फिलिस्तीनी (Palestine) नेता श्री. यासीन अपनी किशोर अवस्था में ही एक पहाड़ी से गिर पड़े थे। सिर के पिछले हिस्से में चोट लगने के कारण उन के पूरे शरीर को लक्वा मार गया था। जिस के कारण उन का पूरा जीवन 'व्हील-चेअर' पर सीमित हो कर रह गया। किन्तु उस अपाहिज हालत में भी 'व्हील-चेअर' से उन्हों ने शक्तिशाली 'इस्राईल सरकार' का मुकाबला पचास वर्षों से भी अधिक समय तक किया। उन्होंने फिलिस्तीन की आज़ादी के लिए लड़ने वाले सब से अधिक निडर एवं साहसी संघटन ''हमास'' की स्थापना की।

इस्राईल सरकार ने कई बार उन्हें जेल में बंद किया। किन्तु ना तो वह श्री यासीन की मन और इच्छा-शक्ति से लड़ सके और ना ही उन पर नियंत्रण कर पाए। अंत में जब उन्हें अपनी लाचारी का एहसास हुआ कि वह श्री यासीन के दृढ़ संकल्पों (मज़बूत इरादों) का मुकाबला नहीं कर सकते तो इस शारीरिक विकलांग व्यक्ति को मारने के लिए उन्होंने हॅलीकॉप्टर का प्रयोग किया, और उनकी कार पर मीसाईल दागे। इस तरह उन्होंने श्री यासीन को मार डाला।

इंगलैंड के खगोलशास्त्री (Astrophysicist), श्री 'स्टीफन हॉकिन्स' भी व्हील-चेयर पर निर्भर हैं। वह इतने अशक्त हैं कि अपने कंधों पर अपना सिर भी सीधा नहीं रख सकते। परन्तु इतने असहाय होते हुए भी उन्होंने अपना नाम संसार के धनी और प्रसिध्द लोगों की सूची में लिखवाया है। वह इस जमाने के सब से अधिक सफल और धनी वैज्ञानिक तथा लेखक हैं।

१९४७ से पहले भारत की मिलीटरी और गवर्नमेंट-मशीनरी पर ब्रिटिश सरकार का पूरा नियंत्रण था। किन्तु उस समय भी तीस करोड़ भारतीयों के हृदय पर राष्ट्रपिता महात्मा गांधी राज करते थे।

शक्तिशाली ब्रिटिश शासक, महान अहिंसात्मक महात्मा गांधि के संकल्प और इच्छा-शक्ति का सामना नहीं कर सके और अंततः भारत से चले गए।

ऊपर दी गई उदाहरणों में हम ने जिन महान व्यक्तियों के व्यक्तित्व का वर्णन किया है, वे मुख्यतः शारीरिक रुप से अशक्त थे। इन उदाहरणों के माध्यम से हम आप को यह बताना चाहते हैं कि सफलता प्राप्त करने के संघर्ष में शारीरिक-शक्ति की अपेक्षा मस्तिष्क और विचार शक्ति अधिक प्रभावशाली और महत्वपूर्ण है।

आगे के अध्यायों में हम विवेचना करेंगे कि मन और विचार शक्ति व्यक्तियों की समृद्धि और सफलता पर किस प्रकार प्रभाव डालती है।



अध्याय - ५

समृद्धि को प्रभावित करने वाले बुद्धि संबंधि तथ्य

(Intellectual factors affecting prosperity)

बुद्धिमत्ता के स्तर पर किसी व्यक्ति की सफलता और समृद्धि को तीन तथ्य प्रभावित करते हैं:

१. मन का शारीरिक स्वास्थ्य (मानसिक स्वास्थ्य)
   Physical health of mind.

२. अवचेतन मन की अनुकूल अवस्था
   Favourable state of the subconscious mind.

३. ईश्वर की कृपा
   Favour and blessing of God.

अध्याय -6

मन का शारीरिक स्वास्थ्य

(Physical health of Mind)

अब हम मस्तिष्क का चिकित्सा-विज्ञान (Medical Science) के अनुसार नहीं बल्कि दार्शनिक (Philosophical) रूप से अध्ययन करेंगे। मेडीकल सायन्स के अनुसार हम मस्तिष्क से विचार करते है और हृदय केवल शरीर में रक्त पहुँचाने का काम करता है। मगर आम बोलचाल की भाषा में हम मन शब्द का प्रयोग करते हैं। उदाहरण के तौर पर हम कहते है 'मेरा मन शांत हैं।' यहाँ मन नहीं बल्के मस्तिष्क में शांती होती है। फिर भी हम मन ही कहते है। इसी तरह इस पुस्तक में हम मस्तिष्क के लिए 'मन' शब्द का ही प्रयोग करेंगे।

चेतन मन (Conscious Mind)

पांच इंद्रियां जैसे, नाक (गंध), आँख (दृष्टी, नज़र), कान (सुनना, आवाज़), जीभ (स्वाद) और त्वचा (स्पर्श) हमारे आसपास से तथ्य (Fact) इकट्ठा करती हैं, और चेतन मन (Conscious Mind) को पहुंचाती हैं।

चेतन-मन पाँचो इंद्रियों से सूचना प्राप्त करता है, एकत्रित करता है, उस की समिक्षा करता है और तर्क-सहित (Logical) निर्णय लेता है। हम अपने रोज़मर्राह के कामों को चेतन मन (Conscious Mind) की सहायता से पूरा करते हैं।

केवल स्वस्थ कंधे ही स्वस्थ मन का भार उठा सकते हैं, और केवल स्वस्थ मन में ही सकारात्मक भावनाएँ और विचार होते हैं जो सफलता प्राप्त करने के लिए आवश्यक हैं। इसलिए स्वस्थ शरीर, तथा स्वस्थ एवं सकारात्मक भावनाओं वाला मन और विचार, सफलता प्राप्त करने की पहली आवश्यक्ता है।



Physical Health of Mind

We will study mind philosophically and not medically.

Conscious mind

Five senses i.e. Nose (Smell), Eye (Vision), Ear (Sound), Tongue (Taste), Skin (sensation), collect facts from the surrounding and pass them to the conscious mind.

The conscious mind gets the information, stores it, analyses and then takes logical decisions. We carry out all our day to day activities work with the help of the conscious mind.

Only healthy shoulder can carry a healthy mind and only a healthy mind can have positive emotions and thoughts necessary for achieving success. Hence, a physically fit body, a healthy mind with positive emotions and thoughts are the first requirements of success.



अध्याय -७

अवचेतन मन

(Subconscious Mind)

आपका अपना ई-मेल ॲडरेस और वेब-साइट होगा। आप अपने कम्प्यूटर पर संदेश टाइप करके अपने दोस्तों को भेजते हैं। या फिर इंटरनेट पर खोज करके दूसरों की वेबसाइट से डेटा डाउनलोड करते हैं। लैकिन क्या आप यह सही तरीके से जानते हैं कि आप की और अन्य लोगों की वेबसाइट्स कहाँ स्थित हैं और अपने कम्प्यूटर पर डेटा डाउनलोड करने से पहले आपके ई-मेल संदेश (Messages) कहाँ एकत्रित (Store) होते हैं? आपका उत्तर होगा 'सरवर (Server)'। परन्तु आपका सरवर कहाँ पर है? आपके शहर में? आपके देश की राजधानी में ? अमेरिका में ? या अंतरिक्ष-यान में ? ९ ९ प्रतिशत लोग इस प्रश्न का उत्तर नहीं दे पाते। वे यह तो जानते है कि सरवर (Server) कहीं तो है, पर वह कहाँ पर है, यह ठीक तरह से नहीं जानते।

भोज निमंत्रण (Party) में, पेट भर भोजन करने के बाद आप अपने पेट को फूला हुआ पाते हैं, परन्तु धर्मगरूओं को आप देखते है कि वे हज़ारों पन्ने याद कर लेते हैं, पर आप उन में से किसी का सिर फूला हुआ नहीं पाते। स्मरण के रूप में पुस्तक-सामग्री मस्तिष्क (Memory) में कहाँ समाई हुई है, यह यादें कहाँ एकत्रित हैं, और वे किस रूप में हैं? इन प्रश्नों का उत्तर भी हर आम व्यक्ति नहीं दे सकता। परंतु प्रत्येक व्यक्ति यह ज़रूर जानता है कि यह मस्तिष्क में ही कहीं किसी रूप में हैं।

अवचेतन मन (Subconscious Mind) एक चेतना का क्षेत्र (Filed) है, जिस में प्रत्येक विचार की लहर(Vibrations), अनुभव (Experience) और दूसरी जानकारियाँ (Data) एकत्रित रहती हैं, जिन्हें हम अपनी पाँच इंद्रीयों की सहायता से अपने आसपास के वातावरण से इकठ्ठा करते रहते हैं। अवचेतन मन जानकारियों (Data) को वर्गों में बांटता है, सुरक्षित रखता है, जहाँ से जब भी हम चाहें जानकारी (Data) प्राप्त भी कर सकते हैं, ठीक उसी तरह, जिस प्रकार हम एक भरी हुइ अलमारी (Filling Cabinate) में से एक पत्र निकालते हैं।

अवचेतन मन (Subconscious Mind) मनुष्य की स्मरण-शक्ति जैसा ही होता है किंतु यह इंटरनेट से जुड़े किसी सुपर कम्प्यूटर के जैसा काम करता है ।

जब कोई विचार हमारे मन में आता है और उसे पाने की हमारे मन में ज्वलंत ईच्छा होती है तो हमारा अवचेतन मन उसे वास्तविकता में बदलने के काम पर लग जाता है। उस समय वह उस व्यक्ति की यादों में जो कुछ भी जानकारियाँ उपलब्ध हैं उन की मदद से वह एक कम्प्यूटर की तरह उन जानकारियों को Proccess करता है और उस काम को अंजाम देता है।

इंटरनेट-कनेक्शन और सर्च-इंजिन की तरह यह अवचेतन-मन, प्रकृती (Mother Nature) के साथ भी जुड़ा होता है। (जो ईश्वर द्वारा नियंत्रित एक स्वःचलित (Automatic) पध्दती है।) अवचेतन मन, प्रकृती के साथ उस काम (विचार को वास्तविकता में बदलने) के बारे में जानकारी का आदान प्रदान

करता है (जिस पर उसे काम करना होता है)। और उस कार्य को पूरा करने के लिए वह प्रकृती से सूचनाएं, योजनाएं, नए आइडिया (तरकीबें) की मदद लेता है।

अवचेतन मन जिस भाषा को समझता है और जिस भाषा का प्रयोग वह प्रकृती (Mother Nature) से संपर्क के लिए करता है वह है 'भावना' (Emotion)

अवचेतन मन, भावना रहित (Cold reasoning) तर्कों (Logics) और इच्छाओं से प्रभावी नहीं होता है।

अवचेतन मन की प्रक्रिया-क्षमता (Proccessing capacity) और याद करने की क्षमता (Storing capacity) चेतन मन से लगभग नौ गुनी अधिक होती है।



Subconscious mind

You must be having your E-mail address and website. You type messages on your computer and send them to your friends. Or surf on the internet and download data from others website. But do you exactly know where your website is located and where your E-mail messages remain stored before you download them on your P.C? You will say 'the server'. But where is your server located? In your city? In the capital of your country? In America? or in a satellite? 99% of the people cannot answer this question. They know that the server is somewhere, but don't know exactly where it is located.

After having a great feast you get a swollen tummy. but even after memorizing more than thousands of pages by priest community, no one had a swollen head. Where do the contents of book get stored in brain in from of memory? And in what form? No one can answer this question as well. But everyone knows that it is somewhere and in some form in the brain.

The subconscious mind consists of a field of consciousness. In which every impulse of thought, experience and data. Which we collect from our surrounding with the help of our five senses, is classified and recorded. From where we can willingly recall and withdraw data, similar to the letter which could be taken from a filing cabinet.

The subconscious mind is not only a filed of memory or consciousness, but it also functions like a super computer with internet connection.

When a task is given to the subconscious mind, it processes it like a computer, with whatever data is a available in memory of that person.

Like the internet connection and search engine it also gets in touch with Mother Nature (Which is an automatic governing system of God). The subconscious mind communicates with Mother Nature about the project on which it is working and seeks information, plans, ideas and helps for the completion of the task.

The language which the subconscious mind understands and uses to communicate is emotion.

It does not respond to cold-reasoning, logics and wishes, etc.

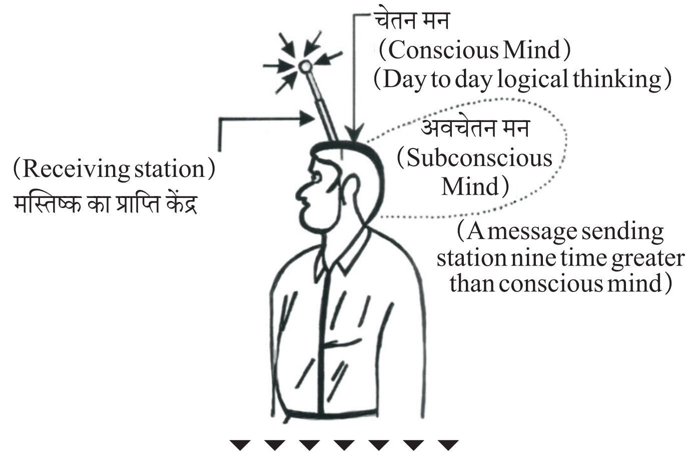
The processing and storing capacity of the subconscious mind is about nine times higher than the conscious mind.

अध्याय -८

मस्तिष्क का प्राप्ति केंद्र

(Receiving station of Mind)

मनुष्य का मन एक रेडिओ-स्टेशन की तरह है। यह ईश्वर, प्रकृती और दूसरे लोगों के मन और मन से संपर्क (Communication) करता रहता है। अवचेतन मन, जानकारियों को सुरक्षित रखने (जमा करने) और उन्हें प्रसारण करने का एक साधन है। मन का प्राप्ति केंद्र (Receiving), रचनात्मक कल्पना(Creative Imagination) के रूप में जाना जाता है। अर्थात यह वह जगह है जहाँ मन में नए-नए विचार, कल्पनाएं आते है। मन का यह प्राप्ति केंद्र भी चेतना का एक क्षेत्र (Field of consciousness) है जो विचारों के कंपन (Vibrations) को महसूस करता है। यह प्रकृती द्वारा प्रसारित संदेश प्राप्त करता है, और दूसरे लोगों के मन के प्रभावशाली कंपन (लहरें) भी प्राप्त करता है। जब हम किसी ऐसे व्यक्ति से मिलते हैं, जिस में सकारात्मक विचार, उत्साह और संपत्ती के प्रती जागृतता हो तथा महान कार्य करने वाला हो तो हमारा मन भी उसी तरह की भावनाएं ग्रहण करता है। हम भी वैसी ही सकारात्मक मानसिकता, उत्साही एवं उच्च मानवता तथा पवित्रता की कंपन लहरों की अनुभूति करते हैं। ठीक इसी प्रकार जब हम किसी नकारात्मक मानसिकता अथवा अपराधी प्रवृत्ति वाले व्यक्ति से मिलते है तो हम उस से उसी प्रकार की भावनाएं ग्रहण करते हैं और वैसी ही भावनाएं महसूस भी करते हैं। यदि हम मन का काल्पनिक एवं आकार मात्र खाका (Schematic Diagram) बनाएं तो वह निम्न प्रकार से बनेगा।

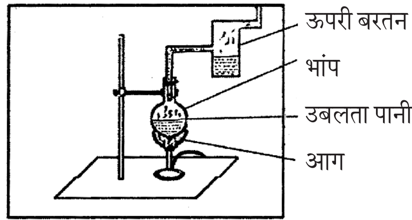


अध्याय -९

मन की भाषा

(The Language which Subconscious Mind Understand)

एक पानी से भरे शीशे के बरतन की कल्पना कीजिए। जब पानी गरम किया जाता है तो यह उबलता है और भांप बरतन के उपरी भाग में जुड़ी एक नलीका के द्वारा एक दूसरे शीशे के बरतन में पहुंचती है। जैसा कि इस रेखा-चित्र में दर्शाया गया है। किन्तु ठंडी अवस्था में न तो भांप बनेगी और ना ऊपर उठकर दूसरे बरतन में पहुंचेगी।

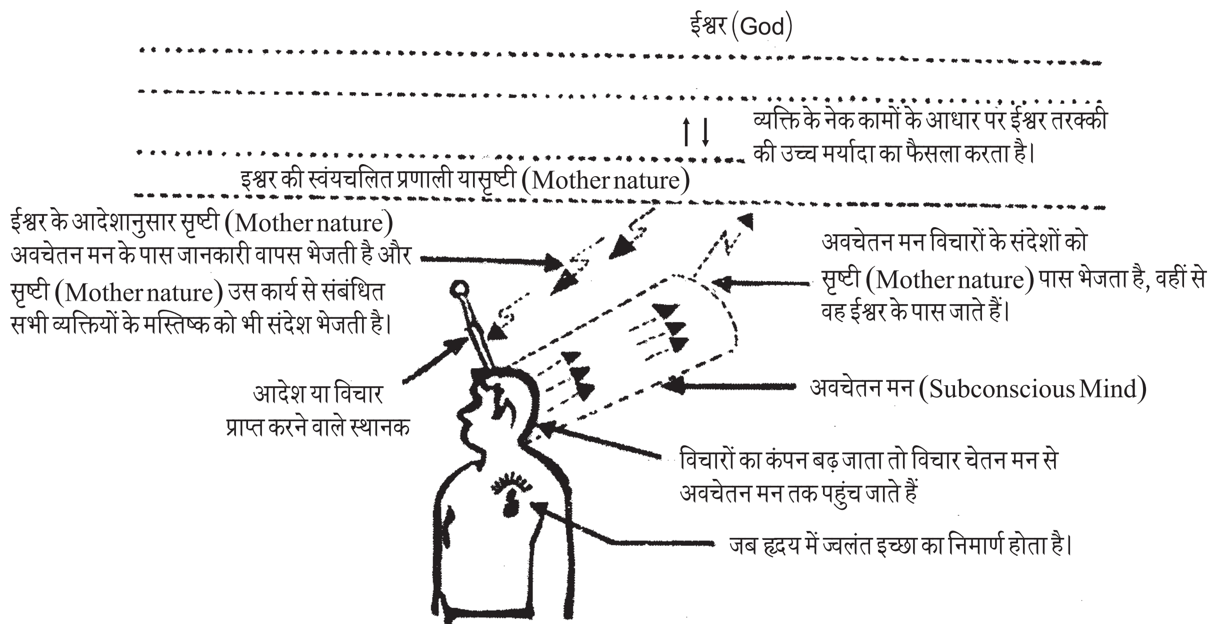


इसी प्रकार एक व्यक्ति के मन में आने वाले विचार जब भावना और ज्वलंत इच्छा (Burning desire) के साथ मिलते हैं तो विचार का कंपन (Vibration) बढ़ता है और यह अवचेतन मन के स्तर तक ऊपर उठता है। और अवचेतन मन उन्हें स्विकार कर लेता हैं। अवचेतन मन विचारों को प्राप्त करने के बाद उन पर प्रक्रिया (Process) करता है और ईश्वर की स्वयंचलित प्रणाली (Mother nature) तथा ईश्वर से उस भावना को वास्तविक रुप देने के लिए संपर्क करता है। इसलिए भावना ही अवचेतन मन की भाषा (Software) है जो अवचेतन मन समझ लेता है और उसके अनुसार कार्य करता है।

हजरत मुहम्मद (स.) ने कहा कि,
'ऐसा व्यक्ति जिस पर अत्याचार किया गया हो उसके शाप से बचो। क्योंकि पिड़ीत व्यक्ति के मन से निकला हुआ शाप (बद-दुआ) सीधे ईश्वर तक पहुँचती है।' (मिश्कात)

छोटे बच्चे को जब कोई तकलीफ नहीं होती तो वह खेलता रहता है। मगर जैसे ही उसे कोई तकलीफ होती है वह तुरंत अपनी माँ को याद करता है। दु:ख जितना ज्यादा होगा उस बच्चे के मन में अपनी माँ से मिलने कि तड़प उतनी ही ज़्यादा होगी। और बच्चा दिल से माँ-माँ पुकार कर रोता है। इसी तरह खुशहाली में इन्सान ईश्वर को भूला हुआ होता है। मगर संकट और दु:ख के समय वह ईश्वर को ही याद करता है। और दु:ख, अत्याचार जितना अधिक होगा वह ईश्वर को उतना ही भावूक होकर पुकारता है। ऐसी स्थितियों में पीड़ित व्यक्ति की दुआ और शाप भावना के साथ भरे हुए होते हैं। इसीलिए सीधे ईश्वर तक पहुँचते हैं।





अवचेतन मन की ईश्वर और प्रकृति से संपर्क करने की पद्धति

अध्याय-१०

भावनाओं के विभिन्न प्रकार

(Types of Emotions)

भावनाओं के विभिन्न प्रकार है, जिन्हें मुख्य रूप से दो वर्गों में बाँटा जा सकता है, एक है सकारात्मक भावनाएं और दुसरी है नकारात्मक भावनाएं। अवचेतन मन दोनो प्रकार की भावनाओं की वजह से समान रूप से सक्रिय हो जाता है और उन्हें वास्तवीकता में बदलने के लिए कार्य करता है।

सकारात्मक भावनाएं

अ. ज्वलंत इच्छाओं की भावनाएं।
ब. आशा और विश्वास की भावनाएं।
क. प्रणय, प्रेम-स्नेह और काम संबधी भावनाएं।
ड. उत्साह और साहस संबधी भावनाएं।

नकारात्मक भावनाएं

अ. निराशावादी भावनाएं।
ब. गरीबी, आलोचना, बीमारी और मृत्यू के भय की भावनाएं।
क. प्रिय व्यक्ति की जुदाई के भय की भावनाएं।
ड. प्रतिशोध की भावनाएं।
इ. ईर्ष्या की भावनाएं।
फ. क्रोध, द्वेष और प्रलोभन (लालच) आदि की भावनाएं।
ग. अंधविश्वास, ज्योतिष-शास्त्र, अंक-शास्त्र, हस्तरेखा-शास्त्र और भविष्यवक्ता आदि में विश्वास या आस्था रखना।

(ज्योतिष की बताई हुई नकारात्मक भविष्यवक्ता मन में घर कर लेती है।)

एक भी नकारात्मक भावना की उपस्थिति शेष सभी सकारात्मक भावनाओं को दबा देती है और स्वयं अवचेतन मन में पहुंच जाती है। अवचेतन मन सब से ज्यादा प्रभावशाली नकारात्मक भावना को ग्रहण करता है और उसे वास्तविक्ता में बदलने का प्रयास करने लगता है।

सभी धर्मों में यह कहा गया है कि यदि ईश्वर से किसी वस्तु की प्राप्ती के लिए प्रार्थना करनी हो तो पूर्ण विश्वास के साथ करो कि ईश्वर आप की इच्छा अवश्य पूरी करेगा,और अपनी प्रार्थना पूरी होने के बारे में मन में कोई शंका या संदेह ना करें। क्योंकि अविश्वास से की गई प्रार्थना का कोई उत्तर नहीं मिलता।

क्योंकि विश्वास एक सकारात्मक भावना है। जब विश्वास की भावना प्रार्थना के साथ मिल जाती है तब यह अवचेतन मन के स्तर तक पहुंचती है। वहाँ से यह सृष्टी (Mother nature) और ईश्वर के पास पहुंचती

है और सकारात्मक परिणाम लेकर वापस लौटती है। निसर्ग-माता जो ईश्वर की एक स्वःचलित पद्धति है जो ईश्वर से दिए गए आशिर्वाद (Blessing) के अंतर्गत अवचेतन मन को सुझाती है कि, प्रार्थना करने वाले व्यक्ति की ज्वलंत इच्छा कैसे पूर्ण हो। इसी प्रकार वह अन्य लोगों के मन में भी यह सुझाव-संदेश भेजती है कि प्रार्थना करने वाले व्यक्ति की सहायता कैसे की जाए, जिससे उसकी मनोकामना पूरी हों।

इस के विपरीत जब प्रार्थनाएं शक और अप्राप्ति के ड़र के साथ की जाती हैं, तब अवचेतन मन उन नकारात्मक विचारों को ग्रहण करता है और उन्हें निसर्ग-माता और ईश्वर के पास भेज देता है। और वहाँ से उसे उसी प्रकार का आदेश मिलता है। निसर्ग-माता संबंधित लोगों के अवचेतन मन में यह संदेश भेजती है कि प्रार्थना करने वाले का शक और ड़र पूर्ण हो।

धार्मिक पुस्तकें ऊपर दिए गए सिद्धांत को सरल शब्दों में निम्न प्रकार से वर्णन करती हैं;

पवित्र बाइबल कहता है,

''जो कुछ भी तुम चाहते हो, जब तुम प्रार्थना करते हो तो विश्वास करो कि तुम ने उनको प्राप्त कर लिया है और भविष्य में तुम उन्हें प्राप्त भी कर लोगे।'' (मार्क ११:२४)

पवित्र कुरआन कहता है,

''जब तुम कोई काम करने का मज़बूत इरादा करो तो अल्लाह पर भरोसा रखो। अल्लाह को वह लोग प्रिय है जो उस पर भरोसा करते हैं।'' (पवित्र कुरआन ३:१५९)

यहाँ 'ईश्वर पर भरोसा' का अर्थ है कि ईश्वर तुम्हारे संघर्ष में तुम्हारी सहायता करेगा और तुम अवश्य सफल हो जाओगे।

अंतिम दूत हजरत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा है,

''ईश्वर से प्रार्थना अटल विश्वास के साथ मांगो।'' (बुखारी ६:९९५)

ईश्वर कहता है, 'मैं लोगों से वैसा ही व्यवहार करता हूँ, जैसी वह मुझ से उम्मीद (अपेक्षा) रखते हैं।''

(बुखारी, मुस्लिम, बा-हवाला हदीसे नबवी, हदीस नं. ५६३, पेज नं. २१४)

अर्थात मनुष्य ईश्वर से जैसी आशा रखता है ईश्वर उस के भाग्य को वैसे ही बदल देता है। इसलिए ईश्वर से सदैव अच्छी आशा रखें और मन भी सकारात्मक भावनाओं से भरा रहे।



अध्याय-११

विश्वास : सब से अधिक महत्वपूर्ण सकारात्मक भावना

(Faith: The most impostant positive Emotion)

रोम (Rome) और ईरान (Parsia) प्राचीन काल में अत्याधिक बलवान राष्ट्र थे। ईरान का साम्राज्य पश्चिम में सऊदी अरब तक फैला हुआ था। ईरानी लोग आग की पूजा करते थे, और अपने शासन में अन्य धर्म पर अमल करने पर लोगों पर पाबंदी लगा रखी थी। जब इस्लाम के दूसरे खलीफा हज़रत उमर (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने महसूस किया कि वे अरब लोग जो ईरानियों के शासन में हैं, उनपर अत्याचार किया जाता है और एक ईश्वर की पूजा व भक्ती से रोका जाता है तो उन्होंने यह निश्चय किया कि अरबो को ईरानियों से आज़ाद कराना है। इसलिए ई.सन ६४० में उन्हों ने हज़रत साद बिन अबी वक़ास (रज़ियल्लाहु अन्हु) को सेनापती नियुक्त किया, और उन्हें लगभग तीस हज़ार सिपाही देकर अरबों को ईरानियों के अत्याचार और दबाव से आज़ाद कराने के लिए भेजा।

हज़रत साद बिन अबी वक़ास (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने ईरानियों को ईराक़ के प्रत्येक मोर्चे पर पराजित किया। परन्तु उनके सामने एक ऐसी समस्या आई जो उनके नियंत्रण से बाहर थी। पीछे हटते ईरानियों ने युफ्रेटस (फरात) नदी के सभी पुलों को नष्ट कर दिया और सारी नावें डुबा दीं। हज़रत साद बिन अबी वक़ास (रज़ियल्लाहु अन्हु) के लिए पुल और नावों के बिना ईराक़ के शेष हिस्से से ईरानियों को निकाल बाहर करना संभव नहीं था।

हज़रत साद बिन अबी वक़ास (रज़ियल्लाहु अन्हु) एक महान योद्धा थे इसमें कोई शक नहीं, लेकिन वह एक संत की तरह पूर्ण रूप से पवित्र आदमी भी थे। उन्होंने अपने योद्धाओं को इकट्ठा किया और एक प्रेरणादायक भाषण दिया। उनके भाषण का सारांश यह था कि हमने ईश्वर के संदेश को फैलाने के लिए अपने जीवन को दाँव पर लगाया है। ईश्वर हमारा नाश नहीं करेगा। वह हमारी सहायता करेगा और हर तरह की विपत्ती से हमें बचाएगा। यह फरात नदी हमें ना तो आगे बढ़ने से रोक सकती है और न ही हमें नुकसान पहुंचा सकती है। इसलिए इससे मत ड़रो, इसमें कूद पड़ो और तैरते हुए दूसरे किनारे पर पहुंच जाओ।

हज़रत साद बिन अबी वक़ास (रज़ियल्लाहु अन्हु) और उनके शक्तिशाली सैनिक फरात नदी में अपने घोड़ों सहित कूद पड़े और बिना डूबे, घोड़ों की पीठ पर बैठे हुए नदी पार की। ईरानी सेना ने जब अरबी सैनिकों को घोड़ो की पीठ पर सवार नदी पार करते हुए देखा तो वे चिल्ला उठे, ‘‘देव आ गए, देव आ गए’’। और उनके सेनापती हरज़ाद और कुछ सिपाहियों को छोड़ कर सभी ईरानी सैनिक ड़र कर भाग गए। दुनिया के इतिहास में पहली बार ऐसी घटना घटी कि तीस हज़ार सैनिकों ने घोड़ों पर सवार हो कर नदी पार की। यह घटना वास्तव में एक चमत्कार था।

किस कारण यह चमत्कार हुआ? यह विश्वास था, ईश्वर में दृढ़ विश्वास। केवल विश्वास के कारण ही चमत्कार होते हैं। केवल इस्लाम में ही नहीं, बल्कि सभी धर्मों में धार्मिक व्यक्तियों ने बहुत से चमत्कार किए हैं। और इसका एकमात्र कारण विश्वास ही था, इसके सिवा कुछ नहीं जिस के कारण चमत्कार घटित होते हैं।

ईसा मसीह कई प्रकार के चमत्कार करते थे। वे कोढ़ी (कुष्ठरोगी) को ठीक करते थे, वे अंधे को दृष्टी (नज़र) देते थे, यहाँ तक कि ईश्वर की आज्ञा से वे मृत व्यक्ति को जीवित भी करते थे। बाइबल की निम्नलिखित पंक्तियाँ उन के चमत्कारों में विश्वास की महत्ता को प्रकट करती हैं।

जब यीशु घर आए, तब अंधे व्यक्ति उनके पास आए और यीशु के पास बैठ गए। यीशु ने उनसे कहा, "तुम विश्वास करते हो कि मैं यह कर सकता हूँ?" उन्होंने कहा, "हाँ प्रभु! " यीशु ने उन अंधे व्यक्तियों की आंखों को छू कर कहा कि 'तुम्हारे विश्वास के अनुसार तुम्हारी बीमारी दूर हो।' जब उन अंधे व्यक्तियों ने अपनी आंखें खोलीं तो उन्हें दृष्टी प्राप्त हो चुकी थीं। इसके बाद यीशु ने उन्हें स्पष्ट ताकीद कि "यह किसी को भी नहीं बताना।" (मॅथ्यू ९:२८-३०)

'तुम्हारे विश्वास के अनुसार तुम्हारी बीमारी दूर होगी' उन के इस कथन का अर्थ यह है कि जिनका विश्वास होगा उन्हीं के साथ चमत्कार होगा, अथवा विश्वास पर ही चमत्कार होता है। यह पंक्ति विश्वास की महत्ता को स्पष्ट करती हैं।

विश्वास क्या है?

विश्वास मुलतः दृढ़-विश्वास, संपूर्ण आत्म-विश्वास अथवा भरोसा या पक्का यकीन है।

विश्वास एक महत्वपूर्ण सकारात्मक भावना है, जिसके बिना दूसरी सभी सकारात्मक भावनाएँ अधूरी हैं। विश्वास मुल रूप से एक आशावादी भावना है। 'अपने आप पर विश्वास' इसका अर्थ है कि आप को अपनी सफलता प्राप्त करने की योग्यता पर विश्वास है। ईश्वर पर विश्वास का अर्थ है कि आप को ईश्वर के अस्तित्व पर और उसकी सहायता पर विश्वास है कि वह आपको कामयाब करके आप पर कृपा करेगा। विश्वास के न होने का अर्थ है शक अथवा संदेह, अर्थात अपनी योग्यता पर शक है, ईश्वर के अस्तित्व पर शक है, उसकी सहायता और कृपा पर भी संदेह है। जब मन में शक और संदेह हो तो, सफलता के बजाए आपका शक ही पूरा होगा, अर्थात असफलता हाथ आएगी।

यदि एक सज्जन व्यक्ति लगातार अपराधियों के संपर्क में रहे, तो वह भी अपराधी बन सकता है, क्यूँकि "अपराध जीवन का एक हिस्सा है" यह विचार उसके मन में लगातार घूमता रहेगा और जो विचार मन में बार बार दोहराए जाते हैं, वह अवचेतन मन सच समझ कर स्वीकार कर लेता है। मन का अधिक प्रभावशाली विचार व्यक्ति की सोचने की पूरी प्रक्रिया को नियंत्रित करता है, और जैसे विचार होते हैं, मनुष्य का चरित्र भी वैसा ही होता है। इसलिए जो लोग बुराइयों से दूर नहीं रहते वह गुनाह करना शुरू कर देते हैं।

अवचेतन मन को प्रभावित करने के लिए विचारों को बार बार दोहराना Auto Suggestion कहलाता है।

जब मन में विश्वास की भावना कम होती है तब Auto Suggestion ही केवल ऐसी पद्धति है, जिसके द्वारा हम विश्वास विकसीत कर सकते हैं।

श्री निपोलियन हिल के अनुसारः- विश्वास एक ऐसा अनादि अनंत अमृत है जो विचारों को जीवन-शक्ति और प्रेरणा देता है।

विश्वास ही कीमती धन समपत्ती और उन्नती का प्रारंभिक बिंदु है।

कुछ चमत्कार ऐसे होते हैं जिनकी विवेचना (Analysis) विज्ञान के द्वारा नहीं की जा सकती है, विश्वास ही उन सभी चमत्कारों का भी आधार है।

विश्वास ही असफलता का तोड़ है।

विश्वास एक मौलिक-शक्ति है। यह जब प्रार्थना के साथ मिल जाती है, तो ईश्वर के साथ सीधा संपर्क करा देती है।

विश्वास एक उत्प्रेरक (Catalyst) है, जो साधारण विचार में इतनी शक्ति पैदा कर देती है, कि वह उच्च कंपन वाले विचार आवेगों (Impulses) में बदल जाते हैं, जो अवचेतन मन से होते हुए सृष्टी(Mother nature) तक पहुँच जाते हैं।

धार्मिक पुस्तकों में ईश्वरीय ज्ञान बहुत ही सरल शब्दों में वर्णन किया गया है ताकि साधारण व्यक्ति भी उन्हें अच्छी तरह समझ सके।

अंतिम दूत हज़रत मुहम्मद (सल्लाल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहाः

''ईश्वर कहता है, जैसा कोई मुझ से आशा रखता है, मैं उस से वैसा ही व्यवहार करता हूँ।''

(बुख़ारी, मुस्लिम, बा-हवाला हदीसे नबवी, हदीस नं. ५ ६ ३, पेज नं. २ १ ४)

इसका अर्थ है, यदि कोई व्यक्ति यह सोचता है कि ईश्वर उस पर अपनी कृपा-दृष्टी रखेगा और जीवन के सभी कार्यों में उसे सफल बनाएगा तो ज़रूर ही ईश्वर उसे जीवन के हर कार्य में सफलता के लिए सहायता करेगा।

धार्मिक रूप से अथवा वैज्ञानिक आधार पर, जिस तरह और जैसा भी आप सोचते हों, सच्चाई यही रहती है कि मन का सब से अधिक प्रभावशाली विचार व्यक्ति की सफलता पर गहरा प्रभाव डालता है।

इसलिए व्यापार और जीवन के हर क्षेत्र में सफल होने के लिए हमें हमेशा सकारात्मक रवैया अपनाना चाहिए। इसी प्रकार हम अवश्य सफल होंगे इस बात पर दृढ़ विश्वास होना चाहिए। और इस बात पर भी विश्वास रखना चाहिए कि ईश्वर का अस्तित्व है और वह हमारी अवश्य सहायता करेगा।



अध्याय-१२

प्रकृति (निसर्ग-माता)

(Mother Nature)

निसर्ग-माता और ईश्वर में अंतरः-

ईश्वर ने इस पूरे संसार की रचना की है और वह अकेला ही उसका पालन-पोषण भी करता है। उसे इसके लिए किसी की सहायता की आवश्यक्ता नहीं है।

ईश्वर ने हर प्रकार के पदार्थ, हर प्रकार की शक्ति तथा इस संसार की संपूर्ण पद्धति को बिना किसी दोष (कमी) के सब प्रकार से उचित व उत्तम रूप में बनाया है। उसने केवल संपूर्ण संसार और इसकी प्रत्येक रचना को ही उत्तम रूप में नहीं बनाया है, बल्कि उसने कुछ पूर्ण रूप से स्वःचलित पद्धतियों को भी बनाया है जो ईश्वर के नियम, आदेश और इच्छा के अनुसार निरंतर इस संसार को स्थिर रखने का प्रबंध करती हैं, तथा इस संसार और इसकी प्रत्येक वस्तु को सही और उत्तम रूप में काम करने की दिशा देती रहती है।

ईश्वर की नियंत्रित करने वाली पद्धति इस संसार को इतने उचित और पुर्णतयः सही ढंग से चलाती है की कोई व्यक्ति आज से हज़ारों साल पहले अथवा बाद की आकाश में तारों की स्थिति की गणना और अचुक भविष्यवाणी कर सकता है।

इस संसार को नियंत्रित करने वाली शक्ति के रूप में देवदूत (Angels) हो सकते हैं जो ईश्वर के बनाए विधी-विधान और नियम के अनुसार काम करते है । या फिर इस संसार को नियंत्रित करने या चलाने के लिए ईश्वर ने कुछ शक्तियाँ और ''सॉफ्टवेयर'' बनाए होंगे। सत्य क्या है यह तो केवल ईश्वर ही जानता है। हम केवल अपने अनुभवों के आधार पर देखते हैं, सोचते हैं और फिर निष्कर्ष निकालते हैं।

यह स्वःचलित पद्धति जिसे (मेरे विचारों के अनुसार) ईश्वर ने रचा (बनाया) है, मैं इसे ''मदर नेचर'' (Mother Nature) कहता हूँ। मेरे कुछ निम्नलिखित निरिक्षण हैं जो सिद्ध करते हैं कि मदर नेचर अवश्य हैः

१.पक्षी प्रत्येक वर्ष मौसम के अनुसार स्थलांतर (Migration) के लिए हज़ारों मील का सफर तय करते हैं। वह अपने रास्ते से भटक कर किसी गलत दिशा में मरने के लिए नहीं जाते। कोई गुप्त नियंत्रण पद्धति अथवा योग्यता है, जिसके द्वारा वह हमेशा एक निश्चित (सही) समय पर प्रवास क्रिया शुरू करते हैं और ठीक समय पर सही स्थान पर पहुंचते हैं, और सही समय पर वापस लौट आते हैं। उनका मार्गदर्शन कौन करता है?

२.बड़े आकार के कछुए, जिन में से प्रत्येक का वज़न ५०० किलोग्राम से भी अधिक होता है, लॅटिन

अमेरिका से तैरते हुए सऊदी अरब के समुद्री किनारे पर आते हैं और अंडे दे कर इतनी ही दूरी का सफर तय करके वापस अपने स्थान पर पहुंच जाते हैं। एक निश्चित समय के बाद अंडों से बच्चे निकलते हैं। अंडों से बाहर आते ही नन्हें कछुए समुद्र की ओर रेंगना शुरू कर देते हैं। उन में से कुछ गिद्धों और बाज़पक्षियों का शिकार बन जाते हैं, लैकिन उनमें अनेक जीवित भी रहते हैं।

अंडों के सफेद और पीले पदार्थ को कछुओं में कौन बदलता है? नन्हें कछुओं के दिमाग में इस सच्चाई का बीज कौन बोता है कि उनकी सुरक्षा और उनकी दुनिया समुद्र में है न कि धरती पर, जिस पर कुछ क्षण पहले उनका जन्म हुआ था। उन्हें यह कौन बताता है कि पुर्ण रूप से विकसित अर्थात युवावस्था होने पर अंडे देने के लिए उन्हें हज़ारों मिल दूर से उसी स्थान पर सऊदी अरब के समुद्र तट पर वापस आना है, जहाँ वह अंडे से पैदा हुए थे।

३. यदि कुछ महीने के आयु के बच्चे की आँखों में खुजली होती है, तो वह अपनी उंग्लियों और नाखुनों को आँखों में डाल कर आँखों को जख्मी नहीं कर लेता। बल्कि वह अपनी उंग्लियों के जोड़ों और हथेली के पिछले भाग से अपनी आँखें मलता है, जो सब से अधिक सुरक्षित तरीका है। यह सुरक्षित तरीका बच्चे के मस्तिष्क को कौन सुझाता है?

४. हम सौ लीटर पानी कुछ दूरी तक भी नहीं ले जा सकते है। लेकिन हज़ारों टन पानी समुद्र से आसमान तक ले जाया जाता है, वहाँ से बादलों के रूप में हज़ारों मिल दूर-दूर के स्थानों तक हवा उसे पहुंचाती है। और फिर वर्षा की छोटी-छोटी बूंदों के रूप में पानी बरसता है। यह काम कौन करता है?

बादलों का बनना और पानी की बूंदों के रूप में बरसना, इन सब के वैज्ञानिक कारण हैं। परंतु वैज्ञानिक कारण होने का यह अर्थ नहीं है कि इसे कोई नियंत्रित नहीं करता। कोई गुप्त शक्ति है जो इसे नियंत्रित करती है, परंतु वैज्ञानिक रूप से।

उदाहरण के लिए, यदि पानी की छोटी बूंदों के स्थान पर, आसमान से बड़ी मात्रा में पानी गिरना शुरू हो जाए अथवा पानी के स्थान पर आसमान से बर्फ के बड़े टुकड़े गिरने लगें, तो यह नैसर्गिक घटना भी वैज्ञानिक कारण के द्वारा समझी और उन की विवेचना भी की जा सकती है। लेकिन वह विवेचना मनुष्य-जीवन को डूबने और मरने से बचा नहीं सकती। तो इन दुर्घटनाओं को होने से कौन रोकता है?

५. लंबी दूरी वाली उड़ानों में 'पाइलट' विमान को 'स्वःचलित यंत्र' (Auto-Pilot) पर चलाता है और स्वयं आराम करता है। 'स्वःचलित यंत्र पद्धति' (Auto-Pilot System) विमान को उसके निश्चित मार्ग, निश्चित ऊंचाई, तथा विमान की अन्य निर्धारित सीमाओं पर चलाती है। परंतु आपात काल और उतरने के समय पाइलट फिर स्वंय विमान को चलाने लगता है और 'स्वःचलित यंत्र' (Auto-Pilot) का बटन बंद कर देता है। इस उदाहरण में 'स्वःचलित यंत्र पद्धति' (Auto-Pilot System), मदर नेचर (Mother nature) की तरह है, और पाइलट 'ईश्वर' की तरह है। मदर नेचर (Mother nature) पूरे संसार के कार्यों को नियंत्रित करती है अथवा चलाती है। ईश्वर 'मदर नेचर (Mother nature)' को नियंत्रित करता है, तथा वह सारे निर्णय लेता है, जो मदर नेचर नहीं ले सकती।

६. आइये! अब अन्य उदाहरण द्वारा प्रकृति (Mother nature) को समझें, वह है कम्प्यूटर द्वारा

'टेलीफोन बिलों' का अपने आप बनना।

कम्प्यूटर क्या है?

कम्प्यूटर निर्माण-कर्ता कम्प्यूटर बनाने के लिए तीन प्रकार की सामग्री प्रयोग करते हैं।

१. विद्युत-कुचालक (Non-conductor), जैसे शीशा (काँच), प्लास्टिक, फाइबर इत्यादि,
२. अर्द्ध-कुचालक (Semi-conductor) जैसे सिलिकॉन इत्यादि, और
३. विद्युत-सुचालक (Conductor) जैसे तांबा, चांदी, टिन इत्यादि।

वे विद्युत-सुचालक (Conductor) (तांबा, टिन इत्यादि के तारों) को अर्द्ध-कुचालक (Semi-conductor) (सिलिकॉन) से जोड़ते हैं, और इनको एकत्रित कर विद्युत-कुचालक (Non-conductor) पर असेंबल करते है और एक संपूर्ण तथा जटिल इलैक्ट्रोनीक सर्कीट बनाते हैं। इस सर्किट में बिजली का प्रवाह दोनो तरफ से होता है परंतु इस का प्रभाव अलग-अलग होता है।

बिजली-प्रवाह के समय एक दिशा में पैदा होने वाले प्रभाव को '1' माना जाता है। और जब बिजली-प्रवाह विपरित दिशा से होती है तो अलग प्रकार से पैदा होने वाले प्रभाव को '0' समझा जाता है।

हम '0' से '9' तक दस संख्याओं को पहचानते हैं । परंतु इलैक्ट्रोनीक-सर्किट (Circuit) केवल दो नम्बरों को पहचानता है '0' और '1' यह दो संख्या वाली पद्धति (Binary System) कहलाती है। विद्यु्त सर्किट ऐसे जटिल और पूर्ण रूप से बनाई जाती है कि यह मस्तिष्क की तरह काम करती है। केवल दो नम्बरों यानी '0' और '1' के ज्ञान से यह सेकंड के एक हिस्से में बहुत बड़ी बड़ी गणना कर सकता है।

कम्प्यूटर में ऐसा प्रबंध किया गया होता है कि की-बोर्ड (Key-board) के द्वारा 'डेटा' (Data) डाला जाता है, 'मॉनिटर' (Monitor) द्वारा देखा जाता है, और प्रिंटर द्वारा परिणाम (छापाई के रूप में) प्राप्त किए जाते हैं। इस पूरी कार्यप्रणाली को नियंत्रित करने के लिए कम्प्यूटर के 'सेंट्रल प्रोसेसिंग यूनिट'(C.P.U) में 'साफ्टवेयर' डाले जाते हैं। जब ऐसी प्रणाली (यानी कम्प्यूटर) में संबंधित 'साफ्टवेयर' लोड करके टेलिफोन एक्सचेंज के साथ जोड़ा जाता है, तो यह जाने और आने वाली सभी कॉल्स को दर्ज (Record) करता है। टेलिफोन प्रयोग करने की अधिकतम सीमा को नियंत्रित करता है, निश्चित तिथि के बाद टेलिफोन सेवा को बंद कर देता है और बिल बनाता है।

यदि हम फिर से इस संपूर्ण पद्धति (कम्प्यूटर) की समिक्षा करते हैं, तो हम यह पाते है कि इस में केवल विद्युत-कुचालक, अर्द्ध-कुचालक, विद्युत-सुचालक, साफ्टवेयर और बिजली की शक्ति है। जब इस पद्धति में बिजली प्रवाहित होती है तो इस में कोई आत्मा, कोई बुद्धिमत्ता न होने के बावजूद भी यह पूर्णतः सही रूप से कार्य करता है। साफ्टवेयर के आदेशों या वर्णन के बिना यह पद्धति कोई भी काम नहीं करती।

मदर नेचर (Mother nature) भी ठीक इसी प्रकार स्वःचलित पद्धति है, जिस की रचना ईश्वर ने इस संपूर्ण संसार की कार्य-प्रणाली को नियंत्रित करने के लिए की है। यह ईश्वर के निर्देशों के अनुसार ही अपना कार्य पूर्ण रूप से सही ढंग से करती है और ऐसा कोई काम नहीं करती, जो इसे करने के लिए न

कहा गया हो।

मदर नेचर (Mother nature) देवदूतों की एक सेना हो सकती है या कम्प्यूटर की तरह, बिना शरीर और आत्मा की एक पद्धति जो केवल शक्ति के आधार पर कार्य करती है।

८.हमारे शरीर पर हमारा पूरा नियंत्रण होता है, किंन्तू यदि हम गहराई से सोचें तो मालूम होगा कि हालाँकि शरीर हमारा है, पर इस की देखरेख किसी दूसरे के हाथ में है। यह अदभुत प्रकार की एक शक्ति है और एक प्रकार का साफ्टवेयर (Computer Program) की तरह है। जिस के अनुसार हमारा शरीर कार्य करता है और उसकी देखरेख की जाती है।

उदाहरण के लिए, हमारे ह्रदय के एक कोने में एक बिजली की लहर विकसित होती है और दूसरे किनारे तक जाती है, जिस के कारण ह्रदय फैलता और सिकुड़ता है। इसी से ह्रदय की धड़कन होती है। इस बिजली की लहर को कौन पैदा करता है?

यदि हम टॉयलेट के लिए जाते हैं, तो मल (Stool) कभी खुद से बाहर नहीं आएगा, यदि किसी को गंभीर रूप से जुलाब हो तो अलग बात है। वरना वह अपने आप शरीर से बाहर नहीं निकलता। यदि विश्वास न हो तो उन लोगों से पूछिए जिन्हें कब्ज़ की बीमारी है। उन्हें कितना ज़ोर लगाना पड़ता है फिर भी परिणाम कुछ भी नहीं होता। यह आंतड़ियों की एक स्वःचलित (अपने आप चलने वाली) क्रिया है। यह एक केंचुए की चाल की तरह है जो मल्ल को शरीर से बाहर फेंकती है। इस प्रकार शरीर में अनेक क्रियाऐं हैं, जैसे पाचन क्रियाए निद्रा, काम क्रिया, श्वसन क्रिया, रोग प्रतिकार शक्ति आदि। यह सब स्वःचलित क्रियाऐं हैं और इन्हें हमारे शरीर में कोई दूसरा हमारे लिए करता रहता है।

क्या आप निश्चित रूप से बता सकते हैं कि यह स्वःचलित क्रिया हमारे शरीर में हमारे लिए कौन करता है?
आत्मा?
नहीं।

एक बार किसी व्यक्ति ने पैगम्बर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) से पूछा, "आत्मा क्या है?" तब ईश्वर ने कुरआन की एक पद-पंक्ति (आयत) उतारी, जिसका अर्थ है कि "आत्मा ईश्वर का निर्देश अथवा आज्ञा है।" (पवित्र कुरआन १७:८५)

इस ज्ञान से और दूसरी गणनाओं तथा पुस्तकों में अध्ययन किए हुए तथ्यों के आधार पर मैं यह अनुभव करता हूँ कि आत्मा कोई गुप्त शक्ति का रूप है और इसमें भी एक साफ्टवेयर होता है, परंतु यह शरीर की कार्यप्रणाली को नियंत्रित नहीं करता है। शरीर की कार्यप्रणाली पर किसी दूसरी शक्ति और साफ्टवेयर का अधिकार अथवा नियंत्रण है। क्योंकि दिल का दौरा (Heart Attack) पड़ने के समय ह्रदय की धडकन बंद हो जाती है। आत्मा ह्रदय की धड़कन को बंद नहीं कर सकती। यदि वह ऐसा करती है तो यह आत्मा की आत्महत्या करने की तरह है। आत्महत्या वर्जित है और यह एक पाप है। आत्मा यह कभी नहीं करना चाहती। सच्चाई तो यह है कि आत्मा अंतिम क्षण तक शरीर को छोड़ना नहीं चाहती है। तब यह सब कौन करता है? ईश्वर भी यह सब नहीं करता। क्योंकि ईश्वर के पास किसी के ह्रदय की धड़कन या आंतड़ियों की क्रिया को रोकने के अतिरिक्त और दूसरे अनेक

महत्वपूर्ण काम हैं।

मस्तिष्क (Conscious Mind) और अवचेतन मन (Sub-conscious Mind) भी ह्रदय की धड़कन बंद नहीं करेगा, क्योंकि शिशूअवस्था में माँ के गर्भाशय में ही ह्रदय की धड़कन शुरू हो जाती है, जबकि मस्तिष्क और अवचेतन मन शिशू में विकसित होना अभी बाकी होता है। इसलिए अवचेतन मन भी ह्रदय की धड़कन को नियंत्रित नहीं करता है।

मनुष्य के शरीर की गुप्त स्वःचलित नियंत्रित करने वाली पद्धति की तरह इस संसार को नियंत्रित करने वाली स्वःचलित पद्धति भी है, जिसे हम मदर नेचर (Mother nature) कहते हैं।

९. ईश्वर पवित्र कुरआन में कहता है,

"वह तो जब किसी चीज़ का इरादा करता है तो उसका काम बस यह है कि उसे आदेश दे कि हो जा और वह हो जाती है।" (पवित्र कुरआन ३६:८२)

इसी तरह ईश्वर ने इस संसार और इसमें प्रत्येक वस्तु की भी रचना की है। मेरे विचारो के अनुसार इस संसार के देखभाल के लिए ईश्वर हमेशा "ऐसा हो" यह नहीं कहेगा, परंतु उसने ऐसी कुछ गुप्त स्वःचलित पद्धतियाँ अवश्य बनाई होंगी, जो उसकी इच्छाओं को पूर्ण करती है और इस संसार की देखभाल करने के कार्य को अंजाम देती है। मैं इस ईश्वरीय पद्धति को मदर नेचर (Mother nature) कहता हूँ। संसार के सभी लोग भी इस स्वःचलित पद्धति का अनुभव करते है और वे इसे "खुदा की कुदरत" कहते हैं। इस पुस्तक में मैं इसे मदर नेचर या खुदा की कूदरत।

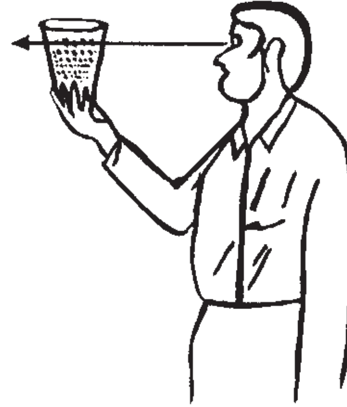


अध्याय-१३

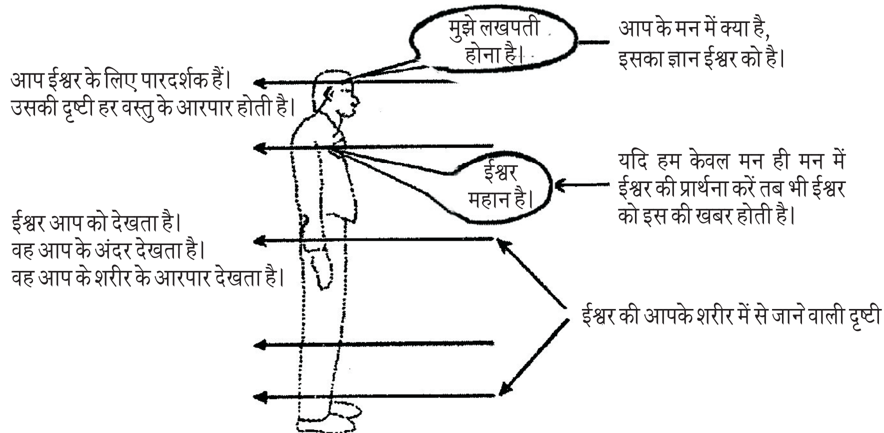
ईश्वर का परिचय?

(Introduction to God)

मानो आपके हाथ में एक ग्लास है। ग्लास पार्दशी है और उस के अंदर का पानी भी पार्दशी है। आप इस ग्लास को देख सकते हैं, आप इस के अंदर भी देख सकते हैं, और आप इस के पार भी देख सकते हैं। उंग्लियों से पकड़े इस ग्लास पर आपका पूरा नियंत्रण है।



ठीक इसी प्रकार यह संपूर्ण संसार भी ईश्वर के लिए पारदर्शी हैं। वह इसे देख सकता है, और इस के अंदर भी देख सकता है और वह इस के पार भी देख सकता है। यह पूरा संसार ईश्वर की उंग्लियों के बीच में है। वह अपनी इच्छा के अनुसार कुछ भी कर सकता है। इस संसार पर उस का पूरा नियंत्रण है। (ईश्वर का कोई आकार नहीं है, सिर्फ समझने के लिए हमने उसकी उंग्लियों का उदाहरण दिया है।)



ईश्वर हमारे दिल में छिपे विचारों को भी जानता है, निम्नलिखित आयत इसको साबित करती है।

"आसमानों और ज़मीन में जो कुछ है सब अल्लाह का है। तुम अपने दिल की बातें चाहे खोल दो, या छिपाओ अल्लाह हर हाल में उनका हिसाब तुमसे ले लेगा। फिर उसे अधिकार है, जिसे चाहे माफ़ कर दे और जिसे चाहे, सज़ा दे। उसे हर चीज़ पर क़ुदरत (नियंत्रण) प्राप्त है।" (पवित्र क़ुरआन २:२८४)

"पिता (ईश्वर) जानता है तुम्हारी आवश्यक्ता क्या है?" (पवित्र बाइबल मॅटः ६:८)

"इस से पहले कि वे (मनुष्य) पूछें, मैं (ईश्वर) उत्तर दूंगा।" (पवित्र बाइबल ईसाः ६५:२४)

हम सभी प्राणी ईश्वर के लिए पारदर्शी हैं। वह हमारे हृदय की प्रत्येक धड़कन सुनता है, यहाँ तक कि हमारे हृदय की गहराई में बसे प्रत्येक विचार को वह जानत है। वह हमें देखता है, वह हमारे अंदर देखता है, वह हमारे आर पार देखता है। वह हमारा निर्माता है।

पवित्र क़ुरआन में है कि,
"क्या वही न जानेगा जिसने पैदा किया है? हालाँकि वह सूक्ष्मदर्शी और ख़बर रखनेवाला है।"
(पवित्र क़ुरआन ६७:१४)

अर्थात हम स्वयं अपने बारे में उतना नहीं जानते, जितना वह (ईश्वर) जानता है।

वह हमें प्यार करता है। वह हमें खिलाता है। इस धरती पर जीवन कैसे व्यतीत करना है, इसके लिए उसने विभिन्न मापदंड निश्चित किए हैं। यदि व्यक्ति उस के निर्देशों का पालन करता है, तो इस धरती पर ईश्वर उसके जीवन को आसान बना देता है। वह व्यक्ति के मृत्यू-पश्चात का जीवन भी आसान बना देता है, जहाँ वह आत्मा अथवा शक्ति के रूप में होगा।

एक बिल्डर बिल्डिंग बनाता है, वह बिल्डिंग के फ्लॅटस् अपने ग्राहकों को बेचता है, उनकी सोसायटी बनाता है और बिल्डिंग का प्रबंधन फ्लॅटस् के मालकों के हवाले कर देता है।

ईश्वर ने इस पूरे संसार को बनाया है, उसने अनेक प्रणियों को इस में रहने की अनुमति दी है। परंतु इस का प्रबंधन उसने किसी के हाथों में नहीं दिया है। वह प्राणियों की हर चाल (गति) आर कार्य पर अपना नियंत्रण रखता है। यह संसार ईश्वर की मिल्कियत है। इस धरती पर जीवन कैसे बिताया जाए इस बारे में उस ने कुछ निश्चित मापदंड तय किए हैं। यदि व्यक्ति इस का पालन करते हैं, तो वह जीवन में सुख-समृद्धि प्राप्त करते हैं। यदि वह इसे नज़र अंदाज़ करते हैं, तो उन्हें कठिनाइयाँ और दरिद्रता का सामना करना पड़ता है। दरिद्रता, अपमान, कठिनाइयाँ, अन्याय, दबाव इत्यादि मनुष्य के अपने कर्मों के फल हैं, जिनके बीज उन्होंने स्वयं बोया था। ईश्वर किसी को भी कष्ट नहीं पहुंचाना चाहता है।

अपनी आखरी आकाशवाणी (पवित्र क़ुरआन) में ईश्वर कहता हैः

"ज़माने की क़सम, इन्सान वास्तव में घाटे में है, सिवाय उन लोगों के जो ईमान लाए, और अच्छे कर्म करते रहे, और एक-दूसरे को हक़ (सच्चाई) का उपदेश देते रहे और (कठिनाइयों में) सब्र और धीरज रखने की ताकीद करते रहे।" (पवित्र क़ुरआन, सूरह नं.१०३)

एक दूसरी जगह ईश्वर कहता है,

"जो व्यक्ति भी अच्छा कर्म करेगा, चाहे वह मर्द हो या औरत, शर्त यह है कि वह ईमान वाला हो, तो उसे हम दुनिया में पवित्र जीवन-यापन कराएँगे और (परलोक में) ऐसे लोगों को उनके उत्तम कर्मों के अनुसार बदला देंगे।" (पवित्र क़ुरआन, १६:९७)

ईश्वर कहता है,

"कसम है इंजीर और ज़ैतून की और तूरे सीना (सीना पहाड़) और इस शान्तिपूर्ण शहर (मक्का) की, हमने इन्सान को सर्वोत्तम संरचना के साथ पैदा किया, फिर उसे उलटा फेरकर हमने सब नीचों से नीच कर दिया, सिवाए उन लोगों के जो ईमान लाए और अच्छे कर्म करते रहे कि उसके लिए कभी समाप्त न होनेवाला बदला है।" (पवित्र क़ुरआन, ९५:१-७)

पवित्र क़ुरआन में ईश्वर कहता है,

"अल्लाह किसी जान (व्यक्ति) पर उसकी सहन-शक्ति से बढ़कर ज़िम्मेदारी का बोझ (भार) नहीं डालता। हर आदमी ने जो कमाई की है, उसका फल उसी के लिए है और जो बुराई समेटी है, उसका वबाल उसी पर है।" (पवित्र क़ुरआन, २:२८६)

सफलता और समृद्धि के संघर्ष में ईश्वर को कभी भी, न तो व्यक्तिगत स्तर पर और न ही सामाजिक एवं राष्ट्रीय स्तर पर नज़रअंदाज़ करना चाहिए। प्रत्येक को उस पर विश्वास रखना चाहिए तथा उसके दिखाए सही मार्ग का अनुसरण करना चाहिए।

संसार में अनेक महान सभ्यताएँ हो गुज़री हैं। इतिहास की पुस्तकों में हम उनकी संस्कृती, उनकी समृद्धि और उनकी बनाई हुई अद्भुत इमारतों इत्यादि के बारे में पढ़ते हैं। इतिहास-लेखक उनके विनाश और अंत का जो कुछ कारण दें, लेकिन हम उन से सहमत नहीं होते और हमेशा आश्चर्य करते हैं कि उनका अचानक अंत कैसे हुआ?

कोई भी उनके अंत का निश्चित कारण नहीं जानता। पवित्र बाइबल, तोहरा और क़ुरआन में अनेक सभ्यताओं का वर्णन किया गया है, जैसे आद, समूद, हूद, और लूत इत्यादि, जिनका विनाश अचानक हो गया, क्योंकि उन्होंने ईश्वर और उसके निर्देशों की आवहेलना की थी।

अनेक प्राचीन सभ्यताएँ, जिन के बारे में हम इतिहास में पढ़ते हैं, उनका भी ईश्वर के क्रोध के कारण विनाश हुआ। अधिक जानकारी के लिए मेरी अन्य पुस्तक "पवित्र वेद और इस्लाम धर्म" का www.freeeducation.co.in पर अध्ययन करें अथवा डाउनलोड करें।

यदि कोई व्यक्ति व्यक्तिगत स्तर पर ईश्वर की अवहेलना करता है, तो वह अपनी कोशिश के अनुसार किसी सीमा तक तो प्रगति करता है, लेकिन अंत में वह अपने पुराने अथवा पहले वाले स्तर पर वापस आ जाता है। (हम इसका वर्णन 'महान कार्यों का महत्व' नामक अध्याय के 'गरीबी का गढ़ा' विभाग में करेंगे।)

सामाजिक और राष्ट्रीय स्तर पर भी यदि काई ईश्वर और उस के निर्देशों को नहीं मानता, अथवा नज़रअंदाज़ करता है, तो वह कुछ समय तक एक स्तर पर विकास करेगा, परंतु अंततः उसकी समृद्धि नष्ट हो जाती है, और वह फिर अपने प्रारंभिक स्तर पर आ जाता है। रूस (Russia) इस तरह की घटना का ताज़ा उदाहरण है।

व्यक्तिगत अथवा राष्ट्रीय स्तर पर धन कमाने और संपदा इकट्ठी करने की प्रक्रिया में ईश्वर को नज़रअंदाज़ नहीं किया जा सकता। हर एक को ईश्वर को सही तरीके से मानना ही पड़ेगा। इसलिए यदि हम विकास करना चाहते हैं, तो ईश्वर की प्रार्थना हमारे व्यापारिक-अभ्यास और जीवन का एक हिस्सा होना चाहिए।

इस पुस्तक के अंत में हम पढ़ेंगे कि ईश्वर कौन है और विभिन्न धर्म उसके बारे में क्या कहते हैं? पैगम्बर कौन हैं? आदि।



अध्याय -१४

कल्पना तथा विचार का महत्व

(Imagination and Thought)

सफलता प्राप्त करने की प्रक्रिया एक सकारात्मक विचार से आरंभ होती है।

मनुष्य अपने मन में जिस वस्तु अथवा कार्य कि कल्पना करता है, तो वह उसे प्राप्त भी कर सकता है।

विचार भी वस्तुओं (Things) की तरह हैं, लेकिन शक्ति के रूप में। कुछ सिद्धांतों पर चल करके वह वास्तविक्ता या वस्तुओं में परिवर्तित हो सकते हैं।

धनवान तथा सफल होने की प्रक्रिया मन में एक ज्वलंत-इच्छा के रुप में आरंभ होती है, और यह दृढ़ इच्छा-शक्ति के साथ आगे बढ़ती है।

योजनाएँ, विचार, अनोखे आविष्कार, संकेत, समस्याओं के समाधान इत्यादि प्रकृति(निसर्गमाता) और ईश्वर से अवचेतन मन द्वारा विचारों के रूप में प्राप्त किए जाते हैं। वे जो लखपती बनने के लिए संघर्ष करते हैं, उन्हें इन विचारों को समझना, पहचानना और महत्व देना चाहिए, और उन विचारों के अनुसार कार्य करना चाहिए जो उन्हें अवचेतन मन द्वारा प्राप्त हुए हैं।

लाखों रूपए कमाने की कल्पना अथवा विचार, किसी धनवान होने वाले व्यक्ति के मन में जब पहली बार आते हैं, तो वह उसे हमेशा विचित्र दिखाई देते हैं। संघर्ष करने वाले का यह कर्तव्य बनता है कि वह इन विचारों को मरने न दें, और न ही उन्हें नज़रअंदाज़ करे, बल्कि उन्हें विकसित करें, उनकी समिक्षा करें और उन योजनाओं और कल्पनाओं को वास्तविक्ता में बदलने का प्रयत्न करें।

ऐसी ही कुछ कल्पनाएं जो वास्तविक्ता में परिवर्तित की गईं, निम्नलिखित हैः

फोर्ड कार (Ford Cars):

शुरू में मोटर कारें बहुत अधिक महंगी हुआ करती थीं, और समाज के कुछ गिने-चुने अमीर लोग ही उन्हें खरीद पाते थे। हेन्री फोर्ड का ऐसी सस्ती कारें बनाने का सपना था जिसे साधारण आदमी भी खरीद सके। यह बात असंभव थी, लेकिन दृढ़ इच्छा-शक्ति वाले हेन्री फोर्ड के लिए नहीं।

उन्होंने व्यापारियों के सामने अपने विचार रखे। उनसे एडवांस धन इकट्ठा किया और कारें निर्माण करने वाला एक कारखाना स्थापित किया। उन्होंने लोहे के कच्ची धातुओं (Iron Ores) से कारें बनाई। यह उस समय की बात है जब लोहा और धातुओं की शीटस् बड़ी मात्रा में नहीं मिलती थी। श्री फोर्ड खानों से लोहे की कच्ची धातु (Iron Ores) लिया करते थे वे उन्हे शुद्ध करते और लोहा बनाते थे और उस माल से कारें बनाते थे। कार के लिए प्रत्येक वस्तु उन की कंपनी में ही बनाई जाती थी। यह एक असंभव कार्य था, लेकिन श्री.हेन्री फोर्ड ने इसे वास्तविक्ता में परिवर्तित किया।

श्री. फोर्ड ने एक कल्पना की जो असंभव था। लेकिन एक जाने-माने ढंग के साथ उन्होंने उसे वास्तविक्ता में परिवर्तित किया। बदले में उन्होंने विशाल संपत्ति प्राप्त की और संसार ने अपनी खरीदने की क्षमता के अंदर एक मोटर-कार प्राप्त की।

फेडेक्स कोरियर सर्विस (FedEx Courier Service)

फेडरिक्स अपनी पढाई के अंतिम वर्ष में थे। इस वर्ष उन्हें ''समाज की समस्याओं का समाधान कैसे हो?'' इस विषय पर एक ''प्रोजेक्ट रिपोर्ट'' तयार करने को कहा गया। उन्होंने ''पोस्ट सर्विस'' इस विषय को अपने प्रोजेक्ट के लिए चुना। पोस्ट सर्विस में इस बात की कोई गारंटी और वायदा नहीं होता कि, भेजे हुए माल को अपने निश्चित ठिकाने पर पहुंचने में कितना समय लगेगा? जिसके कारण औद्यागिक प्रतिष्ठनों (Factory) को बहुत हानी उठानी पडती थी। फेडरिक्स ने पोस्ट तथा डाक प्रक्रिया का आंतरिक अध्ययन किया, देरी होने के कारणों की समिक्षा की और एक प्रोजेक्ट रिपोर्ट तयार की। इस रिपोर्ट में फेडरिक्स का मानना था कि यदि सभी पार्सल और डाक्युमेंटस एक केंद्र में इकट्ठे किए जाएं और फिर वहाँ से बांटे जाएं तो अनचाही अधिक देरी से बचा जा सकता है।

फेडरिक्स का प्रोफेसर उसकी रिपोर्ट पर हंसा और इसे अस्वीकार कर दिया।

परंतु फेडरिक्स को विश्वास था। वह इस बारे में निश्चित थे। उनके मन में अपनी एक ऐसी कंपनी स्थापित करने की ज्वलंत इच्छा थी, जहाँ से वह ग्राहकों को विश्वास और जल्द डिलिवरी दे सके। यह कार्य पद्धति उभरते उद्योगों के लिए बहुत ज़रूरी भी थी।

उसने समाचार पत्रों में विज्ञापन दिया कि वह कुछ चुने हुए शहरों में एक निश्चित समय के अंदर सामान पहुंचाएगा और वह इस बात की गॅरंटी भी देता है। पहले दिन उन्होंने ६ कंसाइनमेंट (Order) प्राप्त किए, जिन्हें उन्होंने वादा किए हुए समय के अंदर सौंप दिया। इस तरह उन्होंने लोगों का विश्वास जीत लिया और अधिक से अधिक कंसाइनमेंट (Order) प्राप्त होने शुरू हो गए।

कोरियर कंपनी, जिसकी फेडरिक्स ने कल्पना की थी और फिर उसे स्थापित कर दिखाया, वह आज फेडएक्स (FedEx) के नाम से जानी जाती है। यह कोरियर कंपनियों में सब से बडा संगठन है, जिस में ६८० हवाई जहाज़ों का बेड़ा है और उसकी सालाना आमदरी २८ बिलीयन डॉलर है।

फेडरिक्स ने एक नई कल्पना की जो अपने आप में अछूती कल्पना थी। अपनी ज्वलंत इच्छा और इरादे के साथ उन्हों ने इसे वास्तविक्ता मे बदल दिया। परिणाम स्वरूप उन्होंने एक बहुत बडी संपत्ति व धन कमाया और दुनिया ने एक विश्वसनीय कोरियर कंपनी प्राप्त की।

कोका कोला (Coca Cola)

सर्दियों की कड़कड़ाती ठंड की रात में एक कैमिस्ट ने कुछ रसायन (Chemical) की एक बड़ी केतली और कागज़ का एक टुकड़ा जिस पर एक सिद्धांत (Formula) लिखा हुआ था, उसे अपने साथ लिया और गाड़ी चलाते हुए 'आसा कॅंडलर' के पास पहूंचा और इसे बहुत ही ऊंचे दामों पर उनको बेच दिया। आसा कॅंडलर ने उन कॅमिकल्स और फार्मुले के लिए अपनी जिंदगी की पूरी कमाई दे दी। कॅमिस्ट के लिए वह कॅमिकल और फॅार्मुला एक मामूली चीज़ थी, मगर आसा कॅंडलर के लिए नहीं। आसा कॅंडलर

ने कड़वे और गले को पलभर के लिए सर्द करने वाले एक अजीब ठंडे-पेय (Cold Drink) का सपना देखा था, जो कोल्ड्रिंक्स की दुनिया में एक क्रान्ती लानेवाली था। और अपने इस सपने के लिए उन्होंने अपनी पूरी ज़िंदगी की कमाई दांव पर लगा दी।

कोका कोला केवल पार्टियों और उत्सवों का मनपसंद पेय (Drink) ही नहीं है, बल्कि यह लाखों लोगों को रोज़गार भी देता है और उनकी आमदनी का ज़रिया भी है।

मॅक्डोनाल्ड (McDonald)

श्री. मॅक्डोनाल्ड होटल के व्यापार में थे। वह अपने व्यापारिक क्षेत्र में बहुत ही सफल व्यक्ति थे, क्योंकि उन्होंने समीक्षा की और अपने ग्राहकों की ज़रूरतों और इच्छाओं को पूरा किया था।

ग्राहकों की इच्छाएं निम्नलिखित प्रकार की होती हैं:

होटल का सुविधाजनक स्थान (Convenient Location of hotel)
जल्द सेवा (Fast Service of Food)
कम कीमत (Low Cost of Food)
अच्छी गुणवत्ता (Good Quality of Food)

श्री. मॅक्डोनाल्ड ने उत्तम स्थानों पर होटलें स्थापित कि और ग्राहकों की सारी इच्छाओं को उन्होंने पूरा किया। उन्होंने केवल सीमित वस्तुएँ ही रखीं, इसलिए इन्हें तैयार रखना आसान होता था। ग्राहक जैसे ही ऑर्डर करता वह उसे तुरंत परोसी (Serve) जाती।

थोडी वस्तुएं, बड़ी मात्रा में बनाने से लागत मुल्य कम होता है, इसलिए अपने होटल में वह कम से कम दाम रखने में समर्थ हुए। वह सब से अच्छी गुणवत्ता को भी कायम रखते थे, क्योंकि उन्हें अपना ध्यान कुछ सिमित पकवान पर ही एकाग्र रखना होता था।

ग्राहकों की इन चार अपेक्षाओं को पूरा करने पर उन्हें बहुत प्रसिद्धी मिली। आरंभिक सफलता के पश्चात वह अपने व्यापार को अधिक विस्तृत करना चाहते थे।

लेकिन कैसे?

अधिक होटलें खोलने से वह और व्यस्त हो जाते और सारे होटलों का कारोबार एक साथ संभालना मुश्किल हो जाता।

उनके मन में एक विचार आया, जिसकी उनसे पहले (अतीत में) किसी ने कल्पना भी नहीं की थी। उन्होंने केवल २ % के आधार पर लोगो से साझेदारी कर प्रस्ताव रखा। जिसका अर्थ है, कि वह केवल २ % के साझीदार होंगे और दूसरे व्यक्ति का हिस्सा ९ ८ % होगा। इस २ % की साझेदारी के बदले में वह इतना ही चाहते थे कि होटल का नाम 'मॅक्डोनाल्ड' रहेगा और खाना बनाने तथा होटल-व्यवस्थापन में वह अपने विचार-विमर्श देंगे।

यह एक ऐसा फायदेमंद प्रस्ताव था, कि थोडे समय के अंतराल में ही केवल अमेरिका में ही नहीं बल्कि संसार के सभी देशों में ४०,००० मॅक्डोनाल्ड रेस्टारेंट खुल गए।

मि. मॅक्डोनाल्ड ने एक व्यापार-शैली की कल्पना की, जो परंपरागत (पहले से चली आ रही) साझेदारी से बिल्कुल अलग थी। उन्होंने उसे वास्तविक्ता में बदला और अपार धन-संपत्ती प्राप्त की और संसार को विश्व-स्तरीय होटल और स्वादिष्ट खाना मिला।

ज़ेरॉक्स (Xerox)

मि. चेस्टर कार्लसन ने एक ऐसी मशीन की कल्पना की जो किसी भी डॉक्युमेंट की कुछ सेकंडों के अंदर नकल तैयार कर सके । उन्होंने इस कल्पना को वास्तविक्ता मे बदला और कई बिलियन्स डॉलर कमाए।

मि. थॉमस ऍडिसन (Mr. Thomas Edison)

मि. थॉमस ऍडिसन ने अनेक असंभव आविष्कारों की कल्पना की, जैसे इलेट्रीक बल्ब तथा ग्रामोफोन इत्यादि। उन्होंने अपनी कल्पना को वास्तविक्ता में बदला और एक समृद्ध तथा प्रसिद्ध वैज्ञानिक बने।

सेंकडों ऐसे उदाहरण हैं, जिसमें सपना देखने वाले ने असंभव और विचित्र वस्तुओं का सपना देखा, और वह अपने सपनों को वास्तविक्ता में परिवर्तित करने के अपने इरादे पर जमे रहे। और उन्होंने उसे कर दिखाया।

कल्पना को वास्तविक्ता में बदलने के लिए जो अत्याधिक महत्वपूर्ण चीज़ चाहिए वह है ज्वलंत-इच्छा (Burning Desire)! परंतू ज्वलंत-इच्छा क्या है? मैं आपको निम्नलिखित उदाहरणों द्वारा ज्वलंत-इच्छा (Burning Desire) के बारे में समझाने की कोशिश करता हूँ:

७५० ई. सन में ''तारीक बिन ज़ियाद'' खलीफा ''वलीद इब्ने अब्दुल मलिक'' की सेना में 'वेस्टर्न कमाँडर' के कमाँडर इन चीफ थे। तारिक बिन ज़ियाद को उत्तरी अफ्रीका और यूरोप के दक्षिणी देशों जैसे स्पैन (Spain) आदि (समुद्र के पार) पर विजय प्राप्त करने का कार्य सौंपा गया था।

उन्होंने अफ्रीका को जीत लिया, परंतु स्पैन पर विजय प्राप्त करना आसान कार्य नहीं था। तारिक बिन ज़ियाद के दिल में स्पैन को जीतने की बहुत अधिक इच्छा थी, इसलिए उन्होंने अपनी सेना को जहाज़ में चढ़ाया, स्पैन के किनारे पर ले गए, अपनी सेना और सामान को उतारा तथा सभी जहाज़ो को जला दिया।

जब जहाज़ों ने जल कर डूबना शुरू किया तो उन्होंने अपने सैनिकों से कहाः ''इन जहाज़ों की ओर देखो, इन के डूबते ही तुम्हारे पलायन (भागने) के सारे रास्ते बंद हो गए। अब बिना विजय प्राप्त किए तुम इस तट से कभी जीवित वापस अपने देश नहीं जा सकते। अब तुम्हारे सामने कोई रास्ता नहीं है, जियो या मरो।

और वे जीत गए। तारिक बिन ज़ियाद की बारह हज़ार की सेना ने स्पैन की एक लाख की सेना से सात दिनों तक मुकाबला किया और उन पर विजय प्राप्त किया।

''जबल तारिक'' अथवा जिब्राल्टर पहाड़ी जिस पर वह लड़े और युद्ध में विजय प्राप्त की, आज भी उन के नाम से याद की जाती है। (अरबी शब्द जबल का अर्थ है पहाड़ी, जबल तारिक का अर्थ है तारीक की

पहाड़ी)

इच्छा की वह अवस्था जो तारिक बिन ज़ियाद के दिल में थी, वह ‘‘ज्वलंत-इच्छा’’ है।

ज्वलंत-इच्छा रखने वाला व्यक्ति अपनी कल्पना को वास्तविक्ता में बदलने और इसे संभव बनाने के लिए अपना सब कुछ दांव पर लगा देता है।

लेकिन उस समय हम क्या करें, जब मन ज्वलंत-इच्छा को विकसित करना चाहता है, लेकिन ज्वलंत-इच्छा ह्दय में जलती नहीं है?

इस का उत्तर है ‘‘ओटो सजेशन’’ (Auto-Suggestion) है। जिसका अध्ययन हम अगले अध्याय में करेंगे।



अध्याय-१५

ओटो सजेशन

(Auto Suggestion)

ओटो सजेशन कैसे काम करता है।

ओटो सजेशन तीन नियमों पर निर्भर है।

नियम १ - व्यक्ति का अवचेतन मन जब व्यक्ति के मन में भावनाओं के साथ स्पष्ट उद्देश्य या इच्छा होने के बाद ही सक्रिय होता है।

नियम २-लोग जब पहली बार किसी अपराध के संपर्क में आते हैं, तो वह उसे बुरा समझते हैं और उसे टाल देते हैं। यदि वह अपराध के संपर्क में कुछ और समय के लिए रहते हैं तो उसके अभ्यस्त (आदी) हो जाते हैं, और उसे सहन करने लगते हैं। यदि वह उसके संपर्क में काफी लम्बे समय तक रहते हैं, तो अंततः उसे स्वीकार कर लेते हैं और स्वयं अपराध करने लगते हैं। यह मनुष्य का स्वभाव है।

नियम ३-एक रूसी शरीर विज्ञान शास्त्रज्ञ (Physiologist) पावलोव्ह (Pavlov) ने अपने कुत्ते पर एक प्रयोग किया। इस प्रयोग में वह एक घंटी बजाता और उस के तुरंत बाद अपने कुत्ते को खाना देता था।

कुछ समय बाद कुत्ते के मन में यह बात बैठ गई कि घंटी की आवाज़ के तुरंत बाद ही खाना मिलता है। इसके बाद जब भी घंटी बजाई जाती, कुत्ते के मुंह से लार बहने लगती, चाहे उसे खाना दिया जाए या न दिया जाए। पावलोव्ह का यह प्रयोग-निष्कर्ष जगप्रसिद्ध है और "संबंध-क्रिया" (Conditional Responce) के नाम से जाना जाता है।

इस प्रयोग से यह बात सिद्ध होती है कि कुत्ते के मन ने घंटी की आवाज़ को भोजन से जोड दिया था। इसलिए घंटी बजते ही उसका मन भोजन के लिए शरीर को तैयार कर देता, अर्थात कुत्ते के मुंह से लार (खाना खाने के लिए) आने लगती।

इसका अर्थ यह है कि यदि मन को जागृत अवस्था में कुछ समय तक कुछ बाहरी संकेत (Signal) लगातार मिलते रहें जिस से शरीर में कुछ बदलाव, भावना अथवा प्रतिक्रिया शरीर में पैदा होती हो तो उसके बाद जब भी मन को वही बाहरी संकेत मिलते हैं तो मन अपने-आप अधिक प्रयत्न न करते हुए वैसा ही बदलाव, भावना अथवा प्रतिक्रिया पैदा करता है।

Auto Suggestion क्या है और उसकी महत्ता

शदीद ख्वाहिश कि तशरीह के लिए नेपोलियन हिल ने तारीख बीन जीयाद की मिसाल दी।

सन ७५० में तारीक बीन झीयाद, खलीफा वलीद बीन अब्दुल बीन मलीक के सिपेसालार थें। तारीक

बीन झीयाद को शुमाली अफ्रिका और युरोप के जुनबी मुमालिक फतेह करने का हुक्म दिया गया जैसे स्पेन और समुंदर पार के मुल्क। तारीक बीन झीयाद ने शुमाली आफ्रिका फतेह कर लिया लेकिन स्पेन फतेह करना आसान नहीं था। तारीक बीन झीयाद ने तहय्या कर लिया लेकिन स्पेन फतेह करना आसान नहीं था। इसलिए उन्होंने अपने १२००० सिपाहियों को कश्तियों में सवार किया। स्पेन के साहिल तक बेहरी सफर किया। साहिल पर लंगर अंदाज होकर अपनी कश्तियां जला दि।

जब कश्तिश्यां समंदर में जलकर डुबने लगी तो तारीक बीन झीयाद ने अपने फौजीयों से कहाँ, 'उन कश्तियों को देखों जैसे ही वह कश्तियां गर्क होगी तुम्हारे फरार के सारे रास्ते बंद हो जाएंगे। तुम इस साहिल से जिंदा नहीं लौट सकते जब तक तुम फतेह याब न हो जाओ। तुम्हारे पास और कोई रास्ता नहीं, या तो फतेह पाओ या फना हो जाओ।' और वह फतेह याब हो गए!

जिस चट्टान पर वह स्पेन वे १ लाख फौजियों से सात दिन तक लढें और फतेह हासिल की उसका नाम आज भी तारीक बीन झीयाद के नाम पर जबल तारीक या जिबॉल्टर है।

जिस ख्वाहिश से तारीक बीन झीयाद मग्लुब थे उसे शदीद ख्वाहीश (Burning Desire) कहते है।

शदीद ख्वाहीश रखनेवाला अपने मक्सद को पाने के लिए अपनी हर चीज़ दांव पर लगा देता है।

शदीद ख्वाहीश का दिल में होना कामयाबी के उसुलों मे से एक उसूल है। इसलिए जिसे भी कामयाब होना होगा उसके दिल में शदीद ख्वाहिश ज़रुर होनी चाहिए।

हमें क्या करना चाहिए जब जहन तो शदीद ख्वाहिश चाहता है, मगर दिल में एक शदीद ख्वाहीश की आग जलती ही नहीं?

जवाब है (ऑटो सजेशन) Auto Suggestion.

ऑटो सजेशन Auto Suggestion.

इसे हम अपने आप को यकिन दिलाना भी कह सकते है यह एक ऐसा तरिका है जिसमें हम कुछ ख्यालात और हकायक बार-बार दौहराते है। और जहन नशीन करते है, ताकि उन्हें हमारा दिलों दिमाग बतौर हकिकत कबुल कर ले क्योंकि ख्यालात और जज़्बात हमारी कारगीरदगी को बेहद मुतासिर करते है। और कामयाबी में अहम रोल अदा करते है। इसलिए अगर सही ख्ययालात और जज़्बात हमारे जहन में बैठ जाए तो हमारी जिंदगी बदल सकती है।

Auto Suggestion में सात अमल है या अपने आप को यकिन दिलाने के सात दर्जे है जो जेल में दर्ज किए जा रहे हैं:

१. अपना मक्सद और अपनी मंजील बिल्कुल वाजा हो और पूर यकिन हो।

२. अपनी जद्दोजहद और मनसुबा भी वाजेह और साफ रखें। यानी अपना मक्सद पूरा करने के लिए आप क्या इकदाम करेंगे यह भी बिल्कुल वाजेह हो। (अपने मक्सद और मंजील को पाने के लिए आप क्या कुरर्बानी देंगे यह भी जहन में वाजेह हो)।

३. दोनों चीजों को एक कागज़ पर तहरिर कर ले। यानी अपने मक्सद, जद् दोजहद और मनसुबे को कागज पर तहरिर कर ले।

४. रोज़ाना सुबह और शाम उस कागज की तहरिर को बाआवाज बुलंद पढ़े।

५. कामयाब होने के पहले यह यकिन करने की कोशिश करें की आप कामयाब हो रहे हैं।

६. अपने मनसुबों पर अमल शुरु कर दे।

७. अपने मक्सद, अमल और मुश्किलात का तज्जीया करें। तरीकेकार में इस्लाह करें और अपना काम जारी रखें। अपने आप को यकिन दिलाने का यह तरिका न सिर्फ तिजारत में इस्तेमाल होता है बल्की कसरत से और कई जगह इस्तेमाल होता है, जैसे (खेलकुद, फौजी तरबीयत, Company Management वगैरा में)

चरण १ :- Define your goal clearly

अपने लक्ष्य को स्पष्ट और विशेष रुप से परिभाषित करें। उदाहरण के लिए यदि आप बहुत अधिक धन चाहते हैं, तो इतना ही कहना काफी नहीं है कि आप अमीर होना चाहते हैं। बल्कि कहें, मैं इतनी रकम चाहता हूँ। (कहें, मैं एक करोड़ या दस करोड़ रुपयें चाहता हूँ।) और समय भी बताएँ। ऐसा न कहें, में भविष्य में अमीर बनना चाहता हूँ। बल्कि कहें, में इतनी रकम चौथे साल के अंत तक चाहता हूँ। (अथवा कोई भी निश्चित समय)

लक्ष्य को स्पष्ट रुप से निर्दिष्ट करने का अर्थ यह है कि अवचेतन मन केवल विशिष्ट संदर्भ पर ही कार्य करता है। उदाहरण के लिए, यदि आप एक कम्प्युटर (जिस में शब्दकोश (Dictionary) लोड़ की गई हो) से सकारात्मक भावना (Positive Emotion) का अर्थ पूछें तो वह सही उत्तर नहीं देगा। लेकिन यदि आप विशेष रुप से विश्वास (Faith) का अर्थ पूछें, तो वह बिल्कुल ठीक बताएगा, कि विश्वास का अर्थ है पूर्ण श्रद्धा और भरोसा।

इसी प्रकार अवचेतन मन प्रकृति से वही संदर्भ (Detail Knowledge) प्राप्त करता है, जिन की स्पष्ट और विशिष्ट रुप से व्याख्या की गई हो। और लक्ष्य को प्राप्त करने का उचित समय निर्धारीत किया गया हो।

चरण २ :- Specify your effort

आप निश्चत कीजिए कि सफलता प्राप्त करने की प्रक्रिया में आप क्या त्याग करोगे।

प्रत्येक महत्वपुर्ण वस्तु का मुल्य होता है। सफलता और समृद्धि बहुत महत्वपुर्ण है। कोई भी व्यक्ति मुफ्त में सफलता प्राप्त नहीं कर सकता है। हर एक व्यक्ति को समृद्धि पाने के लिए कठिन परिश्रम, बुद्धि और शारीरिक श्रम खर्च करना ही पड़ता है।

तुम्हें अपने प्रयत्न को विस्तार से, स्पष्ट रुप से बताना होगा। उदाहरण के लिए एक विद्यार्थी कहेगा, मैं १४ घंटे प्रति दिन इस प्रकार और इस तरह पढ़ता हूँ कि मुझे ९० प्रतिशत अंक प्राप्त हो जायेंगे। एक

साहसी विक्रेता कहेगा, मैं अपना लक्ष्य प्राप्त करने के लिए एक दिन में १ २ घंटे इस प्रकार काम करुंगा अथवा मैं इस प्रकार मार्केटिंग करुंगा, आदि आदि।

मूलतः यह आपकी कार्य-योजना और कोशिश हैं, जिसे आप अपना लक्ष्य प्राप्त करने के लिए प्रयोग में लाओगे।

चरण ३ :- Record your aim and effort on paper.

एक कागज़ के टुकड़े पर सब लिख लिजीए जो आपने निश्चय किया है। जो आपका उद्देश्य स्पष्ट रुप से है। वह समय जिस में आप अपना लक्ष्य पूरा करना चाहते हैं, और वह कार्य-योजना तथा कोशिश जो आप अपना लक्ष्य प्राप्त करने के लिए करेंगे। यह पूर्ण कार्य-योजना होगी अथवा सफलता प्राप्त करने के लिए तुम्हारे प्रयासो की अंतिम रुप-रेखा (Blue Print) होगी।

किसी समस्या को यदि अच्छी तरह से परिभाषित (Describe) किया जाए, तो आधी वह स्वंय ही हल हो जाती है। इसी प्रकार यदि किसी व्यापार या प्रोजेक्ट को अच्छी तरह से परिभाषित (Describe) किया जाए तो उसका सफल होना या पूरा होना आसान हो जाता है। महाभारत में केवल अर्जुन का तीर ही मछली की आँख को वेधने में सफल हुआ था, क्योंकि मात्र अर्जुन ही अपने लक्ष्य पर पूर्ण रुप से ध्यान देने में समर्थ था। जब उससे पूछा गया कि उसे क्या दिखाई दे रहा है? तब उसने उत्तर दिया, 'केवल मछली की आँख'। जबकि बाकी सभी ने कहा, हम पेड़, मछली दिख रहा है, आदि आदि। उन में से कोई भी अपने लक्ष्य पर पूरी तरह ध्यान केंद्रीत नहीं कर सका ना अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सका। जब तुम अपने लक्ष्य को ठीक प्रकार से परिभाषित (Describe) करते हो, तो तुम्हारी कोशिश, शक्ति, समय और ताकत अनावश्यक वस्तुओं अथवा बातों में नष्ट नहीं होगी। इसलिए सफलता प्राप्त करने की प्रक्रिया में अपनी योजना को अच्छी तरह से परिभाषित(Describe) करना, आवश्यक और अधिक महत्वपूर्ण तथ्य है।

चरण-४ :- Remind yourself Daily.

जो आपने लिखा है, उसे रोज सुबह-शाम ज़ोर-ज़ोर से पढ़ो, इस भावना के साथ कि आपने अपना लक्ष्य प्राप्त करना आरंभ कर दिया है।

यह चरण Auto-Suggstion का ह्रदय है और सब से मुख्य भाग है। इस के बिना अवचेतन मन ना प्रभावित होगा और ना आपको सहायता करेगा। इससे पहले हमने पढ़ा है कि, जब कोई बुराई अथवा अपराध किसी व्यक्ति के सामने बार-बार दोहराया जाता है, तो पहले वह उसे बुरा समझता है, इसे अस्वीकार करता है, फिर अगर वह बातें बार-बार दोहराई जाए तो वह इसे सहन करता है, और अंततः उसे स्वीकार कर लेता है। इसी प्रकार यदि झूठ बार-बार दोहराया जाता है, तो अंततः मन उसे स्वीकार कर लेता है। अंतः एक सच की तरह वह झूठ पर विश्वास करने लगता है।

इन तथ्यों के आधार पर अपनी योजना की पूरी कार्य-प्रणाली (Blue print) को आप अभी से सफल हो रहे हो इस भावना के साथ अपने मन में बार-बार दोहराओ। ऐसा करने से आपका मन इसे वास्तविकता और सच्चाई की तरह स्वीकार कर लेगा और जब आपका मन आपकी कार्य योजना को सफलता की

सकारात्मक भावना के साथ विश्वास करता है। तो सफलता के यह तथ्य आपके अवचेतन मन को उत्तेजित करते है और वह इसे स्वीकार कर लेता है। उसके बाद आपका अवचेतन मन इन भावनाओं को साकार करने के लिए प्रकृति और ईश्वर की सहायता लेता है।

प्रकृति ईश्वर के साथ वार्तालाप करेगी, आपकी कोशिश के अनुरुप आपके उद्देश्य की ईमानदारी तथा तुम्हारे और समाज के लिए क्या अच्छा है? इसपर ईश्वर अपना निर्णय आगे बढ़ाएगा और उसके निर्णय के अनुसार प्रकृति, विचार, योजना और तुम्हारे अवचेतन दिमाग के निर्देश के अनुसार आपकी कार्य-योजना को स्थापित करेगी। प्रकृति भी सभी संबधित लोगों को, जो आपकी सहाय्यता के लिए हैं, संकेत प्रसारित करेगी और आपकी सफलता का रास्ता बनाएगी। इससे आपको सफलता के मार्ग पर जाने के लिए और अपने सपने साकार करने के लिए आपके मन में स्पष्ट संकेत और कल्पना आऐंगे। आपको नज़र आएगा कि इस दुनिया का हर एक व्यक्ति आपका जिम्मेदारी का काम पूरा करने में आपकी मदद कर रहा है, और आपको यह भी नज़र आएगा कि घटनाएँ अपने आप हो रही है तथा आपको अपना लक्ष्य प्राप्त करने में आसानी हो रही है।

उपर दिए गए क्रिया को धार्मिक पुस्तकों में भी वर्णित किया गया है, उसका सारांश निम्नलिखीत है:

ई.सन ६१९ साल, ईश्वर ने अंतिम पैगम्बर (स.) को स्वर्ग दिखाने के लिए आकाश में बुलाया था। इस स्वर्ग कि यात्रा में उन्होंने देखा कि, कुछ चीज़े जमिन से आसमान की तरफ जा रही हैं और कुछ चीजे आसमान से जमिन की तरफ आ रही है। तब उन्होंने अपने साथी महान ईश्वरदूत जिब्रील को इस बारे में पूछा तब उन्होंने कहा आकाश की तरफ जानेवाली चीजे लोगों के कर्म हैं और आकाश से जमिन की तरफ जानेवाली चीज़े ईश्वर के आदेश हैं (लोगों के कर्मो के हिसाब से)। (हदीस)

एक और हदीस का अर्थ है की जब ईश्वर किसी व्यक्ति के कर्मों को पसंद करता है तो उस से प्रेम करता है। और ईश्वर फरिश्तों के सरदार जिब्रील से कहते है की में इस व्यक्ति से प्रेम करता हूँ इसलिए तुम भी इस से प्रेम करो। तो जिब्रील भी उससे प्रेम करते है। और वह सभी फरिश्तों से कहते हैं कि ईश्वर इस व्यक्ति से प्रेम करता है इसलिए आप सभी इससे प्रेम करो। तो सारे फरिश्ते इस व्यक्ति से प्रेम करते हैं। फिर उस व्यक्ति के लिए प्रेम सहायता की भावना, आदर इत्यादी सभी मानव जाती के ह्रदय में भेज दिए जाते है। (हदीस)

प्रकृति ईश्वर के आदेश के अनुसार ही कार्य करती है। वह किसी को भी अपने मर्जी के अनुसार संदेश नहीं भेजती। ईश्वर का आदेश रहेगा जिस के लिए उसी को वह संदेश भेजती है।

जैसा ईश्वर कहता है:

वह सब के ज्ञान और बुद्धि को नियंत्रित करता है, और बिना उसकी इच्छा के कोई भी उन्हें हासिल नहीं कर सकता है। (पवित्र कुरआन २:२५५)

यह वह अध्यात्मिक कड़ी और नियंत्रण है जिस के कारण कभी कभी यहाँ तक कि कम पढ़ा लिखा व्यक्ति एक दार्शनिक और बुद्धिमान व्यक्ति की तरह सोचता है और बात करता है और कभी-कभी एक व्यक्ति जो की कुशल विद्वान और अधिक बुद्धिमत्ता वाला है, फिर भी वह एक मुर्ख की तरह कार्य करता है और

बातें करता हैं।

Auto Suggestion सफल होने से पहले हमने सफलता को प्राप्त करना आरंभ किया है यह भावना मन में हमेशा रखना बहुत कठिन कार्य है। लेकिन भावना तो अनिवार्य है, आपको प्रत्यक्ष रुप से सफल होने से पहले ऐसी कल्पना और भावना करनी ही चाहिए कि मैं सफल हो चूका हूँ। क्योंकि बिना इस भावना के अवचेतन मन कोई प्रतिक्रिया नहीं करेगा।

यदि आप कोई भी धार्मिक पुस्तक पढ़ेंगे तो आपको मालूम होगा की स्वर्ग की इतने प्रभावशाली रुप से व्याख्या की गई है कि हर कोई इसे प्राप्त करना चाहता है अथवा इस में ठहरना चाहता है। इस आशावादी भावना, विश्वास और स्वर्ग की भोग विलास भरी ज़िंदगी की चाहत ही मनुष्य-मात्र को खुशी से सभी दुख और कठिनाइयों को सहने की शक्ति देती है।

इसी प्रकार यदि आपको इस चौथे चरण का अनुकरण करते हुए सफलता से पहले सफल होने कि कल्पना करना मुश्किल लगता है तो अपनी उस जिंदगी की कल्पना कीजिए जो आपकी, लक्ष्य प्राप्त करने के बाद की होगी। इसका अर्थ है, कि खुशी, भोग-विलास, संतुष्टि, समाज में आदर-मान तथा प्रसिद्धि, केवल मृत्यु के पश्चात, स्वर्ग-प्राप्ति की कल्पना से ही कठिन जीवन सरल हो जाता है। इसी प्रकार सफलता प्राप्त करने के पश्चात संतुष्ट जीवन की कल्पना और विश्वास ही कल्पना की प्रक्रिया में संघर्ष तथा मुश्किलों को आसान बना देते हैं और हर ज्वलंत इच्छा Burning Desire को और अधिक उत्तेजित करती है।

क्या किया जाए जब वास्तविक सफलता प्राप्त होने से पहले अपने आप से कल्पना करना कठिन हो जाए।

हाँ! वास्तव में यह कठिन है। किन्तु एक बात याद रखें, मन, अवचेतन मन, सकारात्मक भावनाएँ, प्रकृति और ईश्वर यह सब सफलता की राहें हैं। इन में से किसी एक को भी नज़र अंदाज करना आपकी सफलता को असंभव बना देगा। इसलिए सफलता के सुत्र और स्वयं सुचना के चरणों का अनुकरण करें, जो इस पुस्तक में बताए गए हैं।

वास्तव में सफलता प्राप्त करने के पहले, आप सफल हो रहे है ऐसी कल्पना करने के लिए किसी शारीरिक कठिनाई या धन की ज़रुरत नहीं हैं, न ही आप दुनिया में किसी के सामने जोकर बनेंगे। यह एक शुद्ध रुप से सोचने का तरीका है और जिसने भी सफलता पाई है, उसने ऐसा किया है, तो आपको भी ऐसा करना होगा।

याद रखें, सही यह है कि, जब तक आपके अंदर काम करने की ज्वलंत-इच्छा की लौ नहीं भड़कती, तब तक आप अपने लक्ष्य अथवा भारी मात्रा में धन-संपत्ती नहीं प्राप्त कर सकते।

यदि आपको शुद्ध-रुप से अर्थात केवल कल्पना करना कठिन लगता है, तो ऐसा कुछ कर्म करो जो आप अपना लक्ष्य प्राप्त करने के बाद करने वाले हो, तथा जो आपकी कल्पना को साकार करने में सहायक हो। उदाहरण के लिए यदि आपका सपना एक घर खरीदने का है, तो दरवाजे की एक घंटी खरीदें या ऐसी कोई वस्तु जिसे आप अपने सपनों के घर में प्रयोग करने वाले हों। यदि आप एक शानदार कार खरीदने

की बात सोच रहे हैं, तो पहले आप उसके लिए एक सीट-कवर अथवा हेंडल-कवर खरीद लें। यदि आप चाहते हैं कि आपके पास बहुत धन हो, तो कुछ असली नोट ले लें और उसी साइज़ के कोरे पेपर में रख दें, और असली नोट ले लें और नोटों का पूरा बंडल बनाएँ तथा उन्हें अपनी जेब में रख दें और उनके साथ ऐसा ही व्यवहार करें और ऐसा ही महसूस करें जैसे वे असली नोट हों। ऐसा करने के बाद, जैसा कि ऊपर बताया गया है, अपने आप से कहें कि यह हमारी सफलता का एक छोटा सा हिस्सा है, बाकी का हिस्सा बस आने वाला है। ऐसे वस्तुओं की कल्पना पूरे जोर-शोर से करें।

ऊपर बताए तरीके से अपनी इच्छा को नियमित रुप से दोहराने पर जब आपका अवचेतन मन आपकी सफलता संबंधी विचार तथा योजनाएँ ग्रहण करता है, तो यह पूर्ण, सुरक्षित और अचूक योजनाएँ प्रकृति से आपके लिए लाता है।

याद रखिए, विचार वस्तु कि तरह हैं। जो कुछ भी आपका मस्तिष्क विश्वास के साथ कल्पना करता है तो वह उसे अवश्य प्राप्त कर सकता है।सफलता मस्तिष्क की एक सकारात्मक अवस्था के साथ शुरु होती है। इसके लिए सपने देखना, कल्पना करना, पक्का इरादा, कोशिश करना और प्रार्थनाओं की जरुरत है। इस में सामान्य या कठिन परिश्रम का कुछ लेना देना नहीं है। केवल सामान्य या कठिन परिश्रम समृद्धि नहीं लाती बल्कि सकारात्मक एवं आवश्यक मानसिक दशा के साथ ही समृद्धि प्राप्त होती है। आज भी समाज में ९ ५ प्रतिशत लोग बहुत परिश्रम करते हैं। लोगों को कठिन परिश्रम के बाद भी रोटी आसानी से नहीं मिलती और वह सफल नहीं है। समाज में केवल ५ प्रतिशत लोग ही सफल समझे जाते हैं, और यह वह लोग हैं जो कठिन परिश्रम करते हैं, किन्तु सकारात्मक और आवश्यक मानसिक अवस्था के साथ, जो सफलता के लिए जरुरी है।

इसलिए पहले अपने से सोचने कि आदत और सकारात्मक कल्पना को आकार देने के लिए परिश्रम करें उसके बाद शारीरीक कष्टों पर ध्यान दें।

इस बारे में ज्यादा जानकारी के लिए नेपोलियन हिल की Think & grow rich पुस्तक पढें।

चरण -५ :-

किस डॉन का बेटा उद्योगपति है?

कोई नहीं।

जैसे इग्लैंड, फ्रॉन्स, स्पेन या पुर्तगालने अपरिमित धन-संपत्ती को सदा के लिए रोके रखा है जिसे उन्होंने अन्य देशों से लूटा है। मगर क्या कोई इसे शेष रख सका?

किसी ने नहीं।

द्वितीय विश्व युद्ध में जर्मनी ने फ्रॉन्स पर कब्ज़ा किया और लूटा तथा बीस हजार टन बारुद की बारीश इंग्लैंड पर की। इस में लंदन की एक इमारत भी अखंड अर्थात टूट-फूट से बची नहीं रही। इसलिए बुरे रास्ते से कमाई हूई संपत्ति कभी भी शेष नहीं रहती वह हमेशा नष्ट हो जाती है।

समृद्धि को लम्बे समय तक बचाए रखने का केवल एक ही रास्ता है, और वह है सही तरीके से इसे

कमाना।

ईश्वर कहता है,

मैं केवल उन्हीं लोगों को सरल सहज जीवन और समृद्धि देता हूँ, जो मूझ में विश्वास रखतें है और सही रास्ते पर चलते है। (पवित्र कुरआन १६:९७)

५४० बी.सी. में कपिलवस्तु के राजकुमार सिद्धार्थ अपने जीवन में पहली बार अपने रथ पर बैठ कर देश-भ्रमण के लिए अपने महल से बाहर आए। जब उन्होंने एक मृत-शरीर तथा एक बूढ़े व्यक्ति को दयनीय अवस्था में देखा, तो उन्होंने तुरंत यह अनुभव किया कि यह भौतिक शरीर नाशवान है, और केवल भौतिक सफलता ही सच्ची या वास्तविक सफलता नहीं है। उन्होंने अपनी राजगद्दी छोड़ दी, और १२ साल तक साधना की यह जानने के लिए कि सही रास्ता क्या है? तब उन्हें ज्ञान का प्रकाश प्राप्त हुआ और वेद उस काल के धर्म गुरु और महान गौतम बुद्ध हो गए।

अंतिम देवदूत हजरत मोहम्मद (स.) ने परिपक्व उम्र (३५ वर्ष) तक पहुँचते हुए यह अनुभव किया कि अरबी जन में धार्मिक अथवा असभ्य परंपराएँ ठीक नहीं थी। वह अक्सर पहाड़ की चोटी पर 'गारे-हिरा' नाम की गुफा में मौन साधना और एक ईश्वर की प्रार्थना के लिए जाया करते थे। ईश्वर ने केवल उन्हें सही रास्ता ही नहीं दिखाया, बल्कि उन्हें कयामत तक के लिए पैगम्बरी भी दी शेष बचे हुए समय के लिए जो निर्णय के दिन तक रहेगी।

पैगंम्बरी देने के पश्चात, ईश्वर ने हजरत मुहम्मद (स.) से पवित्र कुरआन में कहा,

ऐ! मुहम्मद (स.) तुम बुद्धि नहीं दे सकते हो, जिसे तुम चाहते हो लेकिन ईश्वर बुद्धि उन्हें देता है जिसे देने की उसे इच्छा होती है। (पवित्र कुरआन २८-५६)

गौतम बुद्ध और पैगम्बर हजरत मुहम्मद (स.) को हालात को महसूस करने वाला और परखने वाला संवेदनशील मन किसने दिया?

ये सभी धार्मिक व्यक्ति जन्म से ही बुद्धिमान और दूरदर्शी होते थे और सही रास्ते के यह सभी ज्ञान, दूरदर्शिता और बुद्धि उन्हें ईश्वर द्वारा ही प्राप्त थी।

हर एक नए व्यापारी और बिझनेसमेन व्यक्ति को कोई व्यवहार के प्रति करार Agreement करने से पहले उससे होनेवाला नफा और नुकसान इसकी जानकारी दूरदर्शी और बुद्धिमानी से होनी चाहिए। तथापी यह दूरदर्शी और बुद्धिमानी कोई सिखाता नहीं है या किसी पवित्र व्यक्तियों के आर्शीवाद से प्राप्त नहीं होता। यह ईश्वर ही है जो इसे देता है।

ईश्वर कहता है,

वह बुद्धि उसे देता है जिसे वह चाहता है, और जिस किसी को भी दी जाती है, निःसंदेह वह बहुत ही शुद्ध आचरण का हो जाता है। (पवित्र कुरआन २:२६९)

लोगों को दूरदर्शी और बुद्धिमानी की जब भी आवश्यकता हुई तो उन्होंने ईश्वर का सहारा लिया। ऐसे ही

अगर उदयोजक या व्यापारियों को इन दोनों चीजों की आवश्यकता होने पर ईश्वर का ही सहारा लेना होगा। और कोई दूसरा मार्ग नहीं।

यदि आप लखपति होना चाहते हो तो अपने व्यापार में एक ईश्वर की उपासना को शामिल कर लीजिए। Auto Suggestion का यह अंतिम परंतु सबसे महत्वपूर्ण भाग है।

Auto Suggestion का सारांशः

१. अपने लक्ष्य की स्पष्ट रुप से व्याख्या कीजिए।

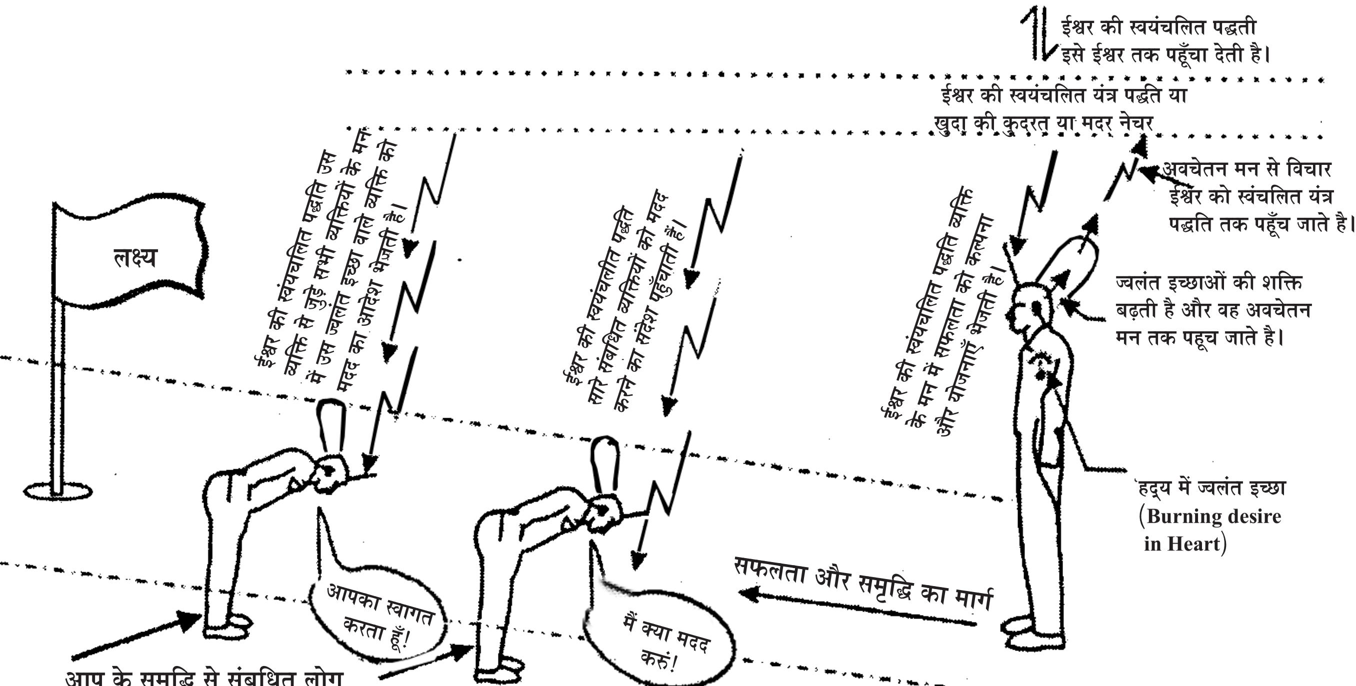
२. अपने प्रयास को विशेष रुप से कीजिए।

३. अपना उद्देश्य और प्रयास कागज़ पर लिखिए।

४. अपना उद्देश्य और प्रयास तथा अपनी सफलता की प्रमाणता को सकारात्मक भावना तथा विश्वास के साथ दिन-रात अपने मस्तिष्क में याद रखिए।

५. आप की योजना ईश्वर की प्रार्थना, ईमानदारी और मानवता पर समर्पित तथा आधारित हो।

मन, अवचेतनमन और ईश्वर की स्वयंचलित पद्धति यह सकारात्मक विचारों पर कैसे काम करते हैं इसका सारांश



अवचेतन मस्तिष्क सकारात्मक विचारों पर कैसे काम करता है?

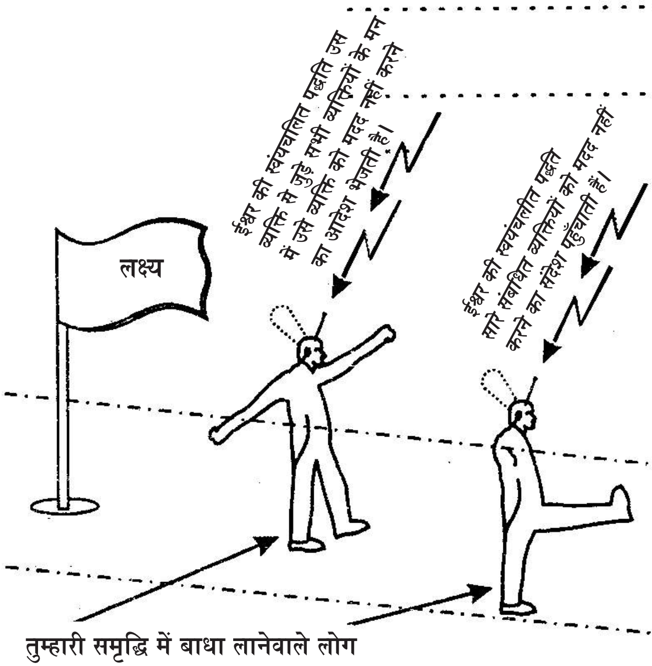
जब हदय में कोई इच्छा भडकावों के साथ ज्वलीत होती है। तो इन इच्छाओं अथवा विचारों की शक्ति (Energy and vibration) बढ़ जाती है। शक्तिशाली विचार अवचेतन मन के स्थर के उपर उठते है। चूँके अवचेतन मन सदा ईश्वर की स्वयंचलित पद्धति या मदरनेचर या प्रकृति या खुदा कि कुदरत के संपर्क में रहता है। इसलिए यह शक्तिशाली विचार ईश्वर के स्वयंचलित पद्धति तक पहूँच जाते है। ईश्वर की स्वयंचलित पद्धति इन्हें ईश्वर तक पहूँचा देती है। जैसे मनुष्य के कर्म होंगे ईश्वर उस व्यक्ति के लिए वैसा ही निर्णय लेते है। और आपका आदेश स्वयंचलित यंत्र पद्धति को सोंप देते है। स्वंयचलित पद्धति ईश्वर के आदेश अनुसार काम करती है और व्यक्ति भावनाओं से भरे विचार को वास्तविकता या आकार देने का प्रयास करती है। इस कार्य के लिए वह उस व्यक्ति के मन में भी ऐसे विचार और कल्पनाएँ भेजती है। इस कार्य के लिए वह उस व्यक्ति के मन में भी ऐसे विचार और कल्पनाँए भेजती है जिस से उसको ज्वलंत इच्छा पूरी हो। इस के अलावा वह उस व्यक्ति से जुड़े अन्य लोगों के अवचेतन मन में भी ऐसे विचार और भावनाएँ उत्पन्न करती है जिस कारण सारे लोग उस व्यक्ति की ज्वलंत इच्छा को पूरा करने में करते है।

Summary of How Subconscious Mind Works on Positive Thoughts.

When a person has a burning desire in his heart, he thinks with a positive attitude and struggles to achieve it with persistence, emotion of faith and seeks God's help. Then Mother Nature receives his thought and plan through the subconscious mind. Mother Nature then analyses it, communicates with God, receives instruction from God and returns more foolproof ideas, hunches and plans to the subconscious mind of the struggling person. It also broadcasts signals to all those who are associated with the concerned person to help him. So all those who are involved with that person and his struggle will think of favoring him on the subconscious level and whenever a situation arises they make way for him so that he reaches his destination.

Such a person considers himself to be lucky and achieves success with simple and reasonable effort.

मन, अवचेतनमन और ईश्वर की स्वयंचलित पद्धति यह नकारात्मक विचारों पर कैसे काम करते हैं इसका सारांश



अवचेतन मस्तिष्क नकारात्मक विचारों पर कैसे काम करता है?

यदि व्यक्ति दृढ़ विश्वास के साथ नकारात्मक सोचता है, तो उसका अवचेतन मस्तिष्क उसके नकारात्मक विचार ग्रहण करता है और उन्हें प्रकृति को देते है। प्रकृति उनका विश्लेषण करती है और ईश्वर के साथ उन के बारे में वार्तालाप करती है। यदि सोचने वाले के कार्य महान होते हैं, तो पहली बार ईश्वर उसे बुद्धि और ज्ञान का आशिर्वाद स्थिति को समझने और सोचने के लिए देता है और सकारात्मक कार्य करता है। किन्तु जब व्यक्ति के कार्य महान नहीं होते हैं अथवा यहाँ तक कि यदि सज्जन व्यक्ति मार्गदर्शक के पश्चात भी नकारात्मक सोचता है, तो अध्यात्मिक मदद हवा और पानी की तरफ मुफ्त नहीं होती है, लेकिन ईश्वर केवल उनकी सहायता करता है जो अपनी मदद स्वयं करते हैं। आज्ञा का उल्लंघन करने वाले ऐसे व्यक्ति के लिए प्रकृति उनके साथ वैसा ही व्यवहार करती है और उनके नकारात्मक विचारों को वास्तविक्ता में बदल देती है।

प्रकृति उस व्यक्ति के ड़र और नकारात्मक कल्पना को वास्तविकता में बदलने के संकेत अथवा योजनाओं को वापिस कर देती है। प्रकृति सभी संबधित व्यक्तियों को उस से सहयोग न करने का संकेत भी प्रसारित करती है। और उस की सफलता की प्रक्रिया को यथाशक्ति आगे बढ़ाती है।

Summary of How Subconscious Mind Works on Negative Thoughts.

If a person thinks negative with a firm belief, his subconscious mind picks up his negative thoughts and passes them to Mother nature. Mother Nature analyses them and communicates them with God. If the deeds of the thinker are noble, the first time God will bless him with wisdom and knowledge to understand the situation and think and act positively. But if the person's deeds are not noble, or even if a gentleman keeps on thinking negatively even after guidance, then divine helps is not free like air and water, but God helps only those who help themselves. For such disobedient ones, Mother Nature does the needful and converts their negative in to reality.

Mother Nature returns the signal or plans, to convert fear and negative imagination of that person into reality. Mother Nature also broadcasts signal to all concerned people not to co-operate with him and do the needful to enhance the process of his failure.

सकारात्मक सोचः

ईश्वर ने नकारात्मक विचार का निषेध किया है और कहा हैः

वह किसी को भी हानि नहीं पहुँचाता है। मनुष्य जो दुखःदर्द अथवा तकलीफ सहता है या पाता है, ये उसके अपने कार्यों तथा कर्मों का फल है। (पवित्र कुरआन २:२८६)

अर्थात नकारात्मक विचारो से जो कष्ट मनुष्यों को होता है वह उसकी अपने सोच के कारण होता है। इस प्रकार के कष्ट और हानि ईश्वर की तरफ से नहीं होती है।

अंतिम देवदूत हज़रत मोहम्मद (स.) कहते हैः

ईश्वर कहता है, मैं लोगों से वैसा ही व्यवहार करता हूँ, जैसी वे मेरे प्रति आशा (Expectation) रखते हैं। (हदीस)

इसका अर्थ है, यदि व्यक्ति सोचता है, कि ईश्वर दयालू और महान है और ईश्वर ने उसे भाग्यवान बनाया है और वह उस पर अपनी दयादृष्टी रखेगा और उसकी मदद करेगा, तो ईश्वर वास्तव में वैसा ही करेगा जैसी व्यक्ति आशा करता है। यदि किसी व्यक्ति को ईश्वर में आस्था नहीं है और वह यह भी सोचता है कि ईश्वर ने उसे बदकिस्मत बनाया है और फेल होना अथवा असफलता उसके भाग्य में लिखी हैं, तो हो सकता ईश्वर उसकी सहायता ना करें। और जिसकी सहायता ईश्वर न करें गरीबी, निराशा और अप्राजीकता उसका भाग होती है।

पवित्र कुरआन कहता है,

केवल वही लोग जो ईश्वर में आस्था नहीं रखते हैं, उम्मीद खो देते हैं। (पवित्र कुरआन १२:८७)

पवित्र बाईबल कहता है,

ड़रो नहीं, ईश्वर महान(असंभव) कार्य करता है। (पवित्र बाईबल Joel २:२१)

अर्थात ईश्वर पर आस्था रखो और उस से मदद मांगो वह असंभव को कभी भी संभव कर सकता है।

ईश्वर के लिए कुछ भी असंभव नहीं है। (पवित्र कुरआन २:२८६)

ऊपर के पदों की व्याख्या हम निम्न प्रकार से कर सकते है।

ईश्वर महान है। उसके लिए कुछ भी असंभव नहीं है। यदि कोई आशा खो देता है, तो वह इस बात को मानने से इन्कार करता है कि ईश्वर असंभव को भी संभव कर सकता है। वह ईश्वर का अपमान करता है अथवा ईश्वर की श्रेष्ठता को तुच्छ समझता है।

कोई कार्य हमारे लिए असंभव हो सकता है, पर ईश्वर के लिए नहीं। हम अकेले इसे प्राप्त नहीं कर सकते। लेकिन ईश्वर इसे प्राप्त कर सकता है। ईश्वर हमारे लिए प्राप्त करना आसान बना सकता है। इसलिए जब हम किसी कठिन और असंभव कार्य के लिए अपनी योग्यता पर विश्वास खो बैठते है, तो

हमें सकारात्मक विचार रखने चाहिए, और विश्वास रखना चाहीए और विश्वास रखना चाहीए की ईश्वर हमारे लिए हमारा लक्ष्य प्राप्त करने के लिए कोई आसान रास्ता अवश्य बनाएगा। और इसलिए हमें सकारात्मक विचार रखने की कोशिश करनी चाहिए।

पवित्र क़ुरआन के अध्याय ९, पद ११८ में ईश्वर कहता है,

और उन तीनों को भी उसने माफ़ किया जिनके मामले को स्थगित कर दिया गया था। जब ज़मीन अपनी सारी फैलाव के बावजूद उनपर तंग हो गई और उनकी अपनी जानें भी उनपर बोझ होने लगी और उन्होंने जान लिया कि अल्लाह से बचने के लिए कोई शरण लेने की जगह ख़ुद अल्लाह ही की दयालुता की छाया के सिवा नहीं है। तो अल्लाह अपनी मेहरबानी से उनकी ओर पलटा ताकि वे उसकी ओर पलट आएँ, यक़ीनन ही वह बड़ा माफ़ करनेवाला और दया करनेवाला है। (पवित्र क़ुरआन ९:११८)

इस पद अथवा इन पंक्तियों की पृष्ठभुमि यह है, कि हज़रत मोहम्मद(स.) के जमाने में ईश्वर के आदेशानुसार तीन व्यक्तियों का चालीस दिनों के लिए सामाजिक रुप से बहिष्कार किया गया था। जबकि पूरे शहर में घुमने के लिए वे आज़ाद थे। पर वे निरुद्देश्य इधर-उधर घूमते, लेकिन कोई भी उनके साथ मेल-जोल नहीं रखता था। उन्होंने अपने आप यह महसूस किया कि यद्दपि संसार बहुत बड़ा है, लेकिन उनके लिए एक जेल की कोठरी की तरह है।

ऐसा केवल उनके साथ ही नहीं हुआ, सामान्यतः किसी के साथ भी हो सकता है, यदि ईश्वर की ओर से असहयोग का निर्णय हो, तो संसार में कोई उसकी मदद नहीं कर सकता और न ही सहयोग देता है। परंतु उनके लिए, ईश्वर जिनके पक्ष में है, ईश्वर का निर्णय सहयोग और सफलता का होता है, संसार में प्रत्येक व्यक्ति उनकी मदद करने के लिए तैयार रहता है।

इसलिए हमें हमेशा सकारात्मक ही सोचना चाहिए और ऐसी बुराईयों और पापों से दूर रहना चाहिए, जो ईश्वर के प्रकोप और क्रोध को आमंत्रित करती है।

नकारात्मक चिंतन अथवा विचार जब हमारे उज्जवल भविष्य के लिए इतने हानिकारक है, तो हम इन्हें कैसे दूर कर सकते हैं अथवा इनसे कैसे बचा जा सकता है? इसका अध्ययन हम अगले अध्याय में करेंगे।



अध्याय-१६
नकारात्मक विचारों से बचाव
(How to avoid Negative Thoughts)

शैतान के बारे में आपके क्या विचार है? क्या वह मंदबुद्धि है? अशिक्षित है? मुर्ख है? अज्ञानी है?

गलत!

वह अपने घमंड के कारण ही शैतान बना था, अन्यथा वह इस धरती का एक अत्यंत बुद्धिमान प्राणी है। वह बिना किसी शारीरिक शक्ति और ताकत के सिर्फ मन और विचारों पर काबू करके, वह मनुष्य जात पर विजय प्राप्त करता है और उन्हें सही रास्ते से भटकाता है।

नकारात्मक विचार ही असफलता का मुख्य कारण है, इसलिए शैतान नकारात्मक विचारों को मन में विकसित करने पर अधिक ज़्यादा ध्यान केंद्रित करता है।

ईश्वर जो सब कुछ जानता है, वह पवित्र कुरआन में कहता हैः

''वह शैतान ही है, जो मन में गरिबी का भय पैदा करता है। और शर्मनाक नीति अपनाने के लिए उकसाता है,'' (कुरआन २:२६८)

इसलिए याद रखें, कि विनाश नकारात्मक विचारों से ही प्रारंभ होता है। और विचार हवा की तरह नहीं है, जो बिना किसी कारण के आपके मन में आते हैं और आपके मन से गुज़र जाते हैं। नहीं, यह एक अदृश्य वस्तु है, जो आपके मन में उतारी जा सकती है तथा इच्छा-शक्ति के द्वारा मन से निकाली भी जा सकती है। मनुष्य को अपने विचारों पर नियंत्रण रखने की शक्ति दी गई है। अर्थात यह हमें तय करना है, कि हमें क्या सोचना चाहिए? और क्या नहीं। विचारों पर मनुष्य का नियंत्रण होने के कारण प्रलय के दिन ईश्वर हमसे हमारे विचारों का भी लेखा जोखा लेगा, जैसे हमें अपने कर्मों का हिसाब देना है।

पवित्र कुरआन में ईश्वर कहता हैः

''आसमानों और ज़मीन में जो कुछ है सब अल्लाह का है। तुम अपने दिल की बातें चाहे खोल दो, या छिपाओ अल्लाह हर हाल में उनका हिसाब तुमसे ले लेगा।'' (पवित्र कुरआन २:२८४)

आइए हम अध्ययन करें, कि विचार क्या हैं? हम अपने मन में लाभकारी विचार कैसे विकसित करे और उन पर कैसे नियंत्रण रखें?

विचार क्या हैं?

सपना क्या है? एक मनोचिकित्सक कहेगा कि दिन में हमारे मन में जो भी विचार उठते हैं, रात को वही हमें सपने में दिखते हैं।

किसी हद तक मनोचिकित्सक का यह कहना सही है परंतु शत-प्रतिशत नहीं। ईश्वर से ड़रने वाले सज्जन व्यक्ति के सपने आने वाले समय की भविष्यवाणी होते हैं। और उनके समस्याओं का उपाय भी होते है। मगर वह इशारों की शक्ल में होते है। सपनों का अर्थ समझना भी एक शास्त्र है जिस पर कई पुस्तकें लिखी जा चुकी है। पैगंबर युसुफ (अ.स.) इस शास्त्र के ज्ञानी थे। जो विचार धीरे-धीरे हमारे मन में आते हैं और बार-बार आकर अपना अस्तित्व दिखाते रहते हैं वो भी सपनों की तरह ही है जिसका कुछ अर्थ होता है और कई कारण होते है।

आम तौर पर १० ऐसे कारण होते हैं, जो हमारे विचारों को प्रभावित करते हैं।

१. दैनिक अनुभव से प्रभावित विचार (Thoughts of daily experience)

२. विचारों का संक्रमण (Thoughts Infection)

३. शैतानी जाल (Ditch of Evil)

४. बुरी नज़र (Evil Eye)

५. नफ्स (नकारात्मक वृत्ति) (Nafs)

६. आशिर्वाद (Blessing)

७. परीक्षा (Examination)

८. चेतावनी (Warning)

९. शाप (Curse)

१०. शैतान का आसानी से शिकार हो जाना (Being easy prey for Devil)

१. दैनिक अनुभव से प्रभावित विचार (Thoughts of daily experience)

जो कुछ भी हम देखते, सुनते और पढ़ते हैं, हमारा चेतन और अवचेतन मन इन्हें याद रखता है और यह विचार हमारे मन में घूमते रहते हैं। कुछ रचनात्मक कमी और ज़्यात्ती के साथ हम अपने आपको उन परिस्थितीयों में महसूस करते है और कभी-कभी हम ऐसी कल्पना भी करते है कि हम इस परिस्थिती में वह सारे काम और अच्छे तरीके से कर रहे हैं।

आपके मन का दरवाजा उन सारे विचारों, समाचारों और सुचनाओं के लिए बंद रखें, जो नकारात्मक है। क्योंकि आपकी सफलता प्राप्ती की कोशिशों में उसका कोई उपयोग नहीं है। इसी तरह सामान्य ज्ञान (General Knowledge) के लिए भी नकारात्मक विचारों पर ना बोले ना सुनें, ना देखें।

पवित्र कुरआन में ईश्वर ने कहा है,

ऐ नबी, ईमानवाले पुरुषों से कहो कि अपनी निगाहें बचाकर रखें, और अपने गुप्तांगों की रक्षा करें, यह उनके लिए ज़्यादा पाकीज़ा तरीक़ा है, जो कुछ वे करते हैं अल्लाह को उसकी ख़बर रहती है।

(पवित्र कुरआन २४:३०-३१)

और पवित्र ऋग्वेद में ईश्वर कहता है,

क्योंकि ईश्वर ने तुम्हें स्त्री बनाया है, इसलिए सावधान रहें की कहाँ देखना है। और अपनी नज़रें नीचे रखों और अपने पैर जोड़ कर रखें तथा ऐसे कपड़े न पहने जिससे कि आपका शरीर नज़र आए।
(ऋग्वेद १९-३३-८)

ईश्वर के यह उपदेश विचारों और मन को स्वच्छ रखने के लिए हैं।

अपने जिम्मेदारी का काम ज्यादा ध्यान से करें। विश्व में जो कुछ भी हो रहा हैं उसकि जानकारी आपको होनी चाहिए और यह जरुरी भी हैं। लेकिन खबरों के महाजाल में डूब मत जाइए। क्योंकि प्रिंट मिडीया यह पैसा कमाने का बहोत ही लाभदायक व्यवसाय हैं। इस व्यवसाय से जुड़े लोग समाचार तयार करते हैं और जानबुझकर आम जनता में सनसनी पैदा करने के लिए छोटी सी बात को भी बढ़ा-चढ़ाकर बहुत ही आक्रमक अंदाज में पेश करते हैं। राजनेता और फिल्म अभिनेता के लिए खबरों में रहना उनके व्यवसाय का एक हिस्सा हैं। इसलिए जान बुझकर यह लोग ऐसा काम करते हैं या ऐसा कथन मिडीया के सामने प्रस्तुत करते हैं जिससे वाद-विवाद पैदा हों और यह लोग हमेशा सुर्खियों में बने रहें। इसलिए आप बेवकुफ न बने और अपना किंमती वक्त ना ही राजनीती और फिल्मी समाचारों में बर्बाद करें और ना ही ऐसे समाचार पढें जो मन में नकारात्मक विचार पैदा करते है, जैसे बलात्कार, सांप्रदायिक दंगे, खुन, डकैती, घोटाले इ. खबरें।

२. विचारों का संक्रमण (Thoughts Infection)

हम कंपन लहर (Vibration) और उर्जा (Energy) आसपास के वातावरण से ग्रहण करते हैं। यदि हम सफल और समृद्ध लोगों की संगत में सकारात्मक भावना के साथ रहते हैं, तो हमारा मन भी समृद्ध विचारों को ग्रहन करेगा और अगर हम जातीवादी, अपराध, असफल, निराश लोगों की संगत में रहें तो हमारा मन उनकी नकारात्मक शक्ति से प्रभावित होता है। और हम भी उसी तरह से विचार करने लगते हैं। इसी प्रकार यदि हम अपना समय बार, कॅसिनो, नाइट क्लब और वैश्यालय मे बिताते हैं, तो हमारा मन तुरंत धन-प्राप्ती, शराब और औरत के अतिरिक्त कुछ और नहीं सोच सकता। यदि हम अपना समय व्यापारिक प्रदर्शनी, सेमिनार और व्यक्तित्व विकास के कोर्स और व्यापारिक सोच वाले लोगों के साथ बिताते हैं, तो हमारा मन सकारात्मक सोच, व्यापारिक विकास और धन कमाने के बारे में निश्चित रुप से सोचता है। इसलिए विचारों को संक्रमण से बचाने के लिए, नकारात्मक सोच वाले लोगों और समाज से दूर रहना चाहिए।

३. शैतानी जाल (Ditch of Evil)

यह एक नकारात्मक भावना या एक प्रकार का अनुचित क्रोध है। बड़ी सफलता, सुख, आर्थिक लाभ और अन्य कोई कामयाबी मिलने से पहले आपको विचित्र तरीके से क्रोध आएगा। या फिर ऐसे व्यक्ति के बारे में आपके मन में घृणा पैदा होगी जो आप के सफलता का कारण हो, या फिर सफलता कि कोशिश में सम्मिलीत होगा।

यह एक शैतानी चाल है जो आपकी समृद्धि को आपके ही क्रोध और दुर्व्यवहार द्वारा चुराकर दूर ले जाने

का शैतान का एक तरीका है। यदि आप शैतानी गड्ढे में गिरना अथवा उसकी चाल में फंसना नहीं चाहते, तो हमेशा धीरज और सब्र से रहने की आदत डालें। कभी भी अपना धैर्य न खोएँ, या कभी भी अपनी पत्नी, कर्मचारी, सप्लायर और ग्राहक पर भड़कें नहीं। हमेशा स्थिति का पूर्ण रुप से विश्लेषण करें, उसके पश्चात ही कार्यवाही करें। कभी भी क्रोध में आकर तुरंत निर्णय न लें। यदि आप को ऊपर दिए गए चार प्रकार के लोगों के लिए कोई निर्णय लेना चाहते है, तो कम से कम २४ घंटे तक प्रतिक्षा करें और उसके बाद ही अन्तिम निर्णय करें। मेरे निम्नलिखित अनुभव से आप उपर्युक्त स्थिती को समझ सकते हैं।

एक बहुत बड़े कम्पनी ने मुझे एक छोटे हायड्रोलिक सिलिंडर की सप्लाई के लिए बुलाया। मैं उनके कार्यालय में गया। क्रय-अधिकारी ने मुझे इंतेजार करने के लिए कहा और वह अगले डेढ़ घंटे तक व्यस्त रहा। मुझे बहुत क्रोध आया और मैंने निश्चय किया की भविष्य में इनके साथ कोई व्यापार नहीं करुंगा। मैं उनके ऑफिस से बाहर आया और उनकी फॅक्ट्री के परिसर से बाहर कदम रखा ही था जब उनके ऑफिस के एक चपरासी ने मुझे पीछे से आवाज दी। मैं इतने क्रोध में था कि मैंने निश्चय किया की उसकी आवाज़ को अनसुना करके दूर चला जाऊँ। किन्तु तभी मैंने एक पल के लिए अपने आप पर संयम रखा और वापस आया।

इस घटना के बाद उस कम्पनी से उस एक छोटे और मामूली आर्डर के साथ, कई सालों के लिए बड़े आर्डर भी मुझे मिलते रहे।

मैं कभी-कभी एक ग्राहक से मिलने के लिए आठ घंटे की यात्रा भी करता हूँ, तो डेढ़ घंटे तक उनसे मिलने के लिए इंतजार करने में कोई हर्ज नहीं था। किन्तु मैंने अनुचित क्रोध को महसूस किया। यदि मैं क्रोध में बाहर चला जाता तो मैं अपने भारी लाभ को खो देता।

मेरा सब से बड़ा टेक्नीशियन काम बहुत ही अच्छा और क्रमानुसार तथा व्यवस्थित ढंग से करता है, लेकिन बहुत ही धीरे-धीरे। कई बार मैंने देखा कि जब काम का दबाव ज्यादा नहीं होता है, तो छोटे-मोटे काम और साफ-सफाई के बजाय वह आराम करना ज्यादा पसंद करता है। कई बार उसकी ढीली-ढीली मुद्रा से मुझे इतना क्रोध आया की मैंने उसे नोकरी से निकालने का निश्चय कर लिया। लेकिन मैंने तुरंत निर्णय नहीं लिया और केवल उसे अनदेखा किया। उस घटना के कुछ दिन के बाद ही मुझे एक बहुत बड़ा ऑर्डर मिला जिसे मैं उस टेक्नीशियन के बिना पूरा नहीं कर सकता था।

उस बड़े टेक्नीशियन की यह आरामदायक मुद्रा मेरे लिए कोई नई नहीं थी। मैं जानता हूँ कि मेरे कर्मचारी मेरे सामने क्या करते है और मेरे पीछे कितना काम करते हैं? मेरे व्यापार में बड़े और आश्चर्यजनक आर्डर मिलने से पहले ऐसा अनुचित और असाधारण क्रोध मुझे कई बार आया है।

मेरे व्यापारिक दौर की शुरुआत के ७ सालों में कई बार मैंने अनुभव किया कि जब कभी भी मुझे बड़ी रकम मिली है, यद्यपी मैंने उसे गुप्त रखा है और कोई भी उसके बारे में नहीं जानता था, उसके बाद भी मेरे मित्रों और परिवार का व्यवहार मेरे प्रति बदल जाता था। मैं महसूस करता कि उनकी तरफ से मुझे बहुत ज्यादा परेशान किया जा रहा है।

मैं क्रोध के कारण अपने ग्राहक के ऑफिस से बाहर आ सकता था। मैं क्रोध के कारण अपने वरिष्ठ

टेक्नीशियन को नोकरी से निकाल भी सकता था। मैं क्रोध में अपनी पत्नी और मित्रों से बहस भी कर सकता था। परंतु इन सब हालात में मन की शांति और लाभ कौन खोता था? मेरे सिवाय कोई भी नहीं। ईश्वर ने मुझे सब्र करने की बुद्धि दी, इसलिए मैं शैतान का शिकार नहीं हुआ और सुरक्षित रहा। अपने कार्य को देखें, शैतान के जाल में न फंसे। धीरज और सब्र रखने की आदत डालें, अन्यथा भाग्य आपके पास से होकर गुज़र जाएगा। शैतान बहुत धूर्त है। यदि आप अपने गुस्से को शैतान के नियंत्रण में रखेंगें, तो वह आपको कभी सफल होने नहीं देगा।

ऐसा असाधारण क्रोध हमेशा बड़े लाभ से पहले आता है, इसलिए, जब भी आप क्रोध की नकारात्मक भावना महसूस करते हों, तो धीरज रखिए, शांत मन से सोचिए और एक या दो दिन के पश्चात ही अंतिम निर्णय लीजिए।

अनुचित क्रोध को पूर्ण स्वच्छता द्वारा पद क्रमांक नं. १ ९ के पठन द्वारा नियंत्रित किया जा सकता है। (पद १ ९ के लिए अध्याय नं ३ ३ देखें।)

४. बुरी नज़र (Evil Eye)

मनुष्य और जिन्न एक तरह की विषैली दृष्टि रखते हैं। जब कोई हमारी ओर प्रशंसा और ईर्ष्या भरी दृष्टि से देखता है, तो हमारे मन अथवा शरीर को बुरी नज़र लगती है। इसके कारण या हम बीमार पड़ जाते हैं या अपनी सोचने की तर्क शक्ति खो देते हैं और बात-बात पर क्रोधित हो जाते हैं। कुछ समय पश्चात विष का प्रभाव धीरे-धीरे सामान्य होने लगता है। इस समस्या से छुटकारा सब्र और प्रार्थना से मिलता है। धीरज रखने का अभ्यास करें।

पवित्र कुरआन में ईश्वर कहता है,

सभी मनुष्य नुकसान में हैं, उनके अतिरिक्त जो,

ईश्वर में आस्था रखते हैं।

सत्कर्म करते हैं।

एक दूसरे को सत्य का मार्गदर्शन करते हैं।

संयम रखते है। (पवित्र कुरआन १ ० ३)

इसलिए 'धीरज' उज्जवल भविष्य को बनाने के लिए सबसे महत्वपूर्ण अंग है। इसे समझें और अपनी नकारात्मक भावनाओं पर विजय प्राप्त करने के लिए इसका अभ्यास करें।

५. नफ्स (नकारात्मक वृत्ति) (Nafs)

हज़रत युसूफ (अ.स.) ने कहा, 'और में अपने तई पाक साफ नहीं करता क्योंकी नफ्से उम्मारा इन्सान को बुराई ही सिखाता रहता है। मगर यह कि मेरा परवरदिगार रहम करें। बेशक मेरा परवरदिगार बख्शने

वाला मेहरबान है।' (सुरहे युसूफ आयत ५ ३)

नफ्से उम्मारा (इन्सान की जब्बली फितरत) इतनी खतरनाक है की पैगंबराने कराम (अ.स.) तक उसे खायफ रहते थे। दौलत इस नफ्स को कवी बनाती है। अगर इस्लामी उसूलों पर अमल करके इस नफ्से उम्मारा को कमजोर न किया गया तो इन्सान मजहब से दूर होकर गुनाहो के दलदल में धसता चला जाता है।

नफ्से उम्मारा इन्सान को ऐश पसंद और मुस्सरत का मुतलाशी बनाता है, आम तौर पर यह मुसरत नाजायज़ कामों में हासिल होती है। नफ्से उम्मारा, गैर मजहबी लोगों को धोखा देकर रुपया ऐठने के लिए उक्साता हैं और हिम्मत अब्जाई करता है। इसलिए अपने कारोबार के लिए अजाबे के लिए अजाबे इलाही से ड़रने वाले, शरीफ कारोबारी पार्टनर या ग्राहक या सप्लायार का इन्तेखाब करें क्योंकी हिंदुस्तानी कानून सुस्त रफ्तार और नकायस से भरा है। फरेबी यह हकिकत जानते हैं और कारोबार में हमेशा धोखा देने की कोशिश करते है। अगर पैसा फंस जाए तो कानूनी चारा जोई से उसे हासिल करना बेहद मुश्किल है।

६. आशिर्वाद (Blessing)

ईश्वर के आशिर्वाद से भी हमारे मन में विचार आते है। यह छठे प्रकार के विचार है। जब हम पूरे ध्यान से अपने सभी कर्तव्य पूर्ण करते हैं और पूर्ण एकाग्रता से ईश्वर की प्रार्थना करते हैं, तो एक विशेष प्रकार की शाँत शक्ति का आभास हमें होता है इस शांत शक्ति को **सकीना** कहा जाता हैं।

जब सकीना अर्थात ईश्वरीय शक्ति हमारे शरीर में प्रवेश करती है, तो हम एक विशेष प्रकार का आनंद अनुभव करते हैं, जिसका शब्दों में वर्णन नहीं किया जा सकता हैं। सकीना में हम अपने मस्तिष्क और आत्मा में नीली और सफेद रोशनी की किरण महसूस करते हैं। एक आनंददायक शीतल, सिहरन, आनंदभरी खुशी की अनूभुति और हल्का सा नशा लानेवाली स्थिती प्राप्त होती है, इस परिस्थिती को स्पष्ट करने के लिए में एक उदा.देता हूँ। मान लो, आप मूत्र-त्याग करना चाहते हो, किन्तु अगले कई घंटो तक आप को कोई अवसर नहीं मिला। लंबे समय के पश्चात जब आप मूत्र त्याग करते हो, तो आप गहरा संतोष और आराम महसूस करते हो, जो अनोखा है, किन्तु इसका वर्णन नहीं किया जा सकता है।

यह सकीना का आनंद है, जिससे साधु-संत भूख, लंबे समय तक चलने वाली और थका देनेवाली प्रार्थनाएँ और कठोर जीवन का दर्द महसूस नहीं करते हैं।

सकीना अवस्था को प्राप्त करने के लिए आप का अपने माता-पिता, परिवार, समाज और देश के प्रति भी अपना कर्तव्य का पालन करना होगा। तथा दिल की गहराई और पूर्ण रुप से लीन होकर ईश्वर की प्रार्थना करनी होगी।

कभी-कभी सामूहिक प्रार्थना में हम सकीना का एक छोटा-सा अंश महसूस करते हैं। यह एक शक्ति है, जो कुछ समुह में उपस्थित पवित्र व्यक्तियों के लिए आकाश से नीचे आती है लेकिन उनके साथ हम भी होते है इस कारण, उसका असर हम पर भी पड़ता है और हम शांति और हल्का सा नशा जैसी शिथिलता महसूस करते हैं। मैं इसे शिथिलता अर्थात हल्का सा नशा कहता हूँ, क्योंकि इस दशा में हम दबाव

(Mental Tension) से पूर्णतया मुक्त हो जाते हैं और एक थके हुए व्यक्ति की तरह हम सोना चाहते हैं।

इस छठे प्रकार के आशिर्वाद वाले विचारों में प्रेरणा, मार्गदर्शन होता है जो हमारा मन ईश्वर से प्राप्त करता है। ऐसे विचार हमेशा विधायक स्वरुप (Constructive in nature) के होते हैं।

७. परीक्षा (Examination)

विचारों के सातवे, आठवे और नौवे प्रकार विचारों के नकारात्मक प्रकार हैं। जो हमारे लिए या तो परीक्षा होते हैं या चेतावनी या अभिशाप। हम इच्छा-शक्ति के द्वारा इन्हें नज़रअंदाज भी नहीं कर सकते है। वह बार-बार हमारे मन में आते ही रहते हैं।

परीक्षा वाले विचारों में हम जीवन खोने के खतरे, प्रियजन, समृद्धि और जायदाद आदि के खोने के खोने के भय को महसूस करते हैं। और ईश्वर ऐसी कठिन स्थिति में यह देखना चाहता है कि हमारा उसकी ओर दृष्टिकोण कैसा है? कई बार लोग सुख समृद्धि की दशा में ईश्वर की बहुत प्रार्थना करते हैं और उसका आभार मानते हैं, किन्तु कठिन अथवा बुरे समय में ईश्वर की शिकायत करते हैं, तथा दूसरें स्रोतों की ओर मुड़कर अपनी समस्याओं का समाधान ढुंढतें हैं। ऐसे व्यक्ति परीक्षा में फेल होते हैं। केवल वही सफल होते हैं, जो धीरज रखते हैं और ईश्वर को मदद के लिए हमेशा पुकारते हैं।

ईश्वर पवित्र कुरआन में कहता है,

'और हम ज़रूर तुम्हें ड़र, भूख, जान-माल की हानियों और आमदनियों के घाटे में ड़ालकर तुम्हारी आज़माइश करेंगे। इन हालात में जो लोग सब्र से काम लें और जब कोई मुसीबत पड़े, तो कहें कि ''हम अल्लाह ही के हैं और अल्लाह ही की ओर हमें पलटकर जाना है'', उन्हें स्वर्ग की ख़ुशख़बरी दे दो।'

(पवित्र कुरआन २:१५५)

८. चेतावनी (Warning)

आठवे प्रकार के नकारात्मक विचार प्रकृति की ओर से हमारे लिए गुप्त संकेत हैं, जो हमारी गलतियों के लिए हमें चेतावणी देते हैं और दुर्घटना, बर्बादी तथा पाप के बारे में चेतावनी देते है। लेकिन यह विचार गुप्त संकेत के रुप में हैं, इसलिए उनके गुप्त संदेशो को समझने के लिए हमें पूरी तरह ध्यान देना होगा तथा उनकी समीक्षा करनी होगी। उदाहरण के लिए सन २००१ में मेरे मन में अनजान नकारात्मक विचार बार-बार आते थे कि, मैं अपना व्यापार बंद करके विदेश में किसी दूसरी कम्पनी में नोकरी कर लूँ। मैं अपने नकारात्मक विचारों को समझ नहीं सका। कुछ महीनों के पश्चात मेरे असंतुष्ट कर्मचारियों ने श्रमिक संगठन (Labor Union) की सदस्यता ले ली। मैंने उन सबको नोकरी से निकाल दिया तथा लगभग अपना व्यापार बंद कर दिया और बाद में दुबारा से शुरु किया।

अगर में अपने विचार को समझ सका होता, तो मैं उनका वेतन बढ़ा देता अथवा और समझा सकता था और एक बड़ी दुर्घटना होने से बच सकती थी। लेकिन मैं अपने विचारों का विश्लेषण करने में असफल रहा और मुझे बहुत भारी नुकसान उठाना पड़ा।

कभी-कभी इन विचारों के प्रभाव स्वरुप हम उन कार्यों को करने की कल्पना करते हैं, जो नहीं होनी

चाहिए अथवा वे कार्य अथवा वस्तुएँ जिन्हें हम विनाश होने के बाद कर रहे होंगे। उदाहरण के लिए, मैं अपने ग्राहक से मिलने के लिए अपने ऑफिस से शांत मन और उत्साह के साथ लोकल ट्रेन द्वारा चला। ट्रेन में मेरे सोचने का तरीका बदल गया, मैंने कल्पना क्या कि मैं अठराहवी शताब्दी में हूँ और मैं एक व्यापार हेतु यात्रा पर जहाज़ द्वारा यात्रा कर रहा हूँ, तथा मेरा जहाज़ डूब गया। किसी तरह मैं बच गया और शत्रु देश के समुद्री किनारे पहुँच गया। कोई मुझे न पैहचाने इसलिए मैंने एक भिखारी होने का नाटक किया तथा किसी प्रकार मैं अपने देश पहुँचने की कोशिश कर रहा हूँ।

मुझे आश्चर्य हुआ कि मैं इस तरह क्यों सोच रहा हूँ, गहरी समीक्षा के बाद मैंने जाना कि भारी भीड़ के कारण मैं लंबे समय से खड़ा हूँ। शुरु में, मैंने अपना ब्रीफकेस अपनी टाँगों के बीच में ज़मिन पर रखा था। जब मैं थक गया, मैं उस पर बैठ गया। और इस ब्रीफकेस में रुपए और महत्वपूर्ण दस्तावेज के साथ धार्मिक पुस्तकें भी है।

धार्मिक पुस्तक और धन का अपमान करनेवालों को समृद्धि से हाथ धोना पडता हैं। चूंकि अनजाने में मैंने उनका अपमान कर रहा था, इसलिए बदकिस्मती का पहला कदम यानी मेरे मस्तिष्क में नकारात्मक विचारों का धीरे-धीरे प्रवेश शुरु हो रहा था। मैं तुरंत ब्रीफकेस के उपर से उठा, ईश्वर से इस गलती पर गहरा पश्चाताप व्यक्त किया और वे नकारात्मक विचार तुरंत मेरे मन से नष्ट हो गए।

जब हम अनिच्छापूर्वक नकारात्मक सोचना शुरु करते हैं, तो हमें अपनी दशा का विश्लेषण करना चाहिए, विचारों के संकेत को समझना चाहिए, अपने कर्म को सही करें, अपने कर्तव्य पूरे करें तब ये विचार अपने आप नष्ट हो जाएंगे।

९. ईश्वर का प्रकोप (Curse)

ईश्वर का अभिशाप यह नकारात्मक विचार का नौंवा प्रकार है। परीक्षा अथवा चेतावनी प्रकार के विचारों में हमारे मन में नकारात्मक विचार आते हैं। लेकिन उस समय हमारे मस्तिष्क और शरीर पर पूरा नियंत्रण हमारे कन्ट्रोल में होता हैं, और हम बुद्धिमत्ता पूर्वक कार्य करते हैं और तर्क सहित सोचते हैं। किन्तु जब अभिशाप जैसे विचारों का हमारे मन में प्रवेश होता हैं, तब हम अपनी तार्किक सोच खो देते हैं तथा हमारे अपने गलत निर्णय द्वारा ही हमारा विनाश शुरु होता है।

हिंदु धार्मिक पुस्तक कहती है, *'विनाशकाले विपरीत बुद्धि'* इसका अर्थ है, विनाश से पहले सोच भ्रष्ट हो जाती है। यह नकारात्मक दशा वह है, जिसके दबाव में मस्तिष्क नियंत्रण में नहीं रहता और गलत फैसले लेता है। ऐसे नकारात्मक विचारों को बचने का केवल एक ही रास्ता है, और वह है की हम ईश्वर के प्रकोप को निमंत्रण ना दें।

१०. शैतान का आसानी से शिकार बन जाना (Being easy prey for Devil)

जब हम देखने, बोलने और सुनने के बारे में लापरवाह रहते हैं (अर्थात पाप और पुण्य के बारे में गंभीरता से नहीं सोचते) अथवा जब हम नकारात्मक व्यक्तियों की संगत में रहते हैं और भोगविलास का जीवन अपनाकर पापी बन जाते हैं। तो हम शैतान के लिए आसान शिकार हो जाते हैं। उसके प्रभाव में हम अपने को असुरक्षित महसूस करते हैं। मृत्यु का भय, किसी प्रिय के खोने का भय, गरीबी और अन्य सभी

तरह की नकारात्मक भावनाएँ हमारे मन में जड़ पकड़ लेती हैं। शैतान का यह प्रभाव मनुष्य मात्र के लिए दुर्भाग्यपुर्ण और कठीण है। सुख शाँति और समृद्धि का विनाश जो हमारे अपने ही कर्मों के साथ आरंभ होता है और शैतान के कारण और बढ़ता जाता है। शैतान ने ईश्वर को निम्नलिखित शब्दों में चेतावनी दी है;

में उन सभी को नेक रास्ते से बहकाऊंगा सिवाय उनके, जो ईमानदारी से ईश्वर पर अपनी आस्था रखते हैं। (पवित्र कुरआन ३८:८३)

इसलिए जो लोग संपुर्ण रुप से ईश्वर पर श्रद्धा रखते हैं और उसके दिए हुए आदेशों का पालन करने के लिए संघर्ष करते हैं, वे सभी प्रकार के ड़र और नकारात्मक विचारों से मुक्त रहेंगे और शैतान के अतिरिक्त नकारात्मक प्रभाव से भी मुक्त होंगे।

नकारात्मक विचारों से बचने का धार्मिक मार्ग

(**Religious way of managing Negative thoughts**)

चिंता और नकारात्मक विचारों से मुकाबला करने के लिए, हमे ईश्वर में विश्वास रखना चाहिए तथा क्रमबद्ध पद्धति से काम करना चाहिए।

पवित्र कुरआन में कहा गया है,

१. ईश्वर सारे कठीनाईयों से बच निकलने में उन लोगों की मदद करता है, जो उस पर विश्वास करते हैं।

२. ईश्वर अपने पर विश्वास रखने वालों का पालन-पोषण ऐसे स्त्रोत (साधनों) से करते हैं कि कोई इसकी कल्पना भी नहीं कर सकता।

३. ईश्वर अपने ऊपर विश्वास रखने वालों की सभी आवश्यकताएँ पूरी करता हैं।

४. ईश्वर जो कुछ भी निश्चय करता है, वह उसे करता है।

५. ईश्वर ने प्राणी मात्र का भाग्य निश्चित दिया है। उसी के अनुसार सब कुछ होता है।

(पवित्र कुरआन सूरे ६५ आयत २-३)

यदि आपने वास्तव में इन पाँच आध्यात्मिक कथनों को समझ लेते हो और इनपर विश्वास करते हो, तो आप जीवन में कभी भी नकारात्मक नहीं सोचोगे। इसे और अच्छी तरह से स्पष्ट करने के लिए मैं निम्नलिखित उदाहरण दे रहा हूँ।

व्याख्या नं १.

आपके आसपास में हजारों पक्षी हैं। आप उनकी कभी भी देखभाल नहीं करते। परन्तु यदि उनमें से किसी एक को आप पिंजरे में कैद कर लें, तो निश्चितरुप से आप रात-दिन उन्हें नियमित रुप से खाना खिलाएंगे और अच्छी तरह से उसकी देखभाल करेंगे।

इसी प्रकार जब आप ईश्वर के आदेशों का पालन नहीं करते, तो ईश्वर भी आपकी परवाह नहीं करता और न ही आपके सामाजिक-स्तर, आपके मधूर सपने और भविष्य के बारे में परवाह करता। लेकिन जब

आप उसके आदेशों और निर्देशों के अनुसार अपना जीवन बिताते है, अर्थात अपने आप को ईश्वर के निर्देशों में कैद कर लेते है। तो वह भी आपकी ओर विशेष ध्यान देता है। वह प्रत्येक दुख से आपकी रक्षा करता है। वह आपका पालन-पोषण अकल्पनीय साधनों से करता है। वह आपकी सारी आवश्यकताएँ पूरी करता है। जो भी आपके लिए आरामदायक है, ईश्वर आपके लिए वह निश्चित करता हैं, तो किसी भी तरीके से वह आपके पास जरुर पहुँचाता हैं। तथा आपके स्वभाव के अनुसार, ईश्वर आपका भाग्य निश्चित करता है।

व्याख्या नं २.

इसे और अच्छे तरीके से समझाने के लिए मैं इनकी संक्षिप्त व्याख्या करता हूँ।:-

जो व्यक्ति ईश्वर के प्रकोप से ड़रकर कर्म करेगा, ईश्वर उनके लिए कठिन समस्या से बाहर निकालने का विकल्प निकालेगा।

अपने कर्तव्य का पालन अच्छी तरह से करें, और बाकी सब कुछ ईश्वर पर छोड़ दें। कठिन समय में, जो कुछ भी सत्कर्म आप कर सकते हो, इसे करते रहो। ईश्वर से सहायता के लिए प्रार्थना करें। ईश्वर कभी भी आप को निराश नहीं करेगा। वह या तो आप की मुश्किलें दूर कर देगा और यदि कोई बहुत ही अधिक बुरी स्थिति आ जाती है, तो वह इस की भरपाई पहले से भी अधिक अच्छे विकल्प से करेगा। ईश्वर पवित्र कुरआन में कहता है,

हमारे लिए यह आवश्यक है कि हम ईमानवालों की सहायता करें। (अर्थात ईश्वर को मानने वालों की ईश्वर अवश्य मदद करता है।) (पवित्र कुरआन ३०:४७)

ईश्वर पर विश्वास रखनेवालों पर वह ऐसी जगहों से मदद भेजता है, जिसकी कोई कल्पना भी नहीं कर सकता है।

आप अपनी इच्छानुसार योजना बनाओं और उसे पूर्ण करने के लिए आगे बढ़ो। यदि आप ईमानदार, मेहनती और इस पुस्तक में वर्णन किए गए सफलता के सूत्रों का पालन करते हो, तो आपको धन की कमी कभी भी नहीं होगी। ईश्वर आपका भरण-पोषण ऐसे स्रोत से करेगा, जिसकी आपने कभी कल्पना भी नहीं की होगी।

ईश्वर अपने भक्तों की सभी आवश्यकताएँ पूर्ण करते हैं।

ईश्वर आपकी सभी आवश्यकताए पूरी करेगा उदाहरण परिवार, घर, गाड़ी, स्वास्थ और धन इत्यादि। यदि आप उस पर पूरा विश्वास रखते हो तो ईश्वर आपकी सभी आवश्यकताएँ पूरी करेगा।

ईश्वर जो कुछ भी निश्चित करता है, वह उसे पूरा करता है।

बहुत सारी बाते ऐसी हैं, जो व्यक्ति के नियंत्रण से बाहर हैं। उदाहरण के लिए, आपके दुश्मन ने आप की सफलता को रोकने के लिए कुछ काला जादू किया, लेकिन यदि आप ईश्वर पर विश्वास रखते हो और सकारात्मक प्रवृत्ति से अपने कार्य को करते रहते हो, सफलता के नियमों के अनुसार मार्गक्रमन करते हों,

तो आपको संपन्न और समृद्ध होने से कोई नहीं रोक सकता है। आपको नुकसान पहुँचाने वाले शत्रु से ज्यादा अधिक शक्तिशाली ईश्वर हैं। इसलिए आपकी प्रार्थना और प्रयास के अनुसार यदि ईश्वर आपको संपन्नता और समृद्धी देना चाहता है, तो आपको संपन्न और समृद्ध होने से कोई शत्रु रोक नहीं सकता।

ईश्वर ने प्रत्येक व्यक्ति का भाग्य निश्चित किया है। सब कुछ उसी के अनुसार घटित होता है। घटनाएँ उसी के अनुसार होंगी। व्यक्ति को इसे सहना करना सीखना होगा। उदाहरण के लिए मृत्यु, बीमारियाँ, दुर्घटनाएँ आदि मनुष्य के नियंत्रण से बाहर हैं। भाग्य को स्वीकार करो। इसे कोई नहीं बदल सकता है।

ड़र से कैसे लड़े ? (How to fight fear?)

यदि धार्मिक उपदेशों में आप की आस्था नहीं है, तब जीवन खोने का अत्याधिक ड़र, जीवन-स्तर, धन आदि के खोने के ड़र को कन्ट्रोल करने के लिए निम्नलिखित प्रक्रिया को अपनाइए।

ऐसी कल्पना किजिए की आपका ड़र सच साबित हो गया और इसे मानसिक रुप से स्वीकार करने के लिए तैयार रहो, यह आप को मस्तिष्क को उस टेन्शन (Tension) से मुक्त करेगा, जो आपके ड़र अथवा तनाव का कारण है।

अपने मन को एकाग्र किजीए और अपनी समस्या को सुलझाने वाले भिन्न विकल्पों की सूची बनाईए।

जिसके कारण वह अति बुरी चीज़ या घटना जो होने जा रही है उससे बचा जा सकता है।

विभिन्न विकल्पों की समीक्षा करें और उनमें से एक सबसे जो अच्छा है उसे चुनें।

तुरंत उस सबसे अच्छे विकल्प को लागू करें। दूसरे सब छोड़ दे और पीछे मुड़कर न देखें। किसी भी दशा में दूसरे विकल्पों को स्वीकार न करें, जब तक आप का चुना हुआ विकल्प पूरी तरह से गलत सिद्ध न हो जाए।

नकारात्मक प्रवृत्ति से बचने के कुछ और सूत्र

(Few more tips to avoid negative feeling)

जैसी मन में भावना होगी उसी प्रकार आप का व्यवहार (Behaviour) होगा। इस कथन का विपरीत भी सत्य है। वह यह कि, जैसे व्यक्ति का कार्य होगा उसी तरह कि भावना मन में उत्पन्न होगी। अर्थात जिस प्रकार का व्यवहार आप अपनाते हो अथवा करते हो, उसी तरह की भावना आपके मन में विकसित होगी। इसलिए एक बहादुर, आशावादी, सफल, समृद्ध व्यक्ति की तरह व्यवहार करो ताकि उसी तरह के विचार अपने आप आपके मन में विकसित हो जाए। हमेशा साफ-सुथरे रहो, अच्छी तरह से कपड़े पहनो, सुगंधीत द्रव्यों से सुवासित रहो, और मिलनसार स्वभाव रखते हुए कार्य करते रहें। इससे मन में सकारात्मक विचार बनें रहेंगे।

बीते हुए कल के बारे में मत पछताओ। आने वाले कल के सुनहरे सपने देखने में समय बर्बाद न करों। केवल वर्तमान पर पूरा ध्यान केंद्रीत करो। यदि आप आज का कार्य सबसे अच्छे और हर संभव और

कुशल तरीके से करते हो, तो आपका कल भी अच्छा होना ही चाहिए, जो हम आज करते हैं, उस का परिणाम अगले दिन प्राप्त होता है। इसलिए केवल वर्तमान में अपने कर्तव्य या कार्य को सबसे अच्छे और हर संभव तरीके से कुशल और ध्यानपूर्वक करें।

जो कुछ भी हम अपने मन में बार-बार दोहराते हैं, हमारा मन इसे वास्तविक रुप में स्वीकार करता है। इसलिए अपने मन में बार-बार निम्नलिखित संदेश दोहराया करोः

'दिन प्रति दिन मैं ईश्वर की कृपा से, हर प्रकार से सफलता की तरफ बढ़ रहा हुँ।'

इस वाक्य को कागज़ के एक छोटे-टुकड़े पर लिख लो और इसे ऐसी जगह लगा दो, जहाँ आप इसे हर रोज देख और पढ़ सकते हो। इसे प्रतिदिन पढ़ें और अपने मन को यह विश्वास दिलाओ कि आप समृद्ध हो रहे हो इससे आपके मन में केवल समृद्धि के सकारात्मक विचार ही रहेंगे।

नियमित रुप से व्यायाम करें। इससे स्वास्थ्य अच्छा रहता है। स्वस्थ शरीर का मन भी स्वस्थ रहता है। बीमार शरीर का मन भी बीमार रहता है। बीमार मन स्वस्थ मन की तुलना में नकारात्मक विचारों की ओर अधिक आकर्षित होता है।

व्यायाम से तनाव तथा चिंताओं के रसायनिक प्रभाव को भी बेअसर करने में मदद मिलती हैं। तथा मानसिक बीमारी के खतरे को भी कम कर देता है।

हमेशा वैद्यकिय परामर्श लेते रहें। कुछ विशेष प्रकार के विटामिन्स की कमी से मानसिक बीमारी निर्माण हो सकती है। इस प्रकार कि बीमारीयों में व्यक्ति तेजी से नकारात्मक विचारों के तरफ आकर्षित होता है। हर सुबह खाली पेट चार गिलास पानी पीयें और उसके कम से कम पौन घंटे बाद नाश्ता करें। तीन चमच शुद्ध शहद, एक सेब और एक केला प्रति दिन खाएँ। यह स्वस्थ मन के लिए जरुरी हैं। पूर्ण रुप से स्वच्छ रहें। पूर्ण रुप का अर्थ है, पूर्ण रुप से। किसी भी जगह अथवा किसी भी तरह का समझौता नहीं।

आपका शरीर, आपका भोजन, आपकी आमदनी, आपके रहने और काम करने का स्थान सभी पूर्ण रुप से साफ होने चाहिए। कमरों में हवा का आवागमन और रोशनी अच्छी होनी चाहिए। गन्दा स्थान, गन्दा व्यक्ति और अँधेरा, शैतान के लिए स्वर्ग-समान है। इनसे बचो।

आध्यात्मिक रुप से स्वच्छ रहने के लिए अपनी बगलों के बाल साफ करें तथा नाभ (Navel) के निचे के बाल को हर पंद्रह दिन बाद साफ करें।

टॉयलेट में अपने शरीर से मल-मूत्र अच्छी तरह से धोएं, आपके अंडरगार्मेंट में पेशाब की एक बूंद भी नहीं लगनी चाहिए।

प्रतिदिन कुछ रुपए किसी जरुरतमंद व्यक्ति को दान दें।

अपने घर में या आफिस अथवा कहीं भी जहाँ आप लंबे समय रहते हो, कोई भी स्थान अंधेरा, खाली और बंद न रखें। बंद, खाली और अंधेरा स्थान तुम्हारे पलंग, सोफा कम डबल-बेड़, खाली स्टोर या

फॉल्स सीलिंग (False Celing) में हो सकता है। या तो इसे पूरी तरह से भर दें या फिर उनको दोनों तरफ से खोल दें। क्योंकि बंद, खाली और अंधेरे से भरा स्थान परेशानी, भय और समस्या पैदा करते है।

अपने वर्तमान काम पर या अपनी नौकरी पर पूरी तरह ध्यान दें। यदि आप निवृत्त (Retire) हो और आप के पास करने के लिए कोई विशेष काम नहीं है, तो अच्छी पुस्तक पढ़ें। अपने अच्छे अनुभवों को लिखें। अपने अनुभव और विषेशताएँ जरुरत पड़ने पर किसी व्यक्ति को सिखाएँ। समाज सेवा के कार्य करें, अर्थात सबसे मिलो-जुलो। अच्छे कार्य करना शुरु करें। लोगों को उसमें शामिल होने के लिए निमंत्रण दें और अपने कार्य में सहयोग करने के लिए कहें।

इतिहास पढ़े, महान व्यक्तियों की आत्मकथाएँ आप को प्रेरित करेंगी और कठिन समय में आप को नैतिक बल और शक्ति देंगी। ये आपके भीतर उच्चतर, महानतर और असंभव कार्यों को करने की ज्वलंत इच्छा पैदा करेंगी। इतिहास पढ़ने से आपके मन में भ्रमित करने वाली कल्पनाएँ और शांति प्रिय दुनिया की उम्मीदें खत्म हो जाएगी।

एक बार पैगंबर मूसा (अ.स.) आश्चर्यचकित हुए और ईश्वर से पूछा,

'इस दिवार पर चलने वाली छिपकली को आपने क्यों बनाया?'

ईश्वर ने उत्तर दिया आपने यह सवाल केवल एक बार पुछा है, किन्तु इस दिवार पर बैठी छिपकली ने मुझसे यही सवाल तीन बार पुछा है कि, 'मैंने इस मनुष्य की रचना क्यों की?'

जब आप इतिहास पढ़ेंगे, तो आपको भी आश्चर्य होगा कि ईश्वर ने इस तुच्छ जीव की रचना क्यों की है? इतिहास नर-संहार, जाति का समूल नाश, दंगे, हमले, युद्ध, धोखाधड़ी, अन्याय और शोषण इत्यादि से भरा-पड़ा है।

आज हमारे पास जो सुखदायी और सुरक्षीत जीवन है, मानव इतिहास गवाह है, इससे पहले यह कभी संभव नहीं था। जीवन की भौतिक सुख-सुविधाएँ तथा यह शान-शौकत, जो आज हमें प्राप्त हैं, प्राचीन समय में वे राजाओं को भी उपलब्ध नहीं थीं। इतिहास का अध्ययन करने से आपके जीवन में जो सुरक्षा और सुख के कमी की जो निराशा है वह कम होगी।

इसी तरह इतिहास का अध्ययन करने से दुनिया के राजनीतिज्ञ तथा शासकों के प्रति उम्मीदें भी कम होगी। क्योंकि इतिहास का अध्ययन करते समय आपको मालुम होगा कि यह चालबाज प्राणी समय के साथ बदलते नहीं हैं। यह मासूमों और आम जनता का नर-संहार, जाति का समूल नाश, दंगे, हमले, युद्ध, धोखाधड़ी, अन्याय और शोषण इत्यादि जो पहले से करते आए हैं, वह आज भी वहीं करेंगे और कल भी करते रहेंगे और आम आदमी के जीवन में तबाही मचाते ही रहेंगे, जैसा यह पहले से मचाते आऐ हैं।

आध्यात्मिक उपचारः (Spiritual Healing)

यदि आपके ड़र और नकारात्मक विचारों में उपर बताए नए कार्य से कुछ भी कमी नहीं आती, तो निम्नलिखित अध्यात्मिक उपचार करने की कोशिश करें।

वजू करें, जैसा कि 'स्वच्छता' के अध्याय में वर्णन किया है।

दाहिनी हथेली अपने हृदय पर रखें।

पद नं १, एक बार उंची आवाज से बोलें, जैसा कि आध्यात्मिक उलझनों से कैसे उबरें? नामक अध्याय में वर्णन किया हैं।

पद नं २ एक बार बोलें।

पद नं १ ३ (दरुद) एक बार बोलें।

पद नं १ ४ कम से कम १ ० ० बार से ज्यादा बोलें।

अंत में पद नं. १ ३ फिर बोलें। अपने हाथ पर फूंक मारे और अपनी छाती, चेहरे और सिर पर फेरें।

यदि आप इसे नियमित रुप से करते रहे, तो थोड़े दिनों पश्चात आप अपने मन-मस्तिष्क में शांति महसूस करोगे।

पद नं. ५ भी जितनी बार संभव हो बोलें, जैसा कि 'आध्यात्मिक उलझनों से कैसे उबरें?' नामक अध्याय में वर्णन किया हैं। ये पद जादू अथवा चमत्कार की तरह काम करते हैं। इन पदों में हम सामान्य ढंग से ईश्वर का आशीर्वाद प्राप्त करते हैं, इसलिए सभी धर्मों के लोग इसे बिना किसी नियमों का उल्लंघन अथवा अपने विश्वास को ठेस पहुँचाए, पढ़ सकते हैं।

धार्मिक व्यक्ति होने के लाभः (Advantages of being a religious person)

मान लो, आप अपने बच्चे के साथ ट्रेन में सफर कर रहे हो और ट्रेन अपनी पूरी गति से आगे जा रही है तथा आपका बच्चा चांदी के सिक्के और पिग्गी बैंक (गल्ला) के साथ खेल रहा है।

बच्चा सिक्का उछालता है और गलती से सिक्का तेजी से चलती ट्रेन की खिड़की से बाहर चला जाता है। हो सकता है बच्चा रोने लगे और आप घबरा जाओ, क्योंकि आप दोनों को विश्वास है कि वह चांदी का सिक्का तो हमेशा के लिए चला गया है। क्योंकि सामान्य व्यक्ति के लिए यह असंभव है कि चलती ट्रेन से बाहर फेंका गया एक छोटा सा सिक्का ढूंढें।

लेकिन मान लो वही सिक्का गलती से पिग्गी बॅंक के अंदर गिर जाता है, (तो वह उसके अंदर जमा हो जाता है।) इस अवस्था में भी बच्चा वह चांदी का सिक्का खो देता है। क्योंकि पिग्गी-बैंक को तोड़े या काटे बिना वह सिक्का आप नहीं निकाल सकते हो फिर भी न तो आप और न आपका बच्चा किसी भी प्रकार की घबराहट अथवा जरा सी भी खोने की भावना मन में महसूस करेगा। क्योंकि आप दोनों विश्वस्त हो कि वह खोया नहीं है। आज या कल वह तुम्हें वापिस मिल जाएगा। यही अंतर है, ईश्वर से ड़रने वाले व्यक्ति और उदार अधार्मिक व्यक्ति के बीच में। ईश्वर से ड़रने वाले व्यक्ति को विश्वास है कि यदि किसी की मृत्यु होती है, अथवा कोई वस्तु खो गई है अथवा कोई दुर्भाग्यपूर्ण घटना होती है, यह स्थिर हानि नहीं है। मृत व्यक्ति ईश्वर के साथ दूसरी दुनिया में है, कल वह भी मरेगा और उससे फिर मिलेगा

(दूसरी दुनिया में)। इसके विपरीत उदार व्यक्ति सोचता है कि मृत व्यक्ति हमेशा के लिए खो गया है औ वह फिर कभी उससे नहीं मिलेगा।

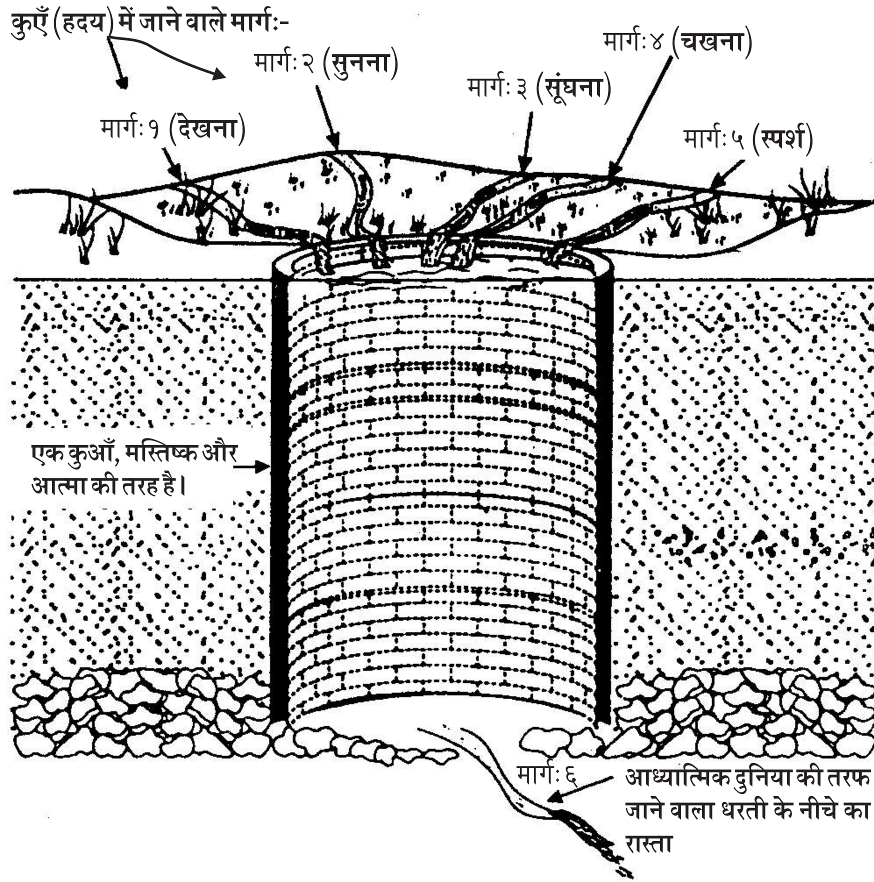
ईश्वर से ड़रने वाला धार्मिक व्यक्ति जानता है कि हानि और लाभ ईश्वर की ओर से है। यदि आज उसे नुकसान हुआ है, तो कल ईश्वर इसकी भरपाई अधिक अच्छे साधन से करेगा। जबकि उदार व्यक्ति सोचता है कि यदि कोई वस्तु खोई है, तो उसे स्वयं फिर कठिन परिश्रम करना पढ़ेगा और इसे फिर कमाना होगा। तथा हो सकता है की दुबारा उसके लिए फिर कठिन परिश्रम करना संभव नहीं होगा उसी वस्तु को कमाने के लिए अथवा प्राप्त करने के लिए।

इसलिए उदारमतवादी हर प्रकार कि बीमारियां, मृत्यु और दूर्घटना से बहुत ड़रता हैं। उसके विपरित ईश्वर से ड़रनेवाला व्यक्ति आखरी सांस तक शांत रहता है।

इसलिए ईश्वर को अपने पालनहार के रुप में पहचानों जिसने एक जोडी से आपका निर्माण किया। ईश्वर पर विश्वास रखों और अगर ड़र से मुक्त सकारात्मक जीवन चाहिए तो ईश्वर पर दृढ़ आस्था रखों।



अध्याय - १७
प्राचीन दर्शनशास्त्र
(Ancient Philosophy)



मनुष्य का मन और आत्मा एक कुएँ की तरह हैं। पाँच इंद्रियाँ, पाँच नालीयों की तरह हैं, जो कुएँ की ओर बहती हैं। जब हम अपने इंद्रियों का प्रयोग उचित रुप से नहीं करते अर्थात उचित देखने, सुनने, खाने की ओर ध्यान नहीं देते, तब साफ पानी के बजाए गंदा पानी नालियों के माध्यम से कुएं में आता है और कुएँ के पाणी को प्रदुषित करता है। अर्थात हमारा मन और आत्मा प्रदुषित हो जाती है। और आध्यात्मिक दुनिया की तरफ जाने वाला एक अंडरग्राउंड छठा रास्ता बंद हो जाता है।

इस छठे रास्ते का बंद मार्ग खोलने के लिए, हमें पहले गंदे पानी के बहाव को कुएँ में आने से रोकना होगा, इसके बाद कीचड़ और गंदगी को कुएँ से बाहर निकालना होगा, उसके बाद ही छठे रास्ते से पानी का बहाव कुएँ के अंदर आना शुरु होगा। यदि हम इसे सही रुप से साफ करें तो तब छठे रास्ते से साफ पानी इतनी भारी मात्रा में कुएँ के अंदर आएगा कि उमड़ कर पानी कुएँ से बाहर बहने लगेगा। ऐसी परीस्थिती में पाँचों रास्तों से गंदा पानी कभी भी अंदर नहीं आएगा।

अध्यात्मिक दुनिया से संपर्क करने के लिए, सबसे पहले हमें अपनी पाँच इंद्रीयों का गलत प्रयोग रोकना होगा, तथा ईश्वर ने जिस प्रकार से उनका प्रयोग करने के लिए हमें कहा है ठीक उसी प्रकार उनका प्रयोग करना होगा।

स्त्रीयों की ओर घूरना और बुरी नज़र से नहीं देखना चाहिए। अश्लील शब्दों को न सुनें, दूसरों के अपराध और कमियों को न सुनें। अश्लील भाषा न बोलें न सुनें, गाली न दें, झुठ न बोलें। दूसरों की गलतियों के बारे में न बोलें, न ही दूसरों के राज़ और कमियां इत्यादी के बारे में बात करें। जो वस्तुएँ ईश्वर द्वारा वर्जित हैं, वे न खाएँ, न पीएँ। जैसे धोखाधड़ी से कमाया हुआ पैसा और सूद की कमाई, शराब, सुअर का मांस, तथा बिना हलाल किया मांस न खाएँ। अपने जीवनसाथी के अतिरिक्त किसी दूसरे से शारिरीक संबध रखना और काम-क्रिया का आनंद लेना गलत है ऐसा न करें। यदि तुम इन चीज़ों से बचते हो, तो तुम्हारे आत्मारुपी कुएं में गंदा पानी आना बंद हो जाएगा।

छठा चैनल स्वर्ग की दुनिया से संपर्क करने वाला एक मार्ग है।

ईश्वर ने कहा है, “हमने उन्हें ज्ञान दिया।” (पवित्र कुरआन, सूरह कहफ, १८:६५)

यह वही रास्ता हैं, जिसके द्वारा ज्ञान संत और पैगंम्बरों के पास आता है। मानवजाती की सेवा करने की प्रेरणा आम आदमी को इसी रास्ते से मिलती है, और अपने भाईयों के लिए अच्छा कार्य करने की प्रेरणा भी इसी रास्ते से मिलती है।

जीवन में सफल होने के लिए और बहुत सारी संपत्ति प्राप्त करने के तरीके ढुंढने के लिए व्यवसायिको और उदयोजकों ने कल्पना और योजनाओं की खोज इसी रास्ते से करनी चाहिए। (यह लेखक का व्यक्तिगत कहना है।)

मन खाली करने के लिए हमें ईश्वर ने बताए तरीके से प्रार्थना करनी चाहिए। अपनी आँखे बंद करके पाचों इंद्रीयों का इस्तेमाल करना बंद करे, और हम कौन हैं? इस पर अपना ध्यान केंद्रित करें। इसी को ध्यान (चिंतन) कहते हैं।

देखने के लिए आँखें, सुनने के लिए कान और स्वाद लेने के लिए जीभ का निर्माण हुआ है। तुम खाने का आनंद कान के द्वारा नहीं ले सकते हो अथवा संगीत सुनने के लिए जीभ का इस्तेमाल नहीं कर सकते। जब आप सुनने के लिए कान, देखने के लिए आँख और स्वादीष्ट खाने का मज़ा चखने के लिए जीभ का इस्तेमाल करेंगे तभी आपको उससे आनंद मिलेगा।

ईश्वर ने मनुष्य और जिन्न की रचना उसकी भक्ति के लिए की है। (पवित्र कुरआन ५१ पद ५६) जब वह ईश्वर की प्रार्थना करेगा, तभी उसे जीवन में सुख प्राप्त होगा और उसकी आत्मा भी शांत और

आनंदीत रहेगी। जैसे कान से भोजन का आनंद नहीं ले सकते, उसी प्रकार आत्मा को दुनीया के मौज मज़े से कभी शांती नहीं मिलेगी।

हम गाड़ी का उपयोग दूर के स्थान पर पहुँचने के लिए करते हैं। हम कठिन कामों को करने के लिए यंत्रों का प्रयोग करते हैं। आत्मा को भी लंबा सफर तय करना है। शरीर इसकी गाडी और शरीर ही इसके यंत्र भी है। आत्मा को इस यंत्र के द्वारा इस संसार में अपना उद्देश्य क्या है? इसका पता करना है और जिस तरह कार्य पुरा होने के बाद और मंजील पर पहुँचने के बाद मनुष्य को यंत्र और गाड़ी की ज़रुरत नहीं होती, उसी तरह जब आत्मा अपने अच्छे कर्मों से और जिवनकाल में अपनी प्रार्थना से ईश्वर को प्रसन्न कर लेता है और अपना कार्य पुर्ण कर लेता है। तो उसे शरीररुपी यंत्र और आत्मारुपी गाड़ी की ज़रुरत नहीं होती। मनुष्य मरने के पश्चात ईश्वर के पास स्वर्ग में शांती से रहता है।

ईश्वर ने इस विश्व को देवदूतों के नियंत्रण में दिया है। ईश्वर की आज्ञा से जब ज़रुरत हो तब बरसात करते हैं। वे माँ के गर्भाशय में पले भ्रुण में आत्मा रखते हैं, वे बीजों को उपजाते हैं और इसे पौधे के रुप में परिवर्तित करते हैं।

इसी प्रकार ईश्वर ने इस शरीर को आत्मा के नियंत्रण में दिया है। खाने से पहले यह वर्षा शुरु करता है। (लार निर्माण की प्रक्रिया)। काम-क्रिया से पहले यह हवा शुरु करता है, जिस से संभोग इंद्रीय उत्तेजित होता है। उंगलियाँ और अवयव आत्मा के आदेश पर कार्य करते हैं।

आत्मा के पास अपने शरीर को नियंत्रित करने की शक्ति है, इसी के साथ वह अपने चारों ओर के वातावरण को भी प्रभावित करती है, उदाहरणतः जब एक संत एक बीमार व्यक्ति को श्रद्धा की दृष्टि से देखता है, तब ईश्वर की कृपा से वह ठिक हो सकता है।

उपर्युक्त दार्शनिकता को एक हजारों साल पुरानी पुस्तक से लिया गया है। जिसका नाम 'किम्या-ए-सआदत' है और उसके लेखक ईमाम गज़ाली हैं।

ईमाम गजाली की दार्शनिकता दर्शाती है किः-

ईश्वर ही सर्वोच्च शक्ति है।

इस विश्व को शासित करने के लिए देवदूतों की एक यंत्रणा है।

यह आत्मा ऐसा है कि जिसका हमारे शरीर पर नियंत्रण तो है बल्कि उसका दूसरों पर भी प्रभाव है।

आत्मा और आध्यात्मिक दुनिया का एक दूसरे के साथ गठबंधन है और उनका संपर्क छठे मार्ग से है।

हमें धार्मिक और वैज्ञानिक शिक्षण में एक समानता मिलती है।

धार्मिक व्यक्ति ईश्वर, देवदूत और आत्मा में विश्वास रखते हैं। अधार्मिक लोग ईश्वर, देवदूत और आत्मा में विश्वास नहीं रखते हैं। किन्तु इस संसार में एक परम-शक्ति है, जिसे अधार्मिक लोग अपार ज्ञान (Infinite intelligence) के रुप में समझते हैं। इसका अस्तित्व अधार्मिक लोग भी मानते हैं। वे देवदूत अथवा फरिश्ते को नहीं मानते, किन्तु वे इससे सहमत हैं कि प्रकृति इस संसार का प्रबंध व्यवस्थित ढंग से

करती हैं। वे आत्मा के अस्तित्व को नकारते हैं किन्तु अवचेतन मन के अस्तित्व और उसका हमारे और दूसरों के जीवन पर होनेवाले जादुई प्रभाव को स्वीकारते हैं।

हम विज्ञान और धर्म के बीच के विवाद को महत्व न दें, बल्कि ईश्वर, देवदूत और आत्मा या अपार ज्ञान (Infinite intelligence) और प्रकृति और अर्धजागृत मन का इस्तेमाल करके सफलता कैसे प्राप्त करें इस पर अपना ध्यान केंद्रित करें।



अध्याय-१८

दृढ़ता

(Persistence)

शुद्ध लोहा मुलायम और लचीला होता है और यह शुद्ध रुप में कभी-कभार ही प्रयोग किया जाता है। जब इसमें केवल ०.१ प्रतिशत कार्बन मिलाया जाता है, तो लोहे की मज़बूती (Strength) और कठोरता (Hardness) थोडी-सी बढ़ जाती हैं। ऐसा लोहा वहाँ प्रयोग किया जाता है, जहाँ मजबूती से अधिक लचीलापण ज्यादा महत्वपूर्ण होता है। ऐसा लोहा गहरे बर्तनों आदि के बनाने में प्रयोग किया जाता है। जब और ०.१ प्रतिशत से ०.२ प्रतिशत कार्बन इसमें मिलाया जाता है, तो इसकी मजबुती और कठोरता सामान्य-स्तर तक बढ जाती है। जो लोहा हम रोजमर्राह की जिंदगी में इस्तेमाल करतें हैं, उसमें ०.२ प्रतिशत से ०.३ प्रतिशत तक कार्बन होता है। जब हम फिर ०.१ प्रतिशत कार्बन लोहे में मिलाया जाता है, तो लोहे का लचीलापण कम हो जाता है और मजबूती और अधिक बढ़ जाती है। ऐसा लोहा बहुत लोड़ लेने वाले मशीनी पुर्जों में प्रयोग किया जाता है, जैसे बोल्ट, रेल के (Axle Shaft) इत्यादी। जब फिर ०.१ प्रतिशत कार्बन लोहे में मिलाया जाता है, तो ऐसा लोहा सादा कार्बन मिश्रित स्टील (Plain Carbon Alloy Steel) कहलाता है और इसका प्रयोग वहाँ होता है, जहाँ इसकी जरुरत होती है। उसका इस्तेमाल रोजमर्राह की उपयोगीता में नहीं होता।

कार्बन की मामूली मात्रा लोहे की विशेषताओं पर जादुई प्रभाव ड़ालती है। यह इसे लाभदायक बनाती है या बेकार।

दृढ़ता का ऐसा ही जादुई प्रभाव मनुष्य की सफलता पर होता है। यह भी व्यक्ति को या तो लाभदायक बना देती है या फिर बेकार। दृढ़ता के बिना कोई भी व्यक्ति जिवन में सफल नहीं हो सकता।

हम सब ने कछुए की कहानी पढ़ी और सुनी है। वास्तव में इतिहास में ऐसी कोई दौड कभी हुई ही नहीं है। फिर भी दुनिया में यह लगभग प्रत्येक भाषा और संस्कृती में पढ़ाई जाती है केवल हमारे मस्तिष्क में दृढ़ता के महत्व को स्थापित करने के लिए।

एक राजा ने एक षडयंत्र और विद्रोह के बाद अपनी राजगद्दी खो दी। उसका मनोबल घट गया और उसने सारी उम्मीदे छोड दी। वह एक गुफा में रहने लगा, जहाँ उसने एक चींटी को दीवार पर चढ़ने का प्रयास करते हुए देखा। चीटी बहुत कोशिश के बाद दीवार पर चढ़ने में सफल हो जाती है। राजा ने उस चींटी से सबक लिया और बार-बार खुफिया हमला करेके विद्रोहीयों को हराया और अपनी राजगद्दी पुनः प्राप्त की।

ऐसी कहानियाँ सच्ची हो या ना हो, लेकिन वे हमेशा हमे पढ़ाती और याद कराती हैं कि सफलता के लिए दृढ़ता अर्थात लगातार काम करना आवश्यक है।

परीक्षाः-

जब आप ओटो सजेशन (Auto Suggestion) के अनुसार अपनी कार्य-योजना को अमल में लाते हो तो संभव है, कि पहली कोशिश में आप सफल न हो, दूसरी बार भी नहीं, यहाँ तक कि तीसरी बार भी नहीं। सफलता पाने में लंबा समय लगता है। हर असफलता के पश्चात, आप को उस असफलता के कारण का विश्लेषण करना होगा। अपनी कार्य-योजना को ठीक करें और बार-बार कोशिश करें। आप की कार्य-योजना, हर असफलता के पश्चात और अधिक संपुर्ण (Perfect) हो जाएगी।

ग्रेजुएट होने के लिए आप को २० से अधिक पेपर, दो से तीन साल के समय में पास करने होते हैं। ईश्वर भी परीक्षा लेता है और आप को भी एक धनवान और सफल व्यक्ति होने के पहले अनेक पेपर पास करने होंगे। आवश्यक योग्यता के बिना आप डिग्री (सर्टिफिकेट) प्राप्त नहीं कर सकते हो, उसी प्रकार आवश्यक योग्यता के बिना आप सफल या लखपती नहीं बन सकते हो।

प्रकृती की परीक्षा के कुछ पेपर इस तरह हैं, ज्वलंत इच्छा, स्पष्ट लक्ष्य, आत्मविश्वास, कल्पनाशक्ति, निर्णयक्षमता, दृढ़ता इत्यादी है।

दृढ़ता में कमी का कारण (Cause of poor Persistence) :-

दृढ़ता का शक्ति-स्रोत इच्छा-शक्ति है। इच्छा-शक्ति की प्रेरणा-स्रोत ज्वलंत इच्छा है, और ज्वलंत इच्छा की प्रेरणा-स्रोत है सफलता पर पूरा विश्वास!

The motivating force of persistence is will power. The motivating force of will power is burning desire. The fuel which keeps the burning desire burning is faith that is a firm belief of success.

जब व्यक्ति में दृढ़ता की कमी होती है, तो उसके कुछ कारण और तथ्य है, जो ज्वलंत-इच्छा के इंधन की पूर्ति बंद करते हैं। दृढ़ता में कमी के क्या कारण है, अब हम इनका अध्ययन करेंगे।

जिनसे लोग हताश होते है और दृढ़ता खो देते है वह कारण निम्नलिखीत हैः-

१. आलोचना (Criticism)

२. नकारात्मक प्रभाव (Negative influence)

३. समझौतावादी स्वभाव (Compromising nature)

४. प्रेरणादायी तथ्यों की अनुपस्थिती (Absence of motivating factor)

१. आलोचना (Criticim)

आलोचना के डर से लोग सुरक्षित रुप से काम करते है और जोखिम नहीं लेते तथा पूर्ण रुप से कोशिश नहीं करते है। वे अपने लिए भागने का रास्ता हमेशा खुला रखते है। इसलिए उनसे ज्यादा से ज्यादा कोशिश नहीं की जाता। वह सफलता के लिए पराभूत मन से कोशिश नहीं करते है और असफलता के

पहले ही संकेत पर वह पीछे हट जाते है।

आलोचना के डर के कारण लोग अपने जीवन के बड़े निर्णय नहीं लेते है। जैसे शादी, तलाक, संयुक्त परिवार से अलग होना, साझेदारी (Partnership) का बंटवारा इत्यादी। वे डरते रहते है, कि लोग उन्हें स्वार्थी, अहंकारी, सनकी कहेंगे। इन ड़रों के कारण ही वे समझौतावादी ज़िंदगी बिताना ज़्यादा अच्छा समझते हैं। केवल दृढ़ और सही फैसले ही सफलता लाते है, न कि असहाय व समझौतावादी ज़िंदगी जीने का तरीका।

आलोचना के ड़र से ही लोग एक निश्चित उम्र के बाद कालिज या नाईट-स्कुल अथवा व्यवसायीक क्लास (Professional Course) में नहीं जाते हैं। वह विशेष योग्यताओं और ज्ञान (Special Knowledge) के साथ जीवन में सफल हो सकते थे, लेकिन आलोचना के ड़र के कारण वे विशेष ज्ञान नहीं प्राप्त कर सके और एक असफल व्यक्ति के रुप में रहें।

आलोचना के ड़र से लोग उच्च्य लक्ष्य नहीं रखते है। वे ड़रते हैं कि लोग उन्हें महत्वाकांक्षी बहुत अधिक स्मार्ट कहेंगे। वे इस बात से भी डरते है, कि यदि वह असफल होते है, तो लोग हसेंगे और उनका मज़ाक उडायेंगे। इसलिए न वह उंचा लक्ष्य रखते है और ना तो उच्चतर सफलता प्राप्त करने के लिए कोशिश करते है। अगर किसी व्यक्ति ने बड़ी सफलता प्राप्त करने के लिए कोशिश ही नहीं कि तो बड़ी सफलता उसे कैसे प्राप्त होगी?

इच्छा-शक्ति (Will Power) का प्रेरणा-स्त्रोत ज्वलंत-इच्छा (Burning Desire) है। आलोचना के डर के कारण इच्छा मन में प्रज्वलित नहीं होती है। इसलिए इच्छा-शक्ति कमजोर रह जाती है। कमजोर इच्छा-शक्ति का परीणाम कमजोर दृढ़ता पर होता है और कम दृढ़ता का नतीजा असफलता है।

निम्नलिखित उपाय आलोचना के ड़र को कुछ कम कर सकते हैः-

आलोचना के ड़र पर विजय प्राप्त करने के लिए निम्नलिखीत तथ्यों पर विश्वास करें और याद रखेः-

आपको अपने दोस्तों, परिवार तथा समाज की नजरों में जो आदर है वह केवल आपके अच्छे चरित्र और सत्कर्मों (Noble deed) पर निर्भर है। इज़्ज़त दिल से पैदा होती है तथा दिल और मस्तिष्क ईश्वर व्दारा नियंत्रित है। जब तक आपका चरित्र उज्ज्वल (महान) रहता है, ईश्वर आपके दोस्तों, परिवार और समाज की नज़रों में आपको कभी नहीं गिरायेगां। चाहे आपका आर्थिक-स्तर तथा आपकी योजनाऐं सफल हो या ना हों। धनदौलत, फॅशनेबल कपडे, सजा सवरा घर, महंगी कार आदी भौतिक सुविधाओं से आपके प्रति लोगों के मन में कभी आदर निर्माण नहीं होगा ना ही इन चीजों के कम होने पर आपके प्रति आदर घटेगा।

उदा. एक पुलिस आफिसर आपके घर सबसे अच्छे सूट और अत्याधिक महंगी कार में आता है। आप तुरंत उसका आदर-सत्कार करेंगे और उचित मान-सन्मान देंगे।

उस पुलिस आफिसर के जाने के पश्चात आपका गरीब मास्टर (Teacher) आपके घर आता है। तब हो

सकता है की आप उनके लिए उसी प्रकार की औपचारिकताएँ नहीं करते जो उस पुलिस आफिसर के आने पर कि थी। अपने मास्टर साहब के जाने के बाद आप विश्लेषण किजिए कि आप दिल की गहराई से आदर किसे देते हो? यह जानने के बाद, कि वह पुलिस ऑफिसर अवैध वैश्यालयों और अश्लील फिल्में दिखाने वाले पार्लर्स से रिश्वत लेता है, फिर भी आपने उसका शाही सत्कार किया, लेकिन दिल से आप उससे नफरत करते हो। और अपने सज्जन मास्टर जी को आप दिल से बहुत प्यार करते हो लेकिन उनका स्वागत आपने उतने गर्मजोशी से नहीं किया।

ऐसा आपके साथ भी हो सकता है। कोई आपकी ऐसी शानदार आवभगत नहीं करता है, जैसी वह किसी शातिर अपराधी की करता है, लेकिन लोग आप को दिल से प्यार करेंगे, यदि आप सज्जन हो और आपके कार्य महान है। आपकी असलियत लोग आपसे अधिक जानते हैं। आप स्वयं अपने बारे में इतना नहीं जानते जितना कि लोग आपकी असलियत जानते हैं। इसलिए लोग धन-दौलत और आपकी किसी स्टाईल को देखकर बेवकुफ नहीं बनते, केवल आपके अच्छे चरित्र के आधार पर ही आपको मन से मान-सन्मान देते हैं।

पवित्र कुरआन में कहा है,

'ईश्वर ही केवल मान और अपमान देता है।' (पवित्र कुरआन ३:२६)

इसलिए आलोचना से मत ड़रो क्योंकि सफलता के लिए की गई कोशिश के नाकाम होने से आपका आदर कम नही होगा। बल्कि अगर आपने अपने चरित्र के नैतिक मूल्यों का दर्जा घटा दिया तो आपके प्रति आदर कम होगा।

डेल कार्नेग अपनी प्रसिद्ध पुस्तक (How to stop worrying and start living) में कहते हैं, 'वही करो जिसे तुम्हारा मन सही समझता है। क्योंकि किसी न किसी तरह आलोचना तो आपकी होगी ही। यदी आप कुछ करते हो, तब भी आलोचना होगी, और यदी आप कुछ नहीं करते हो तब भी आलोचना होगी। इसलिए आलोचना कि बिल्कुल भी चिंता न करो।'

अब्राहम लिंकन ने अफ्रिका मूल के लोगों को गुलामी से आजाद कराने का एक महान और जोखिम भरा फैसला लिया। उनके दुश्मनों के साथ-साथ उनके मित्रों ने भी उनकी बहुत आलोचना की। डेल कार्नेग ने अब्राहम लिंकन की दार्शनिकता का हवाला देते हुए आलोचना के बारे में अपने विचार को इन शब्दों में प्रगट किया है, 'यदि आलोचना के सारे पत्रों को मैं पढ़ने की कोशिश करुँ, जिनमें से अधिकतर का उत्तर नहीं देना चाहिए, तो यह ऑफिस मुझे बंद करना पड़ेगा। मैं अपनी क्षमता के अनुसार अच्छे से अच्छा कार्य करने कि सर्वोत्तम कोशिश करुंगा, और अंत तक करता रहुँगा यह मेरा वादा रहा। यदी मेरे कामों का परिणाम मुझे अच्छा मिलता है, तो मेरे विरुद्ध जो भी कहा जाता है उसकी मुझे कोई परवाह नहीं है। यदि अंत में मैं गलत सिद्ध होता हुँ, तो देवदूत भी यदि कसम खाकर कहें कि मैं ठिक था, तो भी मुझपर इसका कोई प्रभाव नहीं होगा।'

अंत में डेल कार्नेग लिखते हैं, Do the very best you can do and then put up your old umbrella and keep the rain of criticism from running down the back of your neck.

'आप जितना अच्छा कर सकते हो उतना अच्छा करो और लोगों की आलोचनाओं पर ध्यान न दें' इसलिए आलोचना से मत ड़रो और दृढ़ता से अपनी कोशिश करते रहो।

२. नकारात्मक प्रभावः- (Negative Influence)

प्राकृतिक रुप से मनुष्य का शरीर इतना जटिल है कि पिछले सौ सालों से यह शोध और अध्ययन का विषय है और अभी तक हम इसे पूरी तरह से समझ नहीं पाए हैं। मस्तिष्क और आत्मा शरीर से अधिक जटिल हैं, क्योंकि वे केवल पदार्थ से संबधित नहीं हैं, बल्कि कुछ शक्ति (Energy electricity) के रुप से भी संबधित हैं।

निरीक्षण और अनुभव के द्वारा दार्शनिक (Philosopher), मनोचिकित्सक (Psychiatrist) और डाक्टर केवल तथ्य और अंदाज (Facts & Figure) ही इनके बारे में बना पाए हैं। उनमें से कुछ निम्न प्रकार से हैं;

विचार, शक्ति (Energy) अथवा कंपन (Vibration) के ही कुछ प्रकार होते हैं। प्रत्येक प्रकार के विचार भी अलग प्रकार के कंपन अथवा तरंग की लंबाई (Wave Length) रखते हैं। प्रत्येक व्यक्ति अपने मस्तिष्क के विचार के अनुसार कंपन अथवा शक्ति प्रसारित करता है। वह इसे दूसरों से भी प्राप्त करता है।

सकारात्मक धारणा, महान-विचार और उच्च महत्वकांक्षा रखने वाला व्यक्ति उससे मिलने वाले हर व्यक्ति के मन में उसी प्रकार के विचार और महत्वकांक्षा दूसरों के मन में पैदा करेगा।

नकारात्मक धारणा, विध्वंसक विचार, हताशा, निराशा और अपराधी मनोवृत्ति वाला व्यक्ति जब किसी से मिलता है तो उसी प्रकार के विचार और नज़रिया पैदा करता है।

किसी भी प्रकार के नकारात्मक विचार तुरंत रचनात्मक कल्पना को नष्ट कर देता है। नकारात्मक विचारों से नकारात्मक व्यक्तित्व विकसीत होता है और ऐसे व्यक्ति से लोग नफरत करते हैं। और नकारात्मक विचार उस व्यक्ति के अवचेतन मन (Subconscious mind) में भी जमकर बैठ जाते है।

लालटेन में लौ को बचाने के लिए एक ग्लास होता है। जब तक ग्लास सही सलामत रहता है, तब तक तेज हवा के झोकों में भी लौ जलती रहती है, लेकिन जैसे ही ग्लास हटा दो तो जरासी फुंक से भी वह लौ बुझ जाएगी। तीव्र इच्छा शक्ति जलती लौ कि तरह है इसका स्त्रोत विश्वास है और काच दृढ़ सकारात्मक विचार कि तरह है। जलती लौ (तीव्र इच्छा) को बुझने से बचाने के लिए दृढ़ सकारात्मक विचार और नजरिया होना चाहिए। नकारात्मक सोच वाले निराशावादी, दोष निकालनेवाले, अपराधी मनोवृत्ती के लोग और वे जिन्होंने समझौता करके अपनी जिंदगी में गरीबी को स्विकार कर लिया है और संपन्नता के लिए संघर्ष नहीं करते है ऐसे लोग इस जलती लौ को बुझाने के साधन है।

जब तक आपका आत्म-निर्देश (Auto Suggestion) का अभ्यास संपुर्ण नहीं होता और जब तक आपकी इच्छा शक्ति है तब तक ऐसे लोगों से दूर रहने की सावधानी बरतें।

यदी आप स्वस्थ हो, तो जुकाम और खाँसी तथा अन्य छुआ-छूत आप को आसानी से प्रभावित नहीं करते हैं। लेकिन तब भी आप जुकाम, खाँसी और अन्य छूत की बीमारियों के न होने के लिए सावधानी बरतते हो। नकारात्मक सोचवाले और उसी समूह के लोग आपको मानसिक रुप से प्रभावित और बीमार करते हैं। यदि आप अपनी ज्वलंत-इच्छा की लौ को लगातार उज्ज्वलित रखना चाहते हो, तो नकारात्मक सोच रखने वाले लोगों से दूर ही रहो, ताकि आप की दृढ़ता एक समान रहे। (कम होने ना पाए।)

एक प्रसिद्ध कहावत है, 'A man is known by the company he keeps' 'व्यक्ति अपनी संगत से पहचाना जाता है।' यह एक वास्तविक सत्य है। हमेशा सकारात्मक सोच तथा सफल व्यक्तियों की संगत में ही रहें, अन्यथा अकेले रहें, लेकिन कभी भी बौद्धीक बीमारी (Intellectual Infection) से पीडीत लोगों की संगत में न रहे। यह लोग मानसिक तौर पर नकारात्मक प्रभाव ड़ालते है।

३. समझौतावादी स्वभाव:- (Compromising Nature)

लोग दृढ़ता और विश्वास इसलिए खोते हैं, क्योंकि वह अपनी जिंदगी में गरीबी और हीनता को स्वीकार कर लेते है। वह अपने को बदनसीब समझकर इन्हें स्वीकार करते हैं। निम्नलिखित धार्मिक उपदेश आपके सोचने के तरीके को बदल सकता है तथा आप इन से विश्वास और दृढ़ता प्राप्त कर सकते हो।

पवित्र क़ुरआन में ईश्वर कहता है;

मैं किसी को भी तकलीफ नहीं देता हूँ। जो कुछ भी मानवजाती को कष्ट पहूँचता हैं, वह उसके अपने कर्मों का फल हैं। *(पवित्र क़ुरआन २:२८६)*

'और व्यक्ति को वही मिलता है, जिसके लिए वह प्रयास करता है।' *(पवित्र क़ुरआन ५३:३९)*

पवित्र बायबल में ईश्वर कहता है;

'मुझे पुकारो और में तुम्हें जवाब दुंगा।' *(जेरमार ३३:३)*

'महान कार्यों के महत्ता' नामक पाठ के चौथे पैराग्राफ 'बदलना भाग्य का' में हम इस्राइली जोड़े की कहानी पढ़ेंगे, जिनके बच्चे हुए, जबकी बच्चे उनके भाग्य में नहीं थें। उस कहानी का सारांश यह था कि यदि हम किसी वस्तू की इच्छा रखते हैं और उसे पाने का रास्ता ढूंढने की कोशिश करते हैं तो भाग्य को भी ईश्वर की प्रार्थना और आशीर्वाद से बदला जा सकता है।

अंतिम देवदूत (स.) ने कहा है;

'प्रार्थना के कारण मौत को भी टाला जा सकता हैं।'

ईश्वर कहता है कि;

'मैं लोगों के साथ वैसा ही व्यवहार करता हुँ, जैसी वे मेरे प्रति उम्मीद रखते है।'

उपर दिए गए श्लोक को अपने मन में मजबूती से स्थापित कर लो और याद रखो कि ईश्वर किसी को भी गरीब नहीं बनाता है। यदी आप गरीबी के अभिशाप से ग्रस्त हो और अपने पुर्वजो तथा अपने कर्मों के कारण कष्ट सहन कर रहे हो तो, हालात से समझौता कभी भी मत करो। क्योंकि आप अपने कठिन परिश्रम से, अपनी स्वयं की प्रार्थना से, अपने महान कार्य और संतो तथा धार्मिक पवित्र व्यक्तियों के आर्शिवाद से भाग्य को बदल सकते हो। हमेशा सकारात्मक दृष्टिकोण रखें और ईश्वर से हमेशा सर्वोत्तम उम्मीदें रखें। यदि आप ऐसा करते हो, तो आपकी हालत निश्चित रुप से बेहतर हो जाएगी।

प्रत्येक संकट या दुर्भाग्य अपने साथ लगभग कम या अधिक सफलता का अवसर भी लाता है। इसे पहचानो और इस से फायदा उठाने का प्रयास भी करो।

जब-जब आप समझौता करते हो और इसे अपना भाग्य समझकर मान लेते हो, उस समय आपकी कोशिश में से बल और स्फुर्ती नष्ट हो जाती है। आप का संघर्ष आधे दिल और मन से होगा। आपकी इच्छा-शक्ति कमजो पड़ जाती है और आपकी दृढ़ता अस्थिर हो जाती है।

हमेशा अंत तक संघर्ष करते रहो, हमेशा कोशिश करते रहे क्योंकि ईश्वर हमेशा साहसी लोगों को पसंद करता है।

पवित्र बायबल में ईश्वर कहता है, '***मजबूत बनो और हिम्मत रखो।'*** *(पवित्र बायबल जोश १:६)*

पवित्र कुरआन में ईश्वर कहता है, तुम जब किसी काम का दृढ़ संकल्प करो तो ईश्वर पर (उस के पूरा होने का) विश्वास रखों। ईश्वर उस पर विश्वास रखनेवालों को पसंद करता है। ()

४. प्रेरणादायक तथ्यों की अनुपस्थिती:- (Absence motivation factor)

एक और एक दो नही होते हैं, बल्कि ग्यारह होते हैं। यदि एक बैटरी से टार्च की रोशनी १० फीट तक पहुँचती है, तो दो बॅटरिया के द्वारा यह २० फीट तक नहीं पहुँचेगी बल्कि ४० फिट तक पहुँचेगी। एक समुह की उपलब्धि, शक्ति, योग्यता (क्षमता), और सुरक्षा एक व्यक्ति की तुलना में बहुत अधिक और उंची होती है। सफलता के रास्ते पर अकेले मत चलो बल्कि ऐसे लोगों को मित्र बनाओ, जो आप की तरह संघर्ष कर रहें हैं। मेरा कहने का यह अर्थ नहीं है, कि उनसे साझेदारी कर लो। मेरा कहना यह है कि सफलता के रास्ते पर एक काफिले की तरह चलो।

बहुत समय पहले लोग एक स्थान से दूसरे स्थान की यात्रा करने के लिए समुह में जाया करते थें, जिससे उन सबकी रक्षा, सुरक्षा, मदद और मार्गदर्शन निश्चित रहता है। इस समुह को उर्दु में कारवाँ कहते हैं। आधुनिक समय में भी यदी आप सफलता की लंबी और मुश्किल यात्रा शुरु करना चाहते हो, तो कारवाँ ढूँढ़िए। उन लोगों से मिलिए और मित्रता किजिए जो सकारात्मक नज़रिया रखते हों, महान कार्य, उच्च

चरित्र, उत्साह लगन से कार्य करनेवाले, धन का उचित उपयोग करनेवाले और स्वार्थी तथा ईर्ष्यालु न हो। यदि आप ऐसे लोगों के समुह में रहते हो, तो आपकी आत्मा और मस्तिष्क निरंतर दृढ़ शक्ति, सकारात्मक लहरें और उत्साह प्राप्त करते रहेंगे। आपकी इच्छा को उज्ज्वल रखेंगे। आपका मन हमेशा नवनिर्मित, रचनात्मक और संभावित आईडियाज प्राप्त करता रहेंगा।

आखिरी देवदुत (स.) ने कहा है,

परामर्श (सलाह मश्वरा) में ही समृद्धि का मुल तत्व है। *(हदीस)*

उचीत लोगों के साथ ही अपनी योजनाओं और कल्पनाओं के बारे में विचारविमर्श करे तथा योजनाएँ बनाऐ। उनके मत और सुझाव ध्यान से सुने उसके बाद ही अपना निर्णय लें। लेकिन लोगों को चुनने में बहुत अधिक सावधानी रखें, अन्यथा वे बडी चतुराई से आपके अवचेतन मन की सबसे निचली सतह से आपके आइडिया और योजनाएँ चुरा लेंगे और तुम्हें निरुत्साहित करेंगे। इसलिए निरंतर प्रेरणा प्राप्त करने के लिए सकारात्मक सोच वाले लोगों के समुह में शामिल हों जाइयें, यदि आप उनके साथ मित्रता नहीं कर सकते तो उनके साथ रहने की कोशिश करें। उनसे आपके मन को सफलता प्राप्ती के लिए अच्छी ताकत और उर्जा मिलेगी तथा हमेशा दृढ़ रहने की इच्छा-शक्ति भी मिलेगी।

जब आप अपना व्यापार शुरु करते हो, तो आप की आमदनी का ८० प्रतिशत भाग २० प्रतिशत मुख्य ग्राहकों से मिलेगा और शेष २० प्रतिशत भाग ८० प्रतिशत छोटे ग्राहकों से मिलेगा। ये ८० प्रतिशत छोटे ग्राहक आपके लिए हमेशा सिरदर्द बने रहेंगे। अपना हदय का द्वार हमेशा खुला रखें तथा सचेत रहें। यदि आपको कोई कष्टदायक (चिंतित करनेवाला) ग्राहक मिलता है जो आपकी शांत तथा सकारात्मक मन की स्थिती को भंग करता हैं और आपके लिए क्रोध, तनाव, चिंता, ड़र का कारण बनता है, तो विनम्रता से स्वयं क्षमायाचना कर अपने व्यापार से उसे अलग कर दें। यदि आपकी गुणवत्ता, सेवा, और विज्ञापन आदि बहुत अच्छी हैं, तो ईश्वर कभी भी आपको बेकार बैठने नहीं देगा। आपको हमेशा भरपूर रोज़गार (काम) मिलेगा।

ईश्वर कहता है,

'नेक और ईमानदार व्यक्ति हमेशा ताड़ के वृक्ष की तरह फूले-फलेंगें।' *(पवित्र बायबल, पीएस १२-१२)*

अपने मन की शांती और अपने हृदय की इच्छा की जलती लौ को सुरक्षित रखने की सावधानी बरते। कभी भी विचलित न हों। क्योंकि क्रोध, चिंता और बेतुके विषय आपको आपके दृढ़ प्रयास से दूर करते हैं, आपका ध्यान अपने लक्ष्य से हटाते हैं। हर एक के अपने मन का द्वार खुला न रखें। केवल उसी व्यक्ति को चुनें जो आपकी सफलता की ओर जानेवाली दृढ़ कोशिश में मद्दगार हो और आपकी सफलता की राह में सहायक हो।

दृढ़ता (Persistence) में वृद्धि कैसे होती है?

नीचे दिए हुए तथ्यों कि उपस्थिती से दृढ़ता में कमी होती है।

आलोचना करने वाले लोगों की उपस्थिति और आलोचना का डर।

गरीबी के प्रति सचेत तथा नकारात्मक मानसिकता रखने वाले लोगों का साथ।

ऐसी मानसिकता जो पराजय, गरीबी तथा कष्टों को अपनी जिंदगी का हिस्सा मानकर स्वीकार करते है और उन पर विजय प्राप्त करने के लिए संघर्ष नहीं करते हैं।

प्रेरणादायक, शक्तिशाली, साहसी तथा धन के प्रति सचेत लोगों से कोई संबध न रखना।

उपर बताए गए चार तथ्यों की अनुपस्थिती से दृढ़ता बढ़ती है। और दृढ़ता बढ़ाने वाले और कुछ मार्ग नीचे दिए है।

१. ज्वलंत-इच्छा सभी प्रेरक तथ्यों का मूल स्रोत है। ज्वलंत-इच्छा को विकसित करने के लिए, आत्म-निर्देश (Auto Suggestion) के नियमों का पालन करना चाहिए। आत्म-निर्देश (Auto Suggestion) के द्वारा मन में श्रद्धा और विश्वास का निर्माण होता है।

२. दृढ़ विश्वास रखो कि आप सफलता प्राप्त कर सकते हो और धनी बन सकते हो। तथा सफल होने के लिए किए गए संघर्ष में ईश्वर आपकी सहायता करेगा इस प्रकार के विचार से दृढ़ता बढ़ती है।

३. ईश्वर की निरंतर नियम से प्रार्थना करें। उसकी मद्द और संपन्नता-समृद्धि के आर्शिवाद से आपका स्वभाव बदल जाएगा, तथा आप स्वभाव से ही धन के प्रति सचेत रहने वाले बन जाओगे। आप समृद्धि और सफलता प्राप्त करने के लिए अपनी कोशिश में सकारात्मक सोच रखने वाले तथा अपने इरादे पर मज़बूती से जमें रहने वाले सक्षम व्यक्ति बन जाओगे। ईश्वर गिफ्ट वौचर्स के रुप में धन नहीं भेजता है। ईश्वर आपके व्यक्तित्व और स्वभाव को बदलता है जिससे आपको समृद्धि और सफलता प्राप्त होती है।

४. हमेशा प्रेरणादायी स्रोतों के संपर्क में रहें। जैसे प्रेरणादायी पुस्तकों का पठन, आत्म-निर्देश (Auto Suggestion) को बार-बार ध्यान में रखते हुए अपनी कामयाबी पर भरोसा रखना और प्रेरणादायी लोगों की संगत में रहना। यह समृद्धी तथा सफलता प्राप्त करने के मुलभूत तथ्य हैं।

पवित्र कुरआन में ईश्वर कहता है,

'ऐ लोगों! तुम ईश्वर पर विश्वास रखते रहो, ईश्वर से डरते रहो और उन्ही के साथ रहो जो सच्चे हैं।
(पवित्र कुरआन ९-११९)

'और उनके साथ झुको जो (पुजा, प्रार्थना और उसकी आज्ञा में) झुकते है।' *(पवित्र कुरआन २-४३)*

'उनकी संगत में न रहो जो ईश्वर के आयतों का (आदेशों का) मजाक उडाते हैं।' *(पवित्र कुरआन २-४३)*

इस प्रकार के अनेक श्लोक है। क्योंकि प्राणि मात्र अपने चारों ओर के वातावरण से प्रभावित होता है। यदि कोई व्यक्ति पवित्र (धार्मिक) व्यक्ति की संगत में रहता है, तो निश्चित तौर से पवित्रता और धार्मिकता ग्रहन करता है तथा विकसित करता है। यदि कोई व्यक्ति धन के प्रति सचेत और समृद्ध व्यक्तियों की

संगत में रहता है तो निश्चित रुप से उसके चरित्र व व्यक्तितत्व में धन के प्रति सर्तकता विकसित होती है तथा ऐसा चरित्र विकसीत होता है जो समृद्धि के लिए आवश्यक है। इसलिए उन व्यक्तियों के बारे में सावधान रहिए, जिनसे आप मिलते हो, बात करते हो तथा दोस्ती करते हो।

ऐसा कहा गया है कि कुछ समुदाय के लोगों के खून में ही व्यापार होता है, जैसे मारवाडी, गुजराती और यहुदी (Jews) इत्यादी। परन्तु ऐसा नहीं है। कोई भी धन के प्रति सतर्कता अपने खून में लेकर जन्म नहीं लेता है। सच्चाई यह है कि उनका पारिवारीक वातावरण, समाज और संस्कृती में संपत्ति की चिंता सतर्कता और अधीक पाने की चाह रहती है। इसलिए ऐसे लोग वातावरण और संस्कृती के संपर्क में आने के बाद पैसो के प्रति सजग हो जाते है।

'समय' सभी जख्मों को भर देता है। यह सबसे अच्छा जख्मों को भरनेवाला ही नहीं, बल्कि सबसे अच्छा भावनाओं का समाप्त करनेवाला भी है। यह जोश, उंची महत्वकांक्षा और ज्वलंत इच्छा इत्यादि सब को समाप्त करता है तथा दबा देता है। इच्छा की लौ को जलाए रखने के लिए प्रेरित और साहसी लोग सबसे अधिक महत्वपूर्ण स्रोत है। लेकिन ऐसे लोग आमतौर पर आसानी से उपलब्ध नहीं होते है। सामान्यतः ऐसे लोग अत्याधिक व्यस्त रहतें हैं और उनके पास नऐ संघर्ष करने वालों के लिए समय नहीं होता है। ऐसे मामलों में आत्मा को प्रेरित करने वाली पुस्तकें ही केवल प्रेरणा का स्रोत है। अच्छी पुस्तकों को पढ़ने की आदत ड़ालिए। अपनी व्यक्तिगत एक छोटी सी लायब्रेरी रखिए। प्रत्येक महीने कुछ अच्छी पुस्तकें खरीदिए तथा उनको धीरज से पढ़े। अपने प्रिय पदों (पंक्तियों) तथा ऐसे पैराग्रॉफस को भी रेखांकित कीजिए जो आपके लिए महत्वपूर्ण हों। तथा उन पुस्तकों को सँभाल कर रखें।

एक समय के पश्चात जब आप उन पुस्तकों को सरसरी नजर से भी देखोगे और रेखांकित तथा निशान लगे विषय को पढ़ोगे तो आपको वह संपुर्ण विषय याद आ जाएगा, जिसे आपने पढ़ा था। इस प्रकार आप महत्वपुर्ण जानकारी को लंबे समय तक याद रख सकते हैं।

जब मैंने अपना कैरीयर शुरु किया, तब केवल पुस्तकें ही मेरी साथी और शिक्षक थी। उनसे मुझे इतना लाभ हुआ कि उनके महत्व को बयान करने के लिए मेरे पास शब्द नही हैं। अध्यात्मिक (धार्मिक) और व्यापारिक ज्ञान अधिकांशत मैंने पुस्तको को पढ़ने से ही प्राप्त किया है।

पुस्तके जो पढ़नी चाहिएं अथवा मैंने पढ़ी हैं, उनकी सूची 'विद्वान लोगों से कुछ सीखें' नामक अध्याय में दी गई है।

धीरज :- (Patience)

धीरज और दृढ़ता एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। सफलता के लिए संघर्ष करते समय धीरज रखें। कभी धीरज न खोएँ। क्योंकि सफलता की सीढ़ियाँ चढ़ने और चोटी पर पहुँचने में कभी-कभी लंबा समय लगता हैं।

संत कबीर ने कहा है;

धीरे धीरे रे मना, धीरे सब कुछ होए
माली ड़ाले सौ घड़ा, ऋत आए फल होए।

इसका अर्थ है,

माली चाहे कितना भी ज्यादा पानी डाले, वह समय से पहले फल नहीं प्राप्त कर सकता, फल अपने मौसम में ही पैदा होते हैं। पेड़ अपने प्राकृतिक मौसम के दौरान ही फल पैदा करेंगे।

उसी प्रकार हर व्यक्ति कि तरक्की के लिए एक नैसर्गिक होता है। विभिन्न व्यक्तियों के कोशिश और मेहनत के परीणाम स्वरुप उनके तरक्की में फर्क होता है। लेकिन सारे मणुष्य मात्र और हम एक रात में ही लक्षाधीश नहीं बन सकते। उसके लिए निश्चित समय जरुर लगेगा।

हमे प्रकृती को समझना चाहिए। हमें इसके साथ सहयोग करना चाहिए और धीरज रखना चाहीए तथा धैर्यपूर्वक सफलता के लिए अपने संघर्ष को जारी रखें।

अंत में अखिल विश्व का निर्माता ईश्वर कहता हैं;

'ऐ लोगों! वे जो (मेरे आदेशों पर) विश्वास करते हैं, धीरज रखें, तथा प्रार्थना से मदद लें। क्योंकि ईश्वर उनके साथ होता हैं, जो धीरज रखते हैं।' *(पवित्र क़ुरआन २-१५३)*

विश्वव्यापी समृद्धि के लिए प्रार्थना (Prayer for Universal Prosperity)

मेरा व्यापार अत्याधिक नव-निर्माण (Inovative) और तकनीकी (Technicial) है। कभी-कभी काम के बोझ अथवा दूसरी समस्याओं के कारण मैं अत्याधिक निराश हो जाता या और काम करने की रुचि नहीं रहती तथा इस प्रकार के व्यापार व जीवनशैली से छुटकारा पाने के रास्ते ढुंढना शुरु कर देता था।

मेरे एक दोस्त दिलावर अब्बास चौगले ने मुझे सुबह की अपनी रोजमर्रा की प्रार्थना में, विश्वव्यापी समृद्धि और शांतता के लिए करने वाली प्रार्थना को शामिल करने को कहा। क्योंकि जब व्यक्ति दूसरों की समृद्धि और भलाई के लिए ईश्वर से प्रार्थना करता है तब देवदूत भी प्रार्थना करने वाले लोगों को सफलता और समृद्धि प्राप्त हो ऐसी प्रार्थना करते है। (हदीस)

मानवजाति की शांति और समृद्धि के लिए प्रार्थना करना ही कम समय में और जल्द से जल्द समृद्धि पाने का रास्ता है। अपनी समृद्धि के लिए कि हुई दुआ नामंजूर हो सकती है, लेकिन जब देवदूत हमारी समृद्धि के लिए प्रार्थना करते हैं, तो यह कभी-कभार ही ईश्वर द्वारा नामंजूर होती है।

उस दिन से मैंने नियमीत रुप से ऐसी प्रार्थना करनी शुरु कर दी और पूरे विश्व के लिए ईश्वर से समृद्धि माँगने पर मुझे स्वयं व्यक्तिगत रुप से ताकत व शांति मिली। असंभव तथा उच्च कार्यों की प्राप्ति के लिए शक्ति और धैर्य मिला। अब मैं हिम्मत और जोश के साथ रोजमर्रा कि जिंदगी के जटील और कठीन समस्याओं का सामना बगैर किसी कष्ट के करता हुँ।

पवित्र बाइबल में ईश्वर कहता है

'मनुष्य केवल रोटी (पैसा कमाने के लिए) पर ही नहीं जीता है।' *(पवित्र बाइबल Matt ४-४)*

'किसी दूसरे को ऐसे ही प्यार करो जैसा कि तुमने अपने आप को करते हो।' *(पवित्र बाइबल John १५-१२)*

'कृपया एक दूसरे से मधुरता और स्नेह से रहो।' *(पवित्र बाइबल Rom १२-१०)*

यदि हम सक्रिय रुप से मनुष्यजाति की समृद्धि में योगदान नहीं दे सकते, तो कम-से-कम हम ईश्वर से उनके लिए प्रार्थना और दुआ तो करें।

दृढ़ता का अत्याधिक प्रभावशाली उदाहरण

नेपोलियन हिल के Think & Grow Rich सुप्रसिद्ध पुस्तक में लिखा है;

हजरत मुहम्मद (स.) (ए.डी ५७०:६३२) का जन्म एवं पालन-पोषण मक्का के माननीय कुरैशी परिवार में हुआ था। २५ वर्ष की उम्र में उन्होंने एक आदरणीय विधवा हजरत खतिजा के साथ साझेदारी में व्यापार शुरु किया जो आज के समय के आयात निर्यात के व्यापार जैसा था। उनकी ईमानदारी, उनकी बुद्धिमत्ता ने हजरत खतिजा को इतना अधिक प्रभावित किया कि उनके सामने शादी का प्रस्ताव रखा और फिर दोनों ने शादी कर ली। ३७ वर्ष की उम्र तक वह एक सफल व्यापारी एक प्यार करने वाले पिता तथा पति बने रहे। जब उनकी जिंदगी में धन-दौलत, समाज में आदर मान, सुखद पारिवारिक जीवन सब कुछ था, तब आप के पवित्र धार्मिक मन ने महसूस किया कि संसार में अधिकतर लोगों की जीवन-शैली असभ्य है, और यह जीने का सही तरीका नहीं है। ज्ञान और मार्गदर्शन का कोई स्रोत नहीं हैं। इसलिए वह अक्सर पहाड़ की चोटी पर जाया करते, और हिरा नाम की गुफा में कई दिनों के लिए मौन रह कर एक ईश्वर की भक्ति करते थे। ४० साल की उम्र में हजरत जिब्राईल (अ.स) एक दिन प्रगट हुए और पवित्र कुरआन के पदों को उनके सामने जाहीर किया। ईश्वर के इस संदेश को मनुष्यजाति में प्रचार करने की जिम्मेदारी आप को मिली।

हजरत मुहम्मद (स.) के पास जो कुछ भी था ईश्वर का आदेश लोगो तक पहूँचाने के लिए खर्च कर दिया। १३ सालों तक वह अरब के लोगों को धार्मिक उपदेश देते रहे, लेकिन फिर भी केवल ८० व्यक्तियों ने इस्लाम को स्वीकार किया। इन १३ वर्षों में उनके अनुयायिंओं को मारा गया, जुल्म अत्याचार किया गया और हर मुमकिन तरीके से उन्हें सताया गया। हजरत मुहम्मद (स.) ने अपने अनुयायीयों को दूसरे स्थान पर बसने की आज्ञा दे दी। मगर वह स्वयं हर दुःख दर्द सहन करने के बाद भी मक्का में ही रहे तथा अपने मिशन को पूरा करने के इरादे पर अटल रहे।

अंत में जब मक्का के प्रभावशाली लोगो ने उनकी हत्या की योजना बनाई, तो वह पास के एक शहर मदीना में बस(Migrate) हो गए लेकिन वह कभी भी निराश नही हुए थे और अपने पक्के इरादे के साथ अपने धार्मिक कर्तव्य को जारी रखा। परिणाम स्वरुप अगले दस वर्षों में पूरा अरब उनके विचारों से सहमत हो गया और ईश्वर के संदेश को स्वीकार कर लिया।

हम हजरत मुहम्मद (स.) के जीवन में प्रशंसनीय इच्छा-शक्ति, दृढ़ता और धीरज देखते हैं। यह एक उज्वल और प्रेरणादायक सीख हैं उन व्यापारियों और साहसी तथा जोखिम उठाने वालों के लिए जिन्हें जीवन में अभी सफलता प्राप्त कर अपनी मंजिल मिलनी बाकी है।

****

अध्याय - १९

व्यापार प्रशासन

(Business Adminstration)

परिचयः-

हजारों मील की यात्रा एक कदम से शुरु होती है। परंतु वह एक कदम अगर गलत दिशा में बढ़ जाए तो क्या होगा? तब दो हजार मील की यात्रा भी, इच्छित लक्ष्य पर पहुँचने में सहायता नहीं करेगी। इसी प्रकार कोई भी व्यक्ति गलत प्रबंध-निती (Business Policy) के साथ साम्राज्य अथवा बड़ा संगठन नहीं बना सकता। केवल लक्ष्य की जानकारी ही महत्वपूर्ण नहीं है, बल्कि सही रास्ते की जानकारी भी आवश्यक है। ताकि लक्ष्य तक उचित समय पर पहुँचा जायें; इससे पहले कि बहुत देर हो जाय।

अकेले व्यक्ति की कई व्यक्तिगत सीमाएँ होती हैं। एक बड़ा संगठन अथवा एक बड़ी, स्थायी और लाभ कमाने वाली कंपनी एक व्यक्ति के कंधों पर नहीं खड़ी हो सकती। इसके लिए टीम-वर्क (सामुहिक प्रयास) आवश्यक है। इसलिए यदि कोई भारी मात्रा में धन कमाना चाहता है तो उसे टीम बनाने और उसका नेतृत्व करने आना चाहिए।

अनेक उच्च-शिक्षित, उच्च-विद्वान और योग्य व्यक्ति प्रशासन-संबधी कौशल की कमी (Lake in administrative Technique) के कारण अपनी योग्यता को पूरी क्षमता से प्रयोग नहीं कर पाते। वह जिंदगी में अकेले ही मेहनत करते रहते है और जितनी संपत्ती (धन) उन्हें मिलना चाहिए उससे कम कमाते है। अगर उन्होंने लोगों को नौकरी पर रखकर ज्यादा लोगों की सहायता से बिझनेस बड़ी मात्रा में फैलाया होता तो आज वह बहुत अधिक नफा कमा सकते थे।

व्यापार करना भारी मात्रा में धन जोड़ने का एक सबसे अच्छा विकल्प है। कोई भी नौकरी में चाहे कितनी भी उंची तनख्वाह प्राप्त करता हो, लेकिन फिर भी वेतन की एक सीमा तो रहती ही है। जबकि व्यापार में तरक्की की कोई सीमा नहीं होती और यह रिटॉयरमेंट (सेवा-निवृत्ती) अथवा मृत्यु से खत्म नहीं होती।

व्यापार यदी उचीत ज्ञान, सावधानी, सिद्धांत के साथ व्यवस्था-पूर्वक किया जाय तथा व्यावसायिकता और धार्मिकता से प्रबंध किया जाय, तो व्यक्ति अपनी कोशिश का मधुर फल अर्थात सफलता प्राप्त करता है। अन्यथा वह अपने माता-पिता द्वारा कमाई गई समृद्धि को भी खो देता है अथवा यदि कोई तनाव और चिंताओं को नियंत्रित नहीं कर पाता है, तो वह युवावस्था में ही मरता या बीमार हो जाता है।

व्यापार प्रशासन और प्रबंधन एक विशाल विषय है। इसे समझने के लिए तीन साल के कोर्स की आवश्यकता है; जैसे एम.एस.एस.अथवा एम.बी.ए.इत्यादि। इसे कुछ पृष्ठों में वर्णन करना मुश्किल है, लेकिन फिर भी हम इसके कुछ मुल और महत्वपूर्ण पहलुओं को दोहरायेंगे।

सरलता के लिए हम, इस विषय को तीन भागों में बाँटते है।

प्रथम वर्ग में हम संगठन के व्यावसायिक सिद्धांतो (Business Policy) पर चर्चा करेंगें।

द्वितीय वर्ग में हम प्रशासनिक तकनीक पर चर्चा करेंगे, जिसे एक साहसी व्यापारी अथवा मैनेजर को अपने अधीन काम करने वाले पदाधिकारीयों के साथ कारोबार (व्यवहार) करते समय अपनाना चाहिए।

तृतीय वर्ग में हम चर्चा करेंगे कि एक व्यक्ति को एक नेता अथवा एक समर्थ प्रशासक बनने के लिए अपने आप में क्या गुण विकसीत करने चाहिए।

****

अध्याय - २०
संगठन के सिद्धांत
(Principle of Organisation)

जैसा कि हमने आत्म-निर्देश (Auto Suggestion) के अध्याय में पढ़ा है, कि व्यक्तिगत स्तर पर सफलता प्राप्त करने अथवा भारी मात्रा में धन कमाने के लिए एक स्पष्ट और निश्चित लक्ष्य (Goal) आवश्यक है। व्यक्तिगत स्तर पर जो सत्य है संगठन के स्तर पर भी यही नियम लागू है। एक संगठन जो लक्ष्य प्राप्त करना चाहता है, उसका स्पष्ट और विशेष रुप से वर्णन करना चाहीए, तथा संगठन के प्रत्येक सदस्य को इसके बारे में मालूम होना चाहीए। तभी बिना समय और धन की बर्बादी किए उस प्रयास पर ध्यान केंन्द्रित कर सकते हैं, जो लक्ष्य (Goal) को प्राप्त करने के लिए आवश्यक है।

एक निश्चित लक्ष्य का यही महत्व है किंतु यह एक कठिन प्रश्न है कि, किसी संगठन या कंपनी को कौन सा लक्ष्य चुनना चाहिए ? इस प्रश्न का निश्चित उत्तर देने के बजाय हम इसका अध्ययन करें कि कुछ बड़े संगठनो ने कौनसे लक्ष्य और सिद्धांत चुने हैं, जिसके कारण वह अपने क्षेत्र में प्रभावशाली हुए। इस विषय में हम कंम्पयुटर और सॉफ्टवेयर की विशाल कंपनी IBM का अध्ययन करेंगे।

आई. बी. एम. के सिद्धांत : (The IBM Way)

थोमस जे.वॉटसन ने सन १९९४ में IBM की स्थापना की। शुरु में वे बूचर-स्केलस और घड़िया बनाते थें, और 'कॅम्पयूटिंग टॅब्यूलेटिंग ॲन्ड रिकॉर्डिंग कंपनी' के नाम से जानी जाती थी। उस समय उनके पास केवल कुछ सौ कर्मचारी थें। आज वह कम्पयूटर निर्माण में अग्रणी हैं, ४००००० से अधिक कर्मचारी उनके पास हैं, तथा उनकी बिक्री (Turnover) ५० बिलियन डॉलरर्स से अधिक हैं। दुनिया के प्रत्येक देश में IBM की शाखाऐं और ऑफिस हैं।

उनकी असीमीत सफलता का रहस्य उनके सिद्धांत है जो निम्नलिखित हैः-

कंम्पनी के प्रत्येक सदस्य का आदर और सम्मान होना चाहिए।

Every individual of the company must be respected.

प्रत्येक ग्राहक को सबसे अच्छी तथा हर संभव सेवा दी जानी चाहिए।

Every customer must be given the best possible service.

सर्वश्रेष्ठ Quality के लिए हमेशा प्रयास करते रहना चाहिए ।

Excellence and superior performance must be pursued.

प्रथम सिद्धांतः-

कर्मचारी किसी भी संगठन की सबसे महत्वपूर्ण पूँजी होती हैं। कर्मचारियों के साथ वरीष्ठ अधिकारियों द्वारा किए गए दुर्व्यवहार की भरपाई आर्थिक तौर पर नहीं की जा सकती। कर्मचारियों को हमेशा अपने साथ रखने के लिए, कंपनी के सिद्धांत और निती मानवता और सम्मान पर आधारित होने चाहीए।

IBM कालिजो और विश्वविद्यालयों से सबसे अच्छे विद्यार्थी चुनती है। उसके बाद उनको अपने व्यापार तथा कार्यों के साथ-साथ अपने सिद्धांतों और नीतियों के बारे में भी सबसे अच्छी और हर संभव ट्रेनिंग देती है। उनके सिद्धांत केवल क्लास में ही नहीं पढ़ाये जाते, बल्कि उनके संगठन के प्रत्येक व्यक्ति द्वारा उन सिद्धांतो का आचरण भी किया जाता है। उनके यहाँ वरिष्ठ अधिकारीयों के लिए खास भोजन कक्ष, खास टॉयलेटस, गाडीयों के लिए अलग से पार्किंग नहीं होती बल्कि प्रत्येक व्यक्ति के साथ आदरपुर्वक एक समान व्यवहार किया जाता है।

द्वितीय सिद्धांतः-

IBM की सफलता का दूसरा रहस्य उनकी सेवानीती (After Sales Service) है। इस नीती ने IBM को असीम सफलता दी है। रोजमर्रा की जिंदगी में हम देखते हैं, कि कई कंपनियाँ तकनीकी रुप से निचले दर्जे के उत्पाद (Low Quality Product) के बावजूद, अपनी प्रतियोगी के साथ, अपनी प्रतियोगी के श्रेष्ठ गुणवत्ता वाले उत्पादों की अपेक्षा बेहतर व्यापार कर रहीं हैं। यह उनकी बेहतर सेवा के कारण है।

भारत में लगभग १२ ऑटोमोबाईल कंपनियाँ हैं। और उनमें से अनेक के पास नामी ब्रॉंड के साथ विदेशी सहयोग (Collaboration) है। लेकिन ग्यारह कंपनियों की मिलाकर बिक्री भी बारहवी कंपनी की ४० प्रतिशत बिक्री के बराबर भी नहीं है। वह बारहवी कंपनी है मारुती उदयोग। क्योंकी मारुती उदयोग समुह के सर्विस सेंटर भारत देश के हर कोने में है।

आज कल मोबाईल फोन आम चीज़ है। यहाँ तक कि हाथगाड़ी खींचने वाले तथा रिक्शा चलानेवालों के पास भी मोबाईल फोन है। किंतु अधिक तर लोग नोकिया कंपनी के मोबाइल का ही प्रयोग करते हैं। यह इस कारण नहीं कि नोकिया की गुणवत्ता, पेनासोनिक, सॅमसंग, सोनी एरिक्सन इत्यादी की तुलना में बेहतर है, लेकिन यह इसलिए है कि नोकिया के कल-पुर्जे हर गली के नुक्कड पर आसानी से मिल जाते हैं।

इसलिए किसी भी व्यापार की सफलता का एक रहस्य अच्छी सेवा नीता (Good after sales service) है।

तृतीय सिद्धांतः-

जंगल में सबसे शक्तीशाली प्राणी ही जिवीत रह पाते है। (Only the Fittest Survive) यह नियम केवल जंगल के लिए ही नहीं है, बल्कि सीमेट कंक्रीट के जंगल (शहर) पर भी लागू होता है। समय के साथ केवल वह कंपनीयाँ शेष रहती हैं और वही तरक्की करती हैं, जो श्रेष्ठता के लिए प्रयास करती

अर्थात अगर अच्छा काम करोगे तो नोकरी बाकी रहेगी हैं। गुणवत्ता में श्रेष्ठता, कम खर्च में उत्पादन, तथा तकनीकी श्रेष्ठता, सेवा में सर्वोत्तम, बिक्री बढ़ाने की तकनीक, इत्यादी आवश्यक है। तथा श्रेष्ठता के लिए यह प्रयास कर्मचारियों की भर्ती और ट्रेनिंग से शुरु होना चाहिए। संगठन का सामाजिक या मानसिक वातावरण ऐसा बनाया जाय कि प्रत्येक व्यक्ति जानता हो कि किसी की भी नोकरी पक्की नहीं है, अर्थात अगर अच्छा काम करोगे तो नोकरी बाकी रहेगी। तथा संगठन में पदों (Post) की तरक्की तथा आर्थिक लाभ प्राप्ती (Payment Increments) वरिष्ठता पर निर्भर नहीं होती, बल्कि यह कठिन परिश्रम पर निर्भर होती है। यानी जो अधिक परीक्षम करेगा उसे अधिक लाभ मिलेगा।

IBM और सैकड़ों दूसरी कंपनियों ने कर्मचारियों का सम्मान, सर्वोत्तम ग्राहक सेवा, श्रेष्ठता के लिए प्रयास इन तीन सिद्धांतों का पालन करते हुए असाधारण सफलता प्राप्त की है। अगर आप भी इन तिन सिद्धांतो का पालन करेंगे तो आप भी महान सफलता प्राप्त कर सकते है।

For more knowledge read "The I.B.M way" by Buck Rodgers, Published by USB Publisher.

****

अध्याय - २१

नेतृत्त्वशैली तथा प्रशासकीय तकनीकी

(Leadership style and administrative techniques)

परिचय

यह पुस्तक उन नौजवान साहसी व्यापारियों के लिए लिखी गई है, जो नया व्यापार शुरु कर रहें हैं। इसलिए इस पुस्तक में लिखे गए सलाह मश्वरे भी उनसे संबधित है।

जिनको व्यावसायिक प्रशासन (Business Administration) का ज्ञान नहीं वह अपने स्वभाव और अनुभव के अनुसार अपने कर्मचारियों पर नियंत्रण रखते है। कभी वह नर्मी से पेश आते है कभी वह सख्ती से पेश आते है। कभी वह कर्मचारियों को प्रोत्साहीत करते है, कभी उनको ड़ाट-फटकारते है। राजकिय व्यक्ति कि तरह परिस्थीती जैसी होती है उदयोजक वैसे अपना रवय्या बदलते है।

साधारणतः नए उदयोजक इस प्रकार की गलतीयाँ करते है।

वे हर कर्मचारी पर संपूर्ण नियंत्रण चाहते हैं।

किसी को वे बहुत नज़दीक से निरीक्षण करते हैं और किसी को अत्याधिक छूट दे देते हैं।

जो लक्ष्य वे प्राप्त करना चाहते हैं उसे गोपनीय रखते है या फिर बहुत थोडे से अपने नजदीकी सहयोगियों को ही इसके बारे में बताते हैं।

मानवीय रिश्तों (Human Relation) से संबधित उनके निर्णय एक तरफा होते हैं। इसका अर्थ है, यदि वे किसी को आज्ञा देना चाहते हैं, तो वे उसको हुक्म देते है। यदि वे किसी को अधिकार देना चाहते हैं, तो वे अधिकार सौपते हैं। दूसरा व्यक्ति सिर्फ सुनने कि भुमिका निभाता है और वह नहीं जानता कि उसका अधिकारी उसके साथ इस प्रकार का व्यवहार क्यों कर रहा है?

वे सबके सामने खुले में किसी भी कर्मचारी को ड़ाटतें हैं।

अगर किसी ने अपना काम कुशलता से किया, तो वे प्रशंसा नहीं करते हैं और यदि वे करते भी हैं, तो गुप्त-रुप से और वे भी बहुत कम शब्दों में।

निर्णय लेने, लक्ष्य-निश्चित करने, कुशलता (Performance) की समीक्षा करना, कुशलता (Performance) के स्तर को निर्धारीत करना इत्यादि में कर्मचारियों और सहयोगिता को शामिल नहीं किया जाता हैं। यह अकेले अधिकारी (बॉस) द्वारा ही किया जाता है।

जहाँ तक धन का सम्बन्ध है, वह कर्मचारियों व सहयोगियों के लिए अपनी मुठ्ठी हमेशा बंद रखता है तथा अपने स्वंय के लिए और परिवार के लिए बहुत अधिक खर्च करता है।

वह हमेशा अपने कर्मचारियों को अपने से तुच्छ (Inferior) समझता है।

इन गलतियों और कमियों के कारण अच्छे सहायकों तथा सहयोगियों की उपलब्धि नये व्यापारियों के लिए हमेशा एक समस्या रहती है। और अधिकांश समय उसे स्वंय काम करना पड़ता है। इसलिए उसे महत्वपूर्ण कार्य (Important productive wave) के लिए पर्याप्त समय नहीं मिलता है।

उदयोग में मेरे २ ५ वर्ष के अनुभव तथा ज्ञान के अनुसार, जो मैंने बहुत सारी पुस्तकों से प्राप्त किया, प्रशासनिक-तकनीक (Administrative Technique) जो डॉ. केन्नथ बलनार्ड ने लिखा है, वह अत्याधिक प्रभावशाली है। उस तकनीक-ज्ञान तथा मेरे विचारों का सारांश निम्नलिखित हैं।

प्रशासन कि तकनीकः-

अपने अधिनस्थ सहयोगियों से अधिकतम उत्पाद प्राप्त करने के लिए आप जो उन पर किस प्रकार से नियंत्रण करते हो और उनके साथ कैसा व्यवहार करते हो, यही नेतृत्व-शैली(Directing Behaviour) है। नेतृत्व के अधिकांशतः दो प्रकार हैं तानाशाही (Dictatorship) और लोकतांत्रिक (Democratic)। तानाशाही अथवा निर्देशित व्यवहार (Directing Behaviour) में नेता लोगों को बताता है की, उन्हें क्या करना है? कैसे करना है? कहाँ करना है? कब करना है? और फिर नजदीक से कार्ययोजना का अमल किस प्रकार हो रहा है इसका निरीक्षण करता रहता है। लोकतांत्रिक अथवा सहयोगी व्यवहार (Supporting Behaviour) में नेता लोगों की समस्याऐं सुनता है, उनके प्रयासों में उन्हें सहायता करता है, मार्गदर्शन, सहयोग तथा निर्णय लेने में उनकी सहायता करता है।

Dr. Kenneth Blanchard चार प्रकार की नेतृत्व-शैली का समर्थन करते हैं, जो तानाशाही और लोकतांत्रिक शैली दोनों से मिल कर बनें हैं।

चार नेतृत्व शैलियाँ हैंः-

१.निर्देश देनेवाली शैली (Directing)

२. शिक्षा देने वाली शैली (Coaching)

३. सहयोग देने वाल शैली (Supporting)

४. अधिकार सौंपने वाली शैली (Delegating)

निर्देश नेतृत्व-शैली तानाशाही नेतृत्व-शैली की तरह ही है।

शैक्षिक नेतृत्व-शैली में नेता सहयोगियों को एक निश्चित सीमा तक ही निर्देश देता है, लेकिन वह अपने निर्णय का तर्कसहित व्याख्या भी करता है। सहयोंगियोंसे सुझाव माँगता है और कार्य पूरा करने में सहायता करता है।

सहयोगी नेतृत्व-शैली में नेता अपने सहयोंगियों के प्रयास में और काम को पूरा करने में सहयोग देता है। निर्णय लेने में वह उनको शामिल करता है, तथा उनके साथ जिम्मेदारी में भागीदार बनाता है। संक्षेप में, वह उनको आत्मनिर्भर बनने के लिए (Trained) करता है।

अंतिम नेतृत्व-शैली अधिकार अथवा जिम्मेदारी सौपने की है। इसमें नेता अपने सहयोगियों को निर्णय लेने की जिम्मेदारी तथा समस्याओं के समाधान की ज़िम्मेदारी सौंपता हैं।

कब कौन सी नेतृत्व-शैली चुननी चाहिए?

कोई भी एक नेतृत्व शैली सभी स्थिती में और सभी लोगों के लिए अनुकूल नहीं बैठती है। मैनेजर (नेता) हर कर्मचारि और सहयोगियों के लिए कोई विशेष नेतृत्व शैली चुनने के लिए सहयोगियों की गुणवत्ता (Competence) और व्यक्तित्व (Personality) का विश्लेषण है। इसका अर्थ है एक ही मैनेजर को विभिन्न व्यक्तियों के लिए, उनके विकास (Knowledge and experience) के स्तर के अनुसार विभिन्न नेतृत्व-शैली को चुनना होगा।

सहयोगियों के विकास के स्तर का क्या अर्थ है?

उद्योग में हम किसी व्यक्ति को उसके व्यक्तित्व की दो विशेषताओं के अनुसार कार्य सौंपते हैं। उसकी कार्य-कुशलता (Competence) और वचनबद्धता (Commitment)। व्यक्ति की कार्य-कुशलता योग्यता यानी कार्य को कुशलता पुर्वक करने कि उसकी क्षमता। योग्यता ज्ञान, अनुभव, शिक्षा, ट्रेनिंग इत्यादी के द्वारा प्राप्त की जाती है। वचनबद्धता का अर्थ है की एक व्यक्ति कितनी गंभीरता तथा ईमानदारी से जिम्मदारी निभाता है। वचनबद्धता भी दो तथ्यों पर निर्भर करती है; विश्वास और प्रेरणा।

जिस व्यक्ति को कार्य संतोषजनक रुप से पूरा करने का भरोसा नहीं है। वह उस काम को करने से बचेगा। वह जिम्मेदारी से बचने के बहाने ढुँढेगा। जो व्यक्ति पूर्ण रुप से उत्साहित नहीं है, वह मुख्यतः खाली समय बितायेगा और जितना आवश्यक है उतना ही कार्य करेगा। ताकि उसे नौकरी से निकाला न जा सके। इसलिए हम किसी व्यक्ति कि पहचान उसकी कार्य कुशलता तथा वचनबद्धता से ही करते है।

किस योग्यता एवं वचनबद्धता के स्तर के लिए कौन-सी नेतृत्व-शैली चुननी चाहीए?

हम कर्मचारियों कि योग्यता तथा वचनबद्धता के आधार पर उन्हें चार दर्जे में बाँट सकते हैं।

१.दर्जा I = कम योग्यता, उच्च्य वचनबद्धता। (Low competence, High commitment)

२.दर्जा II = थोडीसी योग्यता थोडीसी वचनबद्धता। (Some competence, Low commitment)

३.दर्जा III = उच्च योग्यता अस्थिर वचनबद्धता। (High competence ,Variable commitment)

४.दर्जा IV = उच्च योग्यता उच्च वचनबद्धता। (High competence , High commitment)

जिनमें थोडीसी योग्यता तथा थोडीसी वचनबद्धता है उनके बारे में क्या?

सरकारी संगठनों के अतिरिक्त लोग इन्हें नौकरी पर नहीं रखते हैं। एक जोखिम उठाने वाला साहसी उदयोजक अपने संघर्ष के प्रारंभिक समय में बेकार बोझ क्यों उठाएगा?

पहले दर्जे के लोग उत्साही (जोशिले) नए सीखने वाले होते हैं। कंपनी में आने वाले इन नए लोगों का अनुभव और कौशल बहुत कम होता है, तथा कंपनी की प्राथमिकताएँ, नीतीयाँ और व्यापार करने का तरीका नहीं जानते हैं। इसलिए इनके लिए आरंभिक निर्देशित नेतृत्व-शैली प्रयोग की जाती है।

दूसरे दर्जे के लोग वे हैं, जो थोड़े समय तक काम करने के और कुछ कौशल प्राप्त करने के पश्चात उनकी गलतफहमी दूर हो जाती है, अथवा वह निराशा का शिकार हो जाते हैं। नए लोग अपने कार्य को उत्साह के साथ शुरु करते हैं, लेकिन कुछ समय पश्चात वे निराश हो जाते हैं कि यह काम को सीखना कठिन है या कठिन परिश्रम करने के पश्चात वेतन कुछ अधिक नहीं मिलने वाली है। अथवा बहुत ही कम है।

ऐसे लोगों के लिए शैक्षिक अर्थात सिखानेवाली शैली सबसे अच्छी है, जो निर्देशित व्यवहार शैली के स्तर से उच्च है तथा सहयोगी शैली से निम्न है।

तिसरे दर्जे के लोग, जिन्होने पर्याप्त कौशल, योग्यता और वचनबद्धता प्राप्त की, लेकिन किसी वजह से अकेले फैसले और जोखिम उठाने से ड़रते हैं। वह उच्च अधिकारियों से कुछ सुरक्षा (आत्मविश्वास) चाहते हैं, कि वे सही राह पर हैं और वे आगे जा सकते हैं।

ऐसे लोगों के लिए सहयोगी-शैली सबसे अधिक अनुकूल होती है।

चौथे दर्जे के लोग उच्च योग्यता वाले और उच्च वचनबद्धता वाले होते है। इनके लिए अधिकार अथवा जिम्मेदारी सोंपने वाली नेतृत्व शैली सब से उचीत है।

निम्नलिखीत दो उदाहरणों व्दारा, मैं सोचता हूँ, कि मैं आप के सामने नेतृत्व की चार शैलियों की व्याख्या करने में सक्षम होउँगा तथा विकास की चार स्थितियों को भी अधिक स्पष्ट रुप से बताने में समर्थ होऊँगा।

पहला उदाहरणः-

१.जब कोई नया साहसी उम्मीदवार घुड़सवारी सीखना शुरु करता है, तो सिखाने वाला, उसे हर मोड़ पर बताता है, कि कैसे काठी पकड़ते है? कैसे चढ़े? उसे क्या करना चाहिए? और क्या नहीं करना चाहिए? यह निर्देश (Directing) नेतृत्वशैली है और उम्मीदवार विकास की प्रथम श्रेणी अर्थात पहले दर्जे में है।

२.उम्मीदवार घोड़े पर बैठने और उसे पकड़ने की मूल कला सीखता है। वह महसूस करता है कि यह

आसान कार्य नहीं है। उसका उत्साह घटने लगता है। उसका भ्रम टूट जाता हैं। तब ट्रेनिंग देने वाला (शिक्षक) उम्मीदवार को और अधिक कौशल प्राप्त करने के लिए शिक्षित करता है, जैसे दौड लगाना, कुदना इत्यादि तथा उसके उत्साह और विश्वास को बढ़ाता है। दूसरे स्तर में वह केवल निर्देश ही नही देता बल्कि उसकी प्रशंसा भी करता है, उसकी समस्याओं को सुनता है, उसके विचारों को जानता है और तकनीकी की व्याख्या करता है। इस शैली में कुछ अधिक निर्देश शैली तथा कुछ कम सहयोगी शैली का समावेश होता है और इसे ही शैक्षिक (Coaching) नेतृत्व शैली कहते है और उम्मीदवार विकास के दूसरे दर्जे में है।

३. जब एक उम्मीदवार पर्याप्त कौशल प्राप्त कर लेता है, तब कोच (शिक्षक) सहयोगी (Supporting) नेतृत्व शैली अपनाता है। उदाहरण के लिए, जेकपॉट टूर्नामेंट अथवा पालो (Polo) खेल जीतने के लिए उम्मीदवार और शिक्षक आपस में मिलजुल कर कौशल नीती (Strategy) निश्चित करते हैं। जिसके अनुसार उम्मीदवार अपनी योजना पर अमल करने वाला है और शिक्षक निर्णय प्राप्त करने में मदद करता है।

इस शैली में शिक्षक का निर्देशक कम और सहयोगी अधिक होता है। निर्णय लेने में वह उम्मीदवार को शामिल करता है। यह नेतृत्व शैली सहयोगी (Supporting) है। और उम्मीदवार विकास के तीसरे दर्जे में होता है।

४. जब उम्मीदवार एक विशेषज्ञ (Expert) बन जाता है, तो शिक्षक उसे ज़िम्मेदारी सौंप देता हैं। वह कह सकता है, "उस जेकपॉट ट्रॉफी की तरफ देखो, मैं इसे अपने मेज पर देखना चाहता हूँ जाओ और इसे प्राप्त करों।" यह अधिकार (Delegating) सौपने वाली नेतृत्व शैली है और उम्मीदवार विकास की चौथे दर्जे में है।

दूसरा उदाहरणः-

१. जब एक नया उत्साही विदयार्थी किक्रेट सीखने आता है, तो शिक्षक उसे प्रत्येक वस्तु का निर्देश देता है। जैसे बेट कैसे पकड़ा जाय? गेंद कैसे पकड़ा जाय? और विकेट के सामने क्रिज के अंदर कैसे खड़ा होना होता है? इत्यादी।

शिक्षक निर्देशित (Directing) नेतृत्वशैली प्रयोग में लाता है। वह कहता है, कैसे किया जाय? क्या किया जाय? इत्यादि तथा विदयार्थी विकास की पहले दर्जे में है।

२. जब विदयार्थी मूल कौशल (Basic Technic) सीख लेता है तो वह महसूस करता है कि क्रिकेट एक कला है और कठिन तकनीक है। उसका भ्रम कम हो जाता है। उसका मनोबल और जोश घटने लगता है। तब उसका शिक्षक उसके मनोबल व आत्मविश्वास बढ़ाने का प्रयास करता है तथा क्रिकेट की बेहतर तकनीक सिखाता है। जैसे की तेज गेंद कैसे फेंकी जाए या उसका सामना कैसे किया जाए? अथवा गुगली को विभिन्न प्रहारों से कैसे जोर से मारा जाय? कैसे दौडा जाय और सबसे महत्वपूर्ण अपने को चोट आदि से कैसे बचाया जाय इत्यादि। शिक्षक निर्देश देता है, उसके साथ-साथ सही मोड पर प्रशंसा भी करता है। खिलाडी की बात सुनता है। गेंद फेंकने और प्रहार करने इत्यादी में सामने आने वाली

समस्याओं की व्याख्या करता है। और उसपर चर्चा करता है और उसके मनोबल को बढ़ाने, रुचि को पैदा करने की कोशिश करता है। यह शैक्षिक नेतृत्व शैली है। शिक्षक निर्देशित अधिक और सहयोगी नेतृत्व शैली कम प्रयोग करता है तथा विदयार्थी विकास के दूसरे दर्जे में है।

३. जब खिलाड़ी कॉलेज, यूनिवर्सिटी, राष्ट्रीय अथवा अंर्तराष्ट्रीय स्तर पर खेलने में सक्षम हो जाता है तो शिक्षक और खिलाड़ी आपस में मिलजुल कर रण नीती (Strategy) निश्चित करते हैं। वे प्रतिद्वंदी टीम (Opposite team) की योग्यता की समीक्षा करते हैं। उनकी विशेषताएँ, उनकी कमियाँ-कमजोरियाँ, पिच की दशा, उन्हें बेटिंग पहले करनी चाहिए अथवा फिल्डिंग लेनी चाहिए इन सभी मुददों पर चर्चा करते हैं और रण निती निश्चित करते है।

शिक्षक खिलाडी को निर्णय लेने में सहयोग करता है। ऐसी दशा में शिक्षक निर्देश कम देता है और निर्णय लेने में सहयोग अधिक करता है। यह सहयोगी नेतृत्व शैली है तथा खिलाडी विकास की तिसरे श्रेणी में है।

४. जब खिलाडी सुनील गावस्कर की तरह हो जाता है, तो शिक्षक अपनी टाँग मेज पर फैलाकर कहता है, "मैं इस वर्ल्ड कप को अपनी मेज पर चाहता हुँ, जाओ और उसे प्राप्त करो और उसे प्राप्त करना है यह तुम तय करो।"

शिक्षक अधिकार सौंपने की नेतृत्व शैली अपनाता है और खिलाड़ी विकास के चौथे दर्जे में है।

हमे नेतृत्व-शैली कैसे प्रयोग करनी चाहीए?

मान लो आप उच्च्य सक्षम एवं योग्य और पूर्ण रुप से जिम्मेदार व्यक्ति को अपने संगठन में उंची तनख्वाह देकर नौकरी पर रखते हो। इस पुस्तक के सिद्धांत के अनुसार एक नये और कम्पनी के कामों से अपरिचीत व्यक्ति से निर्देशित (Directing) नेतृत्व शैली प्रयोग होनी चाहीए। इसलिए आप नजदीक से उसे निर्देश देना और परखना शुरु करते हों। वह उम्मीदवार आप के बारे में क्या सोचेगा।

वह सोच सकता है, की 'यह बेवकुफ आदमी मेरे जैसे योग्य और अनुभवी व्यक्ति के पीछे-पीछे एक बच्चे की तरह घुम रहा है। इसे मुझ पर कोई विश्वास नहीं यह कितनी निराशजनक बात है यह।'

उसी उच्च्य सक्षम एवं योग्य जिम्मेदार व्यक्ति को यदि आप जिम्मेदारी सौंपते हो और अपने सिद्धांत के अनुसार उसे अपनी जिम्मेदारी पूरी करने के लिए अकेला छोड़ देते हो, तब वह क्या सोचेगा?

वह सोचेगा, 'यह बेवकुफ मुझे नज़रअंदाज कर रहा है', इसने मुझे इतने ऊंचे वेतन पर नौकरी पर रखा और इसे इसकी बिल्कुल परवाह नहीं के मेरा और मेरे काम का कुछ ख्याल करें। वह मुझे नज़र अंदाज कर रहा है।

इस प्रकार कोई भी नेतृत्व शैली आप प्रयोग करते हो, तो उसका नतीजा उसके विपरीत होता है। तब आप क्या करोगे?

आपको अपने अधीनस्थ कर्मचारियों के साथ बातचित करके आपको उसे जागरुक करना होगा। अर्थात

आप को उसे समझाना होगा की आप उसके साथ कौनसी नेतृत्व शैली उपयोग करेंगे और क्यों।

नये कर्मचारी को मालूम होना चाहिए कि उसके कंपनी के साथ अनजानेपन के कारण उस के साथ निर्देशित नेतृत्व शैली का प्रयोग किया जा रहा है, और जैसे ही उसे जानकारी प्राप्त हो जाएगी, उसे जिम्मेदारी सौंप दी जाएगी।

इसलिए एक मैनेजर को मानसिक रुप से किसी भी प्रकार की नेतृत्व-शैली प्रयोग करने के लिए तैयार होना चाहिए। उसने कर्मचारी के विकास का स्तर परखना चाहिए और उसी प्रकार कि नेतृत्व शैली का प्रयोग करना चाहिए। फिर उसने कर्मचारियों के साथ वार्तालाप करके इस बात से सहमत करना है कि उनके लिए किस प्रकार कि नेतृत्व शैली का प्रयोग किया जा रहा है और क्यों? कर्मचारी और मैनेजर दोनों को इसकी पुर्वकल्पना होनी चाहिए।

एक ही व्यक्ति के लिए विभिन्न स्थितियों में विभिन्न नेतृत्वशैली

अब एक बार फिर क्रिकेटर का उदाहरण लेते हैं। शिक्षक ने सुनील गावस्कर को विकास के चौथे दर्जे के लिए ट्रेंड किया है और क्रिकेट टुर्नामेंट जीतने के लिए उसके साथ अधिकार सौंपने की नेतृत्व शैली प्रयोग की और कहा, 'उस ट्रॉफी को देखो, मैं इसे अपने मेज पर चाहता हूँ। जाओ और इसे जीत कर लाओ।'

अब मान लो वही खिलाड़ी (सुनील गावस्कर) उसी शिक्षक (ट्रेनर) से बॉक्सिंग सीखना चाहता हैं। क्या ट्रेनर बॉक्सिंग टूर्नामेंट जीतने के लिए शुरु से ही वही नेतृत्व शैली प्रयोग करेगा?

क्या वह फिर मेज पर अपनी टॉंग फैलायेगा और गावस्कर से कहेगा 'उस माइक टाइसन की ओर देखो, मैं उसका नीचे का जबड़ा अपनी मेज पर चाहता हूँ, जाओ उसे उखाड़ लाओ।'

यदि वह ऐसा कहता हैं, तो मुझे पूरा विश्वास है गावस्कर अपने दोनों जबड़े खो देगा। शिक्षक (कोच) उसी विदयार्थी के साथ विभिन्न स्थितीयों में शुरु से वही नेतृत्व शैली प्रयोग नहीं कर सकता हैं।

शुरु में शिक्षक गावस्कर को निर्देश देगा, तब उसे खेल के लिए ट्रेंड करेगा, फिर उसे मदद करेगा तथा जब गावस्कर बॉक्सिंग में माहीर (Expert) हो जाऐगा उसके बाद उसे अधिकार सौंपेगा।

इसी प्रकार एक मैनेजर को अलग-अलग कार्यों के लिए उसी एक व्यक्ति के साथ भिन्न भिन्न प्रकार की नेतृत्व शैलीयाँ प्रयोग करनी पड़ती है, और उसके विकास के स्तर के अनुसार भी अलग-अलग कार्य के लिए भिन्न भिन्न नेतृत्व शैलीयाँ प्रयोग करता है।

अंतिम शब्द (Last word)

६० वर्षे उम्र का बुद्धिमान व्यक्ति मैंने जो वर्णन किया है उसीप्रकार किसी से भी बीना सीखे कर दिखा सकता है तो इस पुस्तक में नया क्या है?

मूलतः यह पुस्तक नौजवान साहसी व्यापारियों के लिए लिखी गई है। यह प्रभावशाली मानवीय संबधों और मार्गदर्शन के लिए केवल याद रखने का एक संदेश है, एक पथ प्रदर्शक है। २०-३० वर्ष की आयु में सामान्यतः युवा पीढ़ी में महान अलेक्झेंडर की तरह उत्साह और विश्वास होता है। उन्हें अपने ऊपर जरुरत से ज्यादा विश्वास होता है, वे अकेले अपने विचारों और दर्शन के अनुसार पूरी दुनिया को जीतने का भरोसा रखते हैं। जब वे ऐसा कर रहे होते हैं तो कभी-कभी वे मानवीय संबधो की हद पार कर जाते हैं, इसके कारण अत्याधिक हानि और विनाश होता है। तथा इसे सही करने का वक्त भी निकल जाता है।

मैंने कुछ थोडे से उदाहरण देखे हैं, जिसमें नौजवान व साहसी पुत्रों ने जरुरत से ज्यादा विश्वास के कारण अपने पिता द्वारा स्थापित संगठनों को नष्ट कर दिया।

इसलिए यदि आप महत्वाकांक्षी और साहसी हो, तो जिंदगी में सभी सफलता आप को मिले ऐसी मेरी शुभकामना है। यदि इस पुस्तक में वर्णन की गई दार्शनिकता से आपका गहरा मतभेद है, तो अपने बढ़ते कदमों पर नज़र रखें, क्योंकि ये दार्शनिक विचार समय-समय पर खरे उतरे हैं तथा व्यापार-प्रबंधन के जानकारों द्वारा सही ठहराए गए हैं।

****

अध्याय - २ २
सफल नेता कैसे बने?
(How to be a Successful Leader)

एक सफल नेता बनने के लिए दो महत्वपूर्ण तथ्य हैं।

१) लोग आप को पसंद करें।

२) लोग आप का आदेश मानें।

प्रशंसा कैसे प्राप्त करें? (How to get admired?)

लोग आपको पसन्द करें, इसके लिए निम्नलिखित बातों की ज़रुरत है।

१) लोगों का स्वभाव (Psychology) समझे और उसके अनुसार व्यवहार करें।

२) अपने चरित्र और स्वभाव को और अच्छा बनाएं।

मानसशास्त्र क्या हैं? (What is human Psychology)

अच्छे तरिके से व्यापार चलाने के लिए हमें मानव स्वभाव के बारे में कम से कम कुछ तथ्य मालूम होने चाहिए। वे निम्नलिखित है।

१) प्रत्येक व्यक्ति के लिये संसार में किसी भी अन्य वस्तु की तुलना की तुलना में वह स्वयं सबसे अधिक महत्वपूर्ण है।

२) वह स्वयं को दूसरों से श्रेष्ठ समझता है।

३) पहचान बनाने के लिए वह प्रबल इच्छुक रहता है।

४) इन्सान मन से बड़ा ही कृतघ्न हैं।

उपर्युक्त तथ्यों की विस्तृत व्याख्या निम्न प्रकार से की गई है:-

स्वंय को सबसे महत्वपुर्ण समझनाः- (Self Importance)

मनुष्य सबसे अधिक महत्व अपने आप को ही देता ही है। उस के सर में होने वाला हलका सा दर्द उस के लिए विश्व के कौनसे भाग में मरने वाले हजारों लोगों से अधीक महत्वपूर्ण है ।

एक टेलीफोन कंपनी द्वारा जब टेलिफोन की बातचीत का विश्लेषण किया गया तो यह मालूम हुआ कि सबसे अधिक समान्यतः बार-बार दोहराने वाले शब्द। मैं, मेरा, मुझे। प्रत्येक व्यक्ति अपने बारे में बात करना सब से अधिक पसन्द करता है।

श्रेष्ठता:- (Superiority)

संसार में प्रत्येक व्यक्ति चाहे वह स्त्री हो अथवा पुरुष दूसरों से स्वयं को श्रेष्ठ समझता है। गोरे व्यक्तियों का विश्वास होता है कि उनका जन्म आफ्रिकन और आशियाई लोगों पर राज्य करने के लिये हुआ है। इस तथ्य के अंतर्गत युरोपियों ने कोशिश भी की और किसी सीमा तक पूरे संसार को अपने नियंत्रण में रखने में सफल भी हुए। जापानी अपने आप को यूरोपियों से श्रेष्ठ समझते हैं। जापानियों ने अपना पूरा तकनीकी साहित्य अपनी भाषा में लिखा है और यदि एक जापानी लड़की युरोपियन के साथ डांस करती हैं, तो वे क्रोधित हो जाते हैं। अफगान के लोग समझते है कि असली खान केवल वे ही हैं। और भारत के खान नकली हैं। इसाई समझते हैं कि पवित्र कुरआन पवित्र बायबल से संकलित की गई थी इसलिए केवल उनका विश्वास और मार्ग ही उचित है। मुसलमान समझते हैं कि दूसरे सब लोग गुमराह हैं।

हिन्दु सभी मासांहारी को मलिच्छ कहते है जिसका अर्थ है गन्दे लोग। ब्राम्हण अपने को दूसरे सबसे श्रेष्ठ समझते हैं। तथा धार्मिक शिक्षा और ज्ञान को सिखाना अपना अधिकार समझते हैं चालीस साल पहले, जब में बच्चा था, उत्तर प्रदेश में यदि किसी छोटी जाति के व्यक्ति कि परछाई ब्राम्हण के कदम पर पड़ जाए तो ब्राम्हण दुबारा स्नान करना पड़ता था।

इस प्रकार इस संसार में प्रत्येक व्यक्ति स्वयं को किसी भी तरह से दूसरे लोगों से अधिक श्रेष्ठ तथा अधिक पवित्र समझता है।

इसमें कुछ भी गलत नहीं है। यह मानवीय स्वभाव है। हमें बस इसे याद रखना है की अगर कोई घमंड से बात करता है तो यह इस को गलती नहीं है बल्कि यह इस स्वभाव के साथ पैदा हुआ है।

प्रशंसा की चाह :- (Craving for recognition)

गोपाल ने एक हिरे की अँगूठी खरीदी और उसे अपनी अँगुली में पहन लिया। लोगों का ध्यान आकर्षित करने के लिए जब कभी भी वह बात करता अपना हाथ और उंगली हवा में लहराता, कि लोग उस सुंदर अँगूठी को देख सकें, और उसकी प्रशंसा करें लेकिन किसी ने भी उसकी ओर ध्यान नहीं दिया।

गोपाल इतना अधिक निराश हुआ कि उसने अपने घर को आग लगा दी। पड़ोसी पानी की बाल्टियाँ लेकर आग बुझाने के लिए दौड़ते हुए आए। गोपाल उनके बीच में खड़ा हो गया और और अपनी उंगली से निर्देश देना शुरु किया, पानी यहाँ ड़ालों वहाँ आग बुझाओ वगैरा, वगैरा।

इस बीच एक पड़ोसी ने उसकी अँगूठी को देखा और एकाएक कहा "अरे गोपाल तुम्हारी अँगुठी तो बहुत खुबसूरत है।" गोपाल ने कहा "मेरे दोस्त! अगर तुमने यह मुझे पहले कहा होता, तो मैं अपने घर को आग न लगाता।"

यह एक चुटकुला है, लेकिन इससे मानवीय स्वभाव पूर्ण रुप से समझ में आता है।

मैं एक ऐसे व्यक्ति को जानता हूँ, जो मुश्किल से अपने परिवार की बढ़ती आवश्यकताओं को पूरा करता है। और ३५० Sq.ft के किराये के एक छोटे से फ्लैट में अपने छह बच्चों के साथ रहता है। किसी तरह उसकी आमदनी बढ़ गई। कल्पना करो, उसने इस अतिरिक्त धन का क्या किया है? क्या उसने अपने

बच्चों को बेहतर स्कूल में भेजा। एक फ्लैट अथवा वर्कशाप खरीदी? नहीं। उसने एक शानदार और मंहगी कार खरीदी?

अनुमान लगाओ, क्यों?

मणुष्य को प्रशंसा की प्रबल इच्छा होती है। वह पहचान मिले और सन्मान मिले और लोग उसे जानें पहचानें, इसके लिए वह पागल हो जाते हैं। लोग दिखावे के लिए आधुनिक व फैशनेबल कपड़े पहनते हैं। अपने फ्लैटस और बंगलों को जरुरत से ज्यादा सजाते हैं। पार्टियों में अत्याधिक खर्च करते हैं। महंगी कारें खरीदते और परंपरावादी समाज में अति आधुनिक जीवन शैली अपनाते हैं। केवल अपनी अलग पहचान बनाने के लिए, इन सब का कारण पहचान, पहचान और केवल पहचान, इसके अतिरिक्त कुछ नहीं।

वास्तव में वे चिल्ला चिल्ला कर कहना चाहते हैं, 'मेरी ओर देखो, सबसे अधिक आधुनिक, सबसे ज्यादा उन्नत, सबसे अधिक सुसंस्कृत, सबसे अधिक समृद्ध व्यक्ति, हर तरह से तुम्हारे से बेहतर!' लेकिन वे शर्मा जाते हैं और केवल अपनी वस्तुंओं प्रदर्शन करके अपने मन का संदेश भेजते हैं।

यदि आप अपने संगठन में ऐसे व्यक्ति को नौकरी पर रख रहे हो, तो उसे पहचानो और दिल खोल कर उसकी प्रशंसा करो। अन्यथा अपनी पहचान प्राप्त करने के लिए वह कुछ भी जला ड़ालेगा। मेरा विश्वास करो, मैं मज़ाक नहीं कर रहा हूँ।

एहसान फरामोश (कृतघ्नता) (Ungratefulness)

क्या आप जानते हो कि इस संसार के महान निर्माता ईश्वर अपने उत्पाद के बारे में क्या कहता हैं वह पवित्र कुरआन में कहता है।

'मैं निश्चित तौर पर कहता हूँ कि इन्सान अपने ईश्वर के प्रति एहसान फरामोश है।' (पवित्र कुरआन १००:६)

ईश्वर से ज्यादा मनुष्य के स्वभाव को और कौन जानता है?

एक बार येशु खिस्त ने दस कुष्ठ रोगियों का इलाज किया। जैसे ही वे स्वस्थ हो गए, वे खुशी से उछल पड़े और वहाँ वे भाग गए। कुछ समय पश्चात उन दस में से केवल एक वापिस आया और येशु खिस्त को धन्यवाद दिया। दूसरे नौ ने कभी उनका आभार नहीं माना।

हम न तो येशु खिस्त हैं और न ही हम कोढ़ियों के इलाज जैसा कोई महान कार्य करते है। इसलिए दस में से एक भी वपिस नहीं आएगा और ना ही हमें धन्यवाद देगा। यह मानव स्वभाव है। इसलिए हमें लोगों से आभार की उम्मीद नहीं रखनी चाहिए।

ईश्वर कहते हैं;

'आपके बीच में लोगों का एक समूह होना चाहिए, जो लोगों को सही रास्ता बताए और उन्हें गलत काम करने से रोके। केवल वे जो यह करेंगे, वही सफल होंगे।' (पवित्र कुरआन ३:१०४)

हालांकि मानव स्वभाव में अनेक कमियाँ हैं, फिर भी दोनों जहान (इस लोक और परलोक) में अपनी सफलता के लिए, हमें उन लोगों के समुह में रहना चाहिए, जो हमेशा दूसरों का अच्छा करते हैं, हमेशा अच्छे कार्यों के लिए सीख देते हैं और उनकी गलतियों के बारे में उनको सावधान करते हैं।

अब मानव स्वभाव के बारे में हमें कुछ जानकारी हो चुकी है। अब हम पढ़ेंगे कि हम लोगों के प्रिय और सफल नेता कैसे बनें?

लोगों पर प्रभाव किस तरह डालें? (How to Influence people?)

समझदारी से बात करें (Logical Talking)

लोगों से व्यवहार करते समय कुछ महत्वपूर्ण सूचना निम्नलिखीत है।

ईश्वर कहता है,

ऐ मुहम्मद उनको तर्क तथा बुद्धि के साथ उपदेश दो। (पवित्र कुरआन १६:१२५)

हमेशा आप भाषण सदभावना के साथ दें। (पवित्र बायबल कोल ४:६)

आपका वार्तालाप हमेशा बिना लालच के हो। (पवित्र बायबल हेब १३:५)

समझदारी और सदभावना के साथ बात करना लोगों की प्रशंसा पाने की ओर पहला कदम है।

कभी अपमान न करें (Never Condemn)

जब आप किसी व्यक्ति कि निंदा करते हो, तो आप सीधे सीधे उसकी श्रेष्ठता (Superiority) को चुनौती देते हो, और यह नकारात्मक प्रशंसा है। यह उनके मौलिक स्वभाव के विपरीत है, इसलिए लोग तीव्रता से प्रतिक्रिया व्यक्त करते हैं। वे अपने पक्ष की रक्षा करते हैं, चाहे वे गलत ही क्यों न हों। क्योंकि यही एक रास्ता है, जो उनके अहं (Ego) को बचाता है। यदि आप उसके लाभ और सुधार के लिए निंदा करते हो, तब भी वह इसका दूसरा अर्थ निकालेगा। वह निराश, नफरत से भरा, हटधरम और जिदद में रहता है। वह इस घटना को अपने मन में रखेगा और भविष्य में जब भी अवसर मिलेगा तो बदला लेगा। यदि आप चाहते हो कि कोई आप से नफरत न करे, तो किसी की भी निंदा अथवा अपमान न करें।

लोगों की प्रशंसा (Appreciation)

लोगों की प्रत्येक सफलता अच्छे काम तथा अच्छे प्रदर्शन की ईमानदारी और दिल से प्रशंसा करें। चापलूसी और प्रशंसा में अंतर है। चापलूसी अथवा झुठी प्रशंसा से लोगों में झुँझलाहट पैदा करती है, जबकि जायज़ प्रशंसा उन्हें खुशी की नई उँचाई पर पहुँचा देता है। लोग उन्हें पसंद करते हैं, जो उनके कठिन परिश्रम की कीमत को समझते हैं।

मुस्कराता चेहरा (Smile)

यह चीनी कहावत है, जिस आदमी के चेहरे पर मुस्कराहट न हो उसे दूकान नहीं खोलनी चाहिए।

जब आप मुस्कराते हो, तो आप अपत्यक्ष रुप से कह रहे होते हो की में आप को पसंद करता हूँ।

आपने मुझे खुश कर लिया।

मैं आपको देखकर खुश हूँ। इत्यादि।

आपके इस भाव से दूसरा व्यक्ति बहुत खुश होता है और सकारात्मक प्रतिक्रिया देता है। संपूर्ण प्रक्रिया एक मित्रता का वातावरण बनाती है।

पालतु पशूओं में सबसे अधिक कुत्तों को पसंद किया जाता है। लेकिन क्यों?

क्योंकि वे बहुत ज्यादा खुशी प्रकट करते हैं, जब वे अपने मालिक से मिलते हैं। इसलिए मालिक भी किसी अन्य जानवर से अधिक उससे प्यार करते हैं।

इसलिए आप भी मुस्कराओ और जब भी किसी से मिलो अपनी अच्छी भावनाएँ प्रकट करो। यदि आप ऐसा करते हो तो मेरा ऐसा कहने का अर्थ नहीं है कि लोग आप को अपने पालतु कुत्ते की तरह प्यार करेंगे, मेरा कहने का यह अर्थ है कि वे आप को बिना मुस्कराहट के रुखे चेहरे वाले लोगों से अधिक पसंद करेंगे।

मुस्कराहट रिश्तों के बीच की दूरियों को दूर कर देती है। यह अपनेपन और भाईचारे का वातावरण पैदा करती है। सामान्यतः लोग उन्हें पसंद करते हैं और अपना सहयोग उत्साहपूर्ण देते हैं, जिनके चेहरे पर वास्तविक मुस्कराहट रहती है। इसलिए जोश और मुस्कराहट के साथ लोगों का स्वागत करें।

बातचीत (वार्तालाप) कैसे करेंः (Conversation)

यदि आप किसी को बातचीत से प्रभावित करना चाहते हो, तो उस से बात करते समय ऐसा विषय चुनो, जो उसके लिए दुनिया में सबसे अधिक महत्वपूर्ण हो। आप जानते हो की दूसरे व्यक्ति के लिए दुनिया का सब से अधिक महत्वपूर्ण विशेष क्या है? यह उस का खुद का व्यक्तित्व है। हर आदमी सब से अधिक अपने बारे में बात करना चाहता है। इसलिए अगर आप किसी को प्रभावित करना चाहते हो तो उसे अपने बारे में बात करने दो और उसी की बात गौर से सुनो।

अपनी शब्दावली से 'मैं' 'मुझे' 'मेरा' 'मुझको' यह शब्द हटा दें, और उनकी जगह 'तुम' 'तुम्हारा' इत्यादी शब्दों का प्रयोग करें।

अगर कोई व्यक्ति घंटो आपसे बात करेगा और आप उसको ध्यान से सुनते होतो वह आप को पसंद करेगा, क्योंकि आप उनकी बात पूरे ध्यान से सुन रहे हैं। यह बातचीत के द्वारा ही है, क्योंकि यह लोगों की स्वयं को संतुष्ट करती है। धैर्यपूर्वक उनको सुनना उन्हें महत्ता की अनुभूति प्रदान करता है। वे सोचते हैं कि कम-से-कम कोई तो इस दुनिया में है, जो उनकी उपलब्धि और उनकी और ध्यान देता है।

नाम में क्या है ? : **(What is in name?)**

सबसे अधिक मधुर आवाज जो किसी के कान के लिए अगर है, तो वह है उसका नाम। जब कोई किसी को उनके नाम से पुकारता है और इसका सही उच्चारण करता है तो लोग सकारात्मक प्रतिक्रिया व्यक्त करते हैं। इसलिए यदि आप किसी के दिल में अपनी जगह बनाना चाहते हो, तो उसका नाम याद रखो और उसका सही रुप से उच्चारण भी करो।

उच्च चरित्र व नम्र स्वभाव रखना। : **(Have noble character and soft nature)**

आप किसी को एक बार बेवकुफ बना सकते हो, लेकिन आप किसी को हर समय बेवकुफ नहीं बना सकते। केवल अभिनय करके आप लंबे समय तक अपने मित्रों और साथियों के सामने अपना व्यक्तित्व को पवित्र और आदरनीय नहीं रख सकते हो। अंततः लोग एक-न-एक दिन नकाब के पीछे के असली चेहरे को पहचान लेंगे। यदि आप समाज में स्वीकृति और प्रशंसा चाहते हो, तो मौलिक रुप से महान चरित्र और मधुर स्वभाव अपनायें।

पवित्र कुरआन में ईश्वर कहता है,

'ऐ मुहम्मद तुम महान चरित्र के हो।' (पवित्र कुरआन ६८:४)

'ऐ मुहम्मद आपका स्वभाव कोमल और मधुर है, यही वजह है कि आपके साथी आप को छोड़ कर नहीं जाते हैं।' (पवित्र कुरआन ३:१५९)

तर्कशुद्ध बातचित।

कभी किसी की निंदा अथवा अपमान न करें।

उचीत प्रशंसा किजीए।

मुस्कुराता चेहरा रखें।

दूसरों को अपने बारें में बात करने दें और उन्हें ध्यान से सुनें।

लोगों के नाम याद रखें और उनके नाम का सही उच्चारण करे।

महान चरित्र और मधुर स्वभाव अपनायें।

लोग आपका अनुकरन कैसे करेंगे ? : (How to get Followed?)

यदि लोग आप को पसंद भी करते हैं प्यार भी करते हैं, फिर वे तुम्हारी आज्ञा नहीं मानते, अथवा आपका निर्णय मंजूर नहीं करते हैं। तो कैसे आप उन पर नियंत्रण रखोगे और अपना अनुयायी

बनाएंगे?

प्रभावशाली नेतृत्व के लिए कुछ टिप्स इस तरह हैं।

कालिज में आप इतना कठिन परिश्रम से अध्ययन क्यों करते हो? और आप अपने ऑफिस अथवा वर्कशॉप में इतना कठिन परिश्रम क्यों करते हो?

आप इतनी सावधानी और कठिन परिश्रम से अध्ययन करते हो, क्योंकि आप व्यावसायिक कोर्स में दाखिला पाने तथा आगे बढ़ने कि इच्छा रखते हो। आप अपने ऑफिस अथवा वर्कशॉप में कठिन परिश्रम करते हो, ताकि हर प्रतियोगी को पीछे छोड़ कर आगे बढ़ो।

आप की एक इच्छा थी इसलिए आपने कठिन श्रम किया। वह चीज जिसने आप को कठिन परिश्रम करने के लिए विवश कर दिया था वह ज्वलंत इच्छा थी, और यही सफलता का रहस्य है।

यदि आप दूसरे व्यक्ति के मन में ज्वलंत इच्छा जाग्रत करने में समर्थ हो जाते हो, तो वह आप की उम्मीद से ज़्यादा कड़ी मेहनत करेगा। उसे धकेलने अथवा फुसलाने की ज़रुरत नहीं पड़ेगी। यदि आप चाहते हो कि आप के सहयोगी कठिन श्रम करें, तो उनमें इच्छा जाग्रत करो।

यदि आप अपने सहयोगियों में उत्पादकता में कमी, कुशलता में कमी, अथवा उत्साह में कमी पाते हो तो उनके सामने चुनौती रखों। अथवा ऐसा वातावरण पैदा करो कि उनके सामने चुनौती हो। ऐसा वातावरण पैदा करो कि उनके बीच में आगे बढ़ने की प्रतियोगिता हो। उन्हें स्वयं ऊंचा लक्ष्य चुनने में मदद करें, उन्हें उसे पूरा करने में मदद करें। और जब वह उसे पाले तो आप उन की दिल खोल कर प्रशंसा करें, उन्हें सम्मानित करें।

कर्मचारी जब महसूस करते हैं कि उनके अच्छे कामों की ओर कोई ध्यान नहीं देता है, और कोई उनकी प्रशंसा नहीं करता है। लेकिन जैसे ही कोई गलती होती है, तो उन्हें हर एक के सामने तुरंत अपमानीत किया जाता है। तो उनका दिल टूट जाता है और उनका उत्साह खत्म हो जाता है।

अच्छे कार्यों को नज़र अंदाज करना और सबके सामने कर्मचारी की गलतियों के लिए उन पर भड़कना और उनका उपमान करना यह कुछ गंभीर गलतियां हैं जो एक नेता मालिक या मेनेजर करता है।

आदर्श नेता अपने सहयोगियों की प्रशंसा करने के बहाने ढुंढता रहता है और यदी वे गलतियाँ करते हैं, तो उन्हें अपनी गलतियाँ सुधारने का अवसर प्रदान करता है।

एक प्रभावशाली नेता अपने कर्मचारी को अपने केबिन में बुलाता है अथवा जहाँ कोई उनकी बातचीत न सुन सके और फिर उसका ध्यान अप्रत्यक्ष रुप से उसकी गलतियों की ओर दिलाता है। एक अच्छा नेता दूसरों की आलोचना करने से पहले अपनी स्वयं की गलती के बारे में बात करता है।

एक अच्छा नेता सीधे तौर पर (प्रत्यक्ष रुप से) आर्डर देने के बजाय प्रश्न पूछता है। उदाहरण के लिए,

यदि उसका पेन जमीन पर गिरता है, तो सीधा ऑर्डर देने यानी 'इसे उठाना' यह कहने के बजाय वह पूछेगा, 'क्या आप मेरा पेन उठा सकते हो?' इसी काम के लिए पहली क्रिया सीधा आदेश था। लेकीन दूसरी क्रिया भी आदेश है लेकिन विनंती के रुप में थी, अथवा मेहरबानी के स्वरुप में थी। किसी को भी सीधे आदेश का पालन करना पसंद नहीं है हर एक को दूसरे के उपर मेहरबानी करना पसंद है क्योंकि इससे उनका महत्व बढ़ता है। इसलिए सीधे आर्डर देने के बदले प्रश्न पूछें।

एक अच्छा नेता बिना किसी शर्म अथवा संकोच के अपनी गलती स्वीकार करता है।

एक योग्य और समर्थ नेता अपने कर्मचारियों को प्ररित करता है, उत्साहित करता है और आसानी से उन्हें अपनी गलती को सुधारने में मदद करता है।

कुछ असामान्य उपदेश :

५०० बी.सी. में लाओ त्सू (Lao Tzu) एक चीनी दार्शनिक था। उसने चीन के राजनीतीज्ञों और शासकों के लिए 'ताओ टी चींग' (Tao Te Ching) नाम की एक किताब लिखी। कई लेखकों ने उसका अँग्रेजी में अनुवाद किया है। जॉन हईडर ने इनको संकलित और संक्षिप्त करके एक सरल और सुंदर पुस्तक ताओ ऑफ लीडरशीप (Tao of Leadership) शीर्षक से प्रकाशित की है। ताओ ते चिंग से कुछ थोडे से दार्शनिक विचारों का संक्षिप्त विवरण निम्नलिखित है।

लाओ त्सू कहते हैं, 'एक नेता को एक दाई अथवा नर्स की तरह काम करना चाहिए।'

एक नर्स बच्चे का जन्म कराने में मदद करती है, वह कोशिश करती है कि प्रसव दर्द (Labour pain) कम से कम हो और बच्चे को सुरक्षित बाहर लाने की कोशिश करती है। हालांकी दाई अथवा नर्स का कार्य बहुत ही जटिल और महत्वपूर्ण है, लेकिन जब बच्चे का जन्म हो जाता है, तो माँ कहती है, 'मैंने बच्चे को जन्म दिया है।' कोई भी दाई अथवा नर्स का नाम नहीं लेता है।

इसी प्रकार एक नेता को भी कार्य को पूरा करने की अपने अनुयायियों के दिल में तीव्र इच्छा पैदा करनी अथवा जगानी चाहिए। फिर कार्य सरल करें और काम करने में सहायता करें। जब काम पूरा हो जाय, तो अनुयायियों और सहायकों को कहने दें की, यह काम हम ने किया है। एक नेता को अकेले काम पूर्ण होने का श्रेय (Credit) नहीं लेना चाहिए।

जब एक नेता अच्छे काम का श्रेय स्वयं नहीं लेता है और आर्थिक व्यवहार में ईमानदार और नेक रहता है, तो आदर-मान तथा समृद्धि दोनों उसकी ओर खींची चली जाती हैं।

नम्र, समझदार, निर्लोभी, आवभगत करने वाला और सेवा भावी इन गुणों के कारण ही नेता को श्रेष्ठता प्राप्त होती है।

Greatness comes from knowing how to be lowly, empty, receptive and of service.

आक्रमक, उत्तेजित, जरुरत से ज्यादा अभिनय करने वाला, उददंड और हठी व्यक्ति, जोशिले भावुक तथा सनकी लोगों का नेतृत्व कभी नहीं कर सकता। ऐसे लोगों के समुह का नेतृत्व करने के लिए नेता को

विनम्र, सेवा भाव होना ही चाहीए, जब एक नदी पहाड़ी से नीचे आती है, तो यह जोश में और तेज बहाव में होती है, लेकिन जब वह नदी शांत स्विकार करनेवाले सागर से जाकर मिलती है तो वह समुद्र के अनुरुप ही अपने को ढ़ाल कर शांत और मौन हो जाती है।

एक बुद्धिमान नेता हमेशा सेवा भावी, समर्पित और दूसरों की बात को ध्यान से सुनने वाला होता है। एक समुह में जिस में कर्मचारी या अनुयायी बहुत ज्यादा उत्तेजीत होते है। नेता या मॅनेजर पहले सब की बात सुनता है। वह खुद उत्तेजीत नहीं होता है। और सब को शान्तिपुर्वक बाते समझाता है। अगर नेता बुद्धिमान है और उसके तर्क में सुझाव में दम होगा तो लोग धीरे-धीरे उसकी बात की महत्ता को समझते पहचानते है और आखिर में उस का हर आदेश मानते हैं। जैसे उत्तेजित नदी समुद्र में समा जाती है उसी तरह उत्तेजीत लोगों की सोच भी बुद्धिमान और शांत नेता की तरह समझदारी वाली हो जाती है।

यदि नेता स्थिर, और दरमियानी रास्ते चलने वाला, नम्र स्वभाव, सेवाभावी वृत्ती रखनेवाला, समझदार और अनुकरनशील होगा तभी नेता कि जागरुकता कर्मचारियों की जागरुकता पर नियंत्रण कर सकती है।

यदि हम किसी चीज को अधिक और अधिक, बार-बार करने का प्रयत्न करें, तो उसका प्रभाव पूर्ण विपरीत होता है अथवा विरुद्ध गुणधर्म प्रकट होते है।

उदाहरण के लिए, अधिक खूबसुरत होने के बहुत अधिक संघर्ष में व्यक्ति बदसुरत दिखलाई देता है। जीवन के प्रति अधिक मोह मृत्यु के भय को बढ़ा देता है। इसलिए हमारा नज़रिया मर्यादा में होना चाहिए तथा बीच के रास्ते पर चलना चाहिए और हमें अति (Extrem) से बचना चाहिए।

एक नेता को शांत को शांत रहना चाहीए। तथा घमंड और अहंकार से दूर रहना चाहिए। उसे Grounded और Centered होना चाहिए, तब ही वह प्रभावशाली रुप से सनकी व अनियमित लोगों के साथ तथा मुश्किल हालात में काम करने में समर्थ होगा।

Grounded का अर्थ है उसके पैर पुर्णतया जमिनपर होने चाहिए। उसने स्वयं की भावनाओं से प्रभावित हो कर या दूसरों के शब्दों के दबाव में काम नहीं करना चाहिए। दूसरे शब्दों में अगर कहा जाए तो हम क्या कह रहे है और क्या कर रहे है नेता को उसकी पूरी जानकारी होनी चाहिए। अपनी योग्यता क्या है और हम किस योग्य है उसका हमें ज्ञात रहना चाहिए।

Centered का अर्थ है कि किसी भी प्रकार की स्थिती में मन का एक संतुलन बनाये रखना। यहाँ तक कि काम क्रोध और झगडे के बीच में भी, जोश (Excitement) और भावना (Emotion) में भी उस संतुलन को बनाए रखना चाहीए और यही Centered होना है। जो व्यक्ति Centered तथा Grounded नहीं है, वह जोश भरी भावना और उत्तेजना के दबाव में बहक जाता है। वह निर्णय लेने में गलती करता है अथवा यहाँ तक कि मानसिक और शारिरीक रुप से बीमार भी हो जाता है।

नियमित रुप से मौन क्रिया (Meditation) के लिए हमेशा इतना समय दिजीए। की मन से भावनाएँ निकल जाएँ और मन (मस्तिष्क) शांत हो जाए।

अत्याधिक ऑर्डर देनेवाला, निर्देश, हस्तक्षेप, नाटक करनेवाला व्यक्ति समुह ग्रुप में बुद्धि का नाश करता है। इससे आप तार्किक सोच (Logical thinking) तथा वास्तविक सुझ-बुझ में रुकावट भी होती है।

यदि आप स्वयं को जानना और सुधारना चाहते हो, तो साधना (Meditation) करने की कोशिश कीजिए। सरल शब्दों में साधना का यह अर्थ है कि हम विश्राम की मुद्रा में अपना पूरा ध्यान अपने स्वयं के मस्तक पर केद्रिंत करें तथा किसी भी चीज के बारे में न सोचे न ही अपनी पाँचों इंद्रियों में से किसी का प्रयोग करें।

रॉन हालैंड अपनी पुस्तक Talk & Grow Rich में शांत रहने कि सलाह देते हैं, प्रति दिन कम से कम ३० मिनट तक मौन के लिए वह ऐसे कमरे में बैठने की सलाह देते हैं, जिसमें से आवाज़ न गुजर सके। उस कमरे में इलेक्टॉनिक घड़ी लेकर बैठें, जिस में अंको के अनुसार समय मालूम होता है। यह बहुत कठिन है कि दिमाग (मन) को ३० मिनट तक विचारों से रिक्त रखा जाए, इसलिए केवल एक मिनट के लिए कुछ भी न सोचने की कोशिश करें, फिर अगला मिनट के लिए कुछ भी न सोचने की कोशिश करें। फिर अगला मिनट और इस प्रकार करते जाएँ। इस प्रकार से ३० मिनट पूरे करें। मौन बैठना और कुछ भी न सोचना, मन में अपने आप चल रही बेकार की बातों को सोचने से रोकता है। इस प्रकार के शांत मन से हम अवचेतन मन तथा छठे इंद्रिय (Sixth sence) और ईश्वरी अंतप्रेरणाद्वारा प्रस्तुत किए गए विचार स्पष्ट रुप से सुन और समझ सकते है।

ईश्वर की ओर पूर्ण रुप से ध्यान लगाकार प्रार्थना करना साधना और मन को खाली करने का एक बहुत प्रभावशाली प्रकार है। यह मन और आत्मा को पवित्र करती है। धार्मिक और शारीरिक लाभ के लिए इसे प्रति दिन कम से कम आधा घंटा करें।

एक सज्जन पुरुष श्रीमान बी.के पंत ने सन १९५९ ई में अपनी कंपनी शुरु की। उनके पास २५० से अधिक कर्मचारी थे और सन १९७५ तक अत्याधिक अच्छी तरह से काम किया। कंपनी को और अधिक विस्तार करने के लिए, उन्होंने सन १९७५ में बैंक से १५ लाख कर्जा लिया। फिर अचानक उनकी कंपनी में मज़दूरों की समस्या शुरु हो गई, जिसके कारण उन्हें बहुत ज्यादा आर्थिक हानि हुई तथा उनकी कंपनी बीमार (Sick Unit) घोषित कर दी। अगले २५ वर्षों तक वह टैक्स नहीं भर सका, न ही कर्मचारियों को समय पर तनख्वाह दे पाया। न लेनदारों (Material Suppliers) का समय पर पैसा चुका पाया।

जिन कर्मचारियों ने उन्हें दिवालीया होने की ओर धकेला था, शिकारी कुत्ते की तरह तनख्वाह बढ़ाने, बोनस और समय पर पैसा पाने के लिए वह अगले २५ साल तक उन के पीछे पड़े रहे।

मैंने जब उनके परिसर में व्यापार करना शुरु किया था, मेरी आमदनी इतनी कम थी कि मैं उनकी मदद नहीं कर सका। निःसहाय-सा केवल उन्हें देखा करता और जीवन के कटु अनुभव से सीख सीखता। वह सज्जन पुरुष और उसकी योग्य पत्नी मॅडम गीता पंत धीरज से मानसिक यंत्रणा सहती और किसी तरह इस असहनीय दुःख को उन्होंने २५ वर्षों तक सहन किया। उनकी बेटी अनुपमा डाक्टर बनने के पश्चात

अमेरिका गई, धन का प्रबंध किया और बैंक का कर्ज़ा चुकाया, कर्मचारियों और सरकार का बकाया पैसा चुकाया तथा अपने माता-पिता को आखीरकार समय की चक्की में पीसने से बचा लिया।

जब मैं श्रीमान पंत की जिंदगी और नेतृत्व शैली का विश्लेषण करता हूँ, तो लाओ त्सू (Lao Tzu) द्वारा सुझायी गई नेतृत्व-शैली का समर्थन करता हूँ। श्रीमान पंत कभी-कभार ही कठोर बोलते हैं। वे हर एक की सुनते हैं, लेकिन उन्होंने कभी भी अपना आपा नहीं खोया और अपने सिद्धांतो पर समझौता किए बिना अपनी लढ़ाई जारी रखी।

अपने जीवन में हम उस समय निसहाय हो जाते हैं, जब कभी अपने परिवार के सदस्यों, समाज और कर्मचारियों के साथ आमनासामना हो जाता है या बात बिगड़ जाती है। सत्ता और ताकत का प्रयोग करके या सीधे-सीधे झगड़ने से स्थिति और खराब हो सकती है। लाओ त्सू का तरीका ही ऐसी स्थिती को हल करने का एक रास्ता है।

ऐसी अनेक दार्शनिकताएँ, सिद्धांत और प्रबंधन के सिद्धांत हैं। कौन-सी अधिक प्रभावशाली है? किस का हमें अनुसरण करना चाहिए? इस प्रश्न को हम अपने ईश्वर से पूछते हैं या उन पर छोड़ देतें हैं, देखें, वह क्या कहते हैं?

'कभी उम्मीद मत छोड़ो और चिंता मत करो, यदि तुम वास्तव में ईश्वर पर विश्वास करने वाले हो, तो केवल तुम ही सफल होओगे।' (पवित्र कुरआन 3-139)

एक दूसरे स्थान पर वह कहता है,

'ईश्वर सभी मुश्किलों से आज़ादी का रास्ता बनाते हैं उनके लिए जो ईश्वर पर विश्वास रखते हैं। वह उनको ऐसे सूत्रों से खिलाते हैं, जहाँ से कोई कल्पना भी नहीं कर सकता। वह उनकी सभी जरुरतें पूरी करता है।' (पवित्र कुरआन 65-23)

सृष्टि का विधाता कहता है,

कि सभी प्राणि हानि में है, सिवाय उनके जो मुझमें विश्वास रखते हैं, जिनके कार्य महान हैं। जो सही रास्ता चलते है। और सब्र (धीरज) से काम लेते है। (पवित्र कुरआन 103: 1-3)

ईश्वर पर विश्वास, मानवता और धीरज यह जीवन में सफलता के कुछ अत्याधिक महत्वपूर्ण राज हैं। यदि आप आगे बढ़ना चाहते हो तो व्यापार में भी इन्हें अपनाना सीखो।

इसलिए आप किसी भी सिद्धांत का अनुकरण कर सकते हो। जिस किसी को भी आप व्यापार को व्यवस्थित करने और अधीनस्थ कर्मचारियों को नियंत्रित करने के लिए पसंद करते हो। लेकिन ध्यान में रखो कि वह सिद्धांत मानवता के अनुसार होने चाहिए, और जो ईश्वर की दयादृष्टी और आशीर्वाद को भी आमंत्रित करनेवाले हो।

****

अध्याय - २ ३
निर्णय लेने कि प्रक्रिया
(Decision Making)

एक बुढ़ा आदमी तथा उसका युवा बेटा, अपने गधे के साथ पड़ौसी शहर की यात्रा पर चल दिए। जब वे एक छोटे से गाँव से गुजरे, लोगों ने उन पर हँसना शुरु कर दिया और कहा, इन बेवकुफों को देखो, इनके पास गधा है, लेकिन उस पर सवार होकर नहीं जा रहे हैं। यह सुनकर उस बुढ़े आदमी ने अपने पुत्र को गधे पर सवार होने को कहा।

जब वे अगले गाँव से गुज़रे, तो कुछ लोगों ने फिर हँसना शुरु किया और कहा कि, इस लड़के को जरा भी समझ नहीं है, बेचारा बुढ़ा आदमी पैदल चल रहा है और वह गधे की सवारी कर रहा है। यह सुनकर वह लड़का नीचे उतर गया और बुढ़ा गधे की सवारी करने लगा।

जब वह दूसरे शहर से गुज़रे और लोगों ने बुढ़े बाप को गधे पर सवार देखा, तो हंसने लगे और कहा कि, बाप के दिल में बिल्कुल दया नहीं है, बेचारा लड़का पैदल चल रहा है और वह स्वयं गधे की सवारी का आनंद ले रहा हैं। यह सुनकर उस बुढ़े आदमी ने अपने बेटे से अपने साथ गधे पर बैठने को कहा। गधे के लिए दोनों का बोझ बहुत अधिक था। जब वे दूसरे लोगों के बीच में से गुजरे, तो उनमें से कुछ ने फिर उन पर व्यंग कसा और कहा की वे इस बेचारे जानवर को जान से मार रहे हैं और इनके मन में गधे के लिए कोई दया नहीं हैं।

वह बूढ़ा आदमी और लड़का यह तय नहीं कर सके कि अब क्या करें? अंततः उन्होंने एक लंबा लकड़ी का ख़म्बा लिया, उससे गधे की टाँगे बाँध दी, और उसे अपने कंधो पर उठा लिया। जब वे एक पुल को पार कर रहे थे, तो एक बहुत बड़ी भीड़ ऐसे अजीब दृश्य को देखने के लिए इक्कठी हो गई। उनका शोरगुल, हँसने और व्यंग्य कसने के कारण गधा भयभीत हो गया और अपने आप को आजाद करने कि कोशिश करने लगा और इस दौरान नदी में गिर पड़ा और डूब गया।

यह एक काल्पनिक कहानी है, जो हमें स्कूल में पढ़ाई गई थी। लेकिन सच तो यह है कि यह काल्पनीक नहीं है। यह घटना सैकड़ों बार हमारे चारों ओर दुहराई जाती है। केवल पात्र (Characters) अलग होते हैं।

श्रीमान जाधव एक सज्जन पुरुष थे। वह ऑफिस में एक क्लर्क के रुप में काम किया करते थे। उसके मित्र ने उन्हें सेल्समेन की नौकरी करने के लिए प्रेरित किया और कहा की उस काम में कमीशन बहुत मिलता है, और उसे काम को छोड़ देने को कहा, जो वह करते थे। जाधव अपने मित्र के अनुसार पक्की नौकरी छोड़ कर सेल्समन की नोकरी करने लगा। लेकिन जाधव सेल्समन के रुप में सफल नहीं हुए।

इसलिए उसके माता-पिता ने उसे लोखंड के सामान कमीशन के आधार पर छोटे वर्कशॉप्स को बेचने के लिए कहा, जो उसने किया लेकिन उनका फल (Profit) उसें उनकी उम्मीद के अनुरुप नहीं मिला। उनकी पत्नी उन्हें अदयावत (Precision) और किमती टूल्स (Tools) बेचने के लिए प्रेरित किया और

उसके लिए बडे उदयोजकों से संपर्क करने को कहा। जाधव ने वह भी किया लेकिन अभी भी सफलता उसकी उम्मीद के अनुरुप नहीं थी।

अंतत जाधव ने बड़ी संख्या में स्टील की छड़े, सिमेंट, बालू तथा ईंटें बिल्डर्स को सप्लाई करने का निश्चिय किया। इस नए कारोबार में उसे अपना भुगतान और लाभ नियमित रुप से तब तक मिलता रहा जब तक प्राजेक्ट चलता रहा। प्राजेक्ट के पूरा होने पर श्री जाधव को बिल्डर से कभी भी अपना आखिरी भुगतान नहीं मिला। जाधव ने बहुत कोशिश और की तथा कानुनी और गैरकानूनी दोनों तरीकों से अपना भुगतान प्राप्त करने का पूरा प्रयास किया लेकिन अंत में उसे अपना आखिरी भुगतान नहीं मिला आखिर में सप्लायर्स का भुगतान करने के लिए जाधव को अपना फ्लॅट बेचना पड़ा। जाधव ने गधे के स्थान पर अपना फ्लॅट और भाग्य गँवा दिया।

इसलिए सफल होने के लिए आप को अपना स्वयं का दृढ़ निर्णय लेना होगा, और लोग कितनी ही आलोचना करे उस निर्णय पर अटल रहना होगा। प्रत्येक व्यक्ति के पास राय (सलाह) की एक अच्छी खासी संख्या होती है जिन्हें वह उन लोगों में बांटते रहते है जो उन्हें स्वीकार करते है। अगर आप दूसरों के विचारों अथवा आलोचना से प्रभावित होते हो और निर्णय बदलते हो, तो आप अपने जीवन में कभी सफल नहीं हो सकते हो और ना ही अपना लक्ष्य प्राप्त कर सकते हो।

संसार में सभी सफल व्यक्तियों में जल्दी और दृढ़ निर्णय लेने की आदत हैं तथा इसे बदलने में वे लंबा समय लेते हैं। इसके विपरित सभी असफल व्यक्ति फैसला लेने में लंबा समय लेते हैं और इसे बहुत जल्दी बदल देते हैं।

निर्णय कैसे लिया जाय? (How to make a Decision)

निर्णय अथवा फैसला लेने के चार चरण है:

१. सबसे पहले हमें समस्या का स्पष्ट रुप से और पूरी तरह विश्लेषण करना होगा। वह, यह है कि समस्या क्या है और हमें फैसला क्यों लेना है? अथवा यदि हम फैसला नहीं लेते हैं, तो फिर क्या होगा?

२. उसके बाद हमें विषय के बारे में सब आंकड़े (Figure) तथा तथ्य (Facts) इकटठे करने होंगे। तथ्य इकट्ठे करने में हम अक्सर गलतियाँ करते हैं। हम केवल उन तथ्यों पर ध्यान केंद्रित करते हैं, जो हमारे स्वभाव और मानसिकता के अनुरुप होते हैं। हम उन सभी सत्य और आंकड़ों को नकार देते हैं, जो हमारी सोच मानसिकता के विरुद्ध होते हैं। जबकी विशेषज्ञ यह सुझाव देते हैं, कि हमें तथ्यों को ऐसी ईमानदारी से इकठ्ठा करना चाहिए, जैसे कि हम किसी दूसरे के लिए कर रहे हैं। डेल कार्नेग कहते है, यदि एक व्यक्ति सत्य को निष्पक्ष तरीके से प्राप्त करने में अपना समय खर्च करता हैं तो उसकी सारी परेशानियाँ ज्ञान की रोशनी में अपने आप कम हो जायेगी।

३. तीसरे चरण में हमें सभी संभव विकल्पों को लिख लेना चाहिए।

४. चौथे चरण में हमें सबसे अच्छा संभव विकल्प चुनना चाहिए और बिना पीछे मुड़े उस पर अमल करना चाहिए।

कुछ टिप्पनीयाँ (Few Comments)

१. एक समस्या पर लगातार सोचने से एक सीमा के पश्चात केवल गलतफहमी और परेशानी पैदा होती है। एक समय आता है जब उसके बाद और अधिक खोज और सोच हानिकारक हो जाती है। एक निश्चित समय के पश्चात हम दृढ़तापूर्वक किसी संभव विकल्प का निश्चय करें और कभी पीछे मुड़ कर न देखें।

२.क्या कोई वास्तव में उपर दिए गए चार चरणों का अनुकरण करता है? केवल बहुत कम और सफल व्यक्ति ही इन्हें करते हैं। आम व्यक्तियों में इतना अधिक धैर्य नहीं होता है। लेकिन वास्तव में समस्या को भली-भांति परिभाषित करना, आधा समाधान होता है। जैसे कोई अच्छा चित्र किसी बात को समझाने के लिए १००० शब्दों से ज्यादा प्रभावशाली होता है। इसी तरह समस्या को लिखना और उसके जवाब के बारे में सोचना यह योजनाबद्ध और स्पष्ट मार्ग है। ऐसा करने से मन बार-बार उसी चिंताओं अथवा परेशानी के बारे में नहीं सोचता है। तथा निर्णय अधिक स्पष्ट व सही रुप से और शीघ्रता से लिया जा सकेगा।

३. यदी हम नियमों का पालन करते हैं तो क्या हमारा निर्णय हमेशा सही होगा?

नहीं, ऐसा कोई उत्तम सिद्धांत नहीं है, जिसके द्वारा फैसला हमेशा सही होगा। लेकिन, यदि हम समस्या का विश्लेषण करते हैं, इसके अनेक संभव समाधानों के बारे में सोचते हैं, एक को चुनते है और दृढ़ता से इस पर कार्य करते हैं, फिर यदि हमारा फैसला गलत ही क्यों न हो, तब भी इस से अनुभव तो प्राप्त होता ही है। अगली बार हम निर्णय लेने में अधिक परिपक्व हो जाते है। जीवन सीखने की एक लगातार चलने वाली प्रक्रिया हैं। कोई भी पूर्ण रुप से दोषरहित पैदा नहीं होता है। हमारे गलत निर्णय और कटु अनुभवों के द्वारा हम स्वंय में सुधार करते रहते हैं।

४. इसलिए प्रत्येक स्थिती में जब विषय हमारे जीवन से संबधित हो, तो निर्णय हमारा अपना और व्यक्तिगत होना चाहिए? हमें दूसरों से उपदेश, राय, परामर्श लेना चाहिए। लेकिन हमें वही करना चाहिए, जो हमारी सोच में, हमारे लिए सबसे अच्छा विकल्प हैं। हमें दृढ़तापूर्वक अपना स्वयं का फैसला लेना चाहिए और उसपर अमल करना चाहिए।

कुछ कहावते जो याद रखी जा सकती हैं वह इस तरह है;

सफलता उनके लिए है, जो हिम्मत रखते हैं और इसके लिए संघर्ष करते हैं।

"Success is for those who dare and struggle for it."

अपना कर्तव्य अपनी योग्यता अनुसार सबसे अच्छी तरह करो और बाकी सब ईश्वर पर छोड़ दो।

"Do your duty best and leave the rest for God."

ईश्वर साहसी लोगों को पसंद करता है।

"God likes courageous people."

ईश्वर उनकी मदद करता है जो अपनी मदद स्वयं करते हैं।

"God helps those who help themselves."

कुछ कठिन फैसलेः- (Few Crucial Decisions)

तीन सबसे अधिक कठिन फैसले जो प्रत्येक व्यक्ति को अपने जीवन में लेने पड़ते हैं वह इस प्रकार है;

१. शिक्षा (Education)

२. विवाह (Marriage)

३. व्यापार या व्यापार में साझेदारी (Business Partnership)

शिक्षा :- (Education)

ईश्वर ने इस दुनिया में हर किसी को किसी ना किसी विशिष्ट उद्देश्य के लिए बनाया है तथा उनके उद्देश के अनुसार उन्हें एक विशेष योग्यता दी है। एक घोड़ा एक व्यक्ति का बोझ उठा सकता है और लंबी दूरी तक तेज़ गति में दौड़ सकता हैं। बैल अधिक समय तक गाडी खींच सकता है। एक उंट कई दिनों तक बिना पानी के रेगिस्तान में यात्रा कर सकता हैं। ईश्वर ने घोड़े को सवारी के लिए बनाया इसलिए उसे दौड़ने का गुण दिया। बैल को खेती-बाड़ी के लिए बनाया इसलिए उसे ताकत के साथ हल चलाने का गुण दिया। उंट को रेगीस्तान में सवारी के लिए बनाया इसलिए उसे उस वातावरण के लिए विशिष्ट गुण दिए।

इसी प्रकार ईश्वर ने प्रत्येक व्यक्ति को इस दुनिया में एक विशिष्ट उद्देश के लिए बनाया है और उस व्यक्ति को उस उद्देश्य के अनुसार एक विशेष योग्यता दी है। हर एक आदमी ने अपनी योग्यता को पहचानना चाहिए और योग्यता, उद्देश्य अथवा कर्तव्य के अनुसार ही उसे इस दुनिया में अपना पेशा (Profession) चुनना चाहिए।

हर व्यक्ति का स्वभाव बचपन में ही स्पष्ट होता है। माता-पिता को उन स्वभावों को सकारात्मक रुप से विकसित करना चाहिए और अपनी पसंद और इच्छाएँ बच्चे पर थोंपनी नहीं चाहिए।

जब माता-पिता को यह मालूम हो जाए कि उनके बच्चे का तकनीकी (Technical) स्वभाव है, या वह कलाकार स्वभाव का है और बच्चा भी अपने स्वभाव अथवा रुचि के अनुसार शिक्षा प्राप्त करना पसंद करता है, जैसे इंजीनियरिंग, मार्केटिंग, या अभिनय इत्यादि, तो दोनों (माता-पिता और बच्चा) को स्थिति का विश्लेषण करना चाहिए और व्यवसायिक परामर्श (Vocational guidance) ले और यदि इसमें कोई नकारात्मक तथ्य नहीं है, तो बच्चे को उसकी पसंद के अनुसार शिक्षा दिलवानी चाहिए।

इस पहने निर्णय में दोनों (माता-पिता और बच्चा) जुडे हुए हैं। बच्चे अथवा माता-पिता द्वारा लिया गया एक गलत फैसला बच्चे के कैरियर को पूरी तरह नष्ट कर देता है।

विवाह (Marriage)

शादी का महत्वः- (Importance of Marriage)

ईश्वर कहते हैं,

'पत्नी पती का वस्त्र है और पती पत्नी का वस्त्र है।' (पवित्र कुरआन २-१८७)

एक दूसरे स्थान पर ईश्वर कहते है,

'उसने तुम्हारे (पती-पत्नी के बीच) में प्रेम और दयालुता पैदा की।' (पवित्र कुरआन ३०-२१)

हजरत मुहम्मद (स.) ने कहा,

'शादी नज़रे नीची रखती है और व्याभिचार से बचाती हैं।' (बुखारी)

पैगंबरोने ब्रम्हचर्य का निषेध किया है।

हिंदू-धार्मिक पुस्तकों के अनुसार,

'अच्छी पत्नी ईश्वर का महानतम वरदान है।'

उपर दिए गए सभी पद विवाह के महत्व की ओर संकेत करती हैं।

नेपोलियन हिल कहते हैं, व्यक्ति जो कुछ भी करता है, स्त्री को प्रसन्न रखने के लिए करता है।

उदाहरण के तौर पर, एक अविवाहित एक अच्छा फ्लॅट लेता है या एक शानदार कार खरीदता है ताकी उसकी गर्लफ्रेंड प्रभावित हो। एक विवाहित पुरुष अधिक से अधिक धन कमाता है और अपने जीवन स्तर को ऊंचा रखने का प्रयास करता है ताकी उस का परिवार और विशेषरुप से उस की प्यारी पत्नी खुश हो जाए। अपनी पत्नी को प्रसन्न करने की यह इच्छा व्यक्ति को दूसरों से अधिक धन कमाने वाले व्यापार तथा जीवन के हर हिस्से में अच्छे से अच्छा बनने की ओर प्रेरित करती है।

इसके विपरीत यदि विवाहित जीवन में कडवाहट है, तो सबसे पहले अच्छे से अच्छा बनने की प्रेरक-शक्ति कम हो जाती है। गलत जीवनसाथी अथवा विवाह से व्यक्ति का पूरी तरह से नैतिक-पतन हो जाता है। इस प्रतियोगिता के युग में जहाँ केवल अत्याधिक स्वस्थ अथवा फिट व्यक्ति ही जीवित रह सकते हैं वहाँ एक हतोत्साहित अथवा हताश व्यक्ति मानसिक शांति के बिना कैसे आगे बढ़ सकता है अथवा सफल भी कैसे हो सकता है?

संपूर्ण जीवन में तथा व्यापार में असफलता का मुख्य कारण है विवाहीत जीवन में असफलता।

शादी में कौन-कौन सी सावधानी बरतनी चाहिए?

शादी की पहली सावधानी यह है कि, लड़का और लड़की दोनों एक दूसरे को पसंद करते हों। आखिरी पैगंबर हज़रत मुहम्मद (स.) कहते है,

'शादी में दूल्हा-दुल्हन दोनों की पसंद और इच्छा अनिवार्य हैं।' (पवित्र कुरआन)

पवित्र कुरआन में कहा गया हैं,

पवित्र लोग निम्नलिखित शब्दों में ईश्वर का वरदान मांगते हैं,

'हे ईश्वर। मेरी पत्नी और बच्चों को हमारी आँखो का सुख (ठंडक) बनाओ।' (पवित्र कुरआन २५:७४)

अर्थात पत्नी और बच्चों को देखकर आनंद का अनुभव करना यह भी ईश्वर का एक वरदान है। और इस के लिए प्रयास करना चाहिए।

जब कभी भी पति-पत्नी एक दूसरे को देखें उन्हें प्रसन्नता का अनुभव होना चाहिए, खुशी महसूस होनी चाहिए। यही विवाह के साथ व्यापारिक जीवन में भी सफलता के लिए जरुरी है।

जीवन-साथी चुनते समय दूसरा मुख्य तथ्य जो व्यक्ति को याद रखना चाहिए, वह दूसरे व्यक्ति की पारिवारिक पृष्ठभुमी क्या है? क्योंकि As the twig is bent the tree will be.

पारिवारिक संस्कार स्वभाव में कुट कूट कर भरे होते हैं। एक बच्चा जो धार्मिक, सहनशील, उत्साही, आशावादी और शिक्षित संस्कार वाले परिवार में पला-बड़ा होगा, तो ये गुण उसे विरासत में मिलते हैं। यदि आप अपने घर में ऐसे संस्कार चाहते हो, तो जीवन-साथी उसी के अनुसार चुनें।

कभी-कभी चेहरे की सुंदरता, कामेच्छा और प्रेम की स्वाभाविक भावना के कारण लोग जल्दबाजी में फैसले लेते हैं, और गलत जीवन-साथी चुन लेते हैं। तथा वह यह सोचते हैं, कि वह वैसा ही अच्छा संस्कारी होगा, जैसा अच्छा दिखाई देता है। लेकिन ऐसा कभी होता नहीं है, क्योंकि कैक्टस के पौधे पर गुलाब कभी नहीं खिलते। निःसंदेह दिल और प्यार की भावनाओं का शादी में बहुत महत्व है, लेकिन फिर भी दिमाग को कभी नजरअंदाज नहीं करना चाहिए, इसलिए जल्दबाजी में निर्णय लेने की राय कभी नहीं दी जाती।

जीवन में व्यक्तिगत स्तर पर पहला निर्णय शिक्षा और दूसरा महत्वपूर्ण निर्णय है शादी। इसलिए शादी का निर्णय लेते समय निम्नलिखीत बातों को ध्यान में रखें।

१. प्रस्ताव रखने वाले परिवार को परखें, आपके जिवनसाथी का व्यक्तित्व आकर्षक होना चाहिए, अथवा कम-से-कम स्वीकार करने योग्य तो होना ही चाहिए।

२. उसकी पारिवारिक पृष्ठभूमि के बारे सही जानकारी प्राप्त करें।

३. उसके चरित्र और शिक्षा के बारे में सही जानकारी प्राप्त करें।

४. अगर आपको अपना जिवनसाथी पसंद ना हो तो अपने परिवार और मित्रों के जोर देने पर उनके वश में न आएं और हां ना कहें। अपना स्वयं का तर्क सहित और दृढ़ निर्णय लें और एक खुश्हाल ज़िदगी की ओर आगे बढ़ें।

२५ वर्ष यह विवाह के लिए उचीत समय है। यह ३० वर्ष की उम्र से ज्यादा नहीं होनी चाहिए। क्योंकि जब आप ५० से ५५ साल की उम्र के होंगे तब आपके बच्चों की शिक्षा पूरी हो जानी चाहिए और व्यापार में जोखिम उठाना शुरु कर देना चाहिए। आप ५५ और ६० साल के बीच की उम्र में अपने

बच्चों पर निर्भर नहीं होंगे और वह उनके व्यापारिक-कार्यों में उनको उत्साहित कर मार्गदर्शन करेंगे।

इसके विपरित जब आपके बच्चे आपकी रिटायरमेंट की उम्र होने पर अपनी शिक्षा पूरी करेंगे तो आप उन पर निर्भर हो जाओगे। इस दशा में ना तो आप उन्हें जोखिम लेने के लिए कह सकते हो, न ही वे ऐसा करने की हिम्मत करेंगे। वे जरुरत से ज्यादा सतर्क (Over-Cautious) हो जाते हैं। ज़रुरत से ज्यादा सतर्कता व्यापार करनें की मूल-प्रवृत्ति को मार देती है और सफल होने के अवसर बंद कर देती है।

इसलिए २५ वर्ष की उम्र होने तक विवाह करें। ताकि जब आपकी ५५ वर्ष की आयु हो तब तक आपकी संतान पूरी तरह सक्षम हो जाए।

अपनी भावनाओं के प्रति सावधान रहें (Beware of your Emotions)

मनुष्यों में अनेक प्रकार की भावनाएँ होती हैं, जैसे उदास होना, प्रेम, क्रोध, अत्याधिक ड़र के दबाव में आत्मनियंत्रण खोना इत्यादि। ये भावनाएं कमियाँ अथवा कमजोरियाँ नहीं है, बल्की मनुष्य जाति को स्वस्थ, सक्षम और बचे रहने के लिए आवश्यक हैं। यदि कोई व्यक्ति इन भावनाओं के दबाव में आकर गलत निर्णय लेता है, तो यह उसकी अपनी गलती हैं, मानवीय स्वभाव की गलती नहीं है।

उदाहरण के लिए यदि एक व्यक्ति क्रोध के आवेश में दूसरे व्यक्ति को मार देता है, तो वह इसलिए दया का पात्र नहीं हो सकता कि वह होश में नहीं था। उसे अपने अपराध की सजा भोगनी ही होगी, क्योंकि यह उसका अपराध कि वह अपनी भावनाओं को वश में नहीं रख सका।

इसी प्रकार यदी कोई व्यक्ति (विवाह, साझेदारी, अथवा संबध तोडने के विषय में गलत फैसला लेता है) तो वह अपनी भावनाओं को दोष नहीं दे सकता हैं। यह उसकी गलती हैं कि वह उनको वश में नहीं रख सका। वह लापरवाह रहा, इसलिए भावनाओं पर उसका नियंत्रण नहीं रहा, इसलिए भावनाएँ उस पर हावी हूई।

आओ हम अपनी भावनाओं को समझेः (Let us understand our emotions)

मान लो पाषाण-युग (Stone age) में एक जोड़ा अपनी गुफा के बाहर घुम रहा था। अचानक एक भेड़ीयों के झुंड ने उन पर हमला कर दिया। बचाव में पुरुष मारा गया। औरत को भागने का और बचने का अवसर मिल गया और वह जीवित रही। जब उसे यह मालूम हुआ कि उसका प्रेमी मारा गया है, तो उसे इतनी उदासी और पीड़ा हुई कि वह कई दिनों तक अपनी गुफा के एक कोने में बैठी रही।

भेड़ियों के झुंड ने कुछ दिनों तक दावत का आनंद उठाया, अगली शिकार का इंतेजार किया और फिर आगे बढ़ें। यदि वह औरत उदासी (Nervousness and depression) में जकड़ी नहीं होती और अपने को कई दिनों तक गुफा में बंद न रखती तो वह भी मारी जाती।

यह उदासी (Nervousness and depression) ही थी जिसने उसकी जिंदगी को बचाया।

वह अकेली औरत एक दूसरा पति ढुंढ रही थी। अचानक पति के स्थान पर एक गोरीला प्रगट हो गया। उसे इतना ड़र लगा कि वह अपने शरीर पर से नियंत्रण खो बैठी और एक मुर्ति की तरह हो गई या बेहोश हो गई। उसकी खामोशी के कारण गोरीला उसे देख ना सका और बिना कोई नुकसान पहुँचाए वह चला गया। ड़र के दबाव में बेहोशी या शरीर के निष्क्रिय होने ने उसकी जिंदगी बचा ली।

वह भाग्यशाली पैदा हुई थी। जब वह एक दूसरा साथी ढूँढ रही थी, उसे जेम्स बाँड मिल गया। जैसा कि जेम्स की आदत है, जब वह उससे प्यार कर रहा था, तो अचानक एक दूसरे भेडियों के झुंड ने उन पर हमला किया। गलत समय पर बाधा पड़ने से जेम्स के साथ वह भी गुस्से में भड़क उठी। दोनों भेड़ियों पर टूट पड़े। गुस्से में आदमी शक्ति दुगुनी हो जाती हैं। इसलिए दोनों भेड़ियों से असली नायक-नायिका की तरह लड़े और उन्हें भगा दिया।

इस बार क्रोध या गुस्से ने उनके प्राण बच गए।

हमारे भारत देश में एक पारसी समुदाय है। वे ईरान से आकर शुरु में कच्छ (गुजरात) में बस गए थे। सामान्यतः वे ईमानदार, परिश्रमी, शिक्षित, शांति-प्रेमी, पुर्णतावादी और आर्थिक रुप से संपन्न होते हैं। लेकिन कई सदियों से वे एक गलती कर रहे हैं। वे हमेशा शादी अपने समुदाय में ही करते हैं, जिसके कारण उनकी बीमारी से लड़ने की शक्ति प्रभावित हो गई है। वृद्धावस्था में उनकी अधोगती (Degeneration) दूसरे भारतीयों की अपेक्षा तेज़ी से होती है।

मणुष्य जाति का इस अधोगति से बचाने के लिए ईश्वर ने प्रेम की भावना की रचना की। प्रेमी और प्रेमीका इस प्रेम की भावना के प्रभाव में जब होते हैं तो वह मानसिक रुप से अंधे हो जाते हैं। उन्हें अपने प्रेमी और प्रेमीका में कोई दोष नज़र नहीं आता और यह भावना इतनी शक्तिशाली है की दोनों एक दूसरे को पाने के लिए जात, धर्म और हर चीज़ को बलीदान कर सकते है। यहाँ तक की अपनी जान को भी परवाह नहीं करते और अपने प्रेमी या प्रेमहका को पाकर रहते हैं।

इस भावना के कारण मनुष्य-जाति बची है, फलती-फूलती है और शारीरिक रुप से स्वस्थ रहती हैं।

यदि लोग प्यार में दिमागी तौर पर अंधे न हुए होते और दिमाग से तर्क-सहित सोचें तथा प्रस्ताव रखने वाली पार्टी को हर दृष्टीकोण से जांचते तो, फिर वे हमेशा अपनी माँ की पसंद से उसके परिवार अथवा समुदाय के अंदर ही शादी करते और मनुष्य जाति में वही कमज़ोरी होती, जो पारसियों में होती हैं, यानी वृद्धावस्था में असामान्य अधोगती (Degeneration)।

प्रेम की भावना बुरी नहीं है। यह मनुष्य जाति को बचाती है। सृष्टि का रचनाकार, जिसने इस प्रेम के सॉफ्टवेयर को बनाया है, उसने सावधानीयाँ भी बताई हैं, जिन्हें अपना कर ये मनुष्य जात भावनाओं के जाल में न फसे। पवित्र कुरआन में ईश्वर कहता हैं।

'ईश्वर को मानने वाले व्यक्ति से कहो, अपनी नजर नीचे रखे।'

इसका अर्थ है, विपरीत लिंग की ओर घूर कर न देखे।

पवित्र ऋग्वेद कहता हैंः-

'क्योंकि ईश्वर ने तुम्हें स्त्री बनाया हैं, इसलिए सावधान रहें की, कहाँ देखना हैं। और अपनी नज़र नीची रखें तथा अपने पाँव ढक कर रखे। और तैयार होते समय ऐसे कपड़े पहने, जिससे कोई तुम्हारा शरीर न देख सके।' (पवित्र कुरआन १९:३३:८८)

पवित्र कुरआन कहता है,

'पवित्र स्त्रियों अपनी छाती को ढ़क कर रखें और अपने गहने न दिखाएँ।' (पवित्र कुरआन ३३:५९)

विरुद्ध लिंग को आकर्षित करने वाले कपड़े पहनना ही केवल सुंदर दिखने का तरीका नहीं हैं। चरित्र की महानता, सादगी और पवित्रता भी व्यक्ति को सुंदर बना सकती हैं। पवित्रता की कोशिश और विपरीत-लिंग के व्यक्ति से अनावश्यक मेलजोल को कम या नहीं करना हमें गलत-व्यक्ति के साथ प्रेम में पड़ने से बचा सकता हैं।

इसलिए संयोग से यदि तुम्हें प्रेम के प्रभाव में पड़कर शादी का गलत निर्णय लेना पड़ता हैं, तो भविष्य में, विवाहित-जीवन के साथ-साथ व्यापार में भी गलत शादी के कारण तकलीफ और असफल होने का दोष आप पर होगा। उस समय आप अपने भावना अथवा भाग्य को दोष मत दीजिए। भावनाएँ मनुष्य जाति की रक्षा और समृद्धी के लिए हैं, यह आप हो, जो उनका गलत प्रयोग करते हो।

साझेदारी (Partnership)

जब कम्पनीयां मुनाफा (Profit) कमाना शुरु करती हैं तो १० में से ८ साझेदारी में शामिल कम्पनीयों में वादविवाद शुरु हो जाता है और आखिर में वह बंद हो जाती है।

सामान्यतः व्यापारिक क्षेत्र में अफ्रिका की नदियों की अपेक्षा अधिक घड़ियाल हैं। यदि आप जवान हो, और एक वरिष्ठ व्यापारी के साथ साझेदारी में व्यापार शुरु करते हो, या उस के चलते कारोबार में शामिल होते हो, तो वह जवान, कर्मठ, शिक्षित तथा आपके जैसे प्यारे युवा के साथ व्यापार करना बहुत पसंद करेगा। लेकिन अंत में जब व्यापार स्थापित हो जाएगा और लाभ कमाना शुरु हो जाएगा, तो वह आपको पूरी तरह निगलने की कोशिश करेगा। इसलिए जहाँ तक संभव हो अपने से अधिक परिपक्व तथा श्रेष्ठ व्यक्ति के साथ साझेदारी में बंधने से बचें।

यदि आपको किसी की निष्ठ और ईमानदारी के बारे में आप को जरुरत से ज्यादा विश्वास है और आप उसके साझीदार बनना चाहते हो, तो एक कानूनी समझौता पत्र (Legal Agreement) बनायें तथा इसमें व्यापार के हरएक पहलू को लिखे और व्यापार समाप्त करने की दशाएँ और शर्ते भी लिखें। यानी साझेदारी समाप्त करने कि शर्ते भी लिखी रहनी चाहिए।

ईश्वर कहता है,

जब तुम किसी के साथ धन-संबधी व्यापारिक व्यवहार करो, तो इसे लिख लिया करो और इसमें दो गवाह बनाओ। (पवित्र कुरआन २:२८२)

क्योंकि जब धन संबधी विषय उठते है तब सज्जन और ईमानदार व्यक्ति भी स्वार्थी हो जाता है। दूसरा

मनुष्य की स्मरण-शक्ति बहुत कमजोर और चयनात्मक हैं। आदमी यह याद नहीं रखता कि क्या और कितना उसे देना है लेकिन उसे यह जरुर याद रहेगा कि किससे कितना लेना है। और वह हमेशा फायदे का एक बड़ा हिस्सा लेना चाहता हैं।

एक सज्जन पुरुष के वायदे की कीमत एक कागज का टुकड़े जितनी भी नहीं हैं। इसलिए कभी मौखिक वचन पर विश्वास न करें। हमेशा कोई भी साझेदारी शुरु करने से पहले एक व्यापारिक-अनुबंध (Agreement) जरुर बनाएँ।

साझेदारी वाले कारोबार में कैसे सफल हो ? (How to success in partnership)

रॉन-हॉलैंड ने फिल्म के करोड़पति अभिनेता काऊबॉय रॉय रॉजर के शब्दों में अपनी किताब Talk & Grow Rich में लिखा हैं। वह लिखते है की रॉय रॉजर कहते है की, ५०:५० प्रतिशत की साझेदारी में प्रत्येक साझीदार को ९० प्रतिशत जिम्मेदारी होनी चाहिए और उसके अनुसार काम करने के लिए तैयार रहना चाहिए। तथा अपने सांझीदार से केवल १० प्रतिशत काम करने की उम्मीद चाहिए। यह ९०:१० के सिद्धांत के रुप में जाना जाता है। यह सिद्धांत दोनों साझीदार के बीच पूरी और सही विचारधारा और समझ देता है। यह सिद्धांत किसी भी तरह की व्यवसायिक साझेदारी में काम करता है तथा तक तकलीफ देह वैवाहिक संबधों में भी काम आता है।

यह सिद्धांत ही केवल उस विचार से लड़ने और बचाव का तरीका है, जो लोगों के मस्तिष्क में लगातार घूमता रहता हैं। जैसे, वह (मेरा पार्टनर)उतना कठिन परिश्रम क्यों नहीं करता हैं जितना मैं करता हूँ? वह इतनी जल्दी क्यों नहीं आता जितनी जल्दी मैं? वह नए ग्राहकों से क्यों नहीं मिलता अथवा बनाता हैं? वह इतनी अधिक छुट्टीयाँ क्यों लेता है या घर जल्दी क्यों जाता हैं? वह इतना अधिक क्यों नहीं बेचता है अथवा जैसा मैं करता हूँ? इत्यादि।

ये विचार दोंनो साझेदारों के मस्तिष्क (मन) में आते हैं और साझेदारी को तोड़ने का कारण बनते हैं। इसलिए दोंनो साझेदार ९०:१० के सिद्धांत के बारे में जानें इसका अनुकरण करने में सहमत हों तथा व्यापार में सफलता और समृद्धि के लिए रोजाना की जिंदगी में इसके अनुसार कार्य करें।

इसलिए साझेदारी वाले व्यापार में स्पष्ट, तर्कसहित, अच्छीतरह विचार-विमर्श कियें हुए तथा मज़बूत फैसले के साथ काम करना और आगे बढ़ना आवश्यक हैं।

****

अध्याय - २४
सौदा तय करने की कला
(Art of Negotiation)

समय की देरी का जाल :-(Delay Trap)

नौसेना से सेवा-निवृत्त होने के पश्चात अत्यंत सज्जन पुरुष केप्टन गामिनी ने श्रीलंका में अपना स्वंय का व्यापार स्थापित करने का निश्चय किया। वह भारत से मशीनरी खरीदना चाहते थे, जिसके लिए उन्होंने एक अत्यंत चतुर व्यापारी कमीशन एजेंट श्री.लखानी से संपर्क किया।

केप्टन गामिनी एक नए प्रकार का व्यापार करने की योजना बना रहे थे। वह नारियल के रेशों के अत्यंत महीन कण कि निर्यात गल्फ तथा भूमध्य सागरीय देशों को करना चाहते थे। रेशे के महीन कण को जब रेत के साथ मिलाए जाते हैं तो वह रेत पानी या नमी को रोकने में समर्थ हो जाती हैं। इस तरह रेगिस्तान की बंजर रेत (जमिन) भी रेशे मिलाने से उपजाऊ जमीन में बदली जा सकेगी और इसे खाद की तरह भी प्रयोग किया जा सकता हैं। रेशे के इन महीन कणों को खुले रुप में निर्यात नहीं किया जा सकता है। क्योंकि वे जहाज़ में बहुत ज्यादा स्थान (Space) घेरते हैं। इसलिए वह ऐसी कॉम्पेंटींग मशीन चाहते थे, जो इन्हें चारों तरफ से दबा कर बड़े बंडल की आकार में बना दें।

लखानी ने केप्टन गामिनी को नए कारोबार में लगने वाले प्रत्येक स्तर की मशीन तथा उनके (Quatation) प्रस्तुत कीए और आवश्यक सामान भी, केवल विशेष प्रकार की कॉम्पेक्टिंग-मशीन को छोडकर, जिसका (Design) और निर्माण मैं (लेखक) करता हूँ। जिसके लिए उसने केप्टन गामिनी को मेरा परिचय दिया।

जब केप्टन गामिनी सभी मशीनों और आवश्यक सामान का आर्डर देने और अंतिम निर्णय लेने के लिए, चार दिन के टूर पर भारत आया, तो लखानी ने उनका किसी अत्यंत महत्वपूर्ण व्यक्ति की तरह शानदार स्वागत किया। पहले दिन उसने दोपहर के खाने के लिए उसे अपने घर पर ले गया। दूसरे दिन वह उसे मुंबई के देखने-योग्य मुख्य स्थल दिखाने ले गया और भेट (Gift) देने की वस्तूओं को खरीदने में उसकी मदद की। तीसरे और चौथे दिन विशेष उददेश से बनाई गई मेरी कॉम्पेक्टिंग मशीन के डिज़ाईन और मेरे कन्सेप्ट (Concept) की जाँच-परख करते हुए भाव आदि तय करने अथवा मसौदा तय करने की दृष्टी से वे मुझसे मिले।

उन्होंने मेरे फायदे (Profit) की अंतिम बूंद तक भी निचौड़ लीया और कम-से-कम भाव में सौदा तय कर दिया। उस धूर्त लखानी ने शुरु में केप्टन गामिनी को भोजन तथा मुंबई दिखाने और व्यक्तिगत खरीददारी में व्यस्त रखा तथा आखिरी दो दिन मेरे साथ सौदा-तय करने तथा मोल भाव आदि में व्यस्त रखा। उसने ये सब इस तरह से योजना बनाई थी कि केप्टन गामिनी ने श्रीलंका के लिए रवाना होने के सिर्फ एक घंटा पहले मेरे आर्डर पर हस्ताक्षर किए और एडवांस दिया।

जब केप्टन गामिनी ने महसूस किया कि उसे देरी हो रही है तथा उनकी उड़ान छूट सकती हैं, तब लखानी

ने उनके सामने अपनी स्वंय का भाव (Quotation) रखा। केप्टन गामिनी को एयरपोर्ट पर पहुँचने की जल्दी थी, क्योंकि उनकी जहाज़ की उड़ान छूट जाती तो उनके दूसरे निर्धारित कार्यक्रम रदद हो जाते, इसलिए वे लखानी द्वारा प्रस्तूत भाव (Quotation) पर अधिक ध्यान नहीं दे पा रहें थे। लखानी द्वारा प्रस्तूत भाव (Quotation) बहुत अधिक थे, फिर भी केप्टन गामिनी के पास मोल-भाव करना और मुंबई के अन्य सप्लायर्स से मिलने के लिए उतना समय नहीं था। इसलिए उन्होंने असहाय होकर बिना मोल-भाव किए लखानी के उंचे दामों के आर्डर पर हस्ताक्षर कर दिए और वह भारत से चले गए।

शिष्टाचारवश मैंने एअरपोर्ट तक उनका साथ दिया। टैक्सी में मुझसे केप्टन गामिनी ने उस ऑर्डर के बारे में बहुत अधिक निराशा व्यक्त की, जो उन्होंने लखानी को दिया था।

धूर्त और धोखेबाज व्यापारी कैसे व्यापार करते हैं, उसका यह एक अच्छा उदाहरण है। वे समय व्यतीत करते हैं और व्यापार की स्थिती में इस हद तक देरी कर देते हैं कि दूसरी ओर के व्यक्ति के पास सिवाय हस्ताक्षर करने के कोई दूसरा विकल्प नहीं रहता हैं।

इसलिए यदि किसी सौदे को अंतिम रुप देने के लिए आप के पास अधिक समय नहीं है। तब भी इतना समय तो आपके पास होना ही चाहिए की, अगर आप पहले पार्टी से मोल-भाव करते समय अगर असफल हो जाते हो तो अन्य पार्टियों से मोल-भाव किए करने के लिए भी आपके पास समय हो।

समय और पैसे खर्च करा कर फंसानाः (Resources Investment trap)

श्री.अय्यर ने मेरी शर्तों को मानते हुए मुझे एक Hose Crimping मशीन का ऑर्डर दिया। २५ प्रतिशत एडवांस और बाकी धनराशी माल देने के पहले, यह मेरी शर्त थी। ऑर्डर के पूरा होने पर श्री.अय्यर अपने टैक्निशयन को साथ लेकर आया और मशीन को पूर्ण रुप से जाँच की। उसने कुछ छोटे-मोटे बदलाव के लिए कहा और दो दिन के पश्चात बाकी के पेमेंट देकर माल ले जाने का वादा किया।

मैंने वह सब बदलाव किए और मशीन को परीक्षण (Inspection) तथा भेजने के लिए तैयार रखा। मैंने भी अपने माल के सप्लायर्स के पैसे देने के बारे में योजना बनायी। मैंने कई सप्लॉयर्स को दो दिन के बाद भुगतान करने का वायदा भी किया।

श्री.अय्यर दो दिन के पश्चात आए, फिर जाँच-परख की और मशीन को स्विकार कर लिया, लेकिन जब भुगतान का समय आया, तो उन्होंने मुझे शेष रकम का ५० प्रतिशत ही केवल दिया और दूसरे ५० प्रतिशत के लिए मुझसे ३० दिन का समय मांगा।

मैं बुरी तरह परेशान हो गया, क्योंकि उस पेमेंट की मैंने अनेक योजनाऐं बनाई थी। यहाँ तक कि मैंने कई सप्लायर्स को भुगतान करने का वायदा भी किया था। न तो मैं उधार देने को तैयार था और न ही भुगतान का ५० प्रतिशत वापिस करने की इच्छा थी, जो मुझे अय्यर ने दिया था। आखिरकार अय्यर जीत गया और उधार पर मशीन ले गया। जैसा कि वायदा किया था, अय्यर ने बाकी का भुगतान मुझे ३० दिन के बाद कर दिया। लेकिन मैंने पहले भी इसी तरह की स्थिति में बहुत अधिक नुकसान उठा चुका हूँ। लोग वादा करके भूल जाते है और उन की बाकी रकम देने की नियत नहीं होती है।

सौदा तय करने वालों की ऐसी रणनीती होती है कि वे आपका समय और पैसा इस हद तक खर्चा करते हैं कि आप अगर ना भी कहो तो आप को नुकसान होगा। यदि अय्यर ऑर्डर देते समय ३० दिन के उधार के लिए कहता तो मैं कभी भी सहमत नहीं होता, लेकिन जब उसने मेरा इतना समय और धन मशीन बनाने में खर्च कर दिया और फिर मुझे उदाार के लिए कहा तो मुझे मज़बूरी अथवा असहाय हालत में देना पड़ा।

सौदा तय करनेवालों की इस प्रकार नियोजित चाल से सावधान रहें, और समय और कुछ धन खोने के लिए तैयार रहें नहीं तो जैसे मैंने कई बार बहुत पैसा गवांया वैसे ही आप भी धन गवाएंगे।

भावनात्मक दबावः-(Emotional Blackmail)

उधार लेने और फिर धोखा देने की दूसरी युक्ति भावनात्मक दबाव हैं। इस प्रकार में ग्राहक बिना अधिक मोल-भाव किए, आपके सामान के दाम को स्विकार कर लेता है और आप को एडवांस दे देता है।

फिर जबकि आप उसका ऑर्डर पर काम कर रहे होते हो या माल तैयार कर रहे होते हो, तो वह कई बार आप के पास काम की प्रगति को जाँचने के लिए आएगा और आप के साथ अच्छी मित्रता कायम करने की कोशिश करेगा। कभी-कभार वह अपनी आर्थिक-संपन्नता बता कर प्रभावित करने की कोशिश भी करेगा, और आप को कई ऑर्डर देने की संभावना और अपने व्यापार का स्वच्छ और ईमानदार तरीका भी बताएगा।

अंततः माल लेने की तारीख पर उस की अच्छी दोस्ती के आधार पर, जो उसने आपके साथ कायम की है, वह कुछ दिनों या हफ्तों के लिए उधार के लिए मदद माँगेगा। यदि आप उसे उधार देते हो, तो उसके बाद आपको महसूस होगा कि यह दो पैरों वाला प्राणी कितना धूर्त है! यह स्वभाव और रुप बदलने में कितना शातिर हैं कि गिरगिट भी इसके मुकाबले में कुछ नहीं है। उदाार देने के बाद वह आप से सौ झुठे वादे करेगा और आप आखीर में उस पैसे को भूल जाओगे।

इसलिए नए ग्राहक के साथ गहरी मित्रता को अधिक ना बढ़ाएँ , क्योंकि फिर आप भावनात्मक दबाव में आकर एक अनुचित प्रस्ताव का इन्कार नहीं कर सकोगे। ऑर्डर लेने में इन्कार करना और व्यापार नहीं करना धोखेबाजों के साथ नुकसान का जोखिम उठाने की अपेक्षा अधिक अच्छा हैं। सन १९९० और २००० के बीच इस प्रकार के लोगों को उधार देने के कारण मैंने १० लाख का नुकसान उठाया है, और अभी भी कभी-कभी उनके जाल में फंस जाता हूँ। मेरी गलतियों से सीख लें और इन गलतियों को न दोहरांए।

मोल-भाव करने का आनंदः-(The Pleasure of Bargaining)

श्री.पटेल हमारे नियमित ग्राहक हैं, और बहुत अधिक मोल-भाव करने वाले व्यक्ति हैं। हर नई मशीन खरीदते समय वह बहुत मोल-भाव करते हैं और कम-से-कम १० से १५ प्रतिशत छूट लेते हैं।

एक बार उन्हें एक विशेष प्रकार का मशीन का पूर्जा चाहिए था। बाज़ार से खरीदकर, उनको बेचने के स्थान पर मैंने अपने मित्र संजय से कहा की, कम-से-कम दाम पर श्री पटेल को सामान सप्लाई कर दे।

संजय ने उन्हें बिल के साथ सामान भेज दिया। भुगतान करते समय पटेल ने १० प्रतिशत छूट काट कर चैक भेज दिया। मुझे और संजय, हम दोनों को यह बात बहुत बुरी लगी, लेकिन हम चुप रहे। कुछ महीने बाद पटेल को फिर दूसरी प्रकार के पूर्जे की जरुरत थी। मैंने संजय से पटेल के साथ अपने स्वयं के तरीके से सौदा करने को कहा। इस बार संजय ने उन्हें २५ प्रतिशत दाम बढ़ाकर सामान भेज दिया। इस बार भी श्री पटेल ने १० प्रतिशत छूट काटकर चेक भेजा मगर इस बार लेन-देन के व्यापार में दोनों (संजय और पटेल) खुश थे, क्योंकि संजय ने १५ प्रतिशत लाभ पाया था और पटेल ने १० प्रतिशत की छूट पायी थी।

अनेक लोगों की मानसिकता और आदत छूट (Discount) माँगने की होती है। उन्हें मोल-भाव करने में आनंद और संतुष्टि मिलती हैं। वे समझते हैं, कि छूट लेकर वे सप्लायर के लाभ का एक छोटा हिस्सा ले जाते हैं, और उन्होंने जो सामान खरीदा है वह बहुत किफायती है। हमारी संस्कृति में अधिकांश लोंगों की ऐसी मानसिकता है। इसलिए यदि आप कोई उत्पाद बेचते हो अथवा सेवा देते हो, तो ग्राहक की मानसिकता को ध्यान में रखें और अपनी कीमत इस प्रकार रखे कि आप उन्हें अच्छी तरह मोल-भाव करने और अच्छी छूट देने का आनंद और संतुष्टि दे सको।

मोल-भाव में सतर्कता: (Precautions in Bargaining)

श्री.इफ्तेखार खान १९९२ से मेरा मित्र हैं। वह मुझ से Hose Crimping मशीन खरीदना चाहता था। वह जानता था कि उस मशीन की कीमत मैंने २,३४,००० रु रखी है और मोल-भाव करने के पश्चात मैं १० प्रतिशत छूट देता हूँ। जब वह मेरे ऑफिस आया, मैंने उसका स्वागत किया, उसे कॉफी इत्यादि पिलाई तथा बिना उसके कहे, मैंने उसे मशीन की कीमत पर १० प्रतिशत छुट दी।

ऑर्डर को अंतिम रुप देते समय वह कीमत और १० प्रतिशत छूट पर संतुष्ट नही था। लगभग एक घंटे तक इस बारे में उसने मेरे साथ बहस की। यहाँ तक कि मैंने उसे अपने बिल भी दिखाए और दूसरे ग्राहकों से ऑर्डर-कापी भी दिखाई लेकिन वह सहमत नहीं हुआ तथा १० प्रतिशत और छूट देने के लिए देता रहा और बगैर मांगे एडवांस भी दे दिया। क्योंकि वह मेरा दोस्त था, इसलिए मैंने अपनी लागत मूल्य (Manufacturing cost) पर ही उसे मशीन बनाकर दे दी।

इसलिए अपनी ओर से पूरी छूट देने का प्रस्ताव रखने की गलती कभी न करें। शुरु में केवल २ से २.५ प्रतिशत की छूट दें और उस के बाद ग्राहक को दाम कम कराने का आनंद लेने दे। अन्यथा कम से कम दाम भी उसे संतुष्ट नहीं करेगा।

उत्पाद मूल्य निर्धारण:- (Pricing the Product)

भारत में जानी-मानी जूतों की कंपनी अपने जूतों के मुल्य इस तरह लिखती है ४९.९९ रुपये, ९९.९९ रुपये। इसी प्रकार पर्सनल कम्प्यूटर, एयर कंडीशनर्स, मोबाईल फोन्स, टी.वी इत्यादि भी अपूर्ण अंक की मूल्य पर्ची अपने माल पर लगाते हैं। जो अगले पूर्ण अंक से बहुत थोड़ी कम होती हैं। वे एक पैसा अथवा कुछ थोड़े रुपएँ ही क्यों कम करते हैं? क्या वह बहुत ध्यान से अपने माल का मुल्य जोड़ते हैं और बिल्कुल वही मुल्य ग्राहक से लेते है। और राशीमुल्य को पुरा करने के लिए एक पैसा भी दाम नहीं

बढ़ाते है? नहीं! ऐसा कुछ भी नहीं है।

वस्तु का मूल्य ग्राहक के मानसिकता के अनुसार निश्चित किया जाता है। सामान्यतः यदि कोई उत्पाद बाजार में १०० रुपए में उपलब्ध हैं, तो इसकी बनाने की लागत (कीमत) केवल ३० से ५० रुपए तक होगी, शेष ५० से ७० रुपए विज्ञापन, मुख्य व्यापारी, उप-व्यापारी, थोक-व्यापारी, खुदरा व्यापारी, का मुनाफा होता है।

मूल्य इस प्रकार निश्चित किया जाता है, कि यदि वह उंचा भी हैं तो भी किफायती दिखाई देता हैं तथा यह ऐसा प्रभाव डालता है कि इसकी बहुत अच्छी तरह बिल्कुल सही गणना की गई है और कम-से-कम दाम रखा गया हैं। यदि आप भी विक्रेता हो, तो आकर्षक मूल्य-निर्धारण की कला सीख लो और यदि आप खरीदने वाले हो, तो किसी भी आँकड़े से बेवकूफ मत बनो। मूल्य का विभिन्न प्रतियोगियों के मुल्य से तुलना करो, मोल-भाव करो और फिर उसे खरीदो।

****

अध्याय -२ ५
आसान बिक्री का राज़
(The Secrets of Easy Sales)

अच्छी बिक्री सफल व्यापार की कुंजी है। अच्छा विक्रेता होने के लिए आपको ग्राहकों के बारे में अनेक तथ्य तथा आँकड़े (Facts & Figure) जानना और ध्यान में रखना बहुत जरुरी है। बिक्री के नियमों को भी ध्यान में रखकर उसके अनुसार अपना नज़रिया भी बदलना होगा।

ग्राहक और बिक्री के बारे में जानकारी-:

१. ग्राहक को बहुत सारा धन लूटने का अवसर अथवा पैसा निकालने का एक साधन ना समझो। ग्राहक वह है जिस के साथ आप तरक्की करोगे। और आप की यह कोशिश होनी चाहिए के व्यवहार पूरा होने के बाद दोनों को लाभ हो।

२. आपका उत्पादन या माल इस्तेमाल करने के पश्चात ग्राहक को जो अच्छी भावना और लाभ मिलेगा, ग्राहक उसिकी खरीददारी करता है। अन्यथा ग्राहक को आपमें कोई रुचि नहीं है। इसलिए बेहतर बिक्री के लिए ग्राहक को मिलने वाले लाभ और अच्छी भावना को सबसे उभार कर ग्राहक के सामने रखना चाहिए।

३. लोगों को स्वयं खरेदी करना बहुत पसंद है, और उनको जबरदस्ती खरेदी करने के लिए प्रेरीत करने वाले बिल्कुल पसंद नहीं है। वे स्वंय से खरेदी करना पसंद करते है। (उदा. लोग सेल्समन से से चीजे खरीदने के बजाय मॉल से खरीददारी करना ज्यादा पसंद करते है) इसलिए लोगों को खरीदी करना कैसे पसंद आएगा आप इस बात को अच्छी तरह समझ लें।

४. आपके मन के विचार वास्तविकता में परिवर्तित होंगे। इसलिए यदि आपका नज़रिया सकारात्मक है और सौदे को अंतिम रुप देने और मोल-भाव की कल्पना सकारात्मक हैं, तो आप की अपेक्षा के अनुसार आप को ऑर्डर मिलेगा। इसी प्रकार यदि आपके मन में शक, अविश्वास और ग्राहक द्वारा इन्कार की भावना है, तो अधिकांशत उसी प्रकार से इनकार ही आपको मिलेगा।

बिक्री (Sales) और क्रय-विक्रय (Marketing) एक विस्तृत विषय है। अनेक डिग्री और डिप्लोमा कोर्स इस विषय के लिए रचे गए हैं। इसे कुछ पृष्ठों में संकलित नहीं किया जा सकता हैं। नीचे हम कुछ महत्वपूर्ण सिद्धांतों से आपको परिचित कराते हैं।

पूर्व-बिक्री योजनाः- (Pre-Sales-Planning)

१. ग्राहक से मिलने से पहले उसके बारे में अधिक से अधिक जानकारी प्राप्त करनें की कोशिश करें।

२. उसकी आवश्यकताओं के बारे में पूरी जानकारी प्राप्त करने की कोशिश करें।

३. अपने मन में ग्राहक से मिलने से लेकर ऑर्डर मिलने तक जो कुछ भी होने वाला है, उसकी सकारात्मक सोच के साथ कल्पना करें। जैसे कि जब आप ग्राहक से मिलने गए तो उसने आपका मित्रतापूर्वक स्वागत किया, बात-चित अच्छे वातावरण में हुई। और जो सौदा तय हुआ था या जो ऑर्डर आप को मिला उससे दोनों को लाभ होगा। और यह सब (Auto-Suggestion) के माध्यम से अपने मन में कल्पना करे और इस विचार को मन में बार-बार दोहराए।

४. अपने उत्पाद और सेवा के बारे में पूर्णरुप से जाने।

विक्रय प्रक्रियाः- (The Selling Process)

१. स्वीकार करने योग्य, आकर्षक और स्वस्थ व्यक्तित्व के लिए अच्छे कपड़े पहन कर तैयार हों।

२. ग्राहक से सकारात्मक नज़रिये से मिलें, जैसा कि आत्म निर्देश (Auto-Suggestion) द्वारा आप ने पहले अभ्यास किया था।

३. उससे उसकी ज़रुरत के बारे में पूछे और उसे ध्यानपूर्वक से सुनें।

४. पहले सप्लॉयर्स ने जो माल या सेवा उसे दी थी, उससे वह क्यों संतुष्ट नहीं है यह जानने कि कोशिश करें। उससे पूछें कि वह आप से क्या उम्मीद रखता है? और उसकी समस्याओं को समझे।

५. ग्राहक की शारीरिक और मानसिक दशा को पढ़े और समझने की कोशिश करें। (चित्तवृत्ति, मन की असली हालत, बात का तरीका, सोचना, बैठने का तरीका, उसका दृष्टीकोण, आदि) उसके विपरीत ना जाएं तथा उसकी चित्तवृत्ती के साथ तालमेल बैठाने की कोशिश करें।

६. ग्राहक की समस्याओं को ईमानदारी से सुलझाने की कोशिश करें। ग्राहक के ह्दय में सावधानी पूर्वक तर्क-सहित तथा कलात्मक रुप से इस भावना का विकास करें, कि खरीदने का निर्णय उसका अपना है। आप उस पर दबाव नहीं डाल रहे हो, अथवा उसने अगर आप का माल या सेवा खरीदा तो उस को लाभ होंगे और वह अच्छा महसूस करेगा। (याद रखें, कोई भी किसी के दबाव में खरीदना पसंद नहीं करता हैं, लेकिन स्वंय से खरेदी करना सभी पसंद करते हैं।)

इस कारोबार और बातचित में आप का दृष्टिकोण यह होना चाहिए की पहले ग्राहक का लाभ हो फिर आप का लाभ हो।

७. यदि आप उसकी समस्या को हल नहीं कर सकते हो तो उसे वहाँ का पत्ता या स्त्रोत बताओ, जहाँ उसकी समस्या का समाधान हो सकता है, और उसके ऑफिस से बाहर आ जाओ।

८. यदि एक ग्राहक आपको चुनता है और आपके साथ व्यापार करने की इच्छा रखता है, तो आप उसके निर्णय की प्रशंसा करो। उसे कम-से-कम जोखिम का विश्वास दिलाएं, अपने उत्पाद की सबसे अच्छी गुणवत्ता और शीघ्र सेवा का भरोसा दिलाएँ, और वास्तव में उसपर अमल करें। आप प्रत्येक व्यक्ति को हर समय बेवकूफ नहीं बना सकते। यह दुनिया बहुत छोटी है और आपकी असलियत हर एक के सामने आ ही जाएगी। इसलिए कभी-कभी-कभी धोखा न दें।

९. आप के और ग्राहक के बीच जो सौदा हुआ है उसको अच्छी तरह लिख लें। जैसे ग्राहक पैसा कैसा देगा, ग्यारंटी या वॉरंटी के बारे में, आप को ऑर्डर में क्या-क्या देना है, पेकींग और उसको भेजने का खर्चा इत्यादी। ऑर्डर और सप्लाई का कार्य-सम्पादन करते समय थोड़ी-सी भी गलतफहमी आपके और ग्राहक के संबधों को बर्बाद कर देगी।

बिक्री के बाद :- (After Sales)

१. ग्राहकों के संपर्क में रहें, यह जानने कि कोशिश करें कि वे आपका उत्पाद खरीदने के पश्चात वे कैसा महसूस करते हैं?

२. उत्पाद में अथवा सेवा में समस्याऐं निर्माण होना संभव है। इससे घबराएँ नहीं, बल्कि ईमानदारी से इन्हें हल करने की कोशिश करें, ग्राहक आप की ईमानदारी को महसूस करेंगे।

३. यदि ग्राहक संतुष्ट हैं, तो उसके साथ अच्छे संबध बनाने की कोशिश करें और उनसे यह विनंती करें कि वह अपने मित्रों को भी आप से माल खरिदने के लिए प्रेरीत करें।

याद रखें एक संतुष्ट ग्राहक द्वारा दिया गया संदर्भ (Reference), एक प्रभावशाली विज्ञापन की अपेक्षा आपका ज्यादा ऑर्डर दिलवाऐगा।

****

अध्याय-२६

ज्यादा मासूम मत बनों

(Don't be too Innocent)

एक शांत राहगीर कुत्तो से सुरक्षित गुज़र जाता हैं। लेकिन कुत्ते अधिकांशत उत्तेजित को ही भोंकना और काटना पसंद करते हैं। इसी प्रकार व्यापार क्षेत्र में भी अनुभवी व्यक्ति अपना व्यापार शांती से करते है और सुरक्षित रहते है। अधिकांश बड़े व्यापारी, नए और जोशिले व्यापारियों को धोखा देना तथा लुटना अधिक पसंद करते हैं। क्योंकि वे जानते हैं कि यह प्यारा-सा बच्चा हमारा कुछ नहीं बिगाड़ सकता हैं। यहाँ तक कि यदि उसका धन और माल जबरदस्ती ले भी लिया जाए, तो केवल हजारों में से एक ही ऐसा होता है, जो अपने शारीरिक बलबुते पर अपना धन जबरदस्ती निकलवाता हैं। दूसरे तो नम्रता से फर्याद करते हैं, नीची आवाज में गाली देते हैं, और चुपचाप से चले जाते हैं। भारतीय न्याय भी इनकी मदद नहीं करता हैं, क्योंकि न्याय का निर्णय तो अगली पीढ़ी के आने के बाद ही होगा।

इसलिए मध्यम और बड़े व्यापारियों में छोटे और नए व्यापारियों को फंसाने कि बहुत प्रवृत्ति दिखाई देती है। वह छोटे और नये व्यापारियों का भव्य-स्वागत करते हैं, अच्छा व्यापार देते हैं, उनसे वे पैसो का लेन देन भी करते है। और साथ-साथ अधिक से अधिक उधार लेने की कोशिश करते हैं।

नये व्यापारियों से बड़ा उधार लेने के बाद वे अपने बात करने का ढंग बदल देते हैं। अब उनके व्यापार में मित्रता कम और कठोरता अधिक होती है। इस स्थिती में नया व्यापारी जाल में फंस जाता हैं। उसे अपनी सेवा और माल कम-से-कम दामों पर देना पड़ता हैं तथा लंबे समय के लिए उधार भी। यदि किसी कारण वह अपनी सेवा और सप्लाई बंद कर देता है, तो उसका बाकी का धन भी डूब जाता है।

इसलिए कभी भी मासूम न बनें रहें। हमेशा जाने दुनियाँ और व्यापार में क्या हो रहा है? तथा उसी के अनुसार अपनी व्यापारिक-नीति बनाएँ।

मैं अपने कुछ अनुभव प्रस्तुत कर रहा हूँ। मुझे उम्मीद हैं, कि इनसे आपको अवश्य लाभ मिलेगा।

लिखित दस्तावेज़ की महत्ता :-

सन १९८६ में मैं एक छोटी कंम्पनी 'जनरल हाइड्रौलिक' में डिझाईन इंजीनियर के रुप में काम करता था। में डिझाइन के साथ-साथ हायड्रौलिक प्रेसेस के निर्माण (Manufacturing) की देख-रेख (Supervision) भी करता था। हम 'नोबल इंजीनियरिंग वर्कस' इस कंपनी से बड़ी मात्रा में फॅब्रिकेशन और मशिनिंग का काम कराके लेते थे।

'नोबल इंजीनियरिंग' का मालिक जसवंत सिंह और उसका बेटे बलबीर सिंह जब भी मैं उन से मिलने जाता तो हमेशा मेरा भव्य स्वागत किया करते थे। मेरे साथ उनका व्यवहार बहुत मित्रतापूर्ण था। सन १९८७ में जब मैंने अपनी नोकरी छोड़ दि और कन्सलटेंन्सी शुरु की तो, मुझे श्री.शाह के लिए

हायड्रौलिक प्रेसेस के निर्माण (Manufacturing) और डिझाइन करने का काम मिला।

श्री.जसवंत सिंह हमेशा मुझे कहते थे, कि जब कभी भी मैं अपना काम शुरु करुँ, वे सब प्रकार से मेरी सहायता करेंगे। मैं जसवंत सिंह के पास गया और उसे अपने नए ऑर्डर को पूरा करने में मदद करने के लिए कहा, जो मुझे श्री.शाह से मिला था। उसने दिलोजान से मेरा स्वागत किया और पूरा सहयोग देने का भरोसा दिलाया। उसने ५०-५० की साझेदारी का प्रस्ताव भी रखा। क्योंकि न तो मेरे पास वर्कशॉप था और न ही धन, इसलिए मैं सहमत हो गया।

मेरे साथ जसवंत सिंह का व्यवहार इतना अच्छा और सौम्य था कि मैं साझेदारी के कानूनी एग्रीमेंट के लिए पूछने की हिम्मत नहीं कर सका। मैंने उसके नाम पर ऑर्डर ले लिया। हमने सफलतापूर्ण मशीन का ऑर्डर पूरा किया और श्री.शाह को सुपुर्द कर दी। श्री.शाह ने हम से कहा के हम उसे मशीन की कीमत से ज्यादा का बील दें और वह (श्री.शाह) हमें बील के हिसाब से पैसा देंगे। मगर चेक पास होने के पश्चात बील में लगाई हुई अतिरिक्त रकम को श्री.शाह को वापस देना होगा। मैं और जसवंतसिंग इस बात पर राजी हो गए।

चेक मिलने तक जसवंत सिंह और उसका बेटा बलबीर सिंह हमेशा मुझे यकीन दिलाते रहे कि वे श्री. शाह को तुरंत उपर की नकद राशी वापिस कर देंगे और मुझे मेरे हिस्से का लाभ दे देंगे और हम तुरंत अगली मशीन बनाना शुरु कर देंगे। लेकिन जैसे ही भुगतान चुका दिया गया, उनके बात करने का लहज़ा बदल गया। अब वे (जसवंत सिंह और बलबीर सिंह) श्री.शाह को उपर की अतिरिक्त राशी लौटाने से पहले उनसे अगली मशीन के लिए एडवांस चेक चाहते थे और मुझे भी जोर दिया कि तुम्हारा हिसाब साल के आखिर में करेंगे या बाकी सभी ६ मशीनों का ऑर्डर पूरा करने के बाद करेंगे।

मैं बहुत निराश हो गया। मैंने दृढ़ता-पूर्वक अपने लाभ और श्री.शाह के नकद राशि की माँग जसवंत सिंह से की, लेकिन उन्होंने मेरा अपमान किया और गाली देना शुरु किया। मैं शारिरिक रुप से बहुत कमजोर हूँ, इसलिए मैंने उनके साथ झगड़ा करने की हिम्मत नहीं की, न ही मेरे पास कोई कानूनी दस्तावेज़ था। मैं निसःहाय था और इसलिए कुछ भी नहीं कर सका। मैंने श्री.शाह को सारी सच्चाई बता दी। श्री.शाह एक सज्जन व्यक्ति था। हालाँकि मैं उनका धन वापिस करने के लिए जिम्मेदार था, तो भी उन्होंने इसकी माँग नहीं की, क्योंकि वह समझ चुके थे कि मुझे धोखा दिया गया था।

अपनी जिंदगी के इस पहले व्यापारिक सौदे में मैंने अपना लाभ गँवाया था। मैंने श्री.शाह का धन भी खोया था, और सप्लायर्स के भुगतान की जिम्मेदारी भी मुझपर आन पड़ी थी। जिन्होंने मेरे भरोसे पर माल उधार दिया था। मैंने एक सज्जन पुरुष के वायदे पर विश्वास किया और बहुत कुछ खोया।

आपको मेरी आप सभी से यह नसीहत हैं कि, मौखिक वचनबद्धता और वायदों पर विश्वास न करें। हमेशा एक कानूनी दस्तावेज़ बनाएं। यदि आप साझेदारी में व्यापार शुरु करते हो, तो उसके साथ के सभी दूसरे पहलूओं को भी निश्चित करों। जैसे की अलग होने की दशा में कंपनी का नाम और टेलिफोन नंबर आदि किसके पास रहेंगे। क्योंकि अलगाव होने के लंबे समय के बाद भी आर्डर और पूछताछ पुराने पत्ते, नाम, और फोन नंबर पर ही आते रहते हैं।

व्यापार में मित्रताः-

मेरे एक मित्र श्री.विरदी की एक इंजीनियरिंग वर्कशाप है, और मशीनिंग (Machining) का काम ठेके (Labor work) पर करता है। वह पूर्णतयः एक सज्जन पुरुष है। उन्होंने अपने नए ग्राहक और मित्र के लिए सन १९८५ में सात लाख के बँक लोन के लिए ग्यारेंटर की हैसीयत से हस्ताक्षर किए। उसका मित्र अपना कर्जा नहीं चुका सका, इसलिए पैसा लगाने वाले अपने धन के लिए श्री.विरदी को निचोड़ने लगे। दोस्ती में सिर्फ एक कानूनी कागज़ पर हस्ताक्षर करने के लिए उन्होंने बहुत अधिक धन खोया और साथ ही दुख भी सहन किया।

इसलिए व्यापार या उदयोग में दोस्ती के संबध न लाए। जोखिम वाली स्थिति में उसी वक्त निर्णय न ले, थोडा समय सोचने के लिए जरुर लीजिए। अपने से बड़ों की राय लें और फिर निर्णय लें।

कोई भी नुकसान करके बिक्रि नहीं करता (No one sells at loss)

सन १९८९ ई.में मैंने हिंदुस्तान एलौइ मॅन्युफॅक्चरिंग कं.लि.को बहुत सारे Extrusion presses मशीनों का सप्लाई किया था। एक दिन मैं उनके ऑफिस (फोर्ट-मुंबई) में अपनी पेमेंट लेने के लिए गया। चैक लेने के बाद मैं यूं ही वी.टी स्टेशन की ओर चल कर जा रहा था। उस वक्त एक टेक्सी मेरे पास आई और रुक गई। टैक्सी ड्राईवर ने मुझ से पूछा, महाशय क्या आप इस अरब यात्री को यह समझा सकते हो कि यह टैक्सी अहमदाबाद नहीं जा सकती है। मैंने उस अरबी पेहराव वाले यात्री से पुछा, क्या मामला हैं? उसने कहा, वह अभी दुबई से अपने मित्र के घर शादी में शामिल होने आया हैं लेकिन उसके फ्लॅट में ताला लगा हुआ है, तथा उसके पड़ोसी ने कहा हैं, कि शादी अहमदाबाद में हैं, इसलिए वे सब वहाँ चले गए हैं। अब मुझे अहमदाबाद तुरंत पहुँचना हैं। शादी में हाजीर होने के बाद मुझे फिर रात बारा बजे की उड़ान से दुबई लौटना है। मेरे पास समय नहीं है और यह टैक्सी-ड्राइवर कहता हैं कि वह अहमदाबाद जाना नहीं चाहता हैं। मैंने उसे कहा कि टैक्सी को केवल बॉम्बे की सीमा के अंदर ही चलाने कि आज्ञा दी गई हैं। अहमदाबाद ५०० कि.मी.दूर हैं और वहाँ तक जाने का परमिट टैक्सी के पास नहीं है। अरबी मनुष्य ने कहा, महोदय आप जरा टैक्सी में आ सकते हैं। मैं आपसे एक मेहेरबानी चाहता हूँ। में सहमत हो गया और उसके साथ टैक्सी में बैठ गया। उसने स्टिरिओ कैसेट प्लेअर और एक घड़ी का बॉक्स खोला और मुझे कहा, मैं ये उपहार दुबई से अपने मित्र के लिए लाया हूँ, अब न तो मैं शादी में शामिल हो सकता हूँ और न ही इन्हें वापिस ले जा सकता हूँ। क्या आप इनको बिकवाने में मेरी मदद कर सकते हो, क्या आप इन्हें खरीद सकते हो? मैंने कहा, कीमत क्या हैं? उसने कहा ये १२००० रुपये के मूल्य के हैं।

मैंने कहा, मेरे पास इतने अधिक पैसे नहीं हैं। उसने पूछा, आपके पास कितने पैसे हैं? मैंने अपने ब्रीफकेस को परखा और पाया केवल ३००० रुपये हैं। मैंने कहा, अफसोस! मेरे पास केवल ३००० रुपये हैं। उसने कहा, क्या तुम कुछ और इंतेजाम कर सकते हो? मैंने कहा अफसोस संभव नहीं हैं। मैंने टैक्सी से बाहर कदम रखा ही था, कि उसने यकायक कहा, ठीक है, महाशय यह स्टीरियों ले लो। मैं आश्चर्य चकित था और खुश भी। एक विदेशी स्टीरियों कैसेट प्लेयर १२००० की कीमत का वह मुझे केवल ३००० रुपये में मिल रहा था। मुझे इस पर विश्वास नहीं हो रहा था। मैंने उसके हाथों में ३०००

रुपए दिए स्टीरियों लिया और घर की ओर तेजी से चला।

घर जाकर जब मैंने पार्सल खोला और स्टीरिओ चलाया, तो मेरे पांव तले जमिन खीसक गई। यह नकली दिल्ली निर्मित कैसेट प्लेयर था, मुश्किल से उसकी कीमत ८०० रु थी।

मेरे एक मित्र श्री.शमीम ने एल्यूमिनियम की कुछ वस्तूएँ सस्ते दामों पर खरीदी,बाद में मालूम हुआ कि वह चुराई हुई थी। पुलिस ने शमीम को चुराया हुआ माल खरीदने के जुर्म में गरफ्तार कर लिया और तीन दिन के लिए जेल में बंद रखा। कुछ रुपयों की बचत के लिए उसने हजारों रुपए पुलिस वालों की मुठ्ठी गर्म करने में खर्च कर दिए और उसकी बदनामी भी हो गयी।

अपने व्यापार की शुरुआत में, मैं व्यक्तिगत रुप से दुकानों पर जाया करता था और वाल्व (Valve) पम्प (Pump) और दूसरी सहायक वस्तूएँ खरीदता था। एक दिन कजाफ इंजीनियरिंग कं. नागदेवी स्ट्रीट में कुछ हायड्रौलिक फिटिंग्स खरीदने गया। खरीददारी करने के बाद मैं युंही मस्जीद स्टेशन की ओर जा रहा था, तब एक काम की तलाश में फिरनेवाला लड़का मेरे पीछे आया और उसने मुझ से कहा, 'क्षमा करे महाशय! जब मैं पीछे मुड़ा उसने कहा 'यह एक Scientific Calculator है। क्या आप इसे खरीदना चाहते हो?' मैंने कहा 'सॉरी! मुझे नहीं चाहिए।' और फिर स्टेशन की ओर चलना शुरु कर दिया। लेकिन वह मेरा पीछा करता रहा और बोला 'महाशय मैं आपको सस्ते में दुंगा।' मैंने कहा 'सॉरी मेरे पास ऐसा ही केलक्युलेटर है।' मैंने चलना जारी रखा पर उसने मेरा पीछा करना न छोड़ा। उसने कहा, 'बहुत मेहरबानी होगी, यदि आप इसे खरीदते हैं, क्योंकि मेरे पास बिल्कुल पैसे नहीं है और मेरे बच्चे भुखे हैं।'

जब उसने ऐसा कहा, मैंने एक पल के लिए सोचा और कहा 'मैं तुम्हें अच्छी कीमत नहीं दे सकता, तुम किसी ओर को देखो।' उसने पूछा, 'आप कितना दे सकते हो? इस वैज्ञानिक केलक्युलेटर की कीमत बाजार में ५०० रुपये हैं।' मैंने कहा 'मैं तुम्हे केवल ५० रु दे सकता हूँ।' उसने कहा '५० बहुत कम है क्या आप १०० रु.दे सकते हो?' मैंने कहा 'सॉरी! यह मेरा आखरी प्रस्ताव है।' इसी कीमत पर उसने केलक्युलेटर मुझे दे दिया। मैंने केलक्युलेटर को जाँचा कुछ गणनाएं भी की और उसे ५० रुपए दे दिए। मैं खुश होकर स्टेशन की ओर मुड़ा, लेकिन तभी उसने कहा 'मैं इसे पैक करता हूँ आप मुझे १० रुपए और दिजीए।' मैंने कहा '५० रुपया यह मेरा आखरी दाम है।' और उसे पैक करने के लिए केलक्युलेटर दे दिया। उसने उसे पैक किया और मुझे दे दिया। मैंने खुशी से अपना ब्रीफकेस खोला केलक्युलेटर का पैकेट उठाया और उसमें रख दिया और घर जाने के लिए खुशी ट्रेन पकड़ी। मुझको हिसाब-किताब नहीं करना था मगर मैं इतना खुश था के बगैर कारण के भी में केलक्युलेटर का इस्तेमाल करना चाहता था। मैंने ब्रिफकेस में से पैकेट खोला। मैं उस पल की अपनी हालत का वर्णन शब्दों में नहीं कर सकता। पार्सल में केवल कागज़ के पुठ्ठे थे और उसमें कोई केलक्युलेटर नहीं था। उस जालसाज ने मुझे दिन की रोशनी में नहीं लूटा था। बल्कि मैं अपने गलत सिद्धांत की वजह से ठगा गया था।

बाज़ार में कोई भी चीज़ सस्ते में या मु नहीं मिलती। कोई भी ऐसा बेवकूफ नहीं हैं कि नुकसान में वस्तुएँ बेचे और यदि आप सोचते हो कि ऐसे बेवकुफ हैं, तो हाँ, हैं और वह आप और मेरे जैसे लोग हैं।

हमेशा ईमानदार रहें, केवल बेचने में ही नहीं, बल्कि खरीदने में भी और व्यापार के हर काम में ईमानदारी बरतें।

ईमानदारी सबसे अच्छी व्यापारिक नीति हैं।

भाग- 3

अध्याय-२७

महान कर्म का महत्व

(Importance of Noble Deeds)

सैकड़ों विद्यार्थी प्रति वर्ष अर्थ-व्यवस्था (Finance Management) में मास्टर की पदवी लेते हैं, लेकिन उनमें से कितने वास्तविक रुप से धन के मालिक बनतें हैं? बहुत थोड़े से! कोई भी अरबपति नहीं बना। क्योंकि फायनान्स के (Finance) हेर-फेर को जानने से ही कोई धनी नहीं बनता।

वास्तव में आर्थिक-समृद्धि बहुत अधिक मात्रा में धन जमा करने से कुछ अलग हैं। जिस प्रकार हम मनुष्य पदार्थ (Matter) और शक्ति (Energy) का मिश्रण हैं, अर्थात शरीर और आत्मा। इसी प्रकार समृद्धि और अच्छी आर्थिक-स्थिती भी पदार्थ (Matter) और शक्ति (Energy) का एक संतुलन हैं। पदार्थ यानी संपत्ति और शक्ति यानी ईश्वरी कृपा। इसलिए आर्थिक समृद्धि सिर्फ संपत्ति नहीं है। मेरा कहने का अर्थ क्या हैं यह में निम्न उदाहरण द्वारा समझाने की कोशिश करुँगा।

रेगिस्तान में एक मछली :-

ऐसा समझो कि रेगिस्तान (Desert) में एक गडढा है। उसमें एक बाल्टी भरके पानी और एक मछली को छोड़ दो। जितना भी पानी आप इसमें ड़ालते हो, वह रेत पानी को सोख लेगी और मछली हमेशा कुछ और पानी की बुंदो के लिए तड़पती रहेगी।

अब मान लो, जमिन के नीचे, पानी की सतह (Water level below ground) बढ़नी शुरु हो जाती हैं। यद्यपी यह गडढें के तल से एक इंच भी बढ़ती है तो भी मछली कुछ आराम महसूस करेगी। ड़ाला हुआ पानी लंबे समय तक रहेगा, इससे पहले कि गडढे की दीवारों की तरफ की रेत द्वारा सोखा न जाए। पानी की सतह और अधिक उपर बढ़ने से, मछली का और आराम बढ़ जाएगा और ड़ाला हुआ पानी तुरंत गडढे की दीवारों में नहीं सोखेगा।

यदि पानी की सतह काफी उंचे-स्तर तक बढ़ती हैं, तो पानी ड़ालने की जरुरत भी नहीं होगी।

यदि यह प्राकृतिक झरना (Fountain) बन जाता है, तो मछली के साथ-साथ कई और जीव-जंतुओं को भी इससे लाभ होगा।

मनुष्य भी उस मछली की तरह हैं। पानी हमारी आमदनी है और सूखी रेत हमारे खर्चे। जिस प्रकार रेत उसमें ड़ाला हुआ सब पानी सोख लेती हैं, इसी प्रकार हमारे खर्चे और जीवन-स्तर इतना ऊंचा हैं कि हमारी आमदनी हमेशा खर्चों से कम होती है और हमें हमेशा पैसों कि जरुरतें होती है। ज़मिन के नीचे का जलस्तर ईश्वर के वरदानों की तरह हैं। जब यह मनुष्य के जीवन को स्पर्श करते हैं, तो हम थोड़ा आराम महसूस करते हैं। जैसे आर्शीवाद बढ़ता है, हमारा आराम भी बढ़ता हैं। इसी प्रकार हमारे मन की शांति जीवन में संतुष्टि, इच्छा की पूर्ति तथा संपूर्ण-समृद्धि और समाज में मान-सन्मान हमारी आमदनी से अधिक ईश्वर के आर्शीवादों पर निर्भर करता है।

सामान्यतः हमारे कर्म इतने महान नहीं होते हैं कि हम पूर्णतयः आर्शीवादों में डूब जाएं और संसार की परेशानीयों से छुटकारा पा लें। लेकिन संत और धार्मिक व्यक्ति ऐसे होते है जिन पर ईश्वर कि कृपा की वर्षा होती है। इसलिए यह लोग बिना किसी नियमित आमदनी के वास्तव में अनाथाश्रम चलाते हैं और सेकड़ों लोगों को भोजन खिलाते हैं। यह ईश्वर का वरदान है, जिससे उन पर धन की वर्षा होती है और उनको यह सब करना संभव होता है।

इसलिए मन तथा आत्मा के शांति के लिए और पर्याप्त समृद्धि के लिए, ईश्वर का वरदान हमारी ऊंची मासिक आमदनी की अपेक्षा अधिक महत्वपूर्ण है।

मैं लिमिटेड कंपनियों के कुछ चेयरमन को जानता हूँ, जिनकी मासिक आमदनी वर्ष (२००६ में) १० लाख रुपयों से अधिक थी। लेकिन कई फ्लेटस और बंगलो का किराया, दर्जनों घर के नौकरों का वेतन, फॉइव-स्टार क्लब में आए दिन होने वाली पार्टिया, तथा विदेशों में घूमना-फिरना आदि खर्च के कारण वह लाखों रुपयों का वेतन भी उनके लिए काफी नहीं होता था। वे असंतुष्ट, परेशान, अशांत चिंतित रहते हैं और कुत्ते की तरह लपलपाती जीभ लिए धन के पीछे भागते थे।

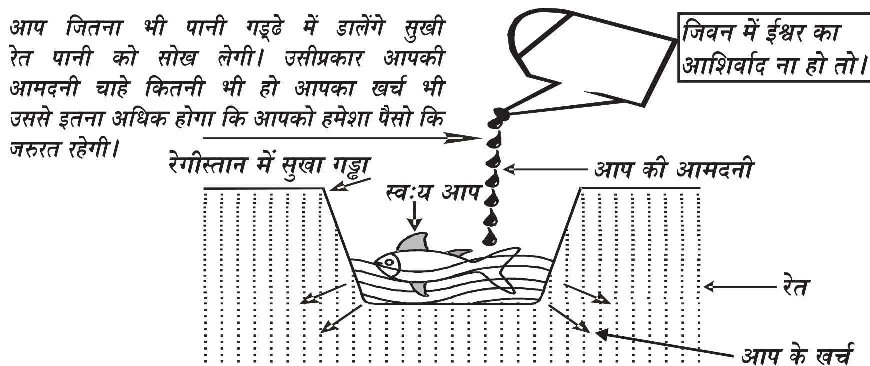
मैं कुछ थोड़े-से सज्जन परिवारों को जानता हूँ, जिनकी मासिक आमदनी केवल दस से पंद्रह हजार रुपए है। लेकिन वे जिंदगी के हर क्षेत्र में खुशी और समृद्धि में भरपूर हैं। इन दो प्रकार के परिवारों में इतने बड़े अंतर का कारण है-ईश्वर का आर्शिवाद। ईश्वर का आर्शिवाद केवल उन लोगों के जीवन को स्पर्श करता है, जो उसपर विश्वास रखते हैं और जिनके कर्म महान होते हैं।

ईश्वर पवित्र कुरआन में कहता हैः

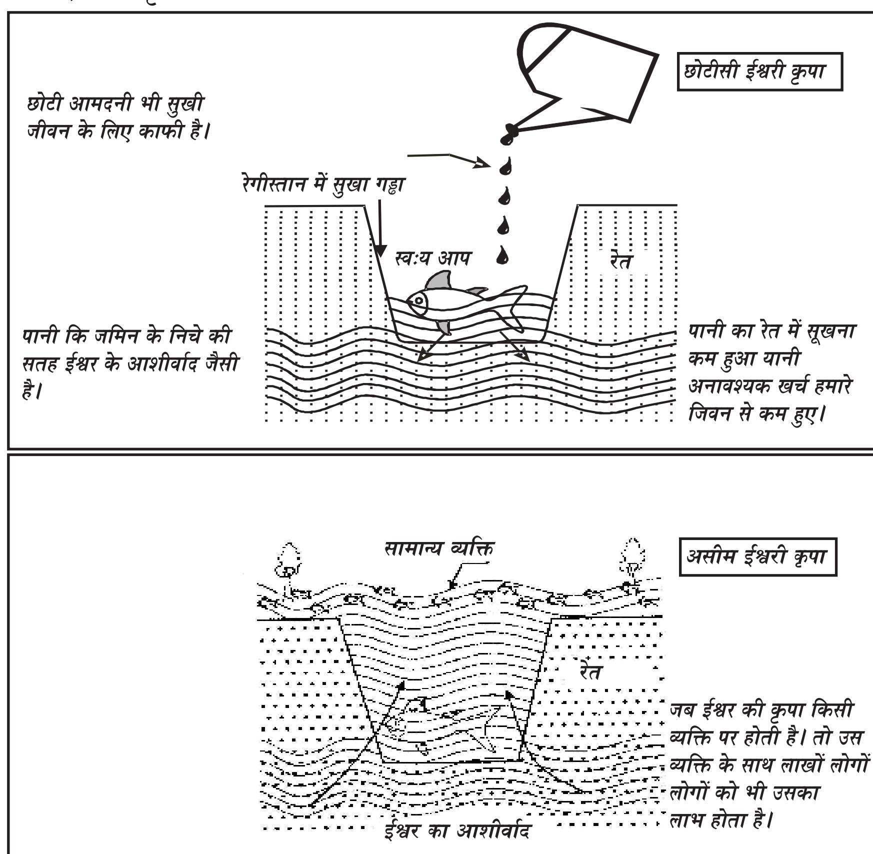
जो भी सही काम करेगा चाहे पुरुष हो या स्त्री और मेरे में भी विश्वास रखता है, हम उन्हें इस दुनिया में पवित्र और आरामदायक जीवन देते हैं और मृत्यु के बाद उनके महान कर्मों का फल देते हैं।

(पवित्र कुरआन 16:97)

यदि वे बाइबल, तौरात, और दूसरे धार्मिक ग्रंथो का अनुकरण करेंगे, तो समृद्धि आकाश से उन पर बरसेगी। और एक समुह तो उनमें से सही-राह पर चलने वाला है, लेकिन उनमें से अधिकांश बुरे आचरण अथवा कर्म करने वाले हैं। (पवित्र कुरआन सूरे मायदा 66)



अगर ईश्वर की कृपा हमारे जीवन में हो तो कम आमदनी में भी व्यक्ति को शांति मिलेगी।



बगैर चौथे पहिये की गाड़ीः-

समृद्धि प्राप्त करने के लिए, साधन और अवसर स्पष्ट और संपूर्ण तथा आसानी से नहीं मिलते। उन के मिलने में हमेशा कुछ रुकावटें और समस्याऐं होती हैं। मनुष्य ज़िदगी भर, इन रुकावटों और समस्याओं को सुलझाने के लिए संघर्ष करता है, लेकिन ९ ५ प्रतिशत लोग असफल रहते है।

उदाहरण के लिए, जो लोग पोस्ट-ऑफिस, रेल्वे अथवा स्कूल आदि में नौकरी करते हैं। उनकी जीवन-शैली नीरस (Monotonous) होती है। वह काम करने सुबह नौ बजे जाते हैं, किसी तरह काम करके या बिना काम किए वह अपना समय व्यतीत करते हैं और शाम को घर वापिस आते हैं। सालों साल उनका यही क्रम (सिलसिला) चलता है। यहाँ तक कि अपनी नौकरी के अंत तक उनका जीवन-स्तर

अधिक बदलता नहीं हैं। वह समय की चक्की (Tread mill) पर चलते रहते हैं और जिवन के अंत तक लगभग उसी जगह पर रहते हैं।

कुछ ऐसा ही छोटे उदयोजक के बारे में होता है, छोटे होटलों तथा जनरल स्टोर आदि। यहाँ तक कि एक पीढ़ी (Generation) के बाद भी उनका स्तर वही रहता है।

निम्नलिखित उदाहरण द्वारा उनकी दशा की व्याख्या अच्छी तरह हो सकती है।

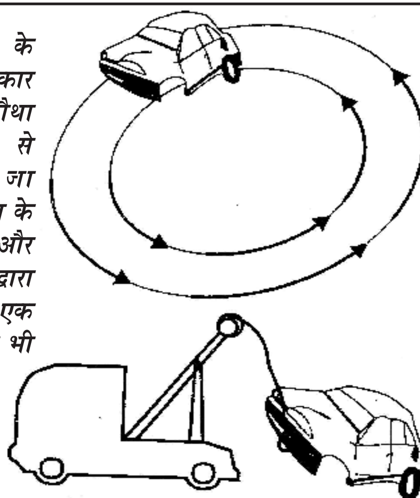
मान लो, एक कार का आगे का पहिया गायब है। यदि ड्राईवर इस कार को चलाता है, वह आगे जाना चाहता है, लेकिन वह गाड़ी एक सर्कल कि कक्षा में घुमती रहेगी। कितना भी इंधन लगे या समय लगे वह सर्कल की दशा में ही घुमती रहेगी।

आगे बढ़ने का एक ही तरीका है, या दूसरा टायर लगाया जाये या तो फिर इसे रस्सी या जंजीर से खींचा जाये। कार में एक दूसरे टायर को लगाना अर्जित करना, ज्वलंत-इच्छा, सकारात्मक नज़रिया, स्थिरता (Persistence), कठिन परिश्रम, व्यापारिक-प्रशासन सीखना, सही रास्ते पर चलना और ईश्वरीय प्रतिशोध को आमंत्रित न करना, तथा उन प्रार्थनाओं को नियमित रुप से करना जो विशेष रुप से समृद्धिता को बढ़ाती हैं।

कार को रस्सी से खींचना ईश्वर की प्रार्थना द्वारा इस की मदद लेना है।

जिस तरह गायब टायर को लगाए बिना अथवा रस्सी से खींचे जाने के बिना कोई भी गाडी आगे नहीं बढ़ सकती उसी प्रकार सफलता के सिद्धांत के अनुसार आदतें अर्जित किए बिना तथा ईश्वर के आर्शिवाद को निमंत्रण दिए बिना कोई व्यक्ति जिंदगी में आगे नहीं बढ़ सकता।

कार का एक टायर न होने के कारण कार एक ही जगह गोलाकार स्थिति में घूमती रहेगी। चौथा टायर लगाए बिना या चैन से खिचें बिना आगे नहीं जा सकती। इसी प्रकार हर एक मनुष्य के जिवन में हमेशा कुछ कमी रहेगी। और वह और ईश्वर की प्रार्थना द्वारा मदद लिए बगैर जिवन में हमेशा एक ही स्तर पर रहेगा। वह स्तर गरीबी भी हो सकती है।



चौथा टायर यानी आपका सकारात्मक और दृढ़ कोशिश है। खिंच ले जाने कि सेवा ईश्वरी कृपा है। इन दोनों चीजों के सिवा आप जिवन में सफल नहीं हो सकते।

३. अंधे भिखारी और श्री शंकरजीः-

चार आदमी अपनी रोजी-रोटी भिक्षा माँगने के द्वारा कमाया करते थे। माँ पार्वती को उन पर दया आई और अपने पति श्री शंकर जी से उन्हें अमीर बनाने की प्रार्थना की। श्री.शंकर जी ने कहा, गरिबी इनके भाग्य में हैं वे अमीर नहीं हो सकते हैं।

माता पार्वती के निरंतर आग्रह पर श्री शंकर जी उन्हें सोने को किसी रुप में देने का निश्चय किया। शंकर जी ने लकड़ी के तख्तें को सोने में बदला और उसे उस रास्ते के बीच में रख दिया, जहाँ से ये चार आदमी रोज जाया करते थे।

वें गरीब आदमी अपनी आमदनी बढ़ाने के लिए अपने भीख माँगने के तरीके को हर दिन बदला करते थे। उस दिन उन्होंने निश्चय किया कि आज वे अंधे आदमियों की तरह भीख माँगेंगे। इसलिए उन्होंने अपनी आँखो पर कपड़े की पट्टी बाँध ली और भीख माँगने के लिए चल दिए।

वे उसी रास्ते पर गए, जिस रास्ते से रोज जाते थे और वहाँ सोने के तख्ते पड़े थे, लेकिन आँखों पर पट्टी बाँधे रहने के कारण वे सोने के तख्ते के उपर से गुजर जाते हैं और ज़िदगीभर गरीब ही रहते है।

अवसर को समझने कि दूरदृष्टी और बुदधी हमें ईश्वर के सिवाय कोई नहीं दे सकता। अपने आसपास के समाज में लाखों रुपया कमाने के अवसर रहते हैं लेकिन सिर्फ ३ या ५ प्रतिशत लोग ही उसका पूरापूरा इस्तेमाल करते है। बाकी ९ ५ प्रतिशत लोग अंधे लोगों कि तरह रहते हैं और मौके को नज़रअंदाज कर देते है। अपने मार्ग में बिखरे हुए अवसर को प्राप्त करने का ज्ञान प्राप्त करने और उससे फायदा उठाने के लिए हमें ईश्वर पर भरोसा रखना ही चाहिए और महान कर्म करके और प्रार्थना करके हमें ईश्वर को प्रसन्न रखना ही होगा।

४. बदल गया भाग्यः-

पैगंबर मूसा (अ.स) के समय में एक वृद्ध पति-पत्नी निःसंतान थे। उन्होंने पैगंबर मूसा (अ.स) से विनंती कि वह ईश्वर से प्रार्थना करें कि हमें एक बच्चे का वरदान दे। पैगंबर मूसा (अ.स) ने ईश्वर से वृद्ध पति-पत्नी के संतानप्राप्ती के लिए प्रार्थना कि, लेकिन ईश्वर ने कहा 'उनके भाग्य में बच्चा नहीं हैं'। पैगंबर मूसा (अ.स) ने ईश्वर का यह संदेश उस वृद्ध पति-पत्नी को दे दिया।

कई सालों बाद, पैगंम्बर मूसा उसी घर की ओर से जब गुज़र रहे थें, तो उन्होंने उस वृद्ध पति-पत्नी के घर में कई बच्चे खेलते हुए देखे। उसे आश्चर्य हुआ, जब पैगंम्बर मूसाने उनसे पूछा, कि उन्हें ये बच्चे कैसे प्राप्त किए? उन्होंने कहा 'एक संत हमारे घर आया और रोटी के लिए पूछा तथा कहा कि जितनी रोटीयाँ हम उसे देंगे, उतने ही बच्चे हम प्राप्त करेंगे। हमने उसे सात रोटीयाँ दी और हमारे यहाँ सात बच्चे पैदा हुए।'

पैगंबर मूसा (अ.स) आश्चर्य चकित थे। वह माउंट सिनाई पर ईश्वर से पूछने गए और कहा, 'ऐ ईश्वर! तुमने कहा कि उनके नसीब में बच्चा नहीं है, लेकिन अब उनके यहाँ तो बच्चे आधे दर्जन से अधिक हैं, यह कैसे हुआ?'

ईश्वर ने उत्तर दिया, मूसा मैं तुम्हें जवाब बाद में दुँगा, पहले मेरे लिए एक काम करके आओ। मुझे मनुष्य के माँस के एक टूकड़े की ज़रुरत हैं। पास के नगर में जाओ और उसे मेरे लिए लाओ।

पैगंबर मूसा (अ.स) नगर में गए और हर किसी से पूछा, लेकिन किसी ने उसकी मदद नहीं कि। वापिस आते हुए रास्ते में उन्होंने एक झोपड़ी देखी, जो नगर की सीमा पर थी। उसके अंदर उन्हें एक संत मिला, जो वहाँ रहता था। पैगंबर मूसा कि विनती पर संत ने केवल माँस का एक टूकड़ा ही नहीं दिया, बल्कि उसने अपने शरीर के हर हिस्से से एक टुकड़ा दिया। पैगंबर मूसा (अ.स) पहाड़ी पर गये और इसे ईश्वर के सामने रखा। ईश्वर ने कहा, मूसा तुम भी मनुष्य हो, तुम स्वयं मुझे माँस दे सकते थे, लेकिन ना तो तुमने ऐसा किया ना किसी और लोगों ने सिर्फ उस संत ने यह किया। वह मुझे इतना प्यार करता है कि जब मैंने एक टुकड़े के लिए कहा, तो उसने अपने शरीर के प्रत्येक हिस्से से एक टुकड़ा दिया। अब यदि वह मुझे कुछ चीज़ के लिए कहता है, तो मैं उसे कैसे इन्कार कर सकता हूँ? ।

ईश्वर को किसी का भाग्य बदलने के लिए कुछ भी असंभव अथवा कठिन कार्य नहीं करना हैं। जो उसे करना है, वह सिर्फ कहना है 'हो जा!' और भाग्य उसके अनुसार बदल जाता है। वास्तव में हम स्वयं अपने भाग्य को निश्चित करते हैं तथा नियंत्रित करते हैं, ईश्वर केवल न्याय करता है तथा हमारे कार्यों और कर्मों के अनुसार न्याय देता है। (हमारा भाग्य निश्चित करता है।)

इसलिए अच्छे भाग्य और संपन्नता के लिए हमारा चरित्र, हमारा व्यवहार, हमारे कर्म और हमारी जीवन-शैली ऐसी होनी चाहिए कि ईश्वर हमारी प्रार्थना को इन्कार न कर सके।

आखरी धार्मिक पुस्तक कहती हैं,

'ईश्वर किसी को कष्ट नहीं देता हैं, मनुष्य दुख और कठिनाई अपने स्वयं के कार्य और कर्मों के कारण प्राप्त करता हैं।' *(पवित्र कुरआन 2-286)*

५. आखरी सहाराः-

सन 1995 और 2002 के बीच का समय भारत में औद्योगिक मंदी का दौर था। मैं हायड्रौलिक मशीनरीयों का उत्पादन करता हूँ। जब एक कम्पनी अपनी निर्माण क्षमता का विस्तार करना चाहती है अथवा नया कारखाना शुरु करना चाहती है, तो वे मशीनरी और इक्यूमेंटस हमसे खरीदती है। मंदी के दौर में, जब कंपनी का अस्तित्व कायम रखना यही एक चुनौती होती है, उस समय कोई भी हमसे मशीनें नहीं खरीदता है। इसलिए मंदी के दौर में हायड्रोलिक मशीनरी का उत्पाद करने वाले निर्माता बुरी तरह प्रभावित होते हैं।

मैं अच्छे लाभांश पर कार्य करता हूँ और अपने कर्मचारियों को उचित वेतन देता हूँ और हर साल उन्हें उचित बढ़ोतरी देता हूँ, लेकिन मंदी के दौर में, मैं केवल कर्मचारियों को व्यस्त रखने के लिए, शून्य लाभांश के आधार पर ऑडर्स लिए और २ साल तक उन्हें बढ़ोत्तरी नहीं दे सका। उन्होंने सोचा कि मैं बदल गया हूँ और उन्हें नज़रअंदाज कर रहा हूँ, इसलिए वे ट्रेड-युनियन में शामिल हो गए। यूनियन का नेता धूर्त था। वह मुझपर समझौता करने के लिए दबाव ड़ालने लगा। तथा जल्दी धन कमाने के लिए मेरे

विरोध में कोर्ट में केस फाईल कर दिया और दस लाख से अधिक का दावा किया।

(1995 से पहले) दो बार मैंने २५०० टन की क्षमता के जेक्स M/S Middle East Foundation Group Dubai को सप्लाई कर चुका था। जिन्हें वे पुल और ऊंची इमारतों की Foundation की जाँच के लिए प्रयोग करते थे। उन्होंने, तीसरी बार ३८ लाख रुपयों का ऑर्डर बुक किया। बैंक में लेटर ऑफ क्रेडिट (LC) खोलने में समय लगता है और उन्हें जॅक बहुत जल्दी चाहिए थे। इसलिए इस बार उन्होंने कहा, कि यदि में सहमत हूँ, तो वे भुगतान बैंक के जरिए करेंगे। मैं सहमत हो गया और उनके लिए जेक्स बनाए। लेकिन दुर्भाग्य से जिस प्रोजेक्ट के लिए वे ये इक्यूपमेंट खरीद रहे थे, वह प्रोजेक्ट रद्द हो गया। इसलिए, उन्होंने ३८ लाख रुपयों की कीमत का मेरा ऑर्डर भी रद्द कर दिया।

मंदी के कारण मैंने शून्य लाभांश पर बहुत सारे ऑर्डर लिए, लेकिन यूनियन की समस्याओं के कारण कर्मचारियों के धीरे काम करने और मेरे गलत कीमत लगाने की वजह से मुझे अनेक मशीनों में भारी नुकसान उठाना पड़ा। जब धन आना कम हो गया तो जो भी पैसा आता उसे मैंने सप्लायर्स को भुगतान करने के बजाय अपने स्टाफ और कर्मचारियों का वेतन दे दिया। इस प्रकार सप्लायर्स का बकाया भुगतान लगभग २५ लाख रुपयों तक जा पहुँचा।

मैं जाल में फंस गया था। इससे बाहर निकलने का कोई रास्ता नहीं था। राजनितिक नेता और सरकारी अफसरों के प्रभाव का प्रयोग करने के बावजूद यूनियन लीडर किसी भी तरह मानने को तैयार नहीं था।

मैंने मिडिल ईस्ट फॉउंडेशन ग्रुप (दुबई) को ऑर्डर स्वीकार करने की बहुत प्रार्थना की, लेकिन वे स्वयं भी आर्थिक समस्याओं का सामना कर रहे थे, इसलिए उन्होंने खेद प्रगट किया। माल सप्लाई करने वाले मुझे परेशान कर रहे थे। उनके शब्द थे 'कुछ भी करो पर हमारा भुगतान करो।'

२००२ मेरी फॅक्टरी कि कीमत ४० लाख से ज्याद नहीं था, इसलिए फॅक्टरी बेचकर भी में अपना कर्जा नहीं उतार सकता था। अगर मैं अपना लम्बा-चौड़ा फ्लैट भी बेच देता, तो मैं उसी तरह के दूसरे फ्लैट का किराया देने में समर्थ नहीं था। छोटा फ्लैट और निम्न-स्तर का जीवनमान मेरे परिवार की प्रतिष्ठा व विश्वास बरबाद कर देता, इसलिए ऐसा करने की भी, मैं हिम्मत नहीं कर सका।

इन चिंताओं ने मेरा वजन २० प्रतिशत कम कर दिया। मैं बहुत ही कमजोर शरीर का हूँ। मेरा वजन केवल ५२ किलो था, जो तब घटकर ४२ किलो हो गया था। जब मैंने पाया कि मेरे लिए सभी द्वार बंद हैं, तो मैं ईश्वर की ओर मुड़ा।

अगले चार महीनों तक मैंने ईश्वर की हर नमाज़ के बाद मन से प्रार्थना की, तब दयालु प्रभु ने मेरे ऊपर दया की। एक सुहानी सुबह मुझें M/s. Middle Eastm Foundation Group Dubai से फोन आया कि वे उसी ऑर्डर को पक्का कर रहे हैं और १८ लाख रुपये की कीमत के जेक्स अर्थात माल उठा लेगें।

मैंने जेक्स सप्लाई किया और भुगतान भी प्राप्त कर लिया। मेरे कर्मचारियों को समझ में आ गया कि

कोर्ट में दायर किए गए मुकदमें में कर्मचारियों का विवरण गलत और गुमराह करने वाला था। उनके यूनियन-लीडर द्वारा मुकदमा दायर करना केवल पैसा वसूल करना था। यह उनके लिए लाभदायक नहीं होगा। वे सहमत हो गए और मैंने उन्हें उनके बकाया राशी से २० प्रतिशत अधिक भुगतान किया और उन्हें नौकरी से अलग कर दिया।

फिर मैंने अपने सप्लायर्स से कहा कि अब मेरी दो समस्याएँ हल हो गई हैं और उनका भुगतान भी होगा, क्योंकि मेरी आर्थिक स्थिती सुधर गई है। अब मुझे समय दो में आप सभी का पैसा चुका दुंगा। मगर कईयों ने मुझे दु:ख भी बहुत दिया था और अपनी सप्लाई भी रोक दी थी। अगले दो वर्षों में मैंने सब बकाया रकम चुका दी।

आज भी जब उन बुरे दिनों की याद आती है तो मैं काँप उठता हूँ।

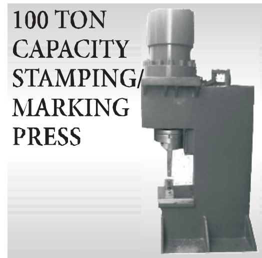
इस विनाश से ईश्वर के सिवाय कोई भी मुझे पूर्ण रुप से बचा नहीं सकता था और वास्तव में उसने ही मुझे बचा लिया।

प्रत्येक व्यापारी के जीवन में ऐसा समय जरुर आता है, जब वह समय के एक ही झटके में राजा से भिखारी हो सकता है। यह ईश्वर ही है, जो हमारे सिर पर पगड़ी कायम रखता है। और हमें बेईज़्ज़त होने से बचाता है।

व्यापार में ईश्वर की कृपा को नज़रअंदाज नहीं किया जा सकता है। उसे अपने व्यापार में साझीदार की तरह समझना चाहिए और उसका हिस्सा उसे देना चाहिए, और यह हिस्सा दान के रुप में तथा सहायता के रुप में हैं।

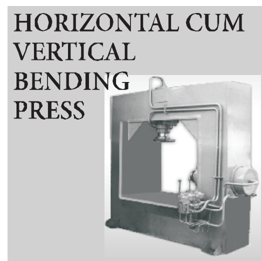
(सन 2007 में जब अगले ऑर्डर के लिए में दुबई गया था, तब M/S Middle East Foundation Group Dubai से यह बात मालूम हुई के जिस जॅक्स का ऑर्डर उन्होंने नामंजूर करके बाद में मंजूर कि थी उसी जॅक्स का प्रयोग उन्होंने दुनीया कि सबसे उंची बिल्डींग (Burj Dubai) की Foundation टेस्टींग में किया था।)



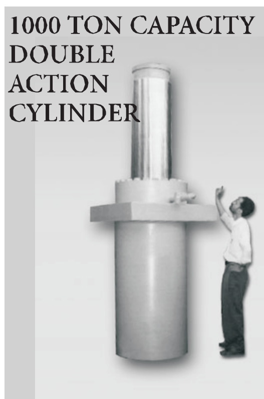


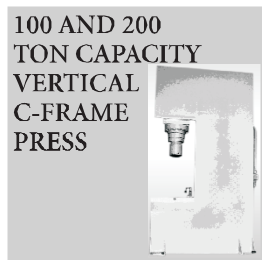
















←

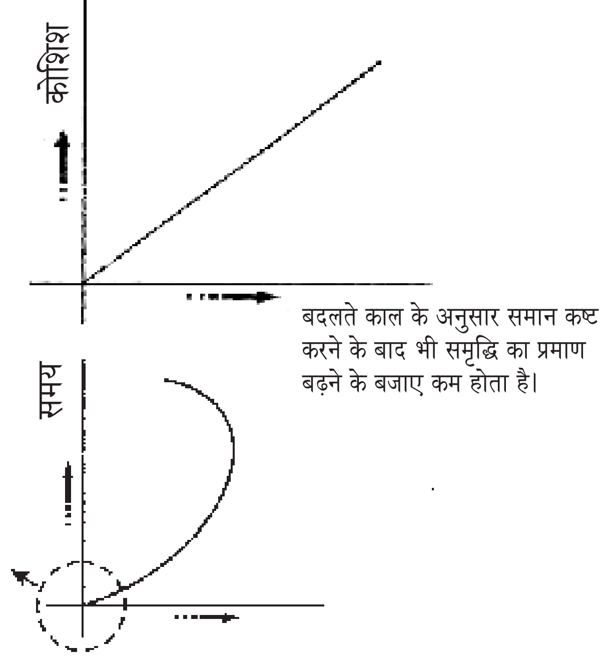
(Export order of this Jack got cancelled and re-confirmed after four months. Foundation of world's tallest building "Burj Dubai" has been tested by M/s. Middle East foundation group, using our said exported Jacks.)

PRODUCT RANGE :

Hydraulic Presses for
Transmission Industries
Hydraulic Press for Pipe Fitting Industries
Custom Build Hydraulic Press, Power Pack
Cylinder etc.

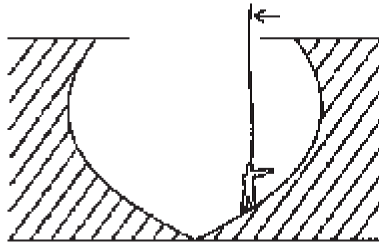
६. गरीबी का गड़ढा -:

व्यापार के सिद्धांत कॉलिज और युनिर्सिटिज में पढ़ाए जाते हैं, वास्तव में काम तब करते हैं, यदि सही तरीके से उन्हें प्रयोग में लाया जाए। तुम्हारी प्राप्ती तुम्हारी मेहनत के अनुसार होगी।



बदलते काल के अनुसार समान कष्ट करने के बाद भी समृद्धि का प्रमाण बढ़ने के बजाए कम होता है।

लेकिन यह ग्राफ बड़ी तस्वीर का एक छोटासा हिस्सा है। प्राप्ति और कष्ट का प्रमाण स्थिर नहीं रहता हैं। समय के एक निश्चित चक्र के बाद प्राप्ति स्थिर हो सकती है अथवा नीचे दिए ग्राफ के अनुसार उतनी ही कोशिश के साथ समृद्धी का नुकसान भी हो सकता है।



९ ५ प्रतिशत लोग इस गरिबी के गड्ढे में फंस जाते है और वही लोग उपर आते है जो ईश्वर के दोर का सहारा लेते है। इसलिए अच्छे कर्म किए बिना सफलता आसान नहीं है।

७. दुर्भाग्य और समृद्धि हानी के कुछ उदाहरण (Few example of misfortune and lose of prosperity)

उदाहरण १ :-

सरकार की आयत-निर्यात की नीति में परिवर्तन के साथ यथार्थ उपकरणों (Precison tools) का आयात आसान हो गया और मि.खन्ना (अध्याय-१ का उदाहरण ४) ने अपना व्यापार खो दिया। उनके बेटों को मशीनें बनाने के व्यापार में कोई रुचि नहीं थी, इसलिए उनके मशीनें बनाने के व्यापार में वह शामिल नहीं हुए। बढ़ती उम्र के कारण मि.खन्ना स्वयं भी निर्माण-कार्य के व्यापार को और आगे जारी नहीं रख सके। नए उद्योग में उनके बेटे भी कुछ अधिक नहीं कमा सके। उच्च जीवन-स्तर की आदत ने उनके जीवन को कम आमदनी से दयनीय (Miserable) बना दिया। मि.खन्ना की ब्रेन हेमरिज के कारण मृत्यु हो गई। एक परिवार जिसने मध्यम वर्ग से जीवन शुरु करके उच्च-स्तर को छुआ मगर फिर मध्यम जीवन स्तर पर आ गया।

उदाहरण २ :-

श्री.मुजावर एक अध्यापक और एक विद्वान हैं। वह कोल्हापुर के पास एक छोटे-से गाँव के गरीब परिवार के निवासी थे। उन्होंने संस्कृत का भी अध्ययन किया और विद्वान बन गए। उन्होंने बहुत प्रशंसा पायी और भारत के प्रधान मंत्री से पुरस्कार प्राप्त किया।

उनका इकलौता बेटा रियाज़ पढ़ाई में अच्छा नहीं था। मि.मुजावर ने अपनी ओर से पूरी कोशिश कि लेकिन अपने बेटे को नहीं पढ़ा सके। लगातार की मारपीट ने रियाज़ को और बिगाड़ दिया। वह दसवी कक्षा भी पास नहीं कर पाया। वह अपने पिता से नफरत करता था। प्यार में पड़ कर उसने शादी की और साँगली में अपने ससुराल वालों के साथ बस गया। आज वह एक छोटी-सी जनरल दुकान चलाता है। एक मध्यम-वर्गीय परिवार के मि.मुजावर ने थोड़े समय के लिए समृद्धि प्राप्त की और फिर अपनी पुरानी जगह पर आ गये, जो गरीबी हैं।

उदाहरण ३ :-

श्री.वेंकटेश अय्यर एक तीव्र गति से काम करनेवाला व्यक्ति था। पढ़ाई तथा स्पोर्टस में सबसे अच्छा होने के साथ-साथ उनका व्यक्तित्व भी बहुत अच्छा था। उन्हें अच्छी नौकरी मिली, बहुत तेजी से प्रगति की और अल्प समय में एरिया मार्केटिंग मैनेजर बन गये। उन्हें उंची तनख्वाह के साथ-साथ कंपनी की ओर से बँगला और कार तथा ड्रायव्हर मिला। वह हमेशा टूर पर रहते थे, वह अति महत्वाकांक्षी, लगातार सिगरेट पीने वाले तथा बहुत ही शराब पीते थे। एक दिन एक हाथ में सिगरेट और दूसरे हाथ में शराब का गिलास लेकर वह पार्टी में फर्श पर लड़खड़ा कर गिर पड़े और ४० साल की छोटी-सी उम्र में ब्रेन हेमरिज से उनकी मृत्यु हो गई। तथा अपने पीछे घर में पत्नी, दो छोटे बच्चे को छोड़ गये, जिनका आमदनी का कोई ज़रिया नहीं था। बहुत ही कम समय में समृद्धि का आनंद लेने के पश्चात अचानक उनका परिवार गरीबी में रुपांतरीत हो गया।

उपर्युक्त उदाहरण यह स्पष्ट करते है, कि कई बार कई उदाहरणों में एक निश्चित समय के पश्चात समृद्धि

प्राप्त करने में कमी आती है, या समृद्धि कि प्राप्ति स्थिर हो जाती है अथवा लोग अपने पहले वाली स्थिति में आ जाते है। अर्थात उनका परिवार अपनी उसी आर्थिक-स्थिती पर आ जाते हैं, जहाँ से उन्होंने समृद्धि प्राप्त करना शुरु किया था।

ग्राफ (चित्र नं ३) को एक गड्ढे के रुप में कल्पना किजीए। मैं इसे गरीबी का गड्ढा कहता हूँ। लोग कठिन परिश्रम करते हैं, एक निश्चित सीमा तक उन्नति करते हैं लेकिन अगर वे अपने जीवन में सफलता के सूत्रों का पालन नहीं करते हैं और महान कर्मों तथा चरित्र को जीवन में नहीं रखते हैं। तो गरीबी के गढ्ढे में गिर जाते है।

नियम बनाने वाला तथा इस सृष्टि का मालिक कहता हैं,

वे जो ईश्वर में विश्वास रखते हैं, वे ऐसा सहारा थामे हुए हैं, जिसकी पकड़ कभी टूटेगी नहीं।

(पवित्र कुरआन २-२५६ सारांश)

इसलिए जो गरीबी के गढ्ढे में गिरने से बचना चाहते है उन्हें ईश्वर को हमेशा याद रखना चाहीए।

८. क्या आप गरीबी की जंजीरों में बंधे हो?

सड़ना (Decay) तथा विनाश (Destruction) एक प्राकृतिक प्रक्रिया है। एक लोहे की पुरजे (Part) को खुले स्थान में छोड़ दों। इस में जंग लगना शुरु हो जाएगा और एक समय के पश्चात लोहा मिट्टी में बदल जाएगा। एक किले (Fort) को जितना संभव हो उतना मज़बूत बनाओ और उसे बिना देखरेख के छोड़ दो। उसकी दीवारों और बुनियादों में पेड़ और झाड़ियाँ उग आएँगी तथा कुछ सालों में यह भडभड़ा कर गिर जाएगा।

इसी प्रकार यदि समृद्धि की भी उचित देखरेख तथा सही तरीके से उसे सुरक्षित न रखा जाए, तो यह नष्ट हो जाएगी और उसका स्थान गरिबी से ले लेगी। यह एक प्राकृतिक प्रक्रिया है। इसलिए हर आदमी गरिबी से प्रभावित हो सकता है, अगर वह बेफिकर हो जाए तो।

जब एक कुत्ता पागल हो जाता है, तो लोग उसे मार डालते हैं। जब एक शेर आदमखोर हो जाता है, तो सरकार उसे मार देती है। जब तक वे संसार में शांति और मेल-मिलाप से रहते हैं, वे जीवित रहते हैं। जब वे संसार को हानी पहुँचाने लगते है तो, वे समाप्त कर दिए जाते हैं। यह एक प्राकृतिक प्रक्रिया हैं।

ईश्वर ने इस संसार और मानव समाज की रचना की है। वह व्यक्तिमात्र (इन्सानों) से उसे उससे कहीं अधिक प्यार करता है, जितना माँ अपने नवजात शिशु से करती हैं। समाज में लाखों लोग ऐसे हैं, जो पूर्ण रुप से सज्जन है और ईश्वर से ड़रने वाले हैं, लेकिन उनमें से अधिकांश आर्थिक-रुप से अधिक समृद्ध नहीं हैं। ईश्वर किसी को आर्थिक समृद्धि के आधार पर प्यार नहीं करता है, बल्कि उसकी इन्सानियत और प्रभु-भक्ति के आधार पर ही प्रेम करता है। और समाज में मध्यम-वर्ग के लोग और गरीब अधिक हैं।

प्रत्येक व्यक्ति के अंदर अच्छी और बुरी दोनों प्रकार की आदत होती है। अच्छी आदत अथवा अच्छा स्वभाव व्यक्ति को मनुष्यता एंव समाज के प्रति अच्छा करने के लिए प्रोत्साहित तथा प्रेरित करता है। जबकि बुरा स्वभाव उसे श्रमिक-वर्ग (निम्न वर्ग) को दबाने और उस पर राज्य करने के लिए भड़काता है।

भारी धन इकट्ठा करना और अपने सभी साथी प्रतियोगियों को मात देना तथा उनमें ईष्या हीनता की भावना पैदा करना, यह कार्य भी दृष्ट प्रवृत्ती मनुष्य से करती है।

यह मानव-मात्र की कमजोरी है कि वह आसानी से प्रभावित होता है। जब वह देखता हैं कि एक साथी जो उसके बराबर है लेकिन उससे अधिक धन-दौलत रखता है तो वह निराश और ईर्ष्यालु हो जाता है। यह भावना दर्दनाक है तथा यह मन की शांति को छीन लेती है। इस ईष्या की आग में वह उस सुख-समृद्धि का भी आनंद नहीं लेता है, जो ईश्वर ने उसे प्रदान की है। ईश्वर जिनसे प्यार करता है उनमें अधिकांश गरीब और मध्यम वर्ग के लोग है। ईश्वर उनके हदय में ईर्ष्याका दर्द नहीं चाहता इसलिए वह उनके कारणों को ही नष्ट कर देता है। जिस प्रकार कांटनेवाले खुंखार कुत्ते को हमेशा जंजीरों में जकड़ कर कैद में रखा जाता है, इसी प्रकार अधिक बुरे स्वभाव वाले व्यक्ति जो आम लोगों पर राज्य करना चाहते है, भारी मात्रा में धन इकटठा कर अपने सहयोगियों के ऊपर अपने श्रेष्ठता सिद्ध करना चाहता है, ईश्वर उन्हें हमेशा गरीबी की जंजीरों में जकड़ कर रखता है। क्योंकि वह ईर्ष्यां का कारण बन कर दूसरें लोगों के मन में दर्द पैदा करता है। चाहे वह किसी भी साधन से समृद्धि प्राप्त करता है, वह जितनी तीव्रता से समृद्धि प्राप्त करता है, उतनी तेजी से धन-दौलत खो भी देता है।

इसलिए समृद्ध और धनवान होने के लिए, सबसे पहले हमें अपनी बुराईयों को दबा कर नियंत्रण में रखना चाहिए। नम्र और शिष्ट रहो। अपने धन को छिपाने की कोशिश करो। गरीब और मध्यम वर्ग के लोगों को प्रभावित करने तथा अपनी श्रेष्ठता सिद्ध करने के लिए के उनके सामने अपने धन और शक्ति का प्रदर्शन मत करो। शांतिप्रिय और निर्दोष लोगों की तकलीफ का कारण कभी भी मत बनों।

महान कर्मों के बिना निरंतर (स्थायी) समृद्धि असंभव हैं।

९. पाप (Sin):-

अब्दुलाह सेठ अपनी सोसायटी में सबसे अधिक धनवान व्यक्ति था, उसके कई माल-गोदाम, टिम्बर की दुकानें तथा घर बनाने के सामान को सप्लाई करने का व्यापार था। वह इतना अधिक धन कमा रहा था, कि उसने गिनना छोड़ और यहाँ तक कि इसके बारे में चिंतित होना भी छोड़ दिया।

उसके एक दोस्त ने उसे वेश्यालय (Brothel) से परिचित कराया। उस वातावरण ने उसे बहुत आकर्षित किया और वह उनका नियमित ग्राहक बन गया। डाँस के समय अब्दुलाह सेठ अपनी मनपसंद डाँसर्स को हजारों रुपयों के उपहार दिया करता था। एक बार एक ऐसा दूसरा ग्राहक उसके सामने आया, जो उससे अधिक उपहार डांसरों को देने लगा। इससे अब्दुलाह की अहं-भावना को ठेस लगी। वह इस गलतफहमी में था कि उसके बराबर दानशील कोई नहीं है।

प्रत्येक मुजरे में मारवाडी समाज का वह ग्राहक, डाँसर्स को सेठ अब्दुलाह के उपहार से अधिक उपहार दिया करता था, और यह बात अब्दुलाह को परेशान करती थी। क्रोधित अब्दुलाह ने हजार रुपए का नोट निकाला, उसके अंदर तंबाकू रखा, इसे सिगरेट की तरह गोल किया और उसे सिगरेट कि तरह जला कर पीना शुरु किया। यह उस पर अपना प्रभाव जमाना था कि यह रुपया और पैसा उसके लिए कोई कीमत नहीं रखता। मारवाड़ी यह विश्वास करतें हैं कि धन लक्ष्मी होती है अर्थात समृद्धि की देवी और वे उसका

निरादर कभी नहीं करते हैं। इसलिए मारवाड़ी ग्राहक ने अपनी हार स्विकार कर ली और मान लिया की अब्दुलाह से अधिक दानशील उस वेश्यालय में कोई और नहीं हैं।

पवित्र गीता कहती है, समय परिवर्तनशील है। इसका अर्थ है कि समय हमेशा बदलता है, और यही अब्दुलाह के साथ हुआ। अव्यवस्था के कारण, उसका व्यापार और जायदाद टुकड़े-टुकड़े होनी शुरु हो गई। एक दिन उसके माल गोदाम और सभी दुकानें बिक गऐ और वह दिन भी आ पहुँचा कि उसके पास कुछ भी नहीं था। न पैसा न जायदाद और उसके सभी बच्चों और रिश्तेदारों ने उसे त्याग दिया।

सोसायटी के पुराने लोगों ने उस अब्दुलाह सेठ को रास्तों पर भीख मांगते हुए देखा है जो कभी अपने अहंकार के कारण किसी को सलाम नहीं करता था।

पाप समृद्धि के जहाज़ को डुबा देता है। धन को स्थायी रखने के लिए यह पाप मत करो।

ईश्वर ने मानव की रचना किस उद्देश्य के लिए कि है?

अपनी प्रार्थना के लिए! यक्ष अथवा देवदूतों की कोई आवश्यकताएँ नहीं होती हैं। उनके अपने जीवन में एक ही वस्तु है और वह प्रार्थना है! उनकी प्रार्थना इतनी महत्वपूर्ण नहीं है, जितनी हम मणुष्यों की है, क्योंकि हमारे अपने जीवन में अनेक ज़रुरते हैं और उनको पूरा करने में हम व्यस्त रहते हैं। इस व्यस्त जीवन में से प्रार्थना के लिए समय निकालना बहुत बड़ी बात है।

हम प्रार्थना नहीं करते हैं। लेकिन कम-से-कम हमें उसके विपरीत तो नहीं करना चाहीए। हमें ईश्वर के संपर्क में रहना चाहिए। न्याय ईश्वर से ही शुरु होता है और उस पर ही उसका अंत होता है। वह बहुत अधिक दयालु है। कोई किसी भी धर्म को माने, ईश्वर उसे कभी उस अपराध के लिए सज़ा नहीं देगा जो उसने किया ही ना हो। इसलिए पाप करने से बचो।

धार्मिक पुस्तकें क्या कहती हैं:-

१. मैं (ईश्वर) हर बुरे (गलत) रास्ते से नफरत करता हूँ। *(पवित्र बायबल PS ११९:१२८)*

२. मनुष्य को नम्रता पूर्वक सही रास्ते पर चलना चाहीए। *(पवित्र ऋग्वेद १०:३१:२)*

३. ईश्वर उद्दंड और अभिमानी व्यक्ति को पसंद नहीं करता हैं। *(पवित्र क़ुरआन ४:३६)*

४. ईश्वर किसी पर भी उसकी सहन-शक्ति से अधिक ज़िम्मेदारी का बोझ नहीं डालता है। प्रत्येक व्यक्ति ने जो कमाया है अथवा अच्छा कर्म किया है, उसका फल भी उसी के लिए है और जो बुरा कर्म किया है उस का फल भी उसी पर है। इसलिए हम प्रार्थना करते है, कि हे प्रभू! जो हम से भूल अथवा गलतियाँ हो जाएँ उसे क्षमा करे। *(पवित्र क़ुरआन २:२८६)*

५.जो कुछ भी तुम करोगे उसी के अनुसार तुम्हें फल मिलेगा। *(यजुर्वेद २३:१५)*

६. हे सर्वशक्तिमान प्रभू! अपनी अज्ञानता के कारण हम गलत राह पर जाते हैं और फल भूगतते हैं। कृपया हमारा मार्गदर्शन करें और हमारी सहायता करें। *(ऋग्वेद ७:८९:३)*

७. इस धरती पर और आकाश में जो कुछ भी हैं, वह सब ईश्वर का ही हैं। वह बुरे कर्म (पाप) करने वालों को सजा देता है और जो अच्छी राह पर चलते हैं उन्हें आर्शीवाद देता है। *(पवित्र कुरआन ५३ : ३१)*

८. हर सांस जुआरी को अभिशाप देती है, उसकी पत्नी उसे त्याग देती हैं और जुआरी को कोई एक पैसा भी उधार नहीं देता है। ओ जुआरी खेती कर और जुआ खेलना छोड दे, तथा जो कुछ भी तुम खेती द्वारा कमाते हो उसमें संतुष्ट रहो। *(ऋग्वेद २१४:३४:३)*

९. शराब पीने वाले अपने ऊपर से नियंत्रण खो देते हैं। वे ऐसी क्रियाएँ करते हैं जो (हे ईश्वर) आपको क्रोधित करती हैं। हे ईश्वर! आप भी इस प्रकार के लोगों की मदद नहीं करते हों। *(पवित्र ऋग्वेद २१४:१४)*

१०. जो कुछ भी तुम करते हो, वह दो फरिश्तों से रिकॉर्ड करते है और लिखते है। कयामत के दिन अर्थात न्याय के दिन तुम इस रिकॉर्ड-बुक को देखोगे। *(पवित्र कुरआन ८२:१०-१२ सारांश)*

११. हमने मनुष्य को सर्वोत्तम संरचना के साथ पैदा किया, फिर उसे उलटा फेरकर हमने सब से छोटा कर दिया, सिवाय उन लोगों के जो श्रेष्ठ कर्म करते रहें, और उनके लिए कभी समाप्त न होने वाला पुरस्कार हैं। *(पवित्र कुरआन ९५ : ५-६)*

१२. शराब पीना, जुआ खेलना, पाँसे, पत्थर फेंक कर (भविष्य जानना) इत्यादि सब गलत काम हैं और शैतान द्वारा उकसाये हुए हैं। इनसे दूर रहो, इसलिए कि तुम्हें समृद्धि प्राप्त होगी। *(पवित्र कुरआन ५:९०)*

१३. न्याय के दिन अर्थात कयामत के दिन तुम एक छोटे से छोटे पाप को भी अपने कर्म के रिकार्ड में लिखा देखोगे। और इसी तरह अगर तुमने एक छोटासा अच्छा कर्म किया होगा उसे भी वहाँ लिखा पाओगे। *(पवित्र कुरआन ९९:७-८)*

१४. उस ईश्वर से ड़रो और बुराई से बचो। *(पवित्र बायबल प्रोव्ह ३७)*

ज्ञान की पुस्तकें क्या कहती हैं?

निम्नलिखित वस्तुएँ गरीबी लाती है;

१. घरों में मकड़ी के जाले।

२. झूठी कसमें खाना।

३. व्याभिचार (अपने जिवनसाथी को छोड़ अन्य के साथ काम-क्रिया करना।)

४. सूर्यास्त के तुरंत पहले और बाद में सोना।

५. किसी भिखारी को खाली हाथ लौटाना, विशेषकर सूर्यास्त के बाद।

६. रिश्तेदारों के साथ दुर्व्यवहार और पड़ोसियों को कष्ट देना।

७. अपने बच्चों को अभिशाप देना।

८. अपने माता-पिता तथा शिक्षकों के साथ दुर्व्यवहार करना।

९. सूर्योदय के पश्चात सोना।

१०. खाने योग्य वस्तुओं का निरादर करना।

११. धार्मिक पुस्तकों का अपमान करना।

१०. प्रार्थना :- (Prayer)

एक विनाशकाय तूफानी लहर चट्टान से टकराती है और तितर-बितर हो कर बिखर जाती है, और वापिस आकर सागर में मिल जाती हैं, लेकिन चट्टानों को कुछ नहीं होता। इसके विपरीत अगर पानी की बुंद- बुंद उसी चट्टान पर अगर एक लंबे समय तक लगातार गिरती रहे तो उसमें छेद कर देती है।

इसी तरह एक छोटी-सी लेकिन नियमित प्रार्थना भाग्य-निर्माण पर गहरा प्रभाव डालती है। लेकिन हम केवल घोर-संकट के समय ही ईश्वर को याद करते हैं। हम प्रार्थना करते हैं, व्रत रखते हैं, दान देते है और सभी अच्छे काम करते हैं, और जैसे ही तकलीफें समाप्त हो जाती हैं, हम फिर अपने पहले वाली उद्देश्यविहीन जीवन-शैली की ओर मुड़ जाते हैं।

हम सबको अपने बचपन में प्रार्थना करना सिखाया जाता है। हमें इसे हमेशा करना चाहीए, क्योंकि केवल ईश्वर ही हमें और हमारे उत्तराधिकारियों की समृद्धि बढ़ाने वाला हैं। हमें हर रोज छोटी सी प्रार्थना जरुर करनी चाहीए। यह बरबादी को रोकती तथा उस से बचाती है, जो हमारी जिंदगी में शायद आने वाली थी।

आखिरी पैंगम्बर ने कहा, 'ईश्वर कहता है, ऐ लोगों, मेरी प्रार्थना में लगे रहो और मैं तुम्हें समृद्ध बनाऊँगा और तुम्हारे दुखों का अंत कर दुँगा। और यदि तुम ऐसा नहीं करते हो, तो जिवन में मैं (ईश्वर) ना तो तुम्हें कभी फूरसत का समय दूँगा और ना कभी मैं तुम्हारे पैसो की परेशानी दूर करुंगा' *(इब्ने माजा ४१०७)*

इसलिए हमें हमेशा ईश्वर की प्रार्थना करते रहना चाहीए और पवित्र अथर्ववेद में जिस प्रकार की दुआ लिखी है इसी प्रकार की दुआ मांगते रहना चाहिए।

'इंद्र क्रतुं न आ भर पिता पुत्रेभ्यो यथा।

शिक्षा णो अस्मिन् पुरुहूत यामानि जीवा ज्योतिर शीमहि।।'

हे ईश्वर! हमें धर्म की शिक्षा (Knoweldge) दें ताकि हमें इस जिवन में ही तेरा सच्चा ज्ञान प्राप्त हो। (अथर्ववेद १८:३:६७)

हे सर्व शक्तिमान प्रभु। मुझे अपना रास्ता दिखाआ, अपनी राह मुझे सिखाओ।

(पवित्र बाइबल PS २५:०४)

पवित्र आध्यात्मिक पुस्तके क्या कहती हैं?

१.जो ईश्वर पर विश्वास नहीं रखता है, वह उसका शत्रु हैं। ईश्वर अपने दुश्मनों का सब नष्ट कर देता है, जो उनके पास है। *(ऋग्वेद २-१२-५)*

२. वह महान आत्मा है, संपूर्ण और संपन्न है। वह अपने पैगम्बरों को उपदेशों के साथ भेजता है, जो गरिबों

में खुशहाली और संपन्नता लाती है। धन उस प्रभु की कृपा से ही कमाया जाता है और उसके अभिशाप से ही नष्ट हो जाता है। *(ऋग्वेद)*

३. सर्वशक्तिमान ईश्वर उन को अपने कृपा से संपन्न करता है, जो उसकी भक्ति करते हैं। वह तेजस्वी सूर्य का भी मालिक है। वह मानवीय रिश्तों को बनाए रखता है। वह आदरणीय है। वह दानशील है। वह उनका ख्याल रखता है, जो अपने घरों में उसकी प्रार्थना करते हैं। *(ऋग्वेद २-१-७)*

४. हे ईश्वर! हमें रास्ता बता, हमारा सही मार्गदर्शन कर जिसमें हमारा कल्याण हो। *(यजूर्वेद १-१-७)*

५. हे ईश्वर! आप सज्जन पुरुषों पर ही कृपा करते हैं। यही आपकी विशेषता है। *(ऋग्वेद १-१-६)*

६. वे जो नियमित रुप से प्रार्थना करते है, तथा दूसरों की मदद में दान देते हैं, ईश्वर में विश्वास रखते हैं , कयामत के दिन में उनको हम शीघ्र ही महान पुरस्कार देंगे। *(पवित्र क़ुरआन ४-६२)*

७. प्रार्थना शर्मनाक और अन्यायपूर्ण कर्मों से बचाती है। *(पवित्र क़ुरआन २९-४५)*

८. हे लोगों! तुम्हारी धन-दौलत और तुम्हारे बच्चे तुमको ईश्वर के ध्यान से हटा ना दें। यदि तुम ऐसा करते हो, तो नुकसान तुम्हारा ही होगा। *(पवित्र क़ुरआन ६३-०९)*

९. जो कुछ मैंने(ईश्वर) तुम्हें दिया है इस का आभार मानो। बदले में, मैं तुम्हें अधिक-से-अधिक दुँगा। यदि तुम मेरी नाशुक्रि करोगे, तो मेरी सज़ा कठोर है। *(पवित्र क़ुरआन १४:०७)*

१०. यदि तुम्हारा एक ईश्वर पर सच्चा विश्वास है तो केवल तुम ही सफल होओगे। *(पवित्र क़ुरआन १४-०७)*

११. सौभाग्यशाली वे हैं जो मेरे रास्ते पर चलते है। *(पवित्र बाइबल Prove ८३)*

१२. अमर जीवन ईश्वर का ही उपहार है। *(पवित्र बाइबल Prove ८३)*

१३. सत्यनिष्ठ ईमानदार व्यक्ति पाम-वृक्ष की तरह फूलते फलते हैं। (अर्थात केवल ईमानदार ही सबसे अधिक समृद्धि प्राप्त करेंगे।) *(पवित्र क़ुरआन १२-१२)*

ज्ञान की पुस्तके क्या कहती है ?

ज्ञान के पुस्तकों के अनुसार निम्नलिखित वस्तुएँ समृद्धि को बढ़ाती हैः

१. माता-पिता के प्रति बेहतर व्यवहार करें।

२. नियमित प्रार्थना और दान देना

३. ईमानदारी से व्यापार का संचालन करना।

४. सुबह जल्दी उठना (सुर्योदय से पहले)।

५. अच्छा सामाजिक जीवन गुजारना।

६.भौतिक जीवन (Materialistic life) की अपेक्षा आध्यात्मिक जीवन को अधिक महत्व देना, तथा ईश्वर में विश्वास रखना।

७. धन कमाते समय धैर्य रखना।

८. अतिथियों का आदर-स्वागत करना।

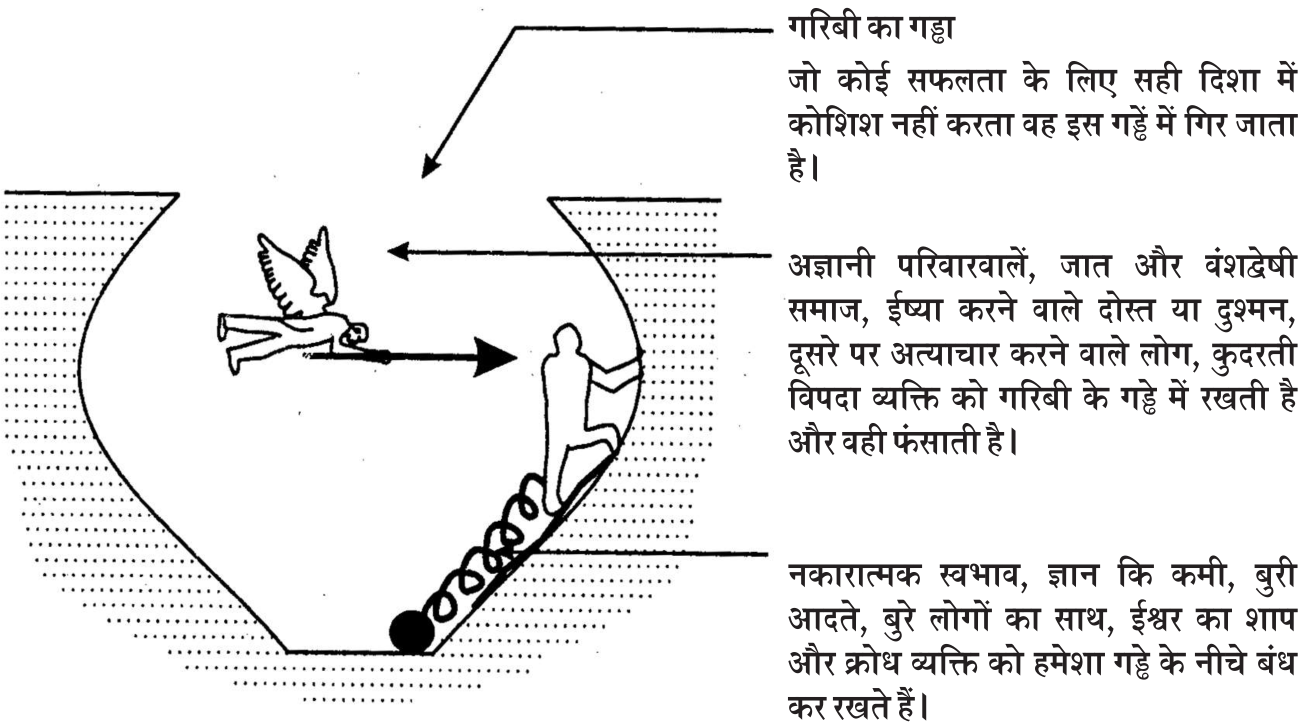
९. धार्मिक ग्रंथो का आदर करना।

१०. अपने परिवार के साथ उदारता से व्यवहार करना।

११. ईश्वर के कृतज्ञ रहना।

१२. अन्न का आदर करना और इसे बरबाद न करना।

११) गरीबी के कारणों का संक्षीप्त रुप में अहवाल:



उपर दीए गए चित्र का स्पष्टीकरण

गरिबी और उसे स्थिर रखने वाले तथ्यः-

१) गरिबी का गड्ढा-

यह एक प्राकृतिक नियम है कि जो कोई अपनी मानसिक और शारिरीक कोशिशों से अपनी सफलता और समृद्धि कायम रखने और बढ़ाने के लिए मेहनत नहीं करेगा और ईश्वर की कृपा का सहारा नहीं लेगा वह गरीबी के गड्ढे में गिरता हैं और उसमें ही फंसा रहता है।

२) नकारात्मक स्वभाव-

जिन लोगों का स्वभाव निम्नलिखीत हैं वह गरिबी की जंजीर हमेशा जकड़े रहते हैं।

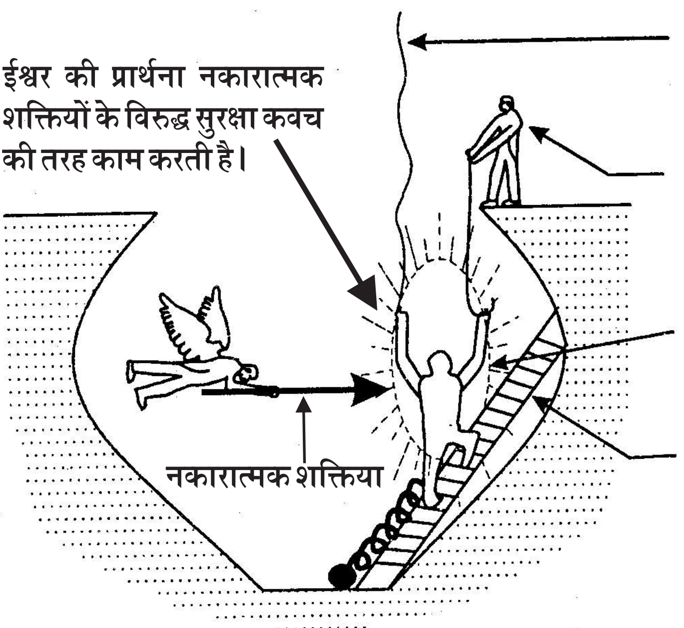
- धन और संसाधनों को बरबाद करना।
- बुरा स्वभाव यानी दूसरों को दुख देना और दूसरों का अपमान करना।
- पाप करना और ऐसी आदतें रखना जिससे ईश्वर का प्रकोप आप पर हो जाए।
- पुश्तैनी से चलती गरिबी और संकटों से बाहर आने कि कोशिश, ज्ञान और इच्छा में कमी।

३) गरीबी निर्माण करनेवाले बाहरी प्रभाव तथा तथ्य-

- असभ्य समाज या शहर में रहना।
- बुरे लोगों का साथ।
- जन्म के स्थान, जात और धर्म के आधार पर लोगों के हाथों नुकसान उठाना।
- रिश्तेदार या दोस्तों के दुश्मनी और जलन का शिकार होना।

१ २) सफलता के कारणों का संक्षिप्त अहवाल-

ईश्वर की प्रार्थना नकारात्मक शक्तियों के विरुद्ध सुरक्षा कवच की तरह काम करती है।



ईश्वर की डोर (मदत)। जो इसका आधार लेते है वह कभी भी गरीबी के गड्ढें में नहीं गिरते। (इसलिए ईश्वर पर भरोसा रखो उसकी आज्ञा का पालन किजीए। पाप करके उसके क्रोध को आमंत्रित न करें।)

धार्मिक और श्रद्धालु लोगों के आर्शिवाद (दुआ) और सकारात्मक सोच रखने वालों के साथ से गरीबी के गड्ढे से बाहर निकलने में हमें मदत मिलती हैं।

साफ मन, साफ शरीर, साफ भोजन, साफ सुथरा कार्य करने की जगह, साफ और ईमानदारी से कमाया हुआ धन, इससे बुरी चीजों से दूर रहने का संरक्षण मिलता है।

दान देना और मानवता के लिए पैसे खर्च करना यह गरीबी के गड्ढें से बाहर निकालने में सीढी की तरह सहायता करते हैं और व्यक्ति सफलता कि तरफ तेजी से बढ़ता है।

उपर दीए गए चित्र का स्पष्टीकरणः-

संपन्नता और सफलता में बढोतरी होने के कारण-

१) दान और समाजसेवा इन दो रास्तों से मानवजाती कि सेवा करने से समृद्धि तेजी से बढ़ती है। यह पुण्य के कार्य गरीबी के गड्ढे से बाहर निकलने में सीढी जैसा कार्य करते हैं।

२) सफलता के लिए प्रार्थना करने से आमदनी में बढोतरी होती है। संपूर्णतः तन, मन, धन (व्यवहार) में साफ रहने से दृष्ट प्रवृत्ति और बुरे लोगों से हमारा संरक्षण होता है।

३) ईश्वर पर पूरी निष्ठा रखकर और उनके आदेशों का पालन करके उसकी रस्सी को पकड़े रहने से समृद्धि स्थिर रहती है और व्यक्ति गरीबी के गड्ढें में गिरने से बचता है।

४) सकारात्मक सोच रखनेवाले व्यक्तियों का साथ और मातापिता तथा अन्य साधुसंतो के दुआ से सफलता और समृद्धि का कठिण सफर आसान और सरल बन जाता है। और गरीबी के गड्ढे से बाहर आने में भी मद्द मिलती हैं।

****

अध्याय-२८

दान

(Donation)

मान लो आप अपनी पत्नी और छोटी बेटी के साथ व्यापारीक-टूर पर अथवा छुट्टियाँ मनाने एक अजनबी स्थान पर गए हो। जब आप खरीददारी करते हुए सड़क पर चल रहे थे तभी अचानक कुछ डाकू पहुँचे और आपको लूटना शुरु कर दिया। तब आस-पास के लोगों से आप क्या उम्मीद रखते हों? याद रखो आप वहाँ पर बिल्कुल अजनबी हो। न तो वहाँ के सरकार को आपने टैक्स अदा किया है और न ही वहाँ आपने किसी के लिए कुछ किया है। इसलिए लोग आपको बचाने के लिए अपनी जान-जोखिम में क्यों डालें?

अगर स्वयं की रक्षा करते हुए, आपकी मृत्यु हो जाती है और आपका शरीर खून से लथपथ जमिन पर पड़ा है। आवारा कुत्ते आपके शरीर को क्षत-विशत कर रहे हों, तो आप उस समाज से, वहाँ के लोगों से क्या उम्मीद रखतें हों?

उस समाज के लोग आपका दाह-संस्कार करने में अपना धन और समय क्यों खर्च करेंगे? वे न तो आप के मित्र हैं और ना हीं रिश्तेदार।

डाकू अगर आपकी पत्नी और बेटी को वेश्यालय में बेचने के लिए ले जाएं तो वहाँ के प्रभावशाली व्यक्तियों और कानून तथा व्यवस्था से आप क्या उम्मीद करते हो? क्या वे आपकी परिवार का गलत लोगों से बचाव करेंगे? आपने न तो उनकी सरकार को टैक्स दिया है और न ही उनकी मानव अधिकार संस्था को कोई चीज़ दान दी हैं। वे आपके परिवार की रक्षा के लिए आगे क्यों आऐं?

आप दूसरों से जो उम्मीद रखते हो, क्या आपने अपनी जिंदगी में किसी हताश निराश व्यक्ति के लिए इसी स्थिती में कुछ किया हैं? वास्तव में मनुष्य-मात्र बहुत अधिक स्वार्थी है। हम दूसरों से तो बहुत अधिक उम्मीद रखते हैं, लेकिन जब अपनी बारी आती है, तो दूसरी ओर देखने लगते हैं।

शेर जंगल का राजा है। बहुत थोडे-से जानवर हैं जो उसकी ताकत को चुनौती देते हैं। केवल इसलिए नहीं कि बहुत शक्तिशाली है, बल्के इसलिए कि वे अनुशासित परिवार में रहते हैं। नर शेर कभी कभार शिकार करता हैं। वह अपना सारा ध्यान अपनी सत्ता को घुसपैठियों और दूसरे शेरों से बचाने में केंद्रीत करता है। शेरनी शिकार करती है, अपने परिवार के सभी सदस्यों को खिलाती है और अपने शिकार को बाँट कर खाती है।

शेर के बच्चों को सभी शेरनियों द्वारा स्तनपान कराया जाता है। जंगल का एक अलिखित कानून है कि 'जो सबसे अधिक तंदुरुस्त है, वही वहाँ जिवीत रहता है।' (Only fittest will survive)। परंतु शेरो के परिवार में, जो शेरनी अनुकूल नहीं है अथवा बीमार है, वह भी जिंदा रह सकती हैं। दूसरे जानवरों के बच्चे उनके माता-पिता के मरते ही भूख से मर जाते है, लेकिन शेर के बच्चे नहीं मरते। वे माता-पिता को खो देने के बाद भी अपने शेर के परिवार में रहते हैं। शेर परिवार के सभी सदस्य उस अनाथ बच्चे को

प्यार करेंगे और सभी शेरनियाँ उसे अपना दुध पिलाती हैं। पारिवारीक जीवन का यह एक नमुना है जिसे ईश्वर ने शेर जाति के लिए बनाया है। ईश्वरने मानव-मात्र के लिए इससे अधिक अच्छा तरीका बनाया था, परंतु हम मनुष्य स्वार्थी हैं, हम सियार कि तरह अकेली और धूर्ततावाली जिंदगी को प्राथमिकता देते हैं।

ईश्वर ने हमारी रचना की और उसके बाद ऐसा नहीं कहा कि, ''जाओ और एक संयुक्त परिवार में सभासद की तरह रहो'', किंतु उसने कहा, 'मानव समाज मेरा परिवार है। प्रत्येक व्यक्ति मेरे परिवार का सदस्य है।' (हदीस ????)

न्याय के दिन ईश्वर एक आदमी से पुछेगा, 'मैं भूखा प्यासा था, तुने मुझे भोजन नहीं खिलाया। मैं बीमार था, तुने मुझे भोजन नहीं खिलाया। मैं बीमार था, तूने मेरा ख्याल नहीं रखा।' वह आदमी कहेगा 'ऐ ईश्वर आपने इस संसार की रचना की है, तुम कैसे भूखे और बीमार हो सकते हो?' ईश्वर कहेगा, 'फला फला व्यक्ति भूखा था, या बीमार था, क्या तुमने उनको खिलाया था और उसकी सेवा की थी। यदि तुमने उन्हें खिलाया होता और उनकी सेवा की होती, तो तुम मुझे अपने या उनके आसपास पाते।' (हदीस)

हम अपनी संकुचित मानसिकता के कारण एक विशाल परिवार की कल्पना भी नहीं कर सकते। परंतु यह इतना आवश्यक है कि प्रभु ने इसे नज़र अंदाज करना अपराध और पाप कहा है।

ऋग्वेद में ईश्वर कहता हैं 'यदि कोई व्यक्ति अपनी कमाई अकेले खाता है, वह पाप खाता है।'

इसका अर्थ है, यदी कोई व्यक्ति अपनी कठिन मेहनत की कमाई अकेले खाता है तो यह किसी से लूटे अथवा चुराए हुए धन को खाने के बराबर है।

ईश्वर ने उस व्यक्ति को इस्लाम धर्म से बाहर किया है, जो अपनी कमाई का कुछ हिस्सा गरीबों को नहीं देता है।

ईश्वर ने अपनी दिव्य पुस्तक पवित्र कुरआन में लगभग १५० बार कहा है कि दान करो (जकात दो)। अध्याय ९ के ६० वे पद में उसने निम्न उद्देश्यों के लिए दान की रकम खर्च करने का आदेश दिया है;

१. गरीबों की मदद (जिनका आमदनी का कोई साधन नहीं है)

२.ज़रुरतमंद की मदद (आदरनीय लेकिन समाज के निम्न वर्ग के लोग)

३.उन लोगों का वेतन जो दान इक्कठा करने और बाँटने का कार्य करते हैं।

४. लोगों को महान कार्यों के लिए आकर्षित करना।

५. दासों (Slaves) को आज़ाद करना।

६. उन लोगों को मुक्त करना जो कर्ज़ के जाल में फसें हुए हैं।

७. उन लोगों की मदद करना जो यात्रा के दौरान अपना धन खो चुके है।

८. ईश्वर के संदेश का प्रचार करना। (पवित्र कुरआन ९-६०)

विश्वास धर्म का आधार और बुनियाद है। धार्मिक विश्वास बगेर देखे ईश्वर के अस्तित्व पर दृढ़ता पुर्वक विश्वास रखना है साथ ही स्वर्ग, नरक, देवदूत तथा कयामत के दिन पर भी विश्वास रखता है। वह भी बिना किसी शारीरिक सबूत के।

यदि ईश्वर, नरक और स्वर्ग प्रत्यक्ष दिखाई देने लगे तो ईश्वर पर विश्वास का कोई लाभ नहीं होगा। यह ईश्वर पर विश्वास उसकी प्रार्थना और मुक्ति प्राप्त करने के अवसर का अंत होगा। इसलिए ईश्वर के अस्तित्व और उससे संबधित अन्य वस्तुओं को सिद्ध करने के चमत्कार नियमित रुप से नहीं होते।

मान लो एक बच्चे के माता-पिता दोनों की एक दृर्घटना में मृत्यु हो जाती है, और ईश्वर उस अनाथ को पालना चाहता है। इसे वह कैसे करेगा? देवदूत दूध की बोतल अपने हाथ में लेकर नीचे कभी नहीं आएंगे। बल्कि इसके स्थान पर ईश्वर उस अनाथ के किसी सगे संबधियों की आमदनी बढ़ायेगा और उसके ज़रिए उस अनाथ का पालन-पोषण करेगा।

इसी प्रकार यदि किसी सोसायटी में एक बूढ़ी और गरीब विधवा है, जिसकी आमदनी का कोई साधन नहीं है। उसके लिए भोजन स्वर्ग से नीचे धरती पर नहीं आएगा। बल्कि ईश्वर उस विधवा के संबधियों की आमदनी बढ़ायेगा और उनके जरिए उस विधवा का पालन-पोषन करेगा। इसलिए हर व्यक्ति की आमदनी में ईश्वर का भेजा हुआ अतिरिक्त पैसा भी होता है जो असहाय लोगों कि मदद के लिए होता है। यदि एक व्यक्ति अपनी कठिन मेहनत की कमाई खाता है, तो वह उस कमाई को भी खा रहा है, जो ईश्वर ने किसी अनाथ और विधवा के लिए भेजी है। इसलिए अपनी कमाई अकेले खाना एक अनाथ और विधवा का धन खाने के बराबर ही है, जो ईश्वर ने उनके लिए भेजी है। इसलिए अपने कमाए धन को बिना किसी को बाँटे खाना, दूसरों की कमाई को खाने के बराबर है। यह धोखा है यह एक अपराध है। इसमें कोई संदेह नहीं है की यह पाप की कमाई खाने के बराबर है। ऋग्वेद में भी यही कहा गया है, और ऐसे व्यक्तियों को (कुरआन के अनुसार) धर्म से बाहर निकाल देना चाहिए।

आखिरी देवदूत ने भी कहा है;

'मुझे खुश रखने के लिए समाज के दुर्बल जनों कि सहायता करों। क्योंकि ईश्वर तुम्हें उन्हीं लोगों की वजह से मदद करता है और उन्हीं लोगों कि वजह से तुम्हें समृद्धि मिलती है।' (मस्नद अहमद १९८/५ अबु दाउद एच २५९१, १८३/७ तिर्मिजी अल जिहाद १७५४)

अपनी अतिरिक्त आमदनी का कम-से-कम २.५ प्रतिशत हर वर्ष दान करें। (हदीस)

ईश्वर जालीम नहीं है। वह इन्सानो से एक माँ की अपेक्षा ९९ प्रतिशत अधिक प्यार करता है। वह उंची आमदनी कमाने पर २.५ प्रतिशत दंड (Fine) नहीं लगाता है। बल्की जो लोग अपनी बचत का २.५ प्रतिशत धन जो की गरीबों का हक या उन को दे देते है तो ईश्वर दानी पर अपनी खास कृपा करता है। दानी व्यक्ति को ईश्वर निश्चित रुप से समृद्धि देता है। वह उसे बीमारी दुर्घटना तथा गलत रास्ते पर धन की बर्बादी से बचाता है। वह उसकी समृद्धि को कई गुना बढ़ाता है और हमेशा उसे संपन्न रखता है तथा

कभी भी उसे गरीब नही बनाता।

यह मेरा व्यक्तिगत अनुभव है कि जैसे जैसे हमारी परोपकार की भावना बढ़ती है, ईश्वर हमारी जिंदगी के स्तर में भी वृद्धि करता है। मेरे व्यक्तिगत अनुभव से आप इस बात को समझ सकते है।

किसी तरह मैंने एक हजार स्के.फीट (१००० Sq. f) का फ्लैट खरीदा। मेरी आर्थिक स्थिती इतनी अच्छी नहीं थी कि में फ्लैट की सजावट पर और अधिक पैसा खर्च कर सकूँ। फर्श बहुत ही बदसूरत था और में तीव्रता से इसे बदलना चाहता था। लेकिन मैंने पाँच साल इसी तरह हताशा में बिताए।

जेम्स नामक एक मेरा गरीब कर्मचारी शादी करने वाला था। उसने मुझसे कुछ कर्जा मांगा। उसने मेरा पहले का कर्जा वापिस नहीं किया था इसलिए मैंने उसे नया कर्जा देने से इन्कार कर दिया।

जेम्स शादी करने के लिए इतना बेकरार था कि उसने रुपया उधार लेने वाले एक व्यक्ति से संपर्क किया और प्रतिमाह ५ प्रतिशत व्याज पर कर्ज लेने के लिए सहमत हो गया। ब्याज बहुत अधिक था। मैंने महसूस किया कि जेम्स कभी भी चुका नहीं पाएगा, इसके लिए उसे अपना मकान अथवा अपने परिवार के गहने बेचने पड़ेंगे।

हालाँकि मेरी आर्थिक स्थिति बहुत खराब थी, किसी तरह मैंने उसे फिर भी धन उधार देने का प्रबंध किया। उस घटना के कुछ दिनों के पश्चात मैंने अपने फ्लैट में सुंदर कारपेट लगवाया। कारपेट की कीमत मार्बल टाईल्स के तुलना में केवल १० प्रतिशत ही थी। मैं उसे पहले दिन ही खरीद सकता था जब मैंने वह फ्लैट खरीदा था। लेकिन एक सुंदर भौतिक सुख-सुविधाओं से भरपूर फ्लैट का आनंद मेरे भाग्य में नहीं था, इसलिए जमिन पर कारपेट लगाने का ख्याल भी मेरे दिल में न आया और मैं एक सुंदर मार्बल वाले फ्लैट के सुनहरे सपने देखता रहा। लेकिन इस कर्ज़ देने की घटना के बाद जब ईश्वर ने मेरा भाग्य बदला तो मुझे उस पैसो की तंग हालात में भी भौतिक सुख सुविधाएँ, शान-शौकत और खुबसूरत कारपेट दे दिया जो मुझे बहुत अच्छा लगता है।

जब पैगम्बर मूसा (अ.स.) पर्वत पर ईश्वर से धर्म आदेश प्राप्त करने के लिए गए तो सामीरी ने लोगों को बछड़े की पूजा करने के लिए प्रेरीत किया। जब पैगंम्बर मूसा ईश्वर के धर्म आदेशों के साथ वापिस आए और उन्होंने लोगों को बछड़े की पूजा करते देखकर वह इतने अधिक क्रोधित हुए कि वे शिलालेख जिस पर ईश्वर के आदेश लिखे थे, फेंक दीए तथा जो बछड़े कि पुजा कर रहे थे उन सबको स्वयं को मारने की आज्ञा दी। लेकिन मूसा को मुख्य देवदूत जिब्राईल द्वारा कहा गया था कि सामीरी को मृत्युदंड न देना। क्योंकि सामिरी बहुत ही दानी है। (ईमाम गजाली द्वारा लिखित कीमियाए सादात, शराफत का महत्व और इसका आर्शीवाद, पृष्ठ नं ५८५)

उपरोक्त किस्सा यह सूचित है करता है कि दान देना कितना पुण्य का काम है। ऐसा दानी व्यक्ति कितनी मुल्यवान होती है। ईश्वर ऐसे व्यक्ति द्वारा किए गए घोर अपराध को भी ईश्वर क्षमा कर सकता हैं।

दान देना गरीबी के गड्ढे से बाहर निकलने की एक सीढ़ी है। यह कठिन परिश्रम से कमाई हुई समृद्धि को लंबे समय के लिए सुरक्षित रखने का सबसे अधिक विश्वसनीय साधन है। यह ईश्वर की कृपा और

आर्शिवाद प्राप्त करने का एक सबसे अधिक निश्चित साधन है। दान देना दोनों जहान (लोक-परलोक) के लिए सफलता का बीमा हैं। इसलिए यह हमारा कर्तव्य है कि अपनी आमदनी का एक छोटा सा हिस्सा समाज के गरीब लोगों को नियमित रुप से दिया करें।

ईश्वर ने उन लोगों के चरित्र की अनेक विशेषताओं का वर्णन किया है जिनके लिए स्वर्ग निश्चित है। वह उनकी विशेषताओं में से एक का वर्णन निम्न शब्दों में करता हैं

वह (भिखारी) जो खुल कर मांगते हैं और (वह समाज के गरीब किन्तु माननीय लोग) जो चुप रहते है, पवित्र लोगों के आमदनी में दोनों का हिस्सा होता है। (पवित्र कुरआन ५१:१९)

इसका अर्थ है की महान व्यक्ति अपनी आमदनी में से गरीबों को दान देते है, अथवा महान व्यक्ति नियमित रुप से दान करते हैं।

मैंने अपनी बी.ई (मॅकनिकल) की डिग्री १९८३ में ली और ७९ % मार्क प्राप्त किए। मैंने अपनी इंजीनीयरिंग की शिक्षा वालचंद कॉलिज ऑफ इंजीनियरिंग (सांगली) में पूरी की। यद्यपी मेरा शैक्षिक रिकॉर्ड बहुत अच्छा था, फिर भी में अत्याधिक कमजोर स्वास्थ और व्यक्तित्व की वजह से कही काम नहीं प्राप्त कर सका। कुछ समय के लिए में बेकार रहा, तब असहाय हो कर मैंने एक छोटे वर्कशॉप में नौकरी कर ली, जब कि मेरी कक्षा के साथी ४००० रु वेतन और अन्य लाभ ले रहे थे, मैं केवल १३५० रुपए वेतन पा रहा था। मेरा भाग्य उस वक्त बदला, जब मैंने छोटे बच्चों के लिए रात की क्लास शुरु करने का निर्णय लिया। मेरे पड़ोसी और मैंने हर महीने १५०-१५० जमा करके, एक व्यक्ति को ३०० रुपए वेतन दिए और वह शाम को एक घंटे का समय निकाल कर सोसायटी के गरीब बच्चों को पढ़ाने के लिए कहा। इसके बाद मेरे पिता और मैंने अपनी जन्मभूमि बलरामपुर (यूपी) में एक स्कूल शुरु किया। जिस में कुरआन पढ़ाया जाता है।

आज तक वह रात की क्लास एक स्थानीय ट्रस्ट द्वारा एक बड़े पैमाने पर विधिवत चलाई जाती है, और अकेला हमारा परिवार उस जन्मभुमि वाले स्कूल की आर्थिक व्यवस्था करता है। इन दोनों स्कूलों में लगभग १२० विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं।

सन १९८३ में मैं बेरोज़गार था, और २००६ में मेरी कंपनी का टर्नओवर मुंबई शहर की हायड्रोलिक प्रेस मैन्युफ्रेक्चर्स इंडस्ट्री वर्ग की कंपनीयों में सबसे अधिक था। निःसंदेह यह समृद्धि प्रभु की कृपा द्वारा ही थी। लेकिन मेरे मतानुसार वह कृपा दान और समाज-सेवा द्वारा प्राप्त हुई थी।

हो सकता है कि दान ईश्वर को बहुत पसंद है, क्योंकि यह धोखा, चोरी, शोषण, अत्याचार, घोर पापों के विपरीत हैं।

पवित्र पैंगम्बर (स.) ने कहा एक व्यक्ति अकेला यात्रा कर रहा था, रास्ते में उसे प्यास लगी, वह एक कुँए में उतरा नीचे एक कुँए के किनारे गया और पानी पीया। जब वह ऊपर आया, तो उसने एक कुत्ते को देखा, जो प्यास बुझाने के लिए गिली मिट्टी खा रहा था। वह आदमी दुबारा नीचे कुँए में उतरा और अपने चमड़े के मोज़ो (Sox) में पानी भरा, मोज़ो को अपने दातों में दबाए ऊपर आया और प्यासे कुत्ते को

पानी पिलाया।

पवित्र पैंगम्बर ने कहा ईश्वर ने उसकी मानवता के इस कर्म को स्वीकार किया और उसे स्वर्ग में प्रवेश होने का आदेश दिया। पवित्र पैगम्बर के साथी आश्चर्य चकित थे, उन्होंने पूछा

ऐ ईश्वर के देवदूत! क्या हम जानवरों कि सेवा कर के भी ईश्वर की कृपा प्राप्त कर सकते हैं? पैंगम्बर ने कहा हाँ तुम किसी भी जीवित प्राणी की सेवा करके आर्शीवाद प्राप्त कर सकते हो।' (बुखारी २३६३, मुस्लिम २२५५)

(उपर दिया हुआ हदीस संक्षीप्त में है, पूरे हदीस में पैंगम्बर ने अग्नि से निर्मीत जीन और राक्षसों को शामिल नहीं किया है।)

यदि हम गहराई से किसी भी धर्म की पुस्तक का अध्ययन करें, तो हमें मालूम होगा कि ईश्वर-रचित प्राणियों की सेवा और मानवता यह ईश्वर को प्रसन्न करने का बहुत महत्वपूर्ण तरीका है। और यह आधेमन से उद्देश-रहित किए गए धार्मिक कर्मकांडो से अधिक महत्वपूर्ण है।

एक इंजीनीयर जो हवाई जहाज का डिजाइन बनाता है और फिर उसका निर्माण करता है, वह पायलट का लायसेंस नहीं प्राप्त कर सकता है। लेकिन वह व्यक्ति जो उड़ना सीखता है और उसमें कुशल होता है वह लायसेंस प्राप्त कर सकता है। इसमें कोई संदेह नहीं कि इंजिनियर जहाज से बहुत करीब होता है क्योंकि वही जहाज को बनाने वाला है, लेकिन यदि एक इंजीनियर जहाज उड़ाने में गलती करता है तो सैकड़ों निर्दोष लोग मारे जाएंगे।

इसी प्रकार निःसंदेह एक संत अथवा धार्मिक व्यक्ति ईश्वर के नज़दिक होता है, लेकिन यदि ऐसा व्यक्ति अगर अपनी बुराईयों पर नियंत्रण करने में असफल होता है और उसने भारी रकम प्राप्त कर ली तो वह धार्मिक व्यक्ति भी निर्दोष लोगों की जिंदगी और समाज के विनाश का कारण बन सकता है।

नियमित रुप से और ईमानदारी से धन कमाना और बुद्धिमत्ता से खर्च करना एक जहाज उड़ाने के समान है। जब एक पायलट उड़ान में विशेषज्ञ हो जाता है, तभी उसे पायलट का लायसेंस मिलता है। इसी प्रकार जब कोई व्यक्ति बुद्धिमत्ता से खर्च करने में एक्सपर्ट हो जाता है वह ईश्वर से अमीर बनने का लायसेंस प्राप्त करता है।

बुद्धिमत्ता से धन खर्च करने का अर्थ है की धन को वहाँ खर्च करना, जहाँ इसकी ज़रुरत है। वह व्यक्तिगत कल्याण के लिए भी है और समाज के कल्याण के लिए भी है। ईश्वर को समाज-कल्याण और निरपराध लोगों की चिंता रहती है। इसलिए जो समाज की भलाई के लिए धन खर्च करता है, उसे शीघ्र ही अमीर बनने का लायसेंस मिल जाता है।

यह संपूर्ण विश्व ईश्वर का परिवार है। ईश्वर बहुत खुददार है। जो कुछ तुम उसके परिवार के लिए करते हो, वह तुम्हारा एहसानमंद नहीं रहेगा, बल्कि तुम्हारे किए उपकार का कही अधिक अच्छा आपको बदला देग। हमेशा अपनी क्षमतानुसार मानवता की सेवा करने के लिए संघर्ष करें। आप को भारी-रकम दान करने की जरुरत नहीं है, बल्कि हमेशा अपनी आमदनी का एक छोटा-सा हिस्सा ज़रुरत मंद लोगों के लिए दान करें। नियमित रुप से दान करें। अपना दान अपने परिवार के नज़दीकी व्यक्ति से शुरु करें और

फिर पड़ौस में। गुप्त रुप से दान करें, इसे किसी को बताएँ नहीं। अतिरिक्त लाभ का २.५ प्रतिशत प्रति वर्ष ज़रुरतमंद को अवश्य दान करें।

आध्यात्मिक पुस्तकें क्या कहती हैं?

१. वे दुखों से कभी छूटकारा नहीं पायेंगे, जो किसी गरीब अथवा अनाथ को खाना नहीं खिलाते हैं, और अकेले खाते हैं, जबकि उस के पास खाना अत्याधिक होता हैं। (पवित्र ऋग्वेद १०:११७-२)

२. दानी (व्यक्ति) अमरता को प्राप्त करता है। विनाश, ड़र और दुख उसके जीवन को छूते भी नहीं हैं। दान किया हुआ धन इन दानीयों को संसार और स्वर्ग में सुख प्रदान करता है। (पवित्र ऋग्वेद १०:१९७:८)

३. खुशी से दान देनेवाले से ईश्वर प्यार करता है। (पवित्र बायबल, २ कॉर, ६-७)

४. जब तक तुम वे चीजें ईश्वर की राह पर खर्च नहीं करते हो, जो तुम्हें प्रिय हैं, तुम नेकी की राह पर नहीं पहुँच सकते। जो कुछ भी तुम देते हो, ईश्वर उसे जानता हैं। (पवित्र कुरआन ३:१२)

५. वह व्यक्ति जो गरीब और ज़रुरतमंद की मदद करने के लिए दान करता है, वह उदारवादीयों में से एक है। उसे हमेशा लाभ प्राप्त होता है और उसका शत्रु उसका मित्र बन जाता है।(पवित्र ऋग्वेद १०:११७:२)

६. सच्चे श्रद्धालु वे हैं जो अपने कठिन-समय में भी दान करते हैं, जैसे समृद्धि की दशा में। वे अपने क्रोध पर नियंत्रण करते हैं और लोगों को क्षमा कर देते हैं। ईश्वर उनको पसंद करता है, जो दूसरों पर कृपा करते हैं। (पवित्र कुरआन ३:१३४)

७. उनके लिए बड़ी दुख और तकलीफ हैं, जो अनाथों को धक्का देकर बाहर निकालते हैं और गरीबों को खाना खिलाने के लिए प्रोत्साहित नहीं करते हैं, और जो व्याज लेते हैं। (उधार दिए हुए धन पर)
(पवित्र कुरआन १०७: २-४)

८. ईश्वर उनकी समृद्धि में वृद्धि करता है, जो दान देते हैं और उन लोंगों की समृद्धि कम करते हैं, जो व्याज लेते हैं। (उधार दिए हुए धन पर) (पवित्र कुरआन २:२७६)

९. ईश्वर एक है, वह दयालू लोगों पर कृपा करता है। (पवित्र कुरआन १:८४:७)

****

अध्याय-२९
ततफीफ
(Tatfeef)

पिछले तीन दिनों से इतनी गर्मी पड़ रही थी कि मदाअेन शहर का प्रत्येक व्यक्ति राहत पाने के लिए बेचैन था। उन्होंने अपने शहर की बाहरी सीमा पर ठंडी हवा के साथ एक काला बादल आते देखा। पूरा शहर बादल के नीचे कुछ शांति पाने के लिए दौडा। जब सभी लोग कुछ ठंडी फुहारें पाने की उम्मीद में बादल के नीचे इक्टठे हो गए, तो जोर की गड़गड़ाहट के साथ उन पर आग बरसनी शुरु हो गई, और उस शहर का प्रत्येक व्यक्ति मार दिए गए।

ईश्वर द्वारा दी गई ऐसी कठोर सज़ा के अनेक कारणों में से एक कारण 'ततफिफ' था।

'मदाअेन' सउदी अरब और सीरिया के बीच एक स्थान है। ईश्वर ने पैगंबर शोएब (अ.स.) को वहा लोगों को सिखाने और मार्गदर्शन के लिए भेजा था।

जब पैगम्बर शोएब (अ.स.) उन्हें उपदेश देते, तो वह पुछते, 'शुऐब, क्या तेरी नमाज़ तुझे यह सिखाती है कि हम उन सभी मुर्तियों को छोड़ दें जिनकी पूजा हमारे बाप-दादा करते थे? या यह कि हमको अपने कमाए हुए माल में अपनी इच्छा के अनुसार खर्च करने का कोई अधिकार नहीं? बस तू ही तो एक उदार और सच्चा आदमी रह गया है! (पवित्र कुरआन ११:८७)

उपरोक्त पद का अर्थ है कि वह लोग एक ईश्वर की पूजा करने के आदर्श विचार और आर्थिक व्यवहार के धार्मिक उपदेश से अत्याधिक झुंझलाए, और क्रोधित थे।

आर्थिक व्यापार अर्थात व्यापार में धन के बारे में दिए जाने वाले उपदेश से क्रोधित होने कारण यह था, कि वे सब व्यापारी थे अथवा किसी-न-किसी तरह व्यापार से जुड़े थे। और जब कभी भी वे व्यापार में आर्थिक लेन-देन करते, वे बेईमानी किया करते थे। वे अक्सर कम देते थे, घटिया अथवा खराब माल बेचते और जब कभी भी खरीदते तो सबसे अच्छे की उम्मीद रखते। वे निर्दोष लोंगों को धमकी भी दिया करते और अपने इलाके से गुज़रने वाले कारवाँ के लोगों को लूटते थे।

ईश्वर ने निम्नलिखीत शब्दों में उन्हें दोषी ठहराया है;

तबाही है डंडी मारनेवालों के लिए जिनका हाल यह है कि जब लोगों से लेते हैं तो पूरा-पूरा लेते हैं, और जब उनको नापकर या तौलकर देते हैं तो उन्हें घाटा देते हैं। क्या ये लोग नहीं समझते कि एक बड़े दिन ये उठाकर लाए जानेवाले हैं? उस दिन जबकि सब लोग सारे जहान के रब के सामने खड़े होंगे। (अर्थात कयामत के दिन सब को अपने कर्मों का हिसाब देना है।) (पवित्र कुरआन ८३:१-६)

ईश्वर ने कहा;

उन्होंने पैगम्बर शोएब (अ.स.) को नज़रअंदाज कर नामंजूर कर दिया, तो शुऐब ने कहा, "मेरा रब जानता है जो कुछ तुम कर रहे हो।" उन्होंने उसे झुठला दिया, आख़िरकार छतरीवाले दिन (बादल वाले दिन) का अज़ाब उनपर आ गया, और वह बड़े ही भयानक दिन का अज़ाब था। (पवित्र कुरआन २६:१८९)

दूसरे लोगों को सावधान करते हुए ईश्वर ने कहा;

और कितनी ही ऐसी बस्तियाँ हम तबाह कर चुके हैं जिनके लोग अपने जीवन-व्यापार पर इतरा गए थे। सो देख लो, वे उनके निवास-स्थान पड़े हुए हैं जिनमें उनके बाद कम ही कोई बसा है, आख़िरकार हम ही वारिस होकर रहे। (पवित्र कुरआन २८:५८)

अपने पास की लॉयब्रेरी से प्राचीन सभ्यताओं के बारे में पुस्तकें पढ़ो। उनमें से किसी भी पुस्तके में यह नहीं लिखा मिलेगा कि अनेक प्राचीन सभ्यताएँ ईश्वर के कोप के कारण बरबाद हुयी। लेकिन जब आप उनको पढ़ोगे तो महसूस करोगे कि और किसी से नहीं, ईश्वर के कोप से ही वे बरबाद हुए थे, जिस प्रकार हूद, आद, समुद तथा मदाअेन सभ्यता का विनाश हुआ था। जिनका पवित्र कुरआन, बाइबल तथा तोरात में विस्तार से वर्णन किया गया है।

ततफिफ का उचीत अर्थ क्या है?

ततफीफ का अनुवाद उन्होंने पवित्र कुरआन के अध्याय नं.८ ३ के पद नं.१ में किया है। 'कठोर सजा है, उन लोगों के लिए जो कम तौलते हैं।' वास्तव में किसी के पास ततफिफ के अर्थ के लिए सही शब्द नहीं हैं, इसलिए उन्होंने इसका अनुवाद 'कम तौलने' के अर्थ में किया हैं। वास्तव में ततफीफ का विस्तृत अर्थ है, जिसमें निम्नलिखित शामिल है।

ततफिफ में वे सब शर्ते और स्थितियाँ सम्मिलित हैं जिनमें मनुष्य जब प्राप्त करने की स्थिति में होता है तो, वह पूरा और संम्पूर्ण रुप से प्राप्त करता है, या आनंदित होता हैं, या किसी भी तरह जबरदस्ती लेता हैं, या माँग करता है, या अधिकार जमा कर लेता है। और यह लेने वाली चिज़े उसका धन, पदार्थ या सेवाएँ हो सकती है।

लेकिन जब वह देने की स्थिति में होता है अर्थात जब उसे देना होता हैं, तो उसका दृष्टिकोण अलग होता है। वह कम देता है, वह धोखा देता हैं, वह चोरी करता हैं, वह कम तौलता हैं, वह अपनी सेवा भी पूर्ण रुप से नहीं देता है, जिसका उसने वादा किया है। न ही वह अपना कर्तव्य पूरा करता है, जिसके लिए वह जिम्मेदार है और जिसके लिए उसने धन आदि भी लिया है। और धर्म के अनुसार वह घोर पापों में से एक पाप हैं।

ततफीफ के उदाहरण

आप ने एक व्यक्ति को निश्चित शर्तों और (Terms & Condition) पर काम के लिए रखा, और उन शर्तों के अनुसार उसकी सेवाएँ ली। लेकिन जब आपको उसे वेतन देना था, तो आप देरी करते हो, पैसा काटते हो, और उसे सताते हो। और अगली बार (Next time) उसका काम कम दर पर प्राप्त करने के

लिए ऑर्डर पूरा होने पर भी उसका कुछ रुपया-पैसा रोक कर किसी-न-किसी तरह उसे फसांये रखने की कोशिश करते हो। ऐसा करके एक नौकरी देने वाले मालिक के रुप में आपने 'ततफीफ' यानी एक घोर अपराध किया है।

अंतिम प्रेषित (स.) ने कहा;

'मजदूरों के मेहनताना (मज़दूरी) उनका पसीना सूखने से पहले दे दो।' *(हदीस)*

आप एक कंपनी में कर्मचारी (Worker) के रुप में कार्यभार सँभालते हो। आपके काम के बदले में और जो जिम्मेदारियाँ आप उठाओगे उस के एवज में कंपनी आपकी तनख्वाह निश्चित करती है। जब आप तनख्वाह लेने का समय आता है, तब आप एक-एक पैसा गीनकर लेते हो, लेकिन जब आपका काम करने का वक्त होता हैं, तो आप पूरे ८ घंटे काम नहीं करते हो। वादे के अनुसार आप अपना काम नहीं करते हो। जिन शर्तों और दशाओं (Terms & Condition) पर आपने एग्रीमेंट किया था, उसके अनुसार अपनी जिम्मेदारी नहीं निभाते हो, इस तरह से आप ततफिफ करते हो, जो एक घोर अपराध है।

ईश्वर ने आपको हर रोज प्रार्थना करने के लिए कहा। ईश्वर आपको कभी भी हवा, पानी, सूर्य की रोशनी और भोजन इत्यादि देना बंद नहीं करता है। लेकिन जब प्रार्थना करने की आपकी बारी आती है, तो आप चोर-रास्ता चुनते हो। या आप करते ही नहीं हो, या फिर संक्षिप्त रुप में करते हो। यह और कुछ नही बल्कि ततफीफ हैं।

ईश्वर ने कहा,

फिर तबाही है उन नमाज़ पढ़नेवालों के लिए जो अपनी नमाज़ से ग़फ़लत बरतते हैं, जो दिखावे का काम करते हैं, और साधारण ज़रूरत की चीज़ें (लोगों को) देने से कतराते हैं। *(पवित्र कुरआन १०७:४)*

आप सर्वोत्तम गुणवत्ता का उत्पाद देने का वादा करते हो और आर्डर लेते हो, लेकिन कुछ अतिरिक्त लाभ के लिए आपने माल कि गुणवत्ता में काट-छांट कि और सर्वोत्तम उत्पाद नहीं दिया। यह आपने ततफीफ किया है।

आप एक व्यापारी हो। आप किसी वस्तु को निर्माण नहीं करते हो, लेकिन आप जानते हो कि कौनसा उत्पाद घटीया अथवा नकली है। फिर आप उसे असली और सर्वोत्तम गुणवत्ता के रुप में बेचते हो। जानबुझकर आप ग्राहकों से सच्चाई छिपा रहे हो। आप उनके साथ धोखा कर रहे हो, इसलिए आप पाप कर रहे हो। यह 'ततफीफ' हैं।

आखिरी पैगम्बर हज़रत मुहम्मद (अ.स.) ने कहा;

'धोखेबाज हम में से नहीं हैं।' *(हदीस)*

इसका अर्थ है कि ऐसे लोग मुसलमान नहीं हो सकते हैं। उनके लिए नरक निश्चित है।

आप अपने पारिवारीक जीवन में, अपनी पत्नी से संपूर्ण और संतोषजनक सेवा और लाभ लेते हो। लेकिन जब उसके प्रति अपने कर्तव्य को पूरा करने का समय आता है, तो आप उसे संतोषजनक रुप से नहीं करते हो। यह ततफीफ है, एक घोर धार्मिक अपराध।

ईश्वर ने कहा,

‘पत्नी के साथ दयालुता से रहें।’ *(पवित्र कुरआन ४:१९)*

आखरी पैगम्बर ने कहा;

‘तुम में से वही सर्वोत्तम हैं, जो अपने परिवारों के लिए सबसे अच्छे हैं।’ *(हदीस तिरमीजी शरीफ)*

एक दूसरे स्थान पर वे कहते हैं,

‘अपनी पत्नी के साथ बहुत अच्छा व्यवहार करें।’ *(सहीह बुखारी)*

ततफीफ के द्वारा कमाया हुआ या बचाया हुवा धन अभिशापित धन है। ऐसे धन को अपनी मेहनत की कमाई में न मिलायें। क्योंकि यह नष्ट हो कर ही रहेगा। और जब यह नष्ट होगा तो आप की सारी समृद्धि को भी नष्ट कर देगा। और ऐसा धन कमाने या ततफिफ करने पर आप को नर्क की सज़ा भी हो सकती है।

इसलिए यदि आप दोनों जहाँन में सफलता चाहते हो तो ततफिफ से बचने की भरपूर कोशिश करो।

****

अध्याय- ३ ०
वर्जित धन
(The Prohibited Money)

आप प्रतिदिन सुबह पर्याप्त मात्रा में मलत्याग करते हो। क्या आप इसकी एक छोटी-सी मात्रा खा सकते हो? केवल एक ग्राम मात्र?

आपको उबकाई (Vomate) आने जैसा महसूस होगा। इसलिए इसे हम दूध में मिला दें हैं। यदि हम इसकी छोटी-सी मात्रा दूध के भरे हुए टँकर में मिला दें, तो फिर क्या आप इसे पी सकते हो? चलो, मैं आपको एक और विकल्प देता हूँ। किसी जानवर के मल की थोड़ी-सी मात्रा बहुत अधिक दूध में मिला दें, तो क्या आप हजम कर सकते हो?

क्या.....? आपने कहा, 'आप मल नहीं खा सकते हो!' हे ईश्वर! आप सिद्धांतवादी हो, आप अंधविश्वासी हो, आप में लचीलापन नहीं है, आप समय के साथ बदलते नहीं हो और आप पिछड़े हुए हो।

सन २००४ और २००५ के बीच में महाराष्ट्र राज्य में १५०० से अधिक किसानों ने आत्महत्या की और हर साल वे यह करते हैं। किसान आसानी से हार मानने वाले नहीं होते है। वह अकाल, बाढ़, कड़ी ठंड, और किसी भी तरह की परेशानी उनकी इच्छा शक्ति कमजोर या टूट नहीं जाती। वह इन सबका मज़बूत धैर्य से सामना करते है। लेकिन एक चीज़ उन्हे कमजोर कर इतना तोड़ देती है कि वह जीवन से अधिक मृत्यु को अपनाना बेहतर समझते हैं। ऐसा कौनसा दुर्भाग्य, घोर संकट, अथवा बोझ है जिसने उनकी इच्छा शक्ति को तोड़ डाला।

वह कर्ज़ का ब्याज़ है।

सरकार ने उनको कर्ज़ा पूर्ण रुप से अच्छे उद्देश और इस विश्वास के साथ दिया कि उनकी जिंदगी में समृद्धि-खुश्हाली आ जाए। लेकिन दुर्भाग्य से सरकारी अफसरों ने अपनी पढ़ाई के सालों में केवल अर्थशास्त्र की किताबों में पढ़ा और याद किया था। लेकिन वह यह नहीं जानते थें कि वह ईश्वर क्या कहता है? जो मूल रुप से संसार की अर्थ व्यवस्था को नियंत्रित करता है।

किसानों ने भी कर्ज़ इस विश्वास के साथ लिया था, कि दिए हुए समय में मूलधन ब्याज-सहित चुका देंगे, लेकिन वे भी ईश्वर के नियम से अनजान थे। अपने को फाँसी पर लटकाने से पहले उन्होंने धन को बचाने और कर्ज़ा चुकाने की हर संभव कोशिश की होगी। वे भुखे रहे होंगे, पुराने कपड़े पहने, अपने बच्चों और पत्नी पर कम-से-कम खर्चा किया होगा। उन्होंने खुन-पसीना जलाकर कड़ी मेहनत से कमाकर पैसा इकट्ठा किया होगा। और जब वे ब्याज जुड़ने के कारण कर्ज के बढते अभिशाप से किसी भी तरह नहीं बच सके, तो उन्होंने जीवन के बजाय मौत को गले लगा लिया। उन्होंने जिवन के इस युद्ध से हार कर आत्महत्या कर ली। और हर साल १५०० से अधिक किसान महाराष्ट में आत्महत्या करते हैं।

श्री.पटेल सोसायटी में एक धनी और माननीय व्यक्ति थे। अपने व्यापार से अच्छी खासी कमाई करते थे। उनकी इकलौती लड़की थी जिसका नाम तृप्ती था। अपनी लड़की के लिए अच्छा वर (Groom) मिलने पर उसने भारी दहेज देने की पेशकश की। उसे बहुत अच्छे प्रस्ताव मिले और उसने अपनी बेटी की शादी में भारी दहेज दिया और शादी के बाद उसकी बेटी अपने पति के साथ ससुराल में रहने लगी।

वास्तव में श्री.पटेल ने वह दहेज का रुपया बैंक से अपने फ्लैट को गिरवी रख कर कर्जा लिया था। उसने सोचा कि वह अपने व्यापार की आमदनी द्वारा धीरे-धीरे यह कर्जा चुका देगा। लेकिन श्री पटेल के स्वास्थ (Groom) की खराबी और व्यापार में मंदी के कारण व्यापार में घाटा शुरु हो गया। वह कर्जे की किश्तें समय पर नहीं चुका पा रहे थे। धीरे-धीरे बैंक वालों ने अपना धीरज खो दिया और धमकी दी कि कर्जा लौटाने में यदी देरी हुई तो फ्लैट पर कब्ज़ा लेना पड़ेगा।

फ्लैट के चले जाने के तनाव में श्री.पटेल को दिल का दौरा पड़ गया, लेकिन वह बच गए। जब तृप्ति को सच्चाई मालूम हुई तो उसे अति दुख हुआ कि उसके भविष्य को सुरक्षित करने के लिए उसके माता-पिता ने अपनी जिंदगी बरबाद कर दी।

अब उसके सामने एक बड़ा प्रश्न था कि वह बढ़ते हुए कर्जे को कैसे चुकाए ताकि उस के माता पिता को बेघर होने से बचाया जा सके। आखिरकार उसने एक अविश्वसनीय फैसला लिया। अपने पति की आज्ञा से वह अपने बीमार परेशान माता-पिता की सेवा करने के लिए वापिस आ गई, लेकिन गुप्त रुप से उसने अपने माता-पिता को बेघर होने से बचाने के लिए और कर्जा चुकाने के लिए वैश्यावृत्ति करना शुरु कर दिया। (गुप्तता के लिए नाम परिवर्तित किए है।)

अकबर ने एक निश्चित समय के लिए एक पठान (अफगानिस्तानी) से कर्जा लिया लेकिन समय पर नहीं चुका सका। हर शाम वह पठान अकबर के घर आया करता और अपने पैसे का तकाज़ा करता। जब अकबर ने उससे पैसे देन के लिए कुछ समय माँगा, तो पठान ने कहा, अपनी पत्नी को मेरे घर बर्तन माँजने और खाना बनाने के लिए भेज दो। इस तरह से आप कम-से-कम कुछ ब्याज तो अदा करोगे।

बचपन में, मेरे दोस्त मुझे बताया करते थे कि जैसे ही अकबर की पत्नी पठान के घर में प्रवेश करती, वह अन्दर से तुरंत दरवाजा बंद कर देता था। आप कल्पना कर सकते हो कि शारीरिक रुप से तगड़ा सावकार अपने कर्ज़दार की खुबसूरत पत्नी के साथ बंद दरवाजे के पीछें क्या करता होगा? और ऐसा अक्सर होता था।

सन १९९० में जब में वरली में रहता था, उस समय प्रोफीट के अतिरिक्त रकम जो मेरे घर में रखी हुई थी उसे मैंने बँक में फिक्स डिपॉझिट (F.D) कर दिया। कुछ महीनों के बाद मुझे अपने व्यापार के लिए धन की अतिआवश्यकता पड़ी। इसलिए में (F.D) तुडवाने बैंक गया। बैंक मैनेजर ने कहा (F.D) जब तक संपन्न न हो जाए, तुडवाओ मत। मैं आपको जमा रकम का ७५ प्रतिशत तक की राशी उधार देने की सुविधा करता हूँ। बैंक मैनेजर ने मुझे (Over Draft Facility) दे दी। और मैंने बैंक से अपनी जरुरत के अनुसार धन निकाल लिया तथा अपने व्यापार में लगाया। उस तारीख से चार वर्ष तक मेरे उस बैंक खाते में कभी जमा राशी नहीं थी। वह खाता हमेशा उधार (Debit) में ही रहा। जब में भांडुप रहने गया और

अपना खाता बंद करना चाहा, तो मेरे पास ओवर-ड्राफ्ट की राशी चुकाने तथा वह खाता बंद कर देने के पैसे तक नहीं थे। आखिरकार मुझे वह (F.D) तोड़कर ही बैंक से ली हुई रकम चुकानी पड़ी।

सन २००१ में मैंने ऐसे ही २४ प्रतिशत प्रतिवर्ष ब्याज की दर से सिटी बैंक से व्यापार के उद्देश्य से कर्जा ले लिया। शुरु में असुरक्षित कर्ज़ का ब्याज बहुत अधिक था। इस कर्ज का मुझे हर महीने की १८ तारीख को मासिक किश्त चुकानी थी।

यह आश्चर्यजनक बात थी कि हर महीने की पहली और सात तारीख के बीच मेरे पास अपने कर्मचारियों की तनख्वाह और सप्लायर्स को उनके माल का रुपया देने के लिए काफी धन होता था। लेकिन १८ तारीख को ज्यादातर मेरे बैंक खाते में धनराशि इतनी कम होती थी कि मुझे सिटी बैंक की मासिक किश्त चुकाने के लिए अपने दोस्तों से उधार लेने पड़ता था।

आज चार साल बाद (२००५) जब मैं मन में विश्लेषण करता हूँ, तो मैं महसूस करता हूँ कि यह ब्याज देने के कारण मुझे ईश्वर की मदद नहीं मिल रही थी और १८ तारीख को मेरा बॅलेंस शुन्य रहता था। क्योंकी ब्याज़ लेने और देने वाले दोनों पर ईश्वर की नाराज़गी रहती है।

Talk & Grow Rich के लेखक श्री.रॉन हॉलंड कहते हैं, लोग बैंक से कर्ज लेते हैं और सोचते है कि दूसरे लोगों के रुपए से अपना साम्राज्य बना सकते हैं। लेकिन जब वह अपने आप को उधार के जाल में फंसा पाते हैं, तो वे कहते हैं, Knowing what I know now, I would not borrowed the money in the first place. यानी मैं अब जो जानता हूँ अगर यह में पहले जानता होता तो में कभी भी रुपया उधार नहीं लेता। श्री.रॉन हॉलंड अपने पाठकों को राय देते हैं कि जब तक संभव हो, कर्जा न लें। और यदि आवश्यक हो, तो केवल उतना ही लें, जितना आप किसी भी समय बिना किसी कठिनाई के चुका सके। वह यह भी कहते है, Do not use money as a substitute for brain. Try to use energy and efforts instead of money.

एक अखबार की रिपोर्टः (A Newspaper Report)

समाचार पत्र 'दि टाइम्स ऑफ इंडिया' के बॉम्बें टाईम्स वर्ग में २४ जनवरी २००६ को खबर छपी कि ब्रिटेन में व्यक्तिगत कर्ज़ा (Personal Loan on Credit Card) एक ट्रिलियन पौंड के स्तर को पार कर चुका है। इसका अर्थ है कि ब्रिटेन के प्रति व्यक्ति पर औसतन २४००० पौंड का कर्जा हैं। और इस कारण ब्रिटेन की आधी जनसंख्या धन की कमी के कारण होने वाली मानसीक बीमारी के लक्षणों से पीड़ित हैं।

१९ वी शताब्दी में ग्रेट ब्रिटेन के लोगों का पूरी दुनिया पर साम्राज्य था। जो सागर की लहरों पर राज्य करने का दावा करते थे और पूरे संसार को सभ्यता का पाठ पढ़ाते थे, अब उधार के जाल में फंसें हैं। एक शताब्दी पहले हर व्यक्ति के पास बैंक-खाते में औसतन २४००० पौंड से अधिक होता होगा। अब हर व्यक्ति पर औसतन २४००० पौंड का उधार हैं। उनकी संपन्नता को क्या हुआ?

ब्याज की दलदल में उन की संपन्नता डूब गई।

आखिरी पैगम्बर ने कहा,

'ईश्वर ने उन सबको अभिशाप दिया है, जो ब्याज के रुपए का लेन-देन करते हैं।' *(हदीस)*

जो भी क्रेडिट कार्ड का प्रयोग करता है और व्यक्तिगत कर्ज लेता है, ब्याज की अच्छी खासी रकम चुकाता है। इस ब्याज का यह अभिशाप है, जिसने ब्रिटिश के लोगों के जमा-खाते को प्रति व्यक्ति २४००० पौंड उधार-खाते में बदल दिया। अत्याधिक होशियार, अत्याधिक आधुनिक, अत्याधिक सुसंस्कृत होते हुए भी कोई ईश्वर के अभिशाप से सुरक्षित नहीं रख सका। जो भी उसके आदेश का पालन नहीं करता है, उसे सज़ा होगी ही।

आध्यात्मिक कथनः (Devine Verses)

किसानों के उदाहरण से, तृप्ति और अकबर के हालात से आप समझ सकते हो कि कर्ज़ पर ब्याज के कारण हर व्यक्ति को दुःख सहना पड़ता है, इसलिए ईश्वर ने इसे वर्जित कर दिया है।

ईश्वर ने ब्याज लेना और इसे देना, दोनों को वर्जित माना है। और उसने उन सबको अभिशाप दिया है, जो ब्याज के लेन-देन में सम्मिलित हैं। कोई भी वस्तु जिसे ईश्वर ने वर्जित किया है, कभी भी लाभदायक नहीं होगी।

पवित्र कुरआन कहता हैः

ईश्वर ब्याज के धन को घटाता है और उस धन को बढाता है, जिससे दान किया जाता है। ईश्वर अहसानफरामोश और पापीयों को नहीं चाहता है। *(पवित्र कुरआन २:२७६)*

पवित्र ऋग्वेद कहता है,

ऐ ईश्वर, तुम उनकी संपत्ति को नुकसान पहुँचाते हो, जो उधार दिए धन पर अधिक और अधिक लाभ (ब्याज) लेते हैं। *(पवित्र ऋग्वेद ३:५३:१४)*

पवित्र कुरआन कहता है,

ऐ ईश्वर में विश्वास रखने वालों, ईश्वर से डरो और ब्याज का धन कितना भी महत्वपूर्ण और अच्छा क्यों न हो, उसे भूल जाओ, नहीं तो सावधान रहो, ईश्वर और उनके देवदूत तुम्हारे विरुद्ध जंग घोषित कर देंगे। यदि तुम पश्चाताप करते हो, तो तुम्हें मूलधन लेने का अधिकार है। न तो तुम्हें किसी को नुकसान पहुँचाना चाहिए, न किसी को तुम्हें नुकसान पहुँचाना चाहिए। *(पवित्र कुरआन २:२७८-२७९)*

मानो, किसी धार्मिक-स्थान जैसे मस्जिद, मंदिर अथवा चर्च में फर्श पर थोड़ी-सी मात्रा मल की है। तब पुजारी कोई समझौता नहीं करेगा और जब तक फर्श साफ नहीं हो जाता, किसी भी हालत में प्रार्थना-पूजा नहीं करेगा। इसी प्रकार रोज़ी-रोटी के लिए ईमानदारी से धन कमाना एक महान पूजा का कार्य है। यह पूर्ण रुप से साफ और पवित्र होना चाहिए। पूर्ण रुप से किसी भी बेईमानी से मुक्त, किसी ततफीफ और कोई भी वस्तु जिसे ईश्वर ने वर्जित बताया है, उससे मुक्त होनी चाहिए। इसलिए कभी भी समझौते

की दिशा में न जाए।

समृद्धि केवल ईश्वर की कृपा से ही मिलती है। ईश्वर की कृपा कभी भी हमारे उपर नही बरसेगी यदि हम उसके निर्देश को नज़र-अंदाज करते हैं अथवा कोई भी कार्य जो वह कहता है उसके विरुद्ध करते हैं।

किसानों द्वारा चुकाया गया ब्याज रुपया नहीं था, बल्कि उनका खून था। यह रुपया भुखे/बीमार रह कर, और बिना किसी सुख-सुविधा और आराम का लाभ न लेते बचाया हुआ पैसा था। तृप्ति और अकबर की पत्नी द्वारा चुकाया गया ब्याज व्यापार का लाभ नहीं था। बल्कि वह धन उन्होंने अपना शरीर बेचकर कमाया था।

बैंक का रुपया सामान्यतः साफ सुथरा होता है, लेकिन ब्याज जो वे लेते हैं अथवा कमाते हैं वह साफ-सुथरा नहीं हो होता बल्कि वह धन किसानों अथवा तृप्ति जैसे लोगों द्वारा चुकाया हुवा धन होता है। जो किसी का खुन या इज़्ज़त बेचकर कमाया हुवा होता है।

यदि आप ऐसे अपवित्र धन अपना व्यापार चलाने के लिए लेते हो, जिसका आधार ईमानदारी है, सत्यनिष्ठा, दान ईश्वर के ड़र और आज्ञा पर निर्भर है, तो क्या आपको विश्वास है कि इससे आपको लाभ होगा? इससे मुझे लाभ नहीं हुआ हैं। इससे किसानों को लाभ नहीं हुआ और ना ही यह श्री.पटेल के लिए लाभदायक रहा। इससे कभी किसी ऐसे व्यक्ति को भी लाभ नहीं होगा, जो ईश्वर और उसके आर्शिवाद पर निर्भर करता है।

जोंक और दूसरों के सहारे जीने वाले जीव दूसरों का खून चूसकर जीवित रहते हैं। इसी तरह वैश्याएं और चोर, डाकू प्राचिन काल से है। वे जीवित रहे और अपने व्यापार में भी फूले-फले। इसका अर्थ यह नहीं होता है कि उन पेशों से कमाया हुआ धन भी समृद्धि का एक रास्ता है। बल्की हम सभी जानते है की, यह रास्ता सीधा नर्क की ओर जाता है।

ईश्वर कहता है,

'ऐ मोहम्मद, इनकी धन-दौलत को न देखो, न ही इनके बच्चों को देखकर आश्चर्य-चकित होओ। ईश्वर इनको ये वस्तुएँ इस दुनिया में सजा देने के लिए ही देता है।' *(पवित्र क़ुरआन ९-५५)*

यह पद संकेत करता है कि ईश्वर गलत लोगों को अधिक और अधिक धन देकर सज़ा देता है। यदि आपको कोई संदेह है, तो उनसे पूछो जिनका इन्कम टैक्स के अधिकारीयों द्वारा पीछा किया जाता है अथवा गुंडो द्वारा वसुली (Extortion) किया जाता है। अथवा वे जो बहुत अच्छा उंचा जीवन-स्तर बनाये रखने की कोशिश करते है, जबकि उन की कोई निश्चित आमदनी नहीं होती।

ब्याज के रुपए का व्यापार और ब्याज के रुपयों द्वारा किया गया व्यापार प्रत्यक्ष रुप से अनेकों को लाभदायक दिखाई दे सकता है, लेकिन इसका अर्थ यह नहीं है कि यह सुख-समृद्धि का रास्ता है। ईश्वर से डरने वाले अर्थात ईश्वर में आस्था रखने वाले सज्जन व्यक्ति के लिए यह गरीबी का रास्ता है।

आप दूध से भरे टैंक में मल के एक छोटे से अंश से भी आप बहुत नफरत करते हो। आप वह दूध पीना नही चाहते। इसी प्रकार अपनी आमदनी में अपवित्र धन की एक छोटी सी राशि से भी नफरत करो। इसे कभी भी स्वीकार न करो। अपनी ईमानदारी की कमाई में इसे कभी भी मिलाओं नहीं। ऐसा करना मौलिक सिद्धांत (Fundamentalism) या असहनीय (Infolerance) नहीं है। यह ईश्वर के प्रति श्रद्धा है, उसकी आज्ञा का पालन है।

शारीरीक रुप से पवित्र बनो, मानसिक रुप से पवित्र बनो,आत्मिक रुप से पवित्र बनो और आर्थिक रुप से भी पवित्र बनो। संत कोई आकाश से उतर कर नहीं आते हैं। वे हम लोगों की ही तरह साधारण व्यक्ति होते है, लेकिन वे कठिन परिश्रम करते हैं, वे संघर्ष करते हैं, वे ईश्वर की मदद माँगते हैं। और निरंतर कोशिश के द्वारा अपने को अंदर और बाहर से स्वच्छ रखते हैं। इसके बाद अगर वे नही भी चाहे, तब भी मान-सन्मान और धन-संपत्ति उनके पीछे चलती है और उनके पैरों के नीचे रहती हैं।

आपके साथ यह क्यों नहीं हो सकता है? धन के पीछे मत दौडो। अपने सिद्धांतो पर कभी समझौता मत करो। सही राह पर चलने के लिए संघर्ष करो और यदि आप ऐसा करते हो, तो केवल इस संसार में ही सफलता प्राप्त नही करोगे, बल्कि मृत्यु के पश्चात के जीवन में भीआप सफल रहोगे।

****

अध्याय- ३ १
समृद्धि का बीमा
(Insurance of Prosperity)

इस पुस्तक के प्रारंभ में हमने समृद्धि अर्जित करने में मन कि भुमिका के बारे में अध्ययन किया था। एक निश्चित सीमा तक अगर हम अपने मन की स्थिती सकारात्मक बनाएँ रखे, और जिवन में पुण्य को काम रहते रहे और पाप से बचते रहे तो जो समृद्धि हमने कमायी है वह बहुत समय तक बाकी रहती है।

आपने समृद्धि के लिए अपना संघर्ष बहुत दीन-दशा से शुरु किया होगा। आपने लगातार कोशिश और ईश्वर की प्रार्थना के साथ सफलता प्राप्त की होगी। अब इस स्थिति में, यह आपके लिए आवश्यक है कि आप अपनी उस दीन-दशा को याद रखे, जहाँ से आपने सफलता का सफर शुरु किया था। तथा अपनी कड़ी-मेहनत और ईश्वर की कृपा को भी याद रखें, जिसके द्वारा आपने सफलता प्राप्त की। इससे आप में आत्मविश्वास, आस्था, दृढ़ता, इच्छा-शक्ति बढ़ेगी और आप लगातार और सफलता पाने के लिए कोशिश करते रहेंगें। इससे आप के हदय में सफलता पाने की जो ज्वलंत इच्छा है वह और बढ़ेगी। इससे जो मज़बुत आत्मविश्वास और सकारात्मक विचार आपके मन में होंगे उसकी उर्जा दूसरों को भी मिलेगी और उनको भी इस से लाभ होगा।

सफलता प्राप्त करने के बाद, यदि आप स्वयं को उँची सोसायटी के लोगों की संगत में शामिल करते हो तो, वहाँ सैकड़ों लोग आप से अधिक समृद्ध, अमीर, खुबसूरत और आकर्षक होंगे। उनकी संगत में आप स्वंय को बहुत छोटा महसूस करोगे। एक आम व्यक्ति होने के कारण द्वेष, ईर्ष्या हीनता की भावना, जल्दी धन कमाने की उतावलापण, अमीर बनने के लिए शॉटकट अपनाना और इस प्रकार की सभी भावनाएँ आपके ह्रदय में धीरे-धीरे बढ़ती जायेगी।

उसका तुरंत असर यह होगा की आपके मन की ज्वलंत ईच्छा बुझ जाएगी। इससे सच्चाई, विश्वास, दृढ़ता, सकारात्मक सोच और क्रमबद्ध सोचने की क्षमता नष्ट हो जाती है। धनी सोसायटी के सभी सदस्य दृढ़-इरादे वाले अथवा लगातार संघर्ष करने वाले नहीं होते है, बल्कि उनमें से कुछ अपने पिताओं द्वारा कमाई हुई संपत्ति के उत्तराधिकारी होते हैं और इसे धीरे-धीरे, धन बर्बाद कर रहे होते हैं। कुछ ने यह धन गलत तरीके से कमाया होता है। इस लिए वह इस समृद्धि के थोडे समय के लिए ही मालिक होते है। ईश्वर कहता है, 'मैंने उन्हें सजा देने के लिए समृद्धि दी है' (पवित्र कुरआन........) । उनमें से कुछ अमीर और प्रसिद्ध परिवारों से होते हैं, लेकिन बर्बादी की प्रक्रिया में होते हैं।

ऐसे लोगों कि संगत से आपका कभी फायदा नही होगा। जितनी जल्दी संभव हो, उनके साथ से बचें। साहसी व्यक्तियों, संघर्ष करनेवालों, आशावादी सोचनेवालो तथा आपकी तरह कठिन संघर्षवालों का समुह बनाओं और उसमें शामिल हो जाओ।

आपकी सभी समस्याएँ केवल आपकी अपनी कोशिश और ईश्वर की कृपा से ही सुलझेंगी। वे समस्याँए किसी के भी प्रभाव से, दोस्ती और उंची सोसायटी के लोगों की सिफारिश द्वारा ना कभी सुलझी है और न ही सुलझेगी।

कोई भी नुकसान में व्यापार नहीं करता है। जो कोई भी आपके कठिन समय में आपकी मदद करेगा, वह बाद में उससे ज्यादा लाभ आप से लेगा जितना आप पर खर्च किया था। इसलिए बेहतर है कि उनसे दूर रहो।

अपने दिन की शुरुआत ईश्वर की प्रार्थना से करें। प्रार्थना के अंत में कहें, हे ईश्वर! मैं कैसी दीन-दशा में था, यह आपकी कृपा ही है, जिससे मैंने यह प्राप्त किया। और इससे भी उंची स्थिति प्राप्त करने के लिए बुद्धि दे, शक्ति दें और अपनी कृपा-दृष्टि से मेरी मदद करें।

उपर दिए गए वाक्य पुनः दोहरायें और अपनी पहले की दीन स्थिति को याद करें, इससे आपके मन में दूसरे रईस और प्रसिद्ध लोगों की संपत्ति देखकर आपके मन में उतना धन पाने की इर्ष्या या कड़वाहट की भावना उत्पन्न नहीं होगी। और आपके ह्दय में ज्वलंत इच्छा हमेशा जलती रहेगी। आप अपनी समृद्धि की यात्रा को कभी भी नहीं रोकोगे, और न ही आप की कड़ी मेहनत से कमाया हुआ धन कभी बरबाद होगा।

ईश्वर पवित्र कुरआन में कहता है,

'मेरा शुक्रिया अदा करो उसके लिए, जो मैंने तुम्हें अपनी कृपा से दिया हैं। उसके बदले में मैं तुम्हें और अधिक समृद्धि दूँगा। यदि तुम इनकार करते हो, तो वास्तव में मेरी सज़ा बहुत गंभीर है।' *(पवित्र कुरआन १४:०७)*

में श्वर को उसकी अवर्णनीय उपहार के लिए धन्यवाद देता हूँ। *(पवित्र बायबल कोर ९:१५)*

सब कुछ देनेवाले ईश्वर को हमेशा धन्यवाद दें। *(पवित्र बायबल एपी एच ५:२०)*

इसलिए अपनी समृद्धि को हमेशा के लिए सुरक्षित रखने रखने के लिए नियमित रुप से ईश्वर का आभार माने और उसका शुक्र अदा करते रहे।

****

अध्याय - ३ २

स्वच्छता

(Cleanliness)

जब आप एक शीशे के रॉड को ऊनी कपडे पर रगडते हो, तो उसमें स्थायी विद्युत-धारा (static current) आ जाती है। फिर उसी रॉड को कागज के टुकडों पर घुमाऐं। उस समय कागज के टुकड़ों में अपने आप (Negative static current) निर्माण होगा और कागज के टुकड़े काच के रॉड पर चिपक जायेंगे।

यदि आप अमीर और प्रसिद्ध होते हो, तो चाहे आप का स्वभाव कितना भी मधुर हो, आप के शत्रु जरुर पैदा हो जाएँ। ऐसी स्थिती में आप सड़क पर स्वतंत्र रुप से चल नहीं सकते हो। ये साधारण तथ्य हैं, जिन्हें हम प्रतिदिन अपने जीवन में देखते हैं।

तब भी ऐसा ही घटित होता है, जब हम सही राह पर चलते हैं अथवा धार्मिक और पवित्र हो जाते हैं। जिस प्रकार इस संपूर्ण संसार में पवित्र आत्मायें और शक्तियाँ हैं, उसी प्रकार दुष्ट आत्मायें और शक्तियाँ भी हैं। जब हम नेक राह पर चलते हैं, तो वे हमारे दुश्मन हो जाते हैं। उनका उद्देश्य हमको मारना नहीं होता है, बल्कि हमें शारीरिक और मानसिक रुप से नेक-राह पर चलने से हमारा ध्यान हटाना होता है। और वे कभी भी हमें गरीबी के खड्डे से बाहर निकलने नहीं देना चाहते हैं।

जिस प्रकार हम चोटों और शत्रु से अपनी रक्षा करते हैं, उसी प्रकार हमें दुष्ट शक्तियों से भी अपना बचाव करना चाहिए। उनसे सुरक्षित रहने का सबसे प्रभावशाली तरीका है संपूर्ण रुप से स्वच्छ रहना,और अपना दिन अथवा काम के शुरु करने से पहले ईश्वर से प्रार्थना करके रक्षा और समृद्धि के लिए मदद माँगना।

स्वच्छता के बारे में आध्यात्मिक पुस्तकें क्या कहती हैं?

ऐ मोहम्मद, अपने कपडे साफ (स्वच्छ) रखें। *(पवित्र कुरआन ७४-४)*

पैंगम्बर मोहम्मद ने कहा, स्वच्छता आधा धर्म हैं। *(जन्नत कि कुंजी पेज नंबर ३)*

पाक साफ व्यक्ति के अतिरिक्त कोई भी इसे (पवित्र कुरआन) को स्पर्श न करें। *(पवित्र कुरआन ५६-७९)*

मानसिक स्वच्छताः (Cleanliness of mind)

अगर विभिन्न जाति के लोगों को और कुछ ब्राम्हण जाति के लोगों को एक साथ करके आप से पूछा जाए कि इनमें से सिर्फ ब्राम्हणों को पहचानो, तो अधिकांश मामलों में आप उनके चेहरो के तेज से पहचान लेते हो कि ब्राम्हण कौन हैं। प्रार्थना और स्वच्छ भोजन ब्राम्हणों को बुद्धिमान बनाता है और उनके चेहरे चमकते हैं।

इसलिए हमेशा स्वच्छ रहने के लिए अधिक से अधिक सावधानी बरतें और स्वच्छ भोजन खायें। मेरे अपने व्यक्तिगत मतानुसार, संपूर्ण मानसिक और शारीरिक स्वच्छता के लिए आप को निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए:

शाकाहारी बनें। यदि यह संभव नहीं हैं, तो सिर्फ मच्छी और घर में पकाया हुआ हलाल मांस यही तक अपना आहार नियंत्रित रखें। होटल में कभी-भी मांसाहारी भोजन न खाएँ।

मांसाहारी होटलों में शाकाहारी भोजन खाने से भी बचें।

शराब, नशा लाने वाली सारी चीज़े पीना बंद करें। कोई भी वस्तु जिसे ईश्वर ने वर्जित किया है, कभी आप का भला नहीं करेगी। यदि आप तनाव कम करने के लिए शराब पीते हो, तो उसके स्थान पर योगा अथवा भक्ति करनें की कोशिश करें।

GI-GO, कंम्प्युटर शब्दावली विज्ञान में इसका अर्थ है Garbage in-Garbage out। इसका अर्थ है की अगर आपने कंम्प्युटर को गलत फिडींग दिया तो रिझल्ट भी गलत ही मिलेंगे। यही दार्शनिकता आपके लिए भी काम करती है। यदि आप धोखाघडी, बेईमानी और किसी के शोषण द्वारा धन कमाते हो, ऐसे धन से खरीदा हुआ खाना खाने से आपके और आपके परिवार के मन में कभी भी रचनात्मक और पवित्र विचारों को पैदा नहीं करेगा। आप और आपका परिवार ऐसे धन से खरीदा खाना खाने के बाद केवल धोखा, बेईमानी और सब प्रकार की बुराईयों के बारे में ही सोच सकते हैं। जैसा आप बोओगे वैसा ही काटोगे। इसलिए कभी न सोचे कि धोखाधडी से कमाए हुए पैसों से सुख संपत्ति बढ़ेगी, अथवा हमेशा रहेगी। गलत तरीके से कमाया हुआ खाना खाने से कोई भी आध्यात्मिक कवच दुष्ट आत्मा से आप की सुरक्षा नहीं करेगी।

व्यापारिक लेन-देन में मोल-भाव करना और टैक्स बचाना आप का जन्माधिकार है, लेकिन इसके अतिरिक्त पूर्णतयः ईमानदार रहें।

अपने खाने के बारे में बहुत ही सावधानी रखें चाहे लोग आप को अंधविश्वासी अथवा सनकी कहने लगें। जमीन पर पड़े किसी भी लावारिस धन अथवा वस्तु को न उठायें, चाहे वह एक रुपया हो या एक हजार रुपए हों। वह व्यक्ति, जो सज्जन-पुरुष नहीं है, न उसका खाना खाओ और नाही उसका मेहमान बनो।

अपने पति अथवा पत्नी के साथ संभोग के पश्चात, बच्चे को जन्म देने के पश्चात और मासिक-धर्म में व्यक्ति नापाक होती है,ऐसी स्थितीयों में खाना खाने से पहले सफाई की बहुत सावधानी बरते।

रचनात्मक सोच या कल्पना (Constructive intelligence) एक ईश्वरीय उपहार है। एक संगीतकार किसी भी समय लोगों की माँग पर मन को स्पर्श करनेवाला प्रस्तुतीकरण नहीं कर सकता हैं। पहले वह शांत होकर अपने मन और आत्मा में प्रकृति(Mother Nature) से मधुर सुरों को ग्रहण करता है और उसके बाद वह लोगों के सामने इसे प्रस्तुत करता है। एक कवि को कागज़ पर कविता लिखने से पहले

अपने अंर्तआत्मा कि आवाज़ सुनने के लिए शांत रहकर ध्यान केंद्रित करना पड़ता हैं। संगितकार और कवि दोनों के पास ताल और कविता का शब्दकोश नहीं होता हैं, बल्कि मुख्य रुप से वे किसी ईश्वरीय देन पर या निसर्गमाता कि प्रेरणा पर निर्भर करते हैं।

इसी प्रकार सफल व्यापार के लिए रचनात्मक रुप से सोचने के लिए ईश्वर की सहायता की बहुत जरुरत पड़ती है। और यह सहायता केवल स्वच्छ रहने से ही प्राप्त होती है। इस लिए स्वच्छ रहने की हदसे ज्यादा कोशिश करें।

शारीरिक स्वच्छताः- (Cleanliness of the body)

आपके घर में टी.वी सेट और केबल-कनेक्शन तो होगा। हम टी.वी दो तारों द्वारा बिजली सप्लाई करते हैं। एक Netural और एक Phase। हम टी.वी.केबल सप्लाई भी दो तारों द्वारा देते है। परंतु ये तार अलग प्रकार के होते हैं। बिज़ली सप्लाई करने वाले दोनों तार एक दूसरे के समांतर (Parallel) होते है। जबकि केबल में एक तार टी.वी में जाता है और दूसरा तार पहले तार के चारों ओर लिपटा होता है ताकि पहले तार का बाहरी अनचाहे सिग्नल से बचाव होता रहें। लिपटा हुआ तार अर्थिंग (Earthing या बचाव कवच) का काम करता है। यदि आप केबल के सिर्फ एक तार की सप्लाई टी.वी. में दोगे तो पिक्चर साफ नहीं नज़र आऐगा स्क्रिन पर चित्र टेढ़े होगें और दूसरें अनचाहे सिग्नल भी मिलते रहेंगे।

इसी प्रकार आप की आत्मा को ईश्वर और निसर्गमाता के द्वारा लगातार सकारात्मक संदेश मिलते रहते है। इन मिलनेवाले संदेशो को अनचाहे संदेशों से रक्षण करना जरुरी है। आप का शरीर पर्याप्त रुप से दृष्ट (Evil) सिग्नलस से हमेशा सुरक्षित रहना चाहिए, ताकि आप का मन स्पष्ट रुप से सकारात्मक और ईश्वरी सिग्नलस को प्राप्त कर सके। और यह केवल पूर्णतयः शारीरिक स्वच्छता और ईश्वर के संरक्षण से ही संभव है।

शारीरिक स्वच्छता के लिए मेरे व्यक्तिगत सुझाव निम्न प्रकार से हैं।

मनुष्य-शरीर से बाहर निकलने वाला पसीना, मल, मूत्र, रक्त और वीर्य सब गंदे होते है। हम यह जानते हैं और इन्हें धोकर साफ कर देते हैं। लेकिन हम इन्हें किस तरीके से और किस सीमा तक साफ करते हैं, यह संस्कृति और धर्म पर निर्भर करता हैं।

आप सुबह से शाम तक भूखे रह सकते हो, लेकिन जब तक आप का उपवास रखने का उद्देश्य नहीं होगा तो, केवल भुखे रहने से ही आप को पुण्य प्राप्त नहीं होगा। उपवास रखकर पुण्य पाने के लिए पहले आप उपवास रखने का उद्देश्य बनाते हो और जब उपवास रखते हो तो भी उपवास में क्या करना चाहिए और क्या नहीं करना चाहिए इस बात का ख्याल रखते हो।

इसी प्रकार शारीरिक स्वच्छता और ईश्वरी संरक्षण के उद्देश से अगर आप ईश्वर ने बताए मार्ग से स्वच्छता प्राप्त करते हो, और इस बात का ख्याल रखते हो की इस स्वच्छ हालत में आप को क्या करना है और क्या नहीं। तभी आप को ईश्वरी संरक्षण मिलेगा।

हम शैम्पू अपने बालों को ठीक-हालत में रखने के लिए प्रयोग करते हैं। तीन मिनट के लिए शैम्पू लगा

रहने के बाद यदि हम अपने बाल दस मिनट तक पानी से धोते रहें और यह चाहे कि सारा शैंम्पु धोकर निकाल दें तब भी हमारे बालों में शैंम्पु का असर रहेगा और हमारे बाल मुलायम और रेशम जैसे ही रहेंगे। क्योंकि वे शैम्पू में इस्तेमाल किए रसायनों को जज्ब करते हैं और रसायन का प्रभाव बालों में २४ से ४८ घंटे तक रहता हैं।

इसी प्रकार बगलों के बाल और उदर के नीचे (जांघों) के बाल लंबे समय तक पसीने में भिगे रहते है। और पसीना गंदा होता है। इसी प्रकार संभोग करते समय उनमें वीर्य भी लगता है और माहवारी के समय खून भी। साफ-स्वच्छ होने के लिए हम स्नान करते हैं। हम बालों में चाहे कितनी भी मात्रा में साबुन और पानी लगाएँ, गंदा पसीना, वीर्य और खून का प्रभाव बालों में रहता ही है। नहाने के बाद भी गंदा प्रभाव खत्म नहीं होता है, जैसे शैम्पू का प्रभाव बालों में २४ घंटो के पहले समाप्त नहीं होता। इसलिए आध्यात्मिक स्वच्छता के लिए, बगलों और उदर के नीचे के स्थान के बाल हर पंद्रहवे-बीसवे दिन साफ करें। ४० दिन के बाद से ज्यादा देर न लगाएँ। क्योंकि उस अवधि के पश्चात बाल आध्यात्मिक रुप से गंदे समझे जायेंगे और गंदी हालत में आप की कोई प्रार्थना ईश्वर के यहाँ स्विकार नहीं होगी।

वायु में धूल के कण होते हैं, धुल के कणों में हर तरह की चीज़ों के महीन कण होते हैं। यहाँ तक की उनमें जानवर का मल और मनुष्य के मल के कण भी हो सकते हैं। और ड्रैनस तथा गटर के गंदे कण भी हो सकते हैं। हवा हमारे सिर के बालों में इन धूल के कणों को गहराई तक ले जाती है। ऐसे गंदे कणों से पूर्ण रुप से स्वच्छ रहने के लिए, साधु-सन्यासी, हिंदु पंडीत अपने सर के बाल मुंढा देते है और मुसलमान तथा सिख अपने सिर पर टोपी अथवा पगडी पहनते हैं। आप ऐसी गंदगी से स्वच्छ रहने के लिए अपने तरीके के अनुसार सावधानी बरतें।

हम प्रतिदिन स्नान करते हैं। जब कभी भी हम शौचालय जाते हैं, हम मल को धोने की पूरी सावधानी रखते हैं। लेकिन हम यूरिन से हमेशा लापरवाह रहते हैं। यदि यूरिन की एक बूंद भी मस्जिद, चर्च अथवा मंदिर के फर्श पर गिरती है और यदि पुजारी इसे जानता है, तो क्या वह इसे साफ किए बिना प्रार्थना करेगा? नहीं। यदि यह इतनी गंदी है, तो आप इसे अपने अंडरवियर में क्यों गिरने देते हो? और फिर भी सोचते हो कि आप स्वच्छ हो और प्रार्थना अथवा ईश्वर की सहायता और बचाव के योग्य हो?

जिस प्रकार आप मल साफ करते हो, उसी प्रकार मूत्र भी साफ करें तथा ध्यान रखें कि एक बुंद भी आप के कपड़ो और शरीर पर न गिरे। यदि आप के कपड़ो और अंडरवियर में लगा हुआ है, तो हाथ और मुँह धोने के बाद भी आप आध्यात्मिक रुप से स्वच्छ नहीं हो सकते हो। इस बात की सावधानी बरतें कि आप के वस्त्र और अंडरवियर मल मुत्र से पूर्णतयः स्वच्छ रहें।

इसलिए मुत्र-त्याग बैठने की स्थिती में करें और कुछ समय इंतजार करें,ताकि मुत्र की अंतिम बूंद भी बाहर आजाऐं और फिर इसे टिश्यु-पेपर से सुखाले अथवा पानी से धोयें, इससे आप पूरी तरह स्वच्छ हो जाऐंगें।

निम्नलिखित दशाओं के पश्चात स्नान करना आवश्यक है।

अ. बच्चे को जन्म देने के पश्चात स्नान करना (जब रक्तस्राव बंद होता है अथवा ४० दिन के पश्चात)।

ब. मासिक धर्म के समय के पश्चात।

क. संभोग के पश्चात।

आध्यात्मिक पवित्रता के लिए, साफ-सुधरे स्नानगृह में नहाना चाहिए। फर्श पर गिरती हुई पानी की बुंदे, आप को फिर से गंदा न करें।

अ. अपने शरीर से सारा रक्त, वीर्य, मल-मूत्र और पसीना इत्यादी साफ करने के पश्चात ही नहाना शुरु करें।

ब. पहलें कुल्ला करें और मुँह साफ करें।

क. उस के बाद अपने नथुनों को नाक के मुलायम हिस्से तक धोयें।

ड. फिर पूरे शरीर पर पानी डालें तथा धोयें। शरीर का कोई भी हिस्सा सूखा नहीं रहना चाहिए।

यदि आप के लिए किसी कारण स्नान करना संभव नहीं है तो, स्वयं को आध्यात्मिक रुप से स्वच्छ करने के लिए निम्नलिखित साधन अपनाएँ-:

अ. स्वच्छ-स्थान पर बैठें। फर्श पर पानी गिरने से जो पानी के छींटे उड़ते हैं उनसे आपके वस्त्र गंदे नहीं होने चाहिए।

ब. कलाई तक अपने हाथ धोयें। तीन बार कुल्ला करें।

क. नथुनों को पानी से, नाक में कोमल स्थान तक तीन बार धोयें।

ड. पूरे चेहरे को तीन बार धोयें।

ई. प्रत्येक हाथ को कोहनियों तक फिर तीन बार धोयें।

फ. माथे से सिर के पिछले हिस्से तक अपने गीले हाथ सिर और बालों पर फेरें।

ज. अपने पैर टुखनों (Ankle) के जोड़ो तक तीन बार धोयें।

उपर दी गई प्रक्रिया वजु कहलाती है। इस स्थिती में एक अध्यात्मिक-कवच आपकी रक्षा करेगा और आप शांति महसूस करोगे।

सभी पवित्र पुस्तकों को केवल वजु के पश्चात ही छूना अथवा हाथ लगाना चाहिए अथवा हाथ में लेना चाहिए।

निम्नलिखित अवस्थाओं में वजु अमान्य हो जाता है:-

१. मल-मुत्र, गैस, वीर्य, अथवा रक्त निकलने अथवा त्यागने पर।

२. वमन करने पर। (Vomiting)

३. घाव से खून बहना।

४. निद्रा।

कार्य-स्थल की स्वच्छताः- (**Cleanliness of the work place**)

हम प्रार्थना करने के लिए मस्जिद, मंदिर अथवा चर्च जाने को प्राथमिकता देते हैं। लेकिन ईश्वर वहाँ नहीं रहता है। फिर हम वहाँ क्यों जाना चाहते हैं? इसका कारण यह हैं कि वे स्थान पूर्णतयः स्वच्छ होते हैं और जैसे ही हम वहाँ प्रवेश करते हैं, हम शांति महसूस करते हैं और प्रार्थना करते की इच्छा होती है।

हमारा कार्यस्थल भी एक पूजा-स्थल हैं। अपने परिवार के लिए ईमानदारी से रोजी-रोटी कमाना सबसे अधिक पवित्र कार्य है। इसलिए हमें वे सब सावधानियाँ बरतनी चाहिएं जो हम पूजा-स्थल के लिए करते हैं।

शराब पीना, काम-वासना में लिप्त रहना, तथा अश्लील तस्वीरें देखना और गाने सुनना, व्याभिचार और गाली गलौज करना इत्यादि इन सबका पूर्णतयः निषेध होना चाहिए। सामान्यतः जो कुछ भी हम पूजा स्थल पर नहीं करते हैं और नहीं रखते हैं, ऐसी चीज़े या कार्य काम करने कि जगह पर नहीं करना चाहिए या नही रखना चाहिए।

पवित्र आत्माएँ और आध्यात्मिक शक्ति आप की सहायता कर सकती हैं, यदि आप के चारों और का वातावरण उनके पक्ष में हो अर्थात उनकी इच्छानुसार हो। कार्य-स्थान को अच्छी तरह साफ रखें और वातावरण को प्रसन्न रखने के लिए सुबह और शाम को सुंगधित धुप अगरबत्ती जलायें।

जब कभी भी आप कार्य-स्थल पर काम करने के लिए आते हो, पहले सुगंधित अगरबत्ती जलायें, फिर कुछ प्रार्थना करें और प्रभु से अपनी सफलता के साथ-साथ प्राणी-मात्र की शांति और समृद्धि के लिए प्रार्थना करें। फिर अपना कार्य शुरु करें।

यदि आप स्वच्छ खाना खाते हो, शारीरिक रुप से स्वच्छ रहते हो, कार्य-स्थल को साफ सुथरा रखते हो, अपना काम प्रार्थना के साथ शुरु करते हो और अपना व्यापार क्रमबद्ध तरीके से तथा ईमानदारी के साथ करते हो, तो यह निश्चित है कि आप और आप के वारिस कभी भी पतन नहीं देखेंगे। यह इसलिए हो सकता है क्योंकि आप ने उस ईश्वर की ड़ोर मजबुती से पकड़ी है, जो इस संसार के साथ-साथ पूरे ब्रम्हाँड पर शासन करता हैं।

****

भाग-४

असफलता के सामान्य कारण

यदि आप एक दूध के कटोरे में शक्कर मिलाते हो, तो उसका स्वाद अच्छा हो जाएगा। यदि आप सूखे-मेवे दुध में ड़ालते हो, तो स्वाद और बढ़ जायेगा। यदि आप दुध में केसर मिलाते हो तो सुगंध भी बढ़ जायेगी। यदि ये सब चीज़े मिलाने के पश्चात आप दुध में एक बूंद नींबू का रस मिलाते हो तो क्या होगा? वह दूध खट्टा हो जायेगा और आपको सारी चिज़े बाहर फेंकनी पड़ेगी।

एक इलैक्ट्रौनिक सर्किट ड़िज़ॉइन करें, विशेषज्ञ के मार्गदर्शन में काम करें, सबसे अच्छी गुणवत्ता वाले पुजें खरीदें और सबसे अच्छी व आधुनिक लैब में जोड़े। जब आपका इलैक्टोनिक सर्किट काम करना शुरु कर देता है, तो उसके ऊपर एक बुंद पानी डालें। क्या होगा? शॉर्ट सर्किट के कारण सब कुछ जल जाएगा।

एक विषय का पूरी तरह से अध्ययन करें। परीक्षा में सम्मिलित होओ। सभी प्रश्नों के उत्तर लिखें। बस सिर्फ अपना पहचान नंबर लिखने में एक छोटी-सी गलती करें। क्या होगा? आप की मार्कशीट में नंबर नहीं दिए जायेंगे।

एक छोटी-सी गलती पूरी कोशिश को बर्बाद कर सकती है। सफलता के संघर्ष में भी यही होता है। एक व्यक्ति सफलता की सभी प्रक्रियाएँ और नियमों का पालन करता हैं और एक छोटी-सी गलती कर देता हैं, जो उसके लिए महत्वहीन अथवा इतनी मुख्य नहीं होती हैं। और वह जीवन के आखिर तक असफल ही रहता हैं। वह अपने भाग्य को दोष देता है, लेकिन अपनी स्वयं की गलती को नहीं समझता है।

कुछ गलतियाँ है, जिन्हें करने के बाद कोई कभी भी वास्तव में सफल नहीं हो सकता है,निम्नलिखित हैंः-

****

अध्याय - ३ ३

तीन महापाप

(The Three Great Sins)

ब्रम्हांड, प्रकृति और संसार जिसे हम अपने चारों ओर देखते हैं, लाखों साल पुराने हैं। इतने लम्बें समय में भी इसका पतन नहीं हुआ है और अभी भी यह बिल्कुल सही अवस्था में तथा काम करने की दशा में हैं, क्योंकि इसकी अपनी एक सुरक्षा पद्धती है। जब कभी भी इन में विनाश का कार्य या कोई दुर्घटना होती है, तो इसे भरने के लिए विकास की प्रक्रिया स्वतः विकसित हो जाती है। उदाहरण कि लिए, बिजली अथवा आग जंगल को जला देती है। वायु फिर लंबी दूरी से बीज लाती है और वर्षा फिर जंगल को हरा-भरा कर देती है।

आग के जलने से आसपास के वातावरण में आक्सीजन कम होता है, हरीभरी पत्तियाँ Photosynthesis प्रक्रीया द्वारा फिर से उसका निर्माण करके ऑक्सीजन की कमी को पूरा करते है। इसी प्रकार मनुष्य का जीवन-काल लगभग ७० वर्ष है। इतने लंबे समय तक जीने के लिए, प्रकृति ने मनुष्य शरीर में एक स्वसरंक्षण पद्धति की रचना की है। जब एक वाइरस अथवा जीवाणु बाहर से हमारे शरीर पर आक्रमण करता है, तो सफेद रक्तकण खून में स्वयंः बढ़ने लगते हैं, जो वाइरस और बैक्टिरिया से लड़ते हैं और शरीर को स्वस्थ रखनें में मदद करते हैं।

जब एक कुत्ता घायल होता है, तो उसके घाव तुरंत नहीं भरते हैं। कई बार मैंने उनके घाव में कीड़े देखे हैं। लेकिन कुछ समय पश्चात प्रकृति की वही प्रतिरक्षात्मक पद्धति कुत्ते के सड़े हुए घाव को भी भर देती है। कुछ कुत्ते मर जाते हैं। लेकिन कई बच जाते हैं। इस घाव भरने की प्राकृतिक प्रक्रिया को हम सब अपने दैनिक जीवन में देखते और समझते है।

मानव-संस्कृति अथवा समाज भी मनुष्य-शरीर की तरह है। इसकी भी प्रतिरक्षात्मक पद्धति है। ब्रम्हांड (अखिल विश्व) में नकारात्मक और सकारात्मक शक्ति (Negative & Positive energy of cosmos) और कंपन एक जटील पद्धति (Complex system of vibration) है, जिसको समझना और उसकी व्याख्या करना बहुत कठिन है। लेकिन वे विद्यमान हैं और कार्य करती हैं। ऐसा कोई भी विनाशकारी कार्य जो मनुष्यों और उनके समाज की शाँत और प्रगतिशील जीवन-शैली की व्यवस्था में बाधा डालता है, धीरे-धीरे अंत को प्राप्त होगा। प्रकृति की जटिल प्रतिरक्षात्मक पद्धति बाधा डालने वाले तथ्यों को कमजोर करती हैं, और व्यवस्था, शांति, और प्रगतिशील जीवन-शैली को मज़बूत बनाती हैं।

ब्रिटिश साम्राज्य विशाल और शक्तिशाली था। ब्रिटेन को किस देश ने हराया? किसी ने नहीं। फिर उनकी श्रेष्ठता को क्या हुआ? वे टुकड़े-टुकड़े क्यों हो गए? वास्तव में वे स्वार्थी और निर्दयी उद्देश के साथ संसार पर राज्य करते थे। उन्होंने साधारण लोगों पर अमानुषिक नियम लागू कर रखा था। इसलिए बिना हराये ही, प्रकृति ने उन के पंख काट दिए। आज ब्रिटेन युरोप के पश्चिमी समुद्री तट का एक सामान्य देश मात्र हैं।

यही सत्य विशाल रशिया देश का भी है, जिसकी शक्ति शाली फौज इस दुनिया को कई बार नष्ट करने के लिए काफी थी। रशिया के विघटन के समय उसी मिलटरी के पास खाने के लिए पर्याप्त खाना भी नहीं था। रशिया को किसने खंडित किया? यह वही प्रकृति की प्रतिरक्षात्मक पद्धति थी। रशिया के साम्यवादी कानून समाज में शांत और प्रगतिशील जीवन व्यवस्था में मदद नहीं करते थे। वे सभी धर्मों के पूजा-स्थलों को बंद कर देते थे, कड़ी मेहनत से कमाई हुई दौलत से अपनी जायदाद बनाने के अधिकार को नहीं मानते थे। भाषण के अधिकार और विचारों की अभिव्यक्ति को नहीं मानते थे, स्वतंत्रता से संचार करने की आजादी नहीं थी। इसलिए प्रकृति ने उन्हें वापिस पुरानी जगह पर रख दिया। कुत्ते का घाव जैसे शुरु में बढ़ जाता है फिर सड़ जाता है और आखिर में भर जाता है उसी तरह सभी शक्तिशाली शासक, जिन्होंने भी इस धरती पर निर्दयता और अमानुष्यता के साथ शासन किया, शुरु में एक निश्चित सीमा तक तरक्की की और आखिरकार बिखरे-टूटे तथा बर्बाद हो गए।

व्यक्ति के प्रति दिन की जिंदगी में भी और व्यक्तिगत स्तर पर भी इसी प्रकार का नियम काम करता है। जो प्रेम करने वाले सहनशील, ईमानदार और परिश्रमी हैं, सामान्यतः जो शांतिपूर्ण रहते हैं तथा समाज की उन्नति करने तथा व्यवस्था में शांति रखने में मदद करते हैं केवल ऐसे लोगों के लिए ही विश्व की प्रतिरक्षात्मक पद्धति उनके प्रगति और समृद्धि में मदद करती है। और जो कोई भी इसमें बाधा डालता है, कुत्ते के सड़े हुए घाव की तरह वह कुछ समय के लिए जीवित रहता है, कुछ समय के लिए तरक्की भी करेगा, लेकिन अंततः धीरे-धीरे खत्म हो जाता है और बर्बाद हो जाता है।

यदि आप भष्ट, सांप्रदायिक अथवा अपराधी हो अथवा किसी भी तरह से समाज का शोषण कर रहे हो और समाज को कोई भी लाभ नहीं दे रहे हो, तो आप समाज के शरीर में वायरस अथवा किटाणु की तरह हो। ब्रम्हांड की प्रतिरक्षात्मक पद्धति आप के विरोध में कार्य करेगी। कुछ थोड़े समय के लिए हो सकता है की आप बचे रह सकोगे, अथवा फूलोगे-फूलोगे, लेकिन अंततः आप बिखर जाओगे और नष्ट हो जाओगे, और आप की आसानी से कमाई हुई समृद्धि गंदे पानी की तरह बह जाएगी। ध्यान रखें सफलता का नियम आप की कभी मदद नहीं करेगा, यदि आप तीन महापापीयों के समुह से हो अर्थात भ्रष्ट, सम्प्रादायिक और अपराधी हो।

अपनी आखरी वाणी में ईश्वर कहता हैं।

'वे जो प्राणी मात्र के लिए लाभदायी रहते हैं, वे धरती के पर बहते वर्षा के जमा पानी की तरह बाकी रहते हैं और वे जो प्राणी-मात्र के लिए लाभदायी नहीं हैं, वर्षा के बहते पानी की ऊपरी सतह पर उठती झाग की तरह नष्ट हो जाते हैं।' *(पवित्र कुरआन १३:१७)*

****

अध्याय- ३ ४

माता-पिता का अभिशाप

(Curse of Parents)

ईश्वर के बाद माता-पिता का स्थान होता है। बच्चा वास्तव में अपनी माता के रक्त और माँस से बनता हैं। नौ महीनों तक वह उसके शरीर का एक हिस्सा रहता है और कुदरत की निर्माण-प्रक्रिया के पूरा होने पर वह अलग हो जाता है। लेकिन अगले २ ५ वर्षों के लिए वह फिर अपने माता-पिता पर निर्भर रहता हैं। कुदरत ने मनुष्य व्यवहार के सॉफ्टवेयर को इस तरह से डिज़ाइन किया है कि माता-पिता अपने बच्चों के सुख के लिए अपने आप से ज्यादा उन का ध्यान देते हैं। वास्तव में माता-पिता बच्चों के पालन-पोषण में अपनी युवावस्था के सुनहरे समय, अपना आनंद, अपनी खुशियाँ और आराम का सबसे अधिक त्याग करते हैं। यह ईश्वर का मनुष्य जाति को पालने का एक अच्छा तरीका।

इस प्रक्रिया का दूसरा भाग भी है। पुरुष-स्त्री की जोड़ी, जो बच्चे को जन्म देते हैं और पालन पोषण कर बड़ा करते है वह ६ ० साल की उम्र में रिटायर हो जाते हैं। और लगभग अगले २ ५ वर्षों तक अपने बच्चों पर निर्भर रहते हैं। फिर उसी मानव जाति की आध्यात्मिक सुरक्षा प्रक्रिया द्वारा बच्चे का यह कर्तव्य हैं कि वह अपने वृद्ध माता-पिता की अच्छी प्रकार देखभाल करे। यदि वह अपने कर्तव्य से पीछे हटता है, तो वह सृष्टी के नियम और प्राकृतिक पद्धति से भी पीछे हटता है।

यदि कोई भी कार्य ऐसा है, जो सृष्टी के नियम अनुसार नहीं है और प्रकृति की पद्धति में बाधा डालता है, तो बाधा डालने वाली क्रिया के स्त्रोत धीरे-धीरे सृष्टी के द्वारा नष्ट कर दिए जायेंगे।

जो अपने माता-पिता को नहीं अपनाता है और अपने कर्तव्य से पीछे हटता है तो वह प्रकृति की पद्धति का पालन नहीं करता है। वह सृष्टी में बाधा डालने वाला स्त्रोत है। कुदरत उसके पंख काट देती है। वह और उसकी समृद्धि-संपन्नता धीरे-धीरे नष्ट हो जाती है। वह एक आम आदमी की तरह समाज पर कोई भी प्रभाव छोड़े मर जाएगा। उसका जीवन अथवा मरण समाज के लिए कोई मायने नहीं रखता है। यदि आप समाज में और इस दुनिया में एक महत्वपूर्ण हस्ती होना चाहते हो, तो सृष्टि के नियम का पालन करो। अपने माता-पिता की देख भाल उसी प्रकार करें, जिस प्रकार उन्होंने आप के बचपन में की थी और आप को प्यार किया था।

आखरी आध्यात्मिक ग्रंथ में ईश्वर कहता हैं,

तुम्हारे प्रभु ने तुम्हें आज्ञा दी है कि तुम्हें उसको छोड़ कर और किसी की पूजा नहीं करनी चाहिए। अपने माता-पिता के प्रति दयालु रहो। यदि उनमें से कोई एक वृद्ध है अथवा दोनों वृद्ध हैं, उन्हें वृद्धावस्था में अपने साथ रखो। उनके लिए अपने मुँह से कभी अपशब्द न निकालो और न ही क्रोध से कुछ उन्हें कहो, न ही उन्हें झिड़को, बल्कि हमेशा उन्हें आदर-मान दो और कहो, मेरे प्रभु। उन दोनों पर अपनी कृपा करो, जैसी उन्होने मेरी देखभाल बचपन में की थी, जब मैं छोटा था वैसी ही उनकी भी करो। *(पवित्र कुरआन १७-२३-२४)*

पुत्र को पिता के अधीनस्थ (Subordinate) होना चाहिए और अपनी माता का आज्ञाकारी। *(अथर्ववेद ३-३०-२)*

पैंगम्बर मुहम्मद (स.) ने कहा,

जो वृद्धावस्था में अपने माता-पिता की सेवा करके स्वर्ग जाने का लाभ नहीं कमाते हैं, उनकी नाक धूल चाटेगी (अर्थात वह अपमानीत होगा)। *(बुखारी)*

एक बार पैगम्बर मूसा ने ईश्वर से पूछा, स्वर्ग में मेरा पडौसी कौन होगा? ईश्वर ने उत्तर दिया, एक लकड़हारा, जो अपनी बहुत ही कमज़ोर और बूढ़ी माँ की देखभाल बहुत ही अच्छी तरह कर रहा हैं।

माता-पिता की सेवा करना बहुत बड़ा पुण्य का काम है और उनकी अवज्ञा करना घोर अभिशाप है।

जिनके उपर ईश्वर का अभिशाप होगा, वह सफलता कैसे प्राप्त कर सकेंगे?

****

अध्याय - ३ ५
पानी की बूंदे
(The Drops of Water)

अफ्रीका के जंगलों में हजारों शेर दूसरे जानवरों के बिच आजाद घुमते रहते हैं- जैसे हिरण, हाथी, जेब्रा और जंगली पशु इत्यादि। बहुत थोड़े से जानवर शेरों से अपना बचाव स्वंय कर सकते हैं, फिर भी जंगल में जीवन है और सभी प्रकार के जीव जंतु फूलते-फलते हैं। संक्षेप में जीवन और मृत्यु के बीच में एक संतुलन बना हुआ हैं। शेर केवल उतने ही जानवरों को मारता है, जितना कि उसकी भूख की संतुष्टि के लिए काफि है। वे जरुरत से ज्यादा नहीं मारते और न माँस को जमा करते हैं। संक्षेप में मनुष्य को छोड़ कर प्रत्येक जीवित प्राणि एक या दूसरे रास्ते से प्रकृति के संतुलन को कायम रखने में मदद करती है और प्राकृतिक संसाधनों को बर्बाद अथवा नष्ट नहीं करता है। इसलिए प्रकृति के संतुलन में कोई रुकावट नहीं आती और प्राकृतिक चक्र लगातार चलता रहता है।

राजस्थान और हरियाणा आज से लगभग तीन चार सौ सालों पहले तक घने जंगल थे। राजा तैमुरलंग जिसने दिल्ली को लूटा और और कत्लेआम किया था। वह अपनी आत्मकथा में कहता हैं, कि उसकी सेना ने दिल्ली पहुँचने से पहले १ ५ दिन से भी अधिक दिनों तक घने जंगलों में साँपों, हाथियों और बंदरों के बीच यात्रा की। लेकिन आज वहॉ कोई जंगल नहीं हैं। इसके विपरीत राजस्थान एक रेगिस्तान हो गया है और वह दिन प्रति-दिन बढ़ रहा है। यह प्रकृति के अनमोल उपहार जंगलो के बारे में लापरवाही, इनके महत्व को न समझना और उन्हें बरबाद करने के कारण हुआ हैं।

भारत में जो मारवाड़ी समुदाय हैं वह गुजरात और राजस्थान क्षेत्र से हैं। वह सबसे अधिक व्यापारिक मानसिकता के लोग हैं। अधिकांश बड़ी-बड़ी कम्पनीयां के वह मालिक हैं।

एक मारवाडी सज्जन (Non ferrous metal) के स्क्रेप का कारोबार करते थे। शुरु-शुरु में उनका व्यापार फूला-फला और उन्होंने अच्छा धन भी कमा लिया। लेकिन कुछ समय पश्चात बिना किसी कारण के उनकी बर्बादी शुरु हो गई। उन्होंने अपना व्यापार समृद्धि खो दी और दिवालिया हो गया। उनकी समझ में कोई कारण नहीं आ सका, इसलिए वह धार्मिक उपचार की ओर मुड़ा। उन्होंने अपने धर्म-गुरु से सलाह ली, अपनी दशा का वर्णन किया और अपने नुकसान के बारे में व्यापार में गिरावट का कारण पूछा और इस हालात से उभरने का उपाय पूछा। उनके गुरु ने कारण जानने के लिए साधना की और यह नित्कर्ष निकाला कि व्यापार में हानि ईश्वर के उपहार की बर्बादी के कारण थी। मारवाडी सज्जन ने प्रत्येक दृष्टीकोण से सोचा, लेकिन यह नहीं मालूम कर सका कि उन्होंने ईश्वर के कौनसे उपहार की बर्बादी कहाँ की थी?

वह खाली हाथ मुंबई लौट आया। उन्होंने कई बार सोचा, दिन और रात सोचा, लेकिन कारण जान और समझ नहीं सके। एक दिन जब वह नहाने के लिए तैयार हो रहा था, तो उन्हें जवाब मिल गया। उन की पानी की टोंटी से लगातार पानी बह रहा था, वह ईश्वर का उपहार पानी था जिसे वह नष्ट कर रहे थे।

उन्होंने तुरंत पानी की टोंटी को ठीक कराया और उसके बाद उन का वक्त बदल गया, उन के व्यापार में फिर तरक्की होनी शुरु हो गई और वह लाभ कमाने लगे।

मैंने फेंगशुई पर डा.नितिन प्रकाश लिखित किताब पढ़ी जो नवनीत पब्लिकेशन लि. से पब्लिश हुई थी। उस किताब में पृष्ठ नं ६२ पर मैंने पढ़ा की टोंटी से व्यर्थ पानी बहने से सकारात्मक शक्ति और धन बह जाता है तथा दुर्भाग्य आ जाता है।

जब पानी की निरर्थक बुंदे आप की समृद्धि को बहा कर ले जा सकती हैं, तो तब क्या होगा जब आप महत्वपूर्ण संसाधनों को और ईश्वर के उपहार को बर्बाद करते हो। जैसे धन, समय, आपकी शारीरिक और मानसिक शक्ति इत्यादी?

इन उदाहरणों पर हम विश्वास करें या न करें, लेकिन यह सच है कि किसी भी वस्तु का आवश्यकता से अधिक प्रयोग करना अथवा खर्च करना जीवन के ईश्वरीय संतुलन में बाधा ड़ालता है, तथा प्रकृति के संसाधनों में भी बाधक बनता है। कोई भी ऐसा तथ्य जो इस असंतुलन का कारण है प्रकृति द्वारा उसपर उचित कारवाई करके उसे नष्ट किया जाएगा।

समृद्धि तब आती है, जब आप सफलता के लिए संघर्ष करते हो और प्रकृति भी आपका विरोध नहीं करती है। जब प्रकृति आपका विरोध करती है, तो विश्व व्यवस्था और शक्ति इत्यादि आप के पक्ष में नहीं होगी, तब आपके लिए सफल होना असंभव होगा। इसलिए प्राकृतिक संसाधनों का दुरुपयोग कभी मत करो। यह धन, पानी, भोजन, बिजली, आपकी शारीरिक, मानसिक, काम-शक्ति और आपका समय इत्यादि भी हो सकता है। उनको अपनी आवश्यकतानुसार प्रयोग करें और अपने जीवन में सफल और समृद्ध होने के लिए सर्वसाधारण और मध्य जीवनशैली अपनायें।

पवित्र कुरआन में भी इसी सिद्धांत को सरल-भाषा में व्यक्त किया गया है, जो निम्नलिखित है,

फिजूलखर्ची मत बनो, क्योंकि ईश्वर फिजूलखर्च करनेवाले को पसंद नहीं करता हैं।

(पवित्र कुरआन ६:१४२)

और अपने नज़दीकी संबधियों को उनका हक दो और जरुरतमंद तथा मुसाफिर को उनका हक दो और फिजूल खर्ची न करो। फिजूलखर्ची लोग निश्चित रुप से शैतान के साथी हैं और शैतान कभी भी अपने ईश्वर का शुक्रगुजार नहीं होता है। (पवित्र कुरआन १७-२६)

सारांशः (Summary)

यदि आप एक बाल्टी से ड्रम के अंदर पानी डालना शुरु करते हो तो यह ज़रुरी नहीं है कि ड्रम भर जाएगा। वह उसी वक्त भरेगा जब इसके तले में छेद न हो। इसी प्रकार यदि आप सफलता के सूत्रों का पालन करते हो, तो यह आवश्यक नहीं है कि आप निश्चित रुप से सफल हो जाओगे। आप सफल हो जाओगे बशर्ते कि आप असफल होने के कारणों को भी नज़रअंदाज ना करो। यदि आपके अंदर अनेक कमियाँ है, तो आप के सफल होने की कोई संभावना नहीं है।

उनमें से कुछ थोडे सी कमियाँ निम्नलिखित हैं

१. आपको भ्रष्ट नहीं होना चाहिए, न ही संप्रादायिक अथवा अपराधी।

२. आपको अपने माता-पिता का अभिशाप नहीं लेना चाहिए।

३. आपको फिजूलखर्ची नहीं होना चाहिए।

****

भाग-५

अध्याय- ३ ६
ईश्वरीय ऋतु
(Divine Season)

हर क्षण आकाश में ४००० से अधिक हवाई जहाज यूरोप और अमेरिका के बीच यात्रा करते हुए, अटलाँटिक महासागर को पार करते हैं। हवाई यातायात नियंत्रक सावधानी पूर्वक जहाज़ों को हवा में टकराने से बचाव करते हुए उनका पथप्रदर्शन करता है तथा रास्ता बताते हैं। अमेरिका से यूरोप की ओर अटालँटिक महासागर के ऊपर गर्म हवा के झोंके बहते हैं। प्रत्येक पॉयलट उस गर्म हवा की लहर में उड़ना चाहता है, क्योंकि इसमें हवाई जहाज उड़ाना बहुत आरामदायक होता है, और वे स्वःचलित पॉयलट स्विच ऑन कर देते हैं और आराम करते हैं। वायुमान में ईंधन की खपत भी कम होती है और अपने लक्ष्य पर निर्धारित समय से पहले पहूँच जाता है। इसके विपरीत कभी-कभी अटलाँटिक महासागर के उपर तेज हवा के झक्कड़ भी चलते हैं और ऐसे मौसम में अटलाँटिक महासागर को पार करना बहुत कठिन होता है। पॉयलट को सावधान रहना होता है। हवाई जहाज में ईधन की खपत भी अधिक होती है और उतनी ही दूरी तय करने में समय भी अधिक लगता है। इसके बावजूद अगर जहाज को सही तरिके से संचालित किया जाए तो पॉयलट हमेशा अपने सही लक्ष्य पर पहुँचता है, चाहे वह तेज हवा में यात्रा कर रहा हो अथवा शांत गर्म हवा के बहाव में।

ज्योतिषियों ने मिश्र (Egypt) के महान राजा रेमसिस को भविष्यवाणी की, कि हिब्रु समुदाय में एक बच्चा पैदा होगा और इज़राईलियों को गुलामी से आज़ाद करायेगा। रेमसिस ने इस होने वानी परिस्थिती से बचाव की पूरी कोशिश की। रेमसिस ने सभी नवजात शिशुओं को मार ड़ाला। पूरे हिब्रू समुदाय को गुलामी में जकड़ लिया। लेकिन अपनी सारी सामर्थ्य और शक्ति लगाकर भी वह अपने भाग्य को बदल नहीं सका। पैगम्बर मूसा ने हिब्रु समुदाय में जन्म लिया और उन्होंने इजराईल के लोगों को गुलामी से आज़ाद कराया और रेमसिस नाईल नदी में डूब गया।

ज्योतिषियों ने राजा कंस के लिए भी भविष्यवाणी की था, कि उनकी बहिन का बेटा उसके जीवन का अंत करेगा। कंस ने अपनी बहिन व बहनोई को जेल में डाल दिया और उनके सभी बच्चों को मार ड़ाला। लेकिन वह भी अपना भाग्य नहीं बदल सका। अंतः श्री कृष्ण ने कंस को मार दिया।

एक मिलटरी टैंक लगभग ४५ टन वजन का होता हैं। यह प्रति घंटा ७० मील की गति तक दौड़ सकता है। यह ४५ डिग्री ढ़ालु (Slop) ज़मिन पर चढ़ सकता है। यह खुरदरी सड़क पर दौड़ सकता है, कीचड़ और यहाँ तक कि कम गहरे पानी में भी दौड़ सकता है। इस मिलटरी टैंक का निर्माण होने के पश्चात इसकी जाँच की जाती है जैसे पूरी गति से दौड़ना अचानक ब्रेक मारना और १०-१५ मीटर ही आगे बढ़कर रुक जाना इत्यादी। कठीन से कठीन टेस्ट के बाद तथा जाँचपरख के पश्चात यदि टैंक सहीसलामत रहता है, तो इसे सेना में ले लीया जाता है, अन्यथा उन्हें दुरुस्ती और अधिक सुधार के लिए

वापिस भेज दिया है।

ईश्वर पवित्र कुरआन में कहते हैं,

क्या तुम लोगों ने यह समझ रखा हैं कि यूँ ही स्वर्ग में प्रवेश तुम्हें मिल जाएगा, यद्यपि अभी तुमपर वह सब कुछ नहीं बीता है, जो तुम्हारे से पहले ईमानवालों पर बीत चुका है? उन लोगों पर कठिनाईयाँ आयी, और मुसीबतें ऐसी आयी, यहाँ तक कि समय का रसूल और उसके साथी ईमानवाले चिल्ला उठें कि ईश्वर की सहायता कब आएगी। (उस समय उन्हें तसल्ली दी गई कि) हाँ, ईश्वर की मदद पास ही है।' *(पवित्र कुरआन २:२१४)*

जिस प्रकार टैंको को काम में लाने से पहले बहुत जोरदार जाँच की जाती है, उसी प्रकार मनुष्य अपनी जिंदगी में शुरु से ही लगातार जाँचा जाएगा और अपने सभी मोर्चों पर, जैसे शिक्षा, व्यापार, नौकरी, धन, प्यार, शादी, बच्चे, जायदाद और स्वास्थ इत्यादी, और ईश्वर उसकी परीक्षा जीवनभर लेते रहेगा। जैसे राजा रेमसिस और कंस अपना भाग्य जानते थे, वैसे ही कुछ हद तक अगर आप भी अपना विधीलिखीत जान भी जाओगे फिर भी आप इसे अपनी इच्छानुसार बदल नहीं सकते। भाग्य को बदलने का एक ही रास्ता है और वह है कठिन परिश्रम तथा ईश्वर से नियमित रुप से प्रार्थना करके उसकी सहायता और कृपा प्राप्त करना।

इस पुस्तक में 'ईश्वरीय ऋतु' विषय को सम्मिलित करने का कारण आप को यह याद कराना है कि हर एक के जीवन में लंबे समय तक सुख और समृद्धि का समय हो सकता है इसी तरह समस्या से पूरी कोशिश करके बचने के बावजूद दुख, तनाव, आर्थिक समस्या, स्वास्थ तथा पारिवारिक समस्या जीवन में आते ही रहते हैं। क्योंकि व्यक्ति को अपने ईश्वर पर विश्वास रखना है और अच्छे स्वभाव कि परिक्षा देते रहना है। यह ईश्वरीय विधान अथवा प्रक्रिया है। व्यक्ति के कार्य और कर्म की जाँच करने और परीक्षा लेने का यह ईश्वर का तरीका आपकी इच्छानुसार बदलने वाला नहीं है। इसलिए एक ओर तो आप को यह ईश्वरीय परीक्षा नियमित रुप से पास करनी है और दूसरी ओर आपको हमेशा यह अपने मन में रखना है कि यह एक परीक्षा है और समय लगातार बदलता हैं, यह हमेशा एक जैसा नहीं रहता हैं। आप को कभी न अंत होने वाले बुरे समय से घबराना नहीं चाहिए। रात का अंत होगा और सुर्य निश्चित रुप से उगेगा और प्रकाश देगा, क्योंकि ईश्वर पवित्र कुरआन में कहता हैं,

हर मुश्किल के बाद सुविधाजनक समय आता है, प्रत्येक मुश्किल के बाद आराम है।
(पवित्र कुरआन ९४-५-६)

गीता कहती है, 'समय परिवर्तनशील है।'
इसका अर्थ है, (अच्छा या बुरा) समय में बदलाव होता है।

ईश्वरी परिक्षा के काल को समझो और उसके अनुसार तैयार हो जाओ। यदि हवाई जहाज का संचालन सही ढंग से किया जाए तो हमेशा अपने लक्ष्य पर पहुँचता है, चाहे हवा कितनी भी अशांत हो। इसी प्रकार अगर आप ईश्वर के आदेश का पालन करते हो तो समय और स्थिती कितनी भी खराब हो आप अपने लक्ष्य में जरुर सफल होंगे।

ईश्वर कहता हैं,

जो कोई भी सही कार्य करता है, चाहे वह स्त्री हो अथवा पुरुष और वे मुझ में आस्था भी रखता हों, तो मैं उन्हें इस संसार में पवित्र और आरामदायक जीवन में रखता हूँ तथा मृत्यु के पश्चात उन्हें उनके महान कर्मों का उत्तम फल देता हूँ। *(पवित्र कुरआन १६-९७ सारांश)*

****

अध्याय- ३७
नाम में क्या है?
(What's in Name)

मेरा मित्र राजू कुमार के कम्पनी का नाम जोली एलौएज़ (Jolly Alloys) था। वह लोहा बेचने का व्यापार करते थे। और ज्यादा उनती के लिए उन्होंने अपने कम्पनी का नाम बदल कर टैक्सन इंटरप्राइजेस (Texon Enterprise) रख दिया। जो सुनने में अधिक आधुनिक लगता था। उसके अधिकांश ग्राहक वही पुराने थे। उसका व्यापार भी वही लोहा बेचना था, नए नाम से उस के व्यापार में बिक्री भी अच्छी थी। लेकिन कुछ विचित्र हो रहा था। उसे अपना भुगतान (Payment) नहीं मिल रहा था। उसके एक पुराने ग्राहक ने अपने एक मित्र के द्वारा पूना से मुंबई एक ड्राफ्ट राजू के लिए भेजा। लेकिन गाव से अत्यावश्यक फोन आने के कारण वह मित्र राजू से मिलने के बजाय जल्दी में वह ड्राफ्ट लेकर अपने गाव चला गया। इसी प्रकार राजु को अन्य भुगतान किसी-न-किसी कारण वश देरी से ही मिल रहे थे। इसलिए कुछ महीनों बाद उसके लिए व्यापार चलाना असंभव हो गया। लेकिन अपना व्यापार बंद करने के बजाय उसने अपने व्यापार का नाम फिर 'जौली एलॉइंज' रख दिया। अब वह उसी क़म्पनी और उत्पाद (यानी लोहा) का कारोबार उम्मीद से अधिक समृद्धी से कर रहा है।

मैंने अपना व्यापार 'हायड्रो-इलैक्टिक मशीनरी' के नाम से शुरु किया। ईश्वर की कृपा से मेरा काम अच्छा था। जब मैंने अपनी कम्पनी के नाम को ट्रेड मार्क के रुप में रजिस्टर करने की कोशिश की, तो मैं इसे नहीं कर सका, क्योंकि वह एक सामान्य नाम था। अंत मैंने अपनी का नाम 'हायड्रो-इलैक्टिक मशीनरी' से बदलकर 'हाइड्रो शम्स मशीनरी' रख दिया। शम्स का अर्थ अरबी में सूर्य होता है और यह नाम मेरे पिताजी के नाम शम्सुद्दीन का संक्षिप्त रुप था। यह नाम रखने के बाद मैंने वे ऑर्डर भी खो दिए, जो पहले से मेरे साथ पक्के किए गए थे। मेरी बिक्री भी धीरे-धीरे कम होती गई। मैं वास्तव में बड़ी मुश्किल में था। तब फिर मैंने अपनी कम्पनी का नाम पहले वाले नाम में यानी 'हायड्रो-इलैक्टिक मशीनरी' में बदल दिया। उसके पश्चात ईश्वर की कृपा से फिर मैंने उस प्रकार की समस्या का कभी सामना नहीं किया।

इसलिए मैं आप को सलाह देना चाहता हूँ कि अपनी कम्पनी का कोई एक विशेष नाम चुनने से पहले, उसे प्रयोग के आधार पर इस्तेमाल करने की कोशिश करें और उसकी समीक्षा करें और उसका असर देखें, फिर अगर उस कम्पनी के नाम से आप का नुकसान नहीं हो रहा है तो ही उस नाम को चुने अन्यथा दूसरा कोई नाम रखकर उसकी हालात की जाँच करें।

ज्योतिषशास्त्र और अंकशास्त्र एक जटिल विषय है। इसका अध्ययन कभी ना करें। यदि आप इसका अध्ययन करते हो, तो आप अपनी इच्छा-शक्ति (Will Power), जोश और असंभव कार्य को करने का साहस खो सकते हो। अकबर ने ५० वर्षों से अधिक समय तक भारत पर राज्य किया और वह एक महान एवं सफल शासक था। लेकिन उसका पिता हुमायूँ सबसे अधिक असफल शासक था। उसकी असफलता का एक कारण यह था कि कोई भी निर्णय लेने से पहले वह अधिकतर ज्योतिषिय गणना का

सहारा लेता था। इस कारण, तत्काल कोई जोखीम भरा बहादूरी का निर्णय लेने कि क्षमता उनमें नहीं थी।

इसलिए मैं आप को ज्योतिषी के पास जाने की सलाह नहीं देता हूँ। क्योंकि कोई भी ज्योतिषी आप की कम्पनी का सही नाम अचूक तरीके से नहीं बता सकता हैं। यदि ज्योतिषी इतने विशेषज्ञ होते, तो वे एक खास नाम स्वंय के कारोबार के लिए चुनकर करोड़पति हो गए होते। लेकिन ज्यादातर वे अपनी पूरी जिंदगी थोडे से पैसो और ग्राहक की तलाश में मारे-मारे फिरते हैं और ग्राहकों को अपनी ओर आने के लिए मनौवेज्ञानिक उपाय प्रयोग करते हैं। इसलिए उनके उपदेश न सुनें, बल्कि अपनी स्वंय की के (Experiment) पर पूरा ध्यान दें और उसकी समीक्षा करें। केवल आप ही अपनी कम्पनी के नाम के लिए प्रयोग (Experiment) करने की कोशिश कर सकते हो और अपनी कंपनी के लिए सही नाम मालूम कर सकते हो।

इसलिए जब पूरी कोशिश करने के पश्चात भी सफलता न मिले और कुछ भी सही न होता हो, तो अपनी कार्य-योजना और कार्य-विधि को सही करने के साथ-साथ दूसरा कोई शुभ नाम चुनने पर भी ध्यान दें।

नाम का असर केवल कारोबार की सफलता पर ही नहीं पड़ता बल्कि बुरे नाम का असर व्यक्ति के जिवन पर भी पड़ता है। यह बात आप निम्नलिखित उदाहरण से समझ सकते है।

हज़रत अब्दुल हमीद कहते हैं की एक बार में हज़रत सईद के पास बैठा हुआ था। उन्होंने मुझ से कहा की मेरे दादा का नाम हज़न था। जब वह हज़रत मुहम्मद (स.) के पास गए तो हज़रत मुहम्मद ने उन से उनका नाम पुछा। दादा ने अपना नाम हज़न बताया जिस का अर्थ होता है (गरम दिमाग/क्रोध वाला)। हज़रत मुहम्मद (स.) ने कहा के इस नाम के बदले आप का नाम सहल होना चाहिए। जिस का अर्थ होता है आसानी (Experiment) मगर मेरे दादा ने कहा मेरे माता-पिता ने जो नाम रखा है उसे मैं बदलना नहीं चाहता। और उन के नाम का यह असर है की उनके खानदान का हर व्यक्ति आज एक दम गरम दिमाग है। (बुखारी, मुस्लिम, मुन्तखब अबवाब (Vol-Verse-85))

हज़रत अब्दुला इब्ने उमर कहते है की उन की बहन का नाम आसीया था जिस का अर्थ है पापी। हज़रत मुहम्मद (स.) ने उस को बदल कर जमीला रख दिया जिसका अर्थ है सुन्दर। (सही मुस्लिम, मुन्तखब अहदिसक ८ ३ ७)

जन्नत की कुंजी नाम की पुस्तक में सफा नं १ ७ ७ में लिखा है की एक बंजर जमीन को लोग हज़रा के नाम से पुकारते से जिस का अर्थ होता है बंजर जमीन। हज़रत मुहम्मद (स.) ने उस जमीन का नाम खिज़रा रख दिया। जिस का अर्थ होता है हराभरा। और कुछ दिनों के बाद वह बंजर जमीन सचमुच हरी भरी हो गई।

नाम का असर व्यक्तिगत स्तर पर जैसे होता है वैसे ही व्यापारिक स्तर पर भी होता है। इसलिए अपनी कम्पनी का नाम हमेशा शुभ ही रखें। और उस के प्रभाव को परख लो उस के बाद नाम पक्का करें। क्योंकी एक नाम किसी दूसरे व्यक्ति को अगर लाभ दे रहा है तो यह जरुरी नहीं है की वह आप को भी लाभ देगा।

****

अध्याय - ३८

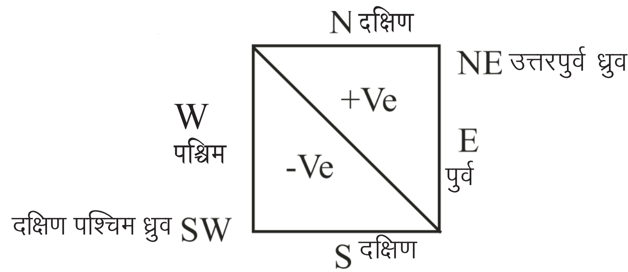
ब्रम्हांड शक्ति का प्रभाव
(Effect of Cosmos Energy)

एक चुम्बक लें और उसे एक डोरी के साथ लटका दें। जब यह अज़ाद लटकता है, तो यह हमेशा अपने आप उत्तर-दक्षिण दिशा की ओर हो जाएगा। इस चुम्बक को छोटे-छोटे टुकड़ों में काट दें और इसके प्रत्येक टुकड़े को लटका दें। उस चुम्बंक का प्रत्येक टुकड़ा संपूर्ण चुंबक की तरह उत्तर-दक्षिण दिशा की सीध में अपने आप हो जाएगा।

यह पूरी धरती अनेक जाने और अनजाने चुम्बकीय क्षेत्रों (Magnetic Field) से घिरी हुई है। तथा ब्रम्हांड की शक्तियों (Cosmos Energy) से भी। चुम्बक स्वंय उत्तर-दक्षिण दिशा की सीध में पृथ्वी के चुम्बकीय क्षेत्रों (Magnetic Field of earth) के प्रभाव से होता है।

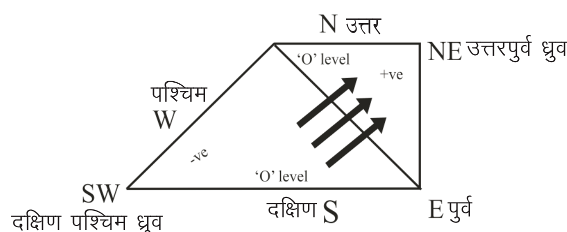
इसी प्रकार पृथ्वी पर जमीन का प्रत्येक टुकड़ा और इमारत में (Cosmos Energy) का (Positive) और (Negative) क्षेत्र होता है। चुम्बक में, शक्ति उत्तर ध्रुव (North Pole) से दक्षिण ध्रुव (South Pole) की ओर बहती है, लेकिन जमीन के विषय में, चाहे जमीन का टुकड़ा हो अथवा बनी हुई इमारत, उत्तर-पूर्व की दिशा में (Positive Pole) होता है और दक्षिण-पश्चिम में (Negative Pole) होता है और शक्ति शक्तिशाली क्षेत्र से कमज़ोर क्षेत्र की ओर बहती है। यानी (Positive Pole) का क्षेत्र ज्यादा रहा तो शक्ति का बहाव (Positive Pole) से (Negative Pole) की तरफ होगा। और अगर (Negative Pole) का क्षेत्र ज्यादा रहा तो शक्ति का बहाव (Negative Pole) से (Positive Pole) की तरफ होगा। कुल मिलाकर जिस ध्रुव (Pole) का क्षेत्र ज्यादा रहेगा वेसा ही प्रभाव जमिन के टुकड़े पर या इमारत पर रहेगा।

निम्नलिखित चित्र से आप इस शास्त्र को अच्छी तरह समझ सकेंगे।ः



ऊपर दिया गया वर्गाकार जमीन के टुकड़े में दोनों शक्ति क्षेत्र संतुलित हैं, इसलिए प्रभाव संतुलित होगा।

लेकिन यदि इस उपरोक्त जमीन के टुकड़े का निम्नलिखित माप में बदलाव किया जायः



दूसरे जमीन के टुकड़े में क्योंकि (Negative Energy) का क्षेत्र अधिक है, इसलिए शक्ति (Negative Pole) से (Positive Pole) कि तरफ बहेगा इस तरह इस जमीन के टुकड़े पर नकारात्मक प्रभाव रहेगा।

(Positive Energy) वाला क्षेत्र जोश देता है, साथ ही अच्छा स्वास्थ, ख़ुशी, रचनात्मक विचार और संपूर्ण समृद्धि। जबकि नकारात्मक क्षेत्र इसके विपरीत प्रभाव लाता है।

इसलिए यदि आप पूरी-पूरी कोशिश करने के बावजूद सफल नहीं हो रहे हो, तो उस क्षेत्र की जाँच करें, जिसमें आप कार्य कर रहे हो। इमारत की तोड़-फोड़ किए बिना, ऐसे अनेक उपाय है, जिनसे सब कुछ ठिक हो सकता है। इसे सही करने के लिए विशेषज्ञ का राय लें। वास्तुशास्त्र एक विज्ञान है, धर्म से उसका कोई सरोकार नहीं है। इसलिए यदि आपके पास खाली समय है, तो इसका अध्ययन एक शौक (Hobby) की तरह करो।

(Positive Energy) उत्तर-पूर्व से दक्षिण-पश्चिम की ओर बहता है, इसलिए अधिकांश हिंदू परिवार अपने दरवाज़े उत्तर अथवा पूर्व कि ओर रखते हैं। यह नियम शक्ति क्षेत्र के बहाव पर आधारित है, न कि धार्मिक विश्वास पर। इसी प्रकार वर्कशाप में और कंपनियों में, वे मशीनें, जिनमें कच्चा माल उत्तर की तरफ से डाला जाता है, अच्छा काम एवं अच्छी उपलब्धि (Productivity) देती हैं, उन मशीनों की तुलना में जिनका मुँह दक्षिण की ओर है। मैंने स्वंय व्यक्तिगत रुप से भी अनुभव किया हैं कि अपने बैठने की स्थिति को पश्चिम से उत्तर की ओर बदलने के बाद मेरी उत्पादकता में बढ़ोत्तरी हुई है।

यदि आप अनियोजित शहर का अध्ययन करते हो, तो आप पाओगे कि वे दुकानें और होटल जिनका मुँह पूर्व और उत्तर की ओर है, उन की अपेक्षा अधिक विकसित और बेहतर व्यापार कर रही हैं, जिनका मुँह पश्चिम और दक्षिण की ओर है।

इसलिए अच्छी मशीनें लगाने और स्टाफ के होते हुए भी यदि आपकी उत्पादकता कम है, तो अच्छी उपलब्धि प्राप्त करने के लिए उनकी दिशा उत्तर की ओर बदलें अथवा वास्तु शास्त्र की राय के अनुसार बदलें।

नुकसान पर चलने वाले अनेक होटलों और कारखानों को, उनकी स्थिति और दिशा बदलने के पश्चात लाभ हुआ है। आप भी इसे परख सकते हो।

महान कवी इक्बाल का एक शेर है की,

मिरे अरब को आई ठंडी हवा जिधर से,

मेरा वतन वही है। मेरा वतन वही है।

इस शेर का अर्थ है की अरब के बादशाह अर्थात हज़रत मुहम्मद को जिस दिशा से ठंड़ी हवा आती थी मेरा देश हिंदुस्तान उसी दिशा में है। (हिंदुस्तान अरब देशों के पुर्व दिशा में है।)

हज़रत मुहम्मद (स.) हमेशा पुर्व की ओर आप चेहरा करके बैठते थे। किसी ने पुछा के आप (स.) हमेशा पुर्व दिशा कि तरफ ही अपना रुख कर के क्यों बैठते हों? तो हज़रत मुहम्मद (स.) ने कहा कि इस दिशा से मुझे ठंडक महसूस होती है। इसी बात को महान कवी इक्बाल ने अपने शेर में कहा है।

****

अध्याय- ३९

स्थानांतरण

(Migration)

अमेरिका, कनाडा, ऑस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड सब विकसित देश हैं। लेकिन इन देशों में कितने लोग यहाँ के मूल निवासी हैं? ५ प्रतिशत से अधिक नहीं होंगे, क्योंकि इन देशों में अधिकांश लोग यूरोप से आकर बसे हैं।

मुंबई भारत कि व्यापारिक राजधानी है, लेकिन वास्तव में कितने लोगों ने, जो यहाँ के मूलनिवासी हैं, जिन्होंने इसकी व्यावसायिक समृद्धि में योगदान दिया है। १० प्रतिशत से अधिक नहीं होंगे। क्योंकि १० प्रतिशत व्यापारी दूसरे प्रदेशों के निवासी हैं और वे मुंबई में आकर बस गए हैं। परंतु जो कोई भी यूरोप से बाहर जाकर बसा है अथवा मुंबई में आकर बसा है, शुरु में समृद्ध नहीं थे। उन्होंने समृद्धि स्थानांतरण के पश्चात कठिन-परिश्रम और अपने को पूरी तरह समर्पित करके प्राप्त की।

विजय टँक एंड वेसल्स लिमिटेड, रिफॉइनरिज के क्षेत्र मे बड़े प्रोजेक्ट का निर्माण करनेवाली प्रमुख कंपनी है। मैंने उनको अनेक हायड्रौलिक प्रेस सप्लाई की हैं। सन १९८०-८५ में लिबिया में, युद्ध और योजनाओं (Projects) के रद्द होने के कारण, उन्हें २४ करोड़ का नुकसान हुआ। भारत में भी उनकी उन्नति में अनेक रुकावटें आई और वह एक बीमार यूनिट (Sick Unit) घोषित कर दी गई थी। लगभग अगले दस सालों तक उन्होंने अपनी कंपनी को दुबारा चलाने और कायम रखने के लिए संघर्ष किया, परंतु वह बीमार यूनिट ही रहे और उन्हें कुछ भी सही होता दिखाई नहीं दिया। फिर उन्होंने एक कठोर निर्णय लिया। मुंबई में चिपके रहने के बदले उन्होंने मुंबई कि अपनी सारी ज़ायदाद बेच दी और बड़ौदा में बस गए। अपनी ज़ायदाद बेचने से जो धन उन्होंने प्राप्त किया, उससे और अपनी कड़ी-मेहनत के द्वारा वे फिर से जीवित हो उठे अर्थात उनकी कंपनी चल निकली। आज वे फिर अपने क्षेत्र में प्रमुख हैं, और उनकी कंपनी एक जानी मानी कंपनी है।

पक्षी और जानवर भोजन और आश्रय स्थल की खोज में दूर-दूर के स्थानों में जाते हैं जिसे वे विपरित हालात में भी भोजन और आश्रय प्राप्त करते हैं तथा जीवित रहते हैं। स्थान परिवर्तन जीव-जंतुओं के लिए जीवित रहने और समृद्धि का एक रचनात्मक तरीका है।

पवित्र क़ुरआन कहती है कि,

जो लोग अपने आप पर ज़ुल्म कर रहे थे उनकी आत्माओं को जब फरिश्तों ने खींचा तो उनसे पूछा कि यह तुम किस हाल में पड़ गए थे? उन्होंने जवाब दिया कि हम धरती में कमज़ोर और बेबस थे। फरिश्तों ने कहा, क्या अल्लाह की धरती विस्तृत न थी कि तुम उसमें घरबार छोड़कर कही चले जाते? ये वे लोग है जिनका ठिकाना नर्क है और वह बड़ा ही बुरा ठिकाना है। *(पवित्र क़ुरआन ४:९७)*

निःसंदेह ईश्वर की धरती बहुत बड़ी है तथा अवसरों से भरपूर है। ज़रुरत इसकी है कि आप उसे प्राप्त

करने कह कोशिश की शुरुआत करो। इसलिए अपनी पूरी कोशिश के बावजूद, यदी आप सफलता प्राप्त नहीं कर पाऐ, तो बजाय उम्मीद छोड़ने और हार स्वीकार करने के स्थान-परिवर्तन के बारे में सोचे।

मैं वरली में जन्मा और पला बढ़ा जो मुंबई के पश्चिमी भाग में है। मैं वहाँ लगभग ३ २ साल रहा लेकिन आखिरी तारीख तक एक कुत्ता भी मुझे देखकर न भौंका और न ही पूँछ हिलाई। मैं वहाँ पर पूरी तरह से अनजान हूँ। लेकिन वरली से मुंबई के उत्तरी-भाग भांडुप में स्थान परिवर्तन के पश्चात जो मेरे व्यवसायिक स्थान के पास है। उस समय के पश्चात मेरी इतनी समृद्धि हुई और मुझे इतना मान सम्मान मिला की मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि इतना अधिक मान-सम्मान मुझे न दें, जो मैं पचा न सकूं। स्थान-परिवर्तन के पश्चात मेरी पूरी जिंदगी बदल गई।

कुछ बुद्धिमान लोग कहते हैं कि आपके जन्म स्थान पर आपके पास परिवार, घर, माता-पिता, सगे-संबधी और मित्र इत्यादि सब कुछ होता है। आप अपनी व्यक्तिगत और सामाजिक जिंदगी में सुविधा और संतुष्टता महसूस करते हो, इसलिए आप कठिन संघर्ष नहीं करते हो। जबकि नए स्थान पर आपको हर वस्तु नए से विकसित करनी होती है, इसलिए आप कठिन परिश्रम करते हो और इसमें अपनी पूरी-पूरी कोशिश करते हो।

स्थान-परिवर्तन के कारण समृद्धि और उन्नती का एक अंधविश्वासी कारण यह भी है कि आपके जन्म-स्थान पर हर व्यक्ति आपको जानता है। जब आप दूसरों से ज्यादा तरक्की करते हो तो वे जलन महसूस करते हैं। प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रुप से बुरी नज़र अथवा जादू द्वारा, या तोड़-फोड़ या झगड़ा फसाद या किसी दूसरी तरह से वे तुम्हारा नैतिक पतन करते हैं और काम से ध्यानभंग करते हैं तथा आपकी सफलता के रास्ते में बाधा डालते हैं। जबकि नए स्थान पर कोई भी आप को और आप के अतीत को नहीं जानता है, इसलिए न ही कोई आप के साथ मुकाबला करता है और न ईर्ष्या करता है, इसलिए आप आगे बढ़ने के लिए स्वतंत्र हो।

इसलिए यदि पूरी कोशिश करने के बावजूद, कुछ भी अच्छा नहीं हो रहा है, तो समय बर्बाद न करें और न ही हिम्मत छोड़े। एक अच्छे स्थान पर बस जाएँ और आप को मालुम होगा कि प्रभु की दुनिया विस्तृत है और अवसरों से भरपूर है।

सारांशः-(Summary)

कल्पना करो कि आप के पास संसार की सबसे शानदार कार है और आप एक योग्य ड्राइवर हों। लेकिन यदि आप को सड़क के बीच के अबड़-खाबड़ स्थान अथवा खड्डे को पार कर आना है, तो आप क्या करोगे?

टीले अथवा खड्डे को आसानी से पार करने के लिए जिसकी ज़रुरत है, वह हैं सामान्य सूझ-बूझ न कि आप के कार के इंजिन की शक्ति अथवा ड्राइवर की विशेष योग्यता। सामान्य-सी बात है, बायाँ अथवा दायाँ मोड़ लीजिए और रुकावट को पार कर लें।

आप एक विशेषज्ञ हो सकते हो, आप सफलता के सभी सूत्रों का पालन करते होगे और राह में आने वाली अड़चनों के प्रति सावधान भी रहते होंगे तब भी अगर आप सफल नहीं होते हो, और न ही मंजिल तक पहूँच पाते हो। तो आराम से सोचो, कि आप कि सफलता में क्या रुकावटे आ रहीं हैं। सभी अड़चनों रुकावटों को दूर करने की कोशिश करो।

सफलता की राह में कुछ रुकावटें निम्नलिखित हो सकती हैं।

१. गलत नाम। नाम बदलो और अंतर देखो। (यह विषय अंकशास्त्र (Numerology) से संबधित है।)

२. यदि आप नकारात्मक शक्ति क्षेत्र (Negative energy field) में कार्य कर रहे हो, जो आप के ऑफिस या कम्पनी की जगह या इमारत की वज़ह से है तो इसे वास्तुशास्त्र अथवा फॅगशुई द्वारा ठीक करें।

३. अपने चारों ओर के लोगों से होने वाली ईर्ष्या अन्याय वाला कानून, राजनीतिज्ञों द्वारा शोषण, पुलिस और अपराधियों द्वारा शोषण, कच्चे-माल और बीजली की कमी इत्यादि का मामला हो तो किसी दूसरे अच्छे स्थान पर चले जाएँ। ईश्वर की दुनिया बहुत विस्तृत है।

४. याद रखो कई बार ऐसा भी होगा की आप की कोई गलती ना होने के बावजूद आप को कष्ट और दुख पहूँचेगा। या कष्ट और दुख ईश्वर की तरफ से आप की परिक्षा के लिए होता है। आप ऐसी स्थिती को पहचान लें और सत्य के मार्ग पर मज़बूती से चलते रहें। अगर आप ऐसा करते हो तो आप ना सिर्फ इस जिवन में सफल होंगे बल्कि आप मरने के बाद के जिवन में भी सफल रहोगे।

इसलिए Divine Season को समझने की कोशिश करो और हिम्मत के साथ आगे बढ़ते रहों।

****

अध्याय-४०

आध्यात्मिक बाधांओ पर विजय पाना

(How to Overcome the Spiritual Obstacles)

मैंने अपनी ग्रेज्युएशन सन १९८३ में पूरी की। लेकिन ७६% अंक बी.ई.मैकनिकल अंतिम वर्ष में प्राप्त करने के पश्चात भी अत्याधिक कमज़ोर व्यक्तित्व तथा स्वास्थ के कारण अगले तीन वर्षों तक मैं किसी नामी कंपनी में नौकरी प्राप्त नहीं कर सका। एक छोटे-से वर्कशाप में मैंने कुछ हायड्रौलिक का अनुभव प्राप्त किया। हाइड्रौलिक १९८५ में, भारत में एक बहुत ही नई टेन्कोलौजी (तकनीक) थी और बहुत थोड़े-से लोग इसके बारे में जानते थे, इसलिए मैंने नोकरी छोड़ दी और हाइड्रौलिक प्रेसेस डिझाईन करने की कन्सल्टंसी शुरु दी।

मैं हिंदुस्तान एलौईस मैन्युफैक्चरिंग कं. लि.के चैयरमेन मि.बी.एम.पटेल का आभारी हूँ, जिन्होंने मुझपर विश्वास किया। जब मैंने उन्हें एक Solder wire extrusion press का डिजॉइन दिया, तो उन्होंने कहा, मैं फायनान्स करता हूँ आप के ड़िझाईन पर आप ही मैन्युफैक्चरिंग भी किजीए। उन्होंने २५ मशीनों से अधिक का आर्डर बुका कर दिया। वह मेरे उत्पादन-क्षमता से दो वर्ष से अधिक का आर्डर था।

जसवंत सिंह के साथ कटु-अनुभव के पश्चात मैंने एक सज्जन, श्री.बी.के.पंत से संपर्क किया, जिसने मशीने बनाने के लिए अपनी कम्पनी का प्रयोग करने की आज्ञा दी। मैं उनका भी आभारी हूँ।

अगले चार साल तक मैंने बहुत पैसा कमाया। उस समय मैंने अपना वर्कशाप खरीदा, मेरी शादी हो गई, एक कार खरीदी, मैंने अपने घर का नवीनीकरण किया इत्यादि। मैंने व्यवसायिक-जनरल्स, मैगजिन्स, तथा समाचार-पत्रों में अपने मशीनों का विज्ञापण भी दिया, और भारत पैट्रोलियम कॉरपोरेशेन लिमिटेड और विजय टॅंक्रस एंड वेसल्स लि.इत्यादि जैसी जानी मानी फर्मस के अनेक ऑर्डर भी प्राप्त किए।

फिर अचानक एक अजीब बात १९९०-९१ में मेरे साथ हुई।

१. हाथ में आए ऑर्डर मैं पूरे नहीं कर पा रहा था। (अनेक अनपेक्षित कारण और अज़ीब समस्याओं की वजह से)

२. यदि किसी तरह मैंने आर्डर पूरा कर भी लिया तो ग्राहक माल नहीं लेते थे।

३. यदि किसी तरह ग्राहक माल उठा भी लेते, तो उनकी कोशिश अधिक से अधिक उधार लेने कि होती अथवा वह केवल एक हिस्सा ही भुगतान करते।

४. ग्राहक हमेशा बकाया भुगतान हड़पने की कोशिश करते।

५. मेरा स्वास्थ बुरी तरह से गिर गया।

६. मेरी कंपनी की बिक्री १००% से केवल २० % नीचे आ गई।

७. जब कभी भी नया ग्राहक आता वह मेरी मशीनों से प्रभावित होता और तुरंत आर्डर देने की इच्छा भी प्रकट करता लेकिन जैसे ही वह मेरे आफिस से बाहर जाता, उस का विचार और निर्णय बदल जाता।

मैं हैरान था। मेरे साथ क्या हो रहा है? इस प्रकार मैं बहुत आगे नहीं बढ़ सकता। मेरे शुभचिंतकों ने मुझे कुछ आध्यात्मिक पुरुषों से राय मशवरा करने के लिए कहा।

मैंने आधे दर्जन से कही अधिक आध्यात्मिक विद्वानों और बाबाजी से संपर्क किया। मेरा स्वास्थ और मन की शांति धीरे-धीरे थोड़ी ठीक हो रही थी। लेकिन अगले तीन सालों के लिए, मेरा उत्पादन लगभग बंद करने की सीमा तक रहा।

फिर उस दयालु ईश्वर ने मुझ पर दया की। जब मैं ऐसे ही फुटपाथ पर चल रहा था। मैंने 'आसान रिज्क' नाम की पुस्तक देखी। मैंने उसे तत्काल खरीद लिया। उस पुस्तक ने मेरी व्यावसायिक-जिंदगी को फिर बदल दिया।

रिज्क का शाब्दिक अर्थ भोजन है और सामान्य अर्थ ईश्वर का प्रत्येक आशीर्वाद है, जिसमें भोजन, घर, परिवार, व्यापार और सामान्य समृद्धि है। आसान का अर्थ है- सरल और सुविधाजनक। आसान रिज्क में ईश्वर के आशीर्वाद का सरल और सुविधाजनक रुप में कैसे प्राप्त करें यह बताया गया है।

इस पुस्तक में कुछ पवित्र मंत्र बताए गए है जिनका प्रतिदीन जाप करने से समृद्धि बढ़ती है। इस पुस्तक का और अनेक दूसरे पुस्तकों का सारांश में आप के सामने रख रहा हूँ।

कुछ विशिष्ट पदों की विशेषता:-

पद नं १ और २

जब कभी भी जहाँ रोशनी होगी, एक महान कारण में बंधे होते हो, तो बुरी शक्तियाँ आपके हाथ के काम पर अपना पूरा ध्यान केंद्रित करो और मानसिक परेशानी से (बचने) सुरक्षित रहने के लिए ईश्वर से सहायता प्राप्त करने के लिए, इस पद की प्रार्थना सबसे पहले करे तथा आफिस के काम से पहले भी इसे स्मरण करें।

कई बार ऐसा होता है कि जो कुछ भी हम खाते हैं, हमें संतुष्टि नहीं मिलती है। यदि आप खाने से पहले उपरोक्त पद का स्मरण करेंगे और जब आप इसे पूरा करोगे, तो आप संतोष महसूस करोगे।

पद नं ३ (तसबीह)

देवदूत खाना नहीं खाते हैं। जब उन्हें भूख लगती है, तो वे उपर्यूक्त पद का पाठ करते हैं- शक्ति प्राप्त करने के लिए। पद नं ३ का पाठ करना बहुत आसान है। इसमें आशीर्वाद का अति उच्च आदर्श है तथा ईश्वर को बहुत अधिक प्रसन्न करता है।

पद नं ४ (सूरे हम्द)

पवित्र कुरआन में स्वर्गीय खजाने से आए हुवे २ श्लोक हैं। यह उनमें से एक है। मूलतः ये पद प्रभु द्वारा लोगों को उसकी पूजा कैसे करें, इससे संबधित हैं। इसके चार आध्यात्मिक प्रभाव हैं।

१. जो नियमित रुप से इसका पाठ करते हैं, वे उधार से मुक्त रहते हैं।

२. बीमारी से मुक्त रहते हैं।

३. बुरी आत्माओं से बचे रहते हैं।

४. और भारी मात्रा में धन प्राप्त होगा।

पद नं १०

इस पद में शांति, तनाव, पुनर्जीवन और चिंता को कम करने का प्रभाव है। यह आपको शारीरिक, मानसिक एंव आत्मिक लाभ देगा, जब आप अत्याधिक तनाव और चिंता में होते हो।

पद नं १२ (सूरे अहद)

यह पद ईश्वर की प्रार्थना है। इसमें अधिक-से अधिक आर्शीवाद का प्रभाव है। केवल तीन बार इसके पाठ से इतना अधिक ईश्वर का आशीर्वाद मिलेगा, जितना पूरी पवित्र कुरआन का पाठ करने से। जब आशीर्वादों की बौछार ईश्वर तुम्हारे ऊपर शुरु करते हैं और आप धन-संपत्ति इक्टठी करनी शुरु करते हो, इन पदों का पाठ आप सूर्योदय से पहले और सूर्योदय के पश्चात ईश्वर को धन्यवाद देने के लिए जितनी बार संभव हो अपनी सुविधानुसार उतनी बार करें।

पद नं १३ (दरुद)

इस पद का पाठ हम प्रार्थना से पहले और बाद में इसकी आध्यात्मिक शक्ति बढ़ाने के लिए करते हैं। यह दरुद के रुप में जाना जाता है। मूलतः दरुद ईश्वर की एक प्रार्थना है, लेकिन उस समय के पैगम्बर के पक्ष में की जाती है।

पद नं १४

कभी-कभी हम अपने दिल पर एक बोझ महसूस करते हैं और अपने को चिताओं से घिरा हुआ पाते हैं। इन ऐसी समस्याओं से और ऐसी घटना से मुक्त होने के लिए, अपने दिल पर दाहिनी हथेली रखते हुए, पद नं १४ का सौ बार पाठ करें। पाठ करने के पश्चात हथेली पर फुॅंक मारे और इसे अपने चेहरे और छाती पर फेंरें। यदि ईश्वर में पूरी आस्था रखते हुए पाठ किया जाए, तो यह अत्याधिक प्रभावशाली होता है और साथ ही इस पद का अर्थ भी याद करें तो प्रभाव बहुत अधिक होता है।

हम दरुद का पाठ क्यों करें?

हम पत्र प्रिय महाशय अथवा प्रिय मॅडम के साथ शुरु करते हैं और आपका विश्वासी अथवा आपका

आज्ञाकारी के साथ अंत करते हैं। अगर हम उपर्युक्त शब्द न भी लिखें, तो भी सामने वाला व्यक्ति हमारा संदेश प्राप्त कर लेता, लेकिन ये शब्द हमारे पत्र का प्रभाव बढ़ा देते हैं। इसी प्रकार दरुद प्रार्थना के शुरु और अंत में प्रार्थना की प्रभावशीलता को बढ़ा देते हैं।

प्रभु ने अलग-अलग युगों तथा विभिन्न स्थानों में अपने हज़ारों देवदूत पृथ्वी पर भेजे। उनमें से कुछ नोहा (मनु या हजरत नूह) (अ.स.), अब्राहम (अबिराम या हजरत इब्राहिम(अ.स.)), मूसा (अ.स.), जीसस क्रॉइस्ट (येशु मसीह, हजरत ईसा (अ.स.)) और गौतम बुद्ध इत्यादि। वे ईश्वर का संदेश लाए और उस युग विशेष में उन वर्गों के लिए धार्मिक-सूत्र लाए।

आज जो नोट छापे गए हैं, उन पर रिर्जव बैंक ऑफ इंडिया के गर्वनर के हस्ताक्षर हैं। कल यदि गवर्नर बदल जाता है, तो नोट पर गवर्नर भी बदल जायेंगे। राष्टपति मा.प्रतिभादेवी पाटील जिस भी बिल पर हस्ताक्षर करेंगे संसदभवन वह पास करती हैं। पाँच वर्ष पश्चात कोई दूसरा राष्ट्रपति चुना जाता है, तब नए राष्ट्रपति का नाम और हस्ताक्षर आएगा, एक मान्यता प्राप्त हस्ताक्षर के रुप में यही बात धर्म के बारे में भी होती है।

दरुद आभार (धन्यवाद) के शब्दों की तरह है देवदूत हमें ईश्वर का संदेश देते हैं। हम उनके आभारी हैं कि वे हमें सही राह दिखलाते हैं। हम उनके आभार के मुआवजे में प्रत्यक्ष रुप से कुछ भी नहीं कर सकते हैं। इसलिए हम ईश्वर से उन पर कृपा करने के लिए प्रार्थना करते हैं तथा उनके सहयोग को प्राप्त करने के लिए। यह आभार व्यक्त करने वाली प्रार्थना दरुद में थी। हम अंतिम पैगम्बर मुहम्मद (स.) के समय में हैं। इसलिए दरुद में उनका नाम दिया गया है।

पैगम्बर मर जाते हैं लेकिन उनका पार्थिव शरीर उनकी कब्र में नष्ट नहीं होता है। सभी देवदूतों की आत्मा ईश्वर की प्रार्थना के लिए स्वतंत्र रहती है और शेष मृत्यु के बाद भी स्वर्ग में होती है। जीसस क्राईस्ट की तरह पैगम्बर अपने शरीर के साथ स्वर्ग में हैं।

जब हम अपने माता-पिता, दादी शिक्षक और गुरु आदि के प्रति आदर प्रकट करते हैं, तो बदले में वे अपनी शुभ कामनाएँ प्रकट करते हैं और आशीर्वाद देते हैं। इसी तरह जब हम दरुद के रुप में पैगम्बरों के प्रति अपना आभार प्रकट करते हैं, तो पैगम्बरों भी हमारी समृद्धि के लिए ईश्वर से प्रार्थना करते हैं। ईश्वर भी उनको चाहता है, जो देवदूतों को शुभ-कामनाएँ देते हैं। यह देवदूतों की हमारे लिए प्रार्थना और आशीर्वाद है, हमारी दरुद (प्रार्थना) के प्रतिदान में, जिससे हमारी प्रार्थना की शक्ति समृद्धि के लिए बढ़ती है और इसे अधिक प्रभावशाली बनाती है।

इसलिए यदि हम अपनी प्रार्थना से पहले और बाद में दरुद का पाठ करते हैं, तो यह अधिक प्रभावी होगा।

इन पदों का पाठ कैसे करें ?

स्वयं साधना करना स्वास्थ्य के लिए अत्याधिक हानिकारक है। ये पद दवा हैं। यदि आप सही प्रक्रिया को

नहीं अपनाते हो, तो आप अपने जीवन को नष्ट करोगे और मेरे लिए भी नुकसान का कारण बनोगे, क्योंकि मैंने ही इन पदों को आपको बताया है। इन पदों का प्रयोग करते समय निम्नलिखित सावधानियाँ बरतनी चाहिए।

१. अपने को स्वच्छ करें। (सफाई के अध्याय के अनुसार)

२. जब इन पदों का पाठ करें, एक कमरे में ठहरें, जो स्वच्छ साफ हो, उसमें किसी व्यक्ति की तस्वीर न हो किसी धार्मिक व्यक्ति की।

३. अपने मानसिक दृष्टिकोन को सही कीजीए। यह आपके स्वंय के लिए और प्राणीमात्र के लिए लाभदायक होना चाहिए। जिस धन के लिए आप इतना संघर्ष कर रहे हो, किसी के लिए हानिकारक नहीं होना चाहिए।

४. एक ईश्वर की प्रार्थना को इस पुस्तक के अनुसार मिलायें नहीं, दूसरे देवताओं की प्रार्थना के साथ। वह हैं इन पदों को दूसरी धार्मिक पुस्तकों के पदों के साथ मिलाकर पाठ न करें।

५. इन पदों का अपमान न करें, सभी धार्मिक पुस्तकों के ईश्वरीय पदों के प्रति गंभीर रहें और सम्मान करें क्योंकि एक ही ईश्वर द्वारा उनमें से अधिकांश को प्रदर्शित किया गया है, केवल भाषा ही अलग है।

६. अरबी भाषा का उच्चारण करना बहुत कठिन है। यदि हम इसका सही उच्चारण नहीं करते हैं, तो इसका अर्थ बदल जाता है। एक नया पाठक, जो अरबी भाषा नहीं जानता है, उच्चारण में अवश्य गलती करता है। इसलिए पदों के सही प्रभाव के लिए, इनका पाठ मन ही मन में करें और उस पद का वास्तविक अर्थ भी याद रखें। ऐसा करने पर आपके ऊपर उसका नकारात्मक प्रभाव नहीं पड़ेगा अथवा ईश्वर का कोप नहीं होगा।

इस पुस्तक को अश्लील उपन्यासों और फिल्मी पत्रिकाओं से दूर रखें, क्योंकि इसमें पवित्र पद सम्मिलीत हैं।

यदि आपके लिए यह करना कठिन है, तो वे पृष्ठ जिनमें धार्मिक पद हैं, फाड़ कर अलग कर लें और उन्हें सही-तरीके से नष्ट करें। उन्हें एक मुसलमान के हाथों में सौपे, किसी मुस्लिम कब्रिस्तान में दफनाने के लिए अथवा उन्हें पूरे सम्मान से रखें तथा किसी सागर अथवा नदी में प्रवाहित कर दें।

समृद्धि की प्रार्थना के लिए तैयारीः-

१. ६ से ८ घंटे की नींद के लिए जल्दी सोएँ।

२. सुबह सूर्योदय से पहले उठें।

३. शौचालय जाओ, स्नान करें (अध्यात्मिक लाभ, शुद्धि के लिए, गरारे करें एवं नसिका की सफाई करें) शारीरिक स्वास्थ्य के लिए जितना संभव हो गर्म पानी पियें और सुबह सैर करने के लिए जायें।

४. अकेले जाने की कोशिश करें इससे आप बात करने से बच सकते हैं।

समृद्धि वृद्धि के लिए पहली प्रार्थनाः-

१. पद नं १ का पाठ करें (एक बार)

२. पद नं २ का पाठ करें (एक बार)

३. हमेशा हर प्रार्थना से पहले उपर दीए गए पदों का पाठ करें और हर रचनात्मक कार्य को शुरु करने से पहले भी।

४. पद नं ३ का पाठ करें (१०० बार)

५. यह धन संपत्ति की वृद्धि की पहली प्रार्थना है और लगभग ५ से १० मिनट का समय लेती है।

६. सबसे अच्छा और अधिक प्रभावशाली समय, इस प्रार्थना के लिए सूर्योदय से पहले का है।

धन-संपत्ति की दूसरी प्रार्थनाः-

१. पद नं १ का पाठ करें (एक बार)

२. पद नं २ का पाठ करें (एक बार)

३. पद नं १३ का पाठ करें, वह दारुद है (तीन बार)

४. पद नं ४ का पाठ करें ४१ बार।

५. पद नं १३ का पाठ करें (एक बार)

६. शुरु में आपको इसे पुस्तक से पढ़ने की जरुरत हो सकती है। लेकिन धीर-धीरे आप इसे याद कर लोगे। तब इसका ४१ बार पाठ करने में केवल १० मिनट लगेंगे।

७. आधे घंटे पश्चात जब आप सुबह की सैर से वापिस आते हो, आपकी प्रार्थना पूरी होगी। सावधान रहें कि साफ स्थान पर घुमें। जब आप किसी कुड़े दान अथवा कूड़े के ढ़ेर के पास से गुज़रे तो प्रार्थना रोक दें तथा पाठ के बीच में बातचीत को नज़र-अंदाज करें।

८. यदि आप सुबह की सैर करने के लिए नहीं जाते हैं, तो आप इस प्रार्थना को अपने शयनकक्ष अथवा किसी भी स्थान पर कर सकते हो।

धन संपत्ति में वृद्धि की तीसरी प्रार्थना

जब आप अपने ऑफिस में पहुँचते हो, अपनी कुर्सी पर आदर से बैठते हो। उसके पश्चात प्रार्थना में रुकावट या बाधा से बचने के लिए टेलिफोन या मोबाईल फोन बंद कर दें।

१. पद नं १, २ और १३ का पाठ करें (एक बार)।

२. पद नं ४ का पाठ करें (एक बार)

३. पद नं ५ का पाठ करें (एक बार)

४. पद नं ८, ६, और १२ का पाठ करें (एक बार)।

५. पद नं १३ का पाठ करें।

६. तब कहें, हे प्रभु! कृपया मुझे क्षमा करें, इन पदों का पाठ करने में मैंने जो कुछ भी गलती की है और इस प्रार्थना को स्वीकार करें और इस प्रार्थना का फल उन सब आत्माओं को दें, जो आप में विश्वास रखते हैं। फिर प्रभु की मदद और आशीर्वाद अपने ही शब्दों और भाषा में अपने स्वंय के लिए मांगे।

७. अंत में पद नं १३ का फिर पाठ करें।

८. फिर अपने हाथों को ऊपर उठायें और अपने चेहरे पर फेंरें।

९. ४० दिन के पश्चात आप अपनी ज़िदगी में बहुत बड़ा परिवर्तन और सुधार पाओगे।

१०. सुख समृद्धि की आखिरी प्रार्थना दान है। हर महीने कुछ धन आपको एक अनाथाश्रम अथवा अपने परिवार और समाज के गरीब लोगों को देना चाहिए।

इसलिए पहली कोशिश में या पहली बार आप कुछ भी महसूस नहीं कर सकोगे, जिस प्रकार अंडो से बच्चे बनने में लगता है, जब चुम्बक को सपाट लोहे के टुकड़े पर बार-बार रगड़ा जाता है, तो उस लोहे के टुकड़े में चुम्बक के गुण आ जाते हैं। संत और ऋषीमुनी चमत्कार दिखाने से पहले दशकों तक साधना करते हैं।

इसी प्रकार, इसमें कोई संदेह नहीं है कि आध्यात्मिक पद जादू जैसा प्रभाव पैदा करेंगे, परंतु आप इसे पहले दिन और अगले दिन में प्राप्त नहीं करोगे। यदि आप इसे गंभीरता से कम-से-कम चालीस दिनों तक करते हो, तो आप सकारात्मक प्रभाव महसुस होना शुरु होता है। इसलिए धीरज रखें और इसे करते रहें।

यदि आप अत्याधिक चिंतित हो और आपकी समस्या का कोई समाधान नहीं है, तो अपनी आँखे बंद करो और कल्पना करो, आप खुले में आसमान के नीचे खड़े हो और उस प्रभु से मदद के लिए पुकार रहे हो और विनय कर रहे हो तथा १५ मिनट तक पद नं १० का पाठ करें, आप तरोताज़ा महसूस करोगे, आराम और विश्वास प्राप्त होगा। आपकी समस्या अगले ही दिन नहीं सुलझेगी, लेकिन यदि आप इन पदों का पाठ बार-बार करोगे, तो या तो आपकी समस्या सुलझ जायेगी या फिर ईश्वर आपको उससे अच्छा विकल्प देंगें।

****

पद नं. १ और २

अऊज बिल्लाहि मिनश्शैता नीर्रजीम बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम	प्रशंसा अल्लाह के लिए ही है, जो सारे संसार का रब है, बड़ा ही मेहरबान और दया करने वाला है। (पवित्र कुरआन१:१)

पद नं. ३ तस्बीह

सुबहानल्लाहि वबिहम्दिहि सुबहानल्लाहिल अज़ीम	सब प्रशंसा अल्लाह के लिए ही है उस महान प्रभु की शान के लिए है।

पद नं. ४ सूरह हम्द

अल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीनआर्रहमानिर्रहीम मालिकि यौमिद्दीन इय्या कनअबुदु व इय्या कनस्तईन इहदिनस सिरातल मुस्तकीम सिरातल्लज़ीना अनअम्ता अलैहिम गैरिल मगजूबि अलैहिम वलज़्ज़ाल्लीन	सब प्रशंसा अल्लाह के लिए ही है, जो संपूर्ण संसार का रब है। वह बड़ा ही मेहरबान और दया करने वाला है, कयामत के दिन का मालिक है। हम तुझसे ही विनय करते हैं और तुझ से ही मदद माँगते हैं। प्रभु। हमें सही राह दिखायें। उन लोगों को मार्ग दिखाएँ जो आपकी कृपा के पात्र हुए हैं। उन लोगों को मार्ग दिखाएँ जो प्रकोप के भागिदार नहीं हुए हैं तथा जो राह से भटके हुए नहीं हैं। (पवित्र कुरआन १-१-७)

पद नं. १०

या हय्यो या कय्यूमो बिरहमतिका अस्तगिस	ओ! विद्यमान प्रभु! स्वयं जीवित रहने वाले। मैं तुम्हारी दया की याचना करता हूँ मेरी रक्षा करो।

पद नं. १२ सूरह अहद

कुल हू वल्लाहु अहद अल्लाहुस्समद लम यलिद वलम युलद वलम यकुल लहु कुफुवन अहद	कहो वह ईश्वर है, वह एक है, ईश्वर वही है जिस पर सभी निर्भर हैं। उसकी न कोई संतान है और न ही वह किसी की संतान हैं। और उसके समान कोई भी नहीं है (पवित्र कुरआन ११२-१-४)

पद नं. १३ दरुद

सल्लल्लाहू अला मुहम्मद सल्लल्लाहु व अलैहि वसल्लम	ईश्वर आशीर्वाद दे मुहम्मद (स.) पर। उनके परिवार को आशीर्वाद दे तथा शांति प्रदान करे।

पद नं. १४

अला बिज़िक्रिल्लाहि तत्मयिन्नल कुलूब	जान लो, ईश्वर की याद से संतुष्टि और शांति मिलती है

पद नं. १६

सुबहानल्लाह	प्रभु की महीमा अपरम्पार है।

पद नं. १७

अलहम्दु लिल्लाह	सब प्रशंसा ईश्वर के लिए है।

पद नं. १८

अल्लाहु अकबर	ईश्वर महान है।

पद नं. २०

या रहीम या हादी	ऐ दयालु ईश्वर! ऐ मार्गदर्शन करनेवाले!